



एक बूँद सहसा उछली

सचिदानंद वात्स्यायन

जन्म कुशीनगर जिला देवरिया फाल्गुण शुक्ल सप्तमी
स० १९६७ तदनसार ७ माघ १९११ ।

बचपन लखनऊ कश्मीर नालन्दा-पटना और नीलगिरिम
बीना जहाँ संस्कृतके साथ कुछ फारसीका और हिन्दीतर भार
ताय भाषाआका अध्ययन किया । विश्वविद्यालयान शिक्षा मन्स
जोर लाहौरमें हुई बी० एस-सी० करके अग्रजी विषयमें एम०
ए थी पढ़ाई करत समय क्रांतिकारी आन्दोलनके प्रसंग
परार हुए और १९३० के अन्तमें पकड गय । चार वष जलमें
और दो वष नजरबन्द रह । किसान-आन्दोलनमें भाग लिया ।
हिन्दी और अग्रजीके विभिन्न पत्राका सम्पादन किया और अब
वार (अग्रजी प्रमासिक) निराकन ह । कुछ वष आठ इडिया
रशियामें रह तीन वष सनामें । सन् १९५५-५६ में युनस्कोकी
एक लम्बक-वृत्तिपर यूरोप गय सन १९५७-५८ में राबिफ्लर
कोपका यात्रा-वृत्तिपर पर्वेगिया । सन १९६ में पुन यूरोप
गय ।

पहली रचना (कहाना) सन १९२४ में छपी पहली
कविता सन् १९२७ में ।

एक बँद सहसा उछली

[यूरोप-यात्राओंके वृत्त और सस्मरण]

सच्चिदानंद वात्स्यायन

भारतीय ज्ञानपीठ
काशी

हिंदी-प्रयाङ्गु—१३०

ज्ञानपीठ लोकोदय-ग्रन्थमाला-सम्पादक श्रीर निधामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन

प्रथम सस्करण

१९६०

मूल्य सात रुपये

प्रकाशक

मन्ना भारताय ज्ञानपाठ
दुर्गाकुम्हार राठ वाराणसा

मुद्रक

बाबूराज जन पाठक
संमति मन्नालय वाराणसा

मैंने देखा
एक ब्रँद सहसा
उठ्ठी सागरके झागसे—
रंगी गयी क्षण भर
ढलते सूरजकी आगसे ।
—सुझको दीव गया
हर आलोक-छुआ अपनापन
है उमोचन
नरनस्ताके दागसे ।

गिजेलाके लिए

यद्यपि उतना ही निष्प्रयोजन, जितना
एक प्राचीन गिरजाघरमें आया हुए भिक्षु बिहारमें बठ कर
अयमनस्व भावसे यह कहना कि 'म जानता हूँ
एक दिन म फकीर हो जाऊंगा ।'

क्रम-सूची

निवदन	१३
१ यूरोपकी अमरावती रामा	१०
२ विद्राहकी परम्पराम	३८
३ यूरोपकी पप्पावती फिर्जे	४१
४ खुदाके भसवरक घर असासी	५४
५ यूरोपकी छतपर स्विजरलंड	६३
६ एक यूरोपीय चिन्नकस भेंट	-
७ तो यह परिस ह ।	८५
८ एक दूमरा फास	९६
९ बालूकी भीतपर	११३
१० सयुक्त गाय दो राजधानियाँ	१२८
११ ताल-तलहटी भोत और स्रष्टा	१४२
१२ बीस हजार राष्ट्रकवि	१६७
१३ नीलमका सागर, पत्रेका द्वीप	१७
१४ घम विश्वासाका गोबूला	१०
१५ धीमवी गतीका गोलोक	२०७
१६ एक अनमना कवि	२३०
१७ लोकौत्तर	२८६
१८ सागर कथा और खग गावक	२६०
१९ राइनक साध-साध	२६८
२० पतवरका एक पात	२८३
२१ यूरोपका स्नायु-केन्द्र बर्लिन	२८६
२२ प्राची प्रतीची	३१२

चित्र-सूची

	पृष्ठ
१ मन देवा — (परिस १९५५)	मख चित्र
२ रोमा कोन्गेमियमके रोमिक खडहर	३२
३ रामा रोमिक चौकपर सूयास्य	२
४ कवि कीटसनी समाधिपर	१३
५ रोमा इस्पानी चौक	३३
६ फिरेज सग्रहास्य और पुराना मन्त्र	४८
७ फिरेज आर्नो नन्वे दा पत्र	४८
८ फिरेजका बडा गिरजाघर	४८-४९
९ फिरेजे बडासगार्नेमे परिदृश्य	४८-४९
१० असीसी विहगम दस्य	४८-४९
११ असीसी मन्की बत्रगाह	४८-४९
१२ मुवामियाता गफा विन्गर	४९
१३ दूमरा र्मा सन्त फ्रांसिस	४९
१४ फरिन्नावागा मरियमका गिरजाघर	४९
१५ स्वन्नमे मूर्पोंस्य	६
१६ डीगे लिमानाम अन्तरीक्षपर उपा किरण	९६
१७ परिस वाक्वन्तराम आन्तर मानार	९६-९७
१८ परिसका विजय-मन्मारक (ल-वाक)	९६-९७
१९ परिस नात्र नामका गिरजाघर	९६-९७
२० परिस नात्र दाम और मन नन्	९६- ७
२१ लिन्गर विज-वारका मन्	९७

२२	पिएर विव-वीरकी मरियम	०७
२३	पिएर विव-वीर मठका द्वार	९७
२४	हालड एक पवन-चक्की	११२
२५	हालड राजधानीका सागर-तट	११२
२६	एम्स्टर्डामकी एक नहर	११३
२७	स्खेविनिडेनका 'स्वास्थ्य भवन	११५
२८	गेवमपियर स्मारक रंगाला स्ट्रूटफाड	१२८
२९	एडिनबरा दुग (रातमें)	१२९
३०	वड स्वयका घर	१६०
३१	राइडालवाटर	१६०
३२	रस्किन गिला	१६१
३३	डवेंटवाटर	१६१
३४	पुच्छेली (बल्स) का विहगम दृश्य	१७६
३५	सेंट फगस उद्यानमें सीसेका हीज	१७६
३६	आयरलडका सागर-तट	१७७
३७	स्टाकहोममें सूर्यास्त	२०८
३८	मध्य रात्रिका सूर्य आविस्को	२०९
३९	तोर्ने ब्रास्क क्षील लापोनिया	२०९
४०	अपनोत्मवकी तयारी—सिमतुना	२२४
४१	(क) स्टाकहोममें एक वाव्य गोष्ठी	२२५
४१	(ख) ग्रीष्मकालीन विद्यालयमें	२२५
४२	हिमानी और हिम गिरित क्षील	२५६
४३	हमन्टका दुग—एल्सिनोर	२५७
४४	एल्सिनोर दुगका भीनरी प्रकाष्ठ	२५७
४५	राइन प्रदेशम विगरद्रुक	२७२
४६	वाल्सरहे नगर भवनका उद्यान	२७२

४७	बाड क्रोएत्सनाख	२७३
४८	डा० फाउस्टका घर क्रोएत्सनाख	२७३
४९	बाँन बटहोवन भवन	३०४
५०	बाँन बटहोवनका जन्म-स्थल	३०४
५१	बर्लिन सोमा रस्ता	३०५

निवेदन

इस पुस्तकमें क्या है इसके बारेमें कुछ कहनेकी आवश्यकता नही समझता । इसने पाठकमें एक बग अवश्य ऐसा होगा जा कि पुस्तक पढ़नेके बाद ही स्वतंत्र रूपसे निणय करना चाहेगा कि उसकी रायमें इस पुस्तकमें क्या है और उसपर इसका तनिक भी प्रभाव नही पड़ेगा कि मन उसका विषयमें क्या कहा है । नि सन्देह एक दूसरा बग ऐसा भी होगा जिसन पुस्तक पढ़नेसे पहले अपनी पक्की धारणा बना रखी होगी कि क्या उस मेरी पुस्तक में पाना है, इस बगको भी इससे प्रयोजन नही होगा कि मन भूमिकाम पुस्तकके विषयमें क्या कहा है—या कि पुस्तकमें ही क्या कहा है ।

इसलिए पुस्तकमें जा कुछ है उसके बारेमें कोई सफाई मुझे नही देनी है । क्या-क्या वह नही है इसीके बारेमें दो एक बातें कहना चाहता हूँ ।

यह पुस्तक भागदर्शिका नही है । इसका सहारा यूरोपकी यात्रा करने वाला यह जान लेना चाह कि कैसे वह कहासे कहा जा सकेगा या किस मौसमके लिए कैसे बपड़े उमे ले जाने हान या कि वहाँ कितनेमें उसका खर्चा चत्र सकेगा, तो उसे निराशा होगी । जो यह जानना चाहते हैं कि कहासे नाइंगनकी साडियाँ—या कमरे, या घडियाँ या सट, या ऐगी दूमरी चीजें जो कि भारतवासो विदेशसे उन कपड़े-वस्तुआके एवजमें लात है जो कि विदेशी यहाँसे ले जाते हैं—कहाँसे किफायतमें मिल जायेंगी उनके भी कामकी यह पुस्तक नही होगी । वास्तवमें ऐसे पाठकको यह पुस्तक पढ़नेकी कोई आवश्यकता नही है और न उन लेखकमेंसे नही हूँ जो समझते हैं कि अगर पाठकने मुगालतसे किताब खरीद ली तो वह भी लाभ ही हुआ क्याकि विक्री तो हुई । जिस पाठकके द्वारा न पढ़ा जाना चाहता हूँ उसका स्वल्प मेरे सम्मुख स्पष्ट है । न उसका सम्मान भी करता हूँ । और इसलिए

भरसक उम भ्रान्तिमें न । रखना चाहता न भ्रात हानका अवसर दना चाहता ह ।

उम भर वाचित पाठनवगम समाजक और गिग्गके सभा स्तरके लग ह । (अगिग्ग गि गका स्तर नही ह उसका नकार ह ।) उसम एम भी ह जा अग्रजी या अग्रजीन अत्रवा दूसरी विदेगा भाषाए जानने ह (और इमन वावजू हिनो भी पण हत ह ।) और एम भा ह जा कोई विदेगा भाषा न ी जानत या हिनोके अनिरिकन कोई दूसरी भाषा न्ण जानत । उनमें एमे लोग ह जो अनक बार परिचम और पूवके विभिन्न देगाकी सर कर आय ह एमे भी ह जा गोघ्र विग्गको जानवाल ह एसे भी ह जो जानकाठ हा या न हा विदेगाभाषाके सपन देखत ह और एसे भी ह जिनक सम्मस एमी कोई सम्भावना नहा ह और एमके लिए विग्ग उरकृष्ठा भी न । ह । वास्त्वमें एन सत्र बागाममे कोई भी पाठककी कसीटा नही ह ।

मरा पाठक सवन्नगाल हा यह म उसमे चाहता ह । क्याकि बिना एमर वण उस नहा अपना सवता जा मरो सवन्नान ग्रहण किया । जो स्वय सवन्नगाल नही ह वह यह न्ण पन्चानता कि सवका सवदना अलग अलग हाता ह—उसन निकट मवन्नाका भी एक बना बनाया ढाँचा होता ह । वण किया अनुभवता तन्त ग्रहण हा नही कर सकता केवल उसके एक करक अलग अलग खाँचामे रग सकता ह ।

पाठक उगारमना हा यह भी म चाहता ह । बिना एसक वह दूमरके विचाराका सम्मान नहा कर सकता । बल्कि वह गायन् अपन भी विचार न्ण रख सकता क्याकि अनुगार विचार तो अनो उपर्णघ नही रुढ़िकी दन हान है ।

पाठक अनुभवक प्रति खला हा जावनस प्रम करता हा यह भी म चाहता है । जा अनुभवक प्रति खला नही ह उस दूमरक अनुभवस भी क्या प्रपादन हो सकता ह ? और जा जीवनम प्रम नहा करता उसके निकट अनुभवका हा क्या मन्थ ह ? जावन प्रम हो तभा तो अनुभवका घन

क रूपमें पहचाना जा सकता है तभी सम्पन्न और दरिद्र की पहचानके आधार आर्थिक मूल्य न रहकर मानवीय मूल्य हो जाते हैं—जीवनके मूल्य ही तो मानवीय मूल्य हैं।

वास्तवमें जो एस पाठक है उन्हें यह भी नहीं बताना होगा कि पुस्तक में क्या नहीं है। उनकी सन्तुष्टता—और सत्ता—स्वयं नीर-शीर करती चली। उन्हें जो मित्रता उतना ही केवल उनकी नहीं बल्कि मेरी भी उपलब्धि होगी। जा नहीं मिलगा वह उसमें है एसा कहनकी कठिनाई में न करूँगा।

क्या एस पाठक बहुत थोड़ा है? कहा जाता है कि मैं अभिजात वर्गका हूँ (कहनवालाके निवृत्त अभिजात का जो भी अर्थ हो), और इसलिए अल्पसंख्य पाठकाके लिए ही लिखता हूँ—अभिजात पाठकाके लिए ही। कोई क्या जान बूझकर अपने पाठकाका संख्या कम करना चाहेगा यह मैं नहीं जानता। हर कोई मेरा लिखा हुआ जरूर पढ़ ही एसा मेरा कोई आग्रह नहीं है ऐसी कोई अवचेतन कामना भी मेरी न होगी। किन्तु हर कोई मेरा पाठक हो सकता है एसा मैं मानता हूँ।

मानवमें मरी श्रद्धा है। मानव मात्रमैं मैं अभिजात मानता हूँ। मेरा परिश्रम उसके काम आवे इस मैं अपनी सफलता मानता हूँ। इस पुस्तकमें मैं परिश्रम हुआ है जो कुछ प्रस्तुत किया गया है वह उस समझमें कुछ भी योग दे सके जिगके मानदण्ड आर्थिक नहीं है तो मैं अपनेको घाय्य मानूँगा। योग वह दे सके या न दे सके उस परिश्रमक पीछे मरी भावना यही रही है जो कुछ मरी आरसे निवृत्त है उसका मूल्यमें यही साध है।

—साच्चिदानन्द वात्स्यायन

§ इस पस्तकमें दिय गय प्राय सभा चित्र लेखक द्वारा लिये गये फाटो ह । जहाँ बसा नहो ह वहाँ चित्रक साथ इस बानका उल्लेख कर लिया गया ह ।

§ विदेगा नाम साधारणतया तद्गीय उच्चारणके अनुसार लिखे गय ह । यूरोपीय नामाके यूरोपीय रूप बहुधा उनके अंग्रेजी रूपाकी अपेक्षा हिन्दीके स्वभावके अधिक निकट होत ह और उहें नागरीमें लिखना भी सुगमतर । जहाँ अंग्रेजी द्वारा परिचित रूप और देगीय रूप बहुत भिन्न ह वहाँ सुविधाके लिए अंग्रेजी रूपका भी उल्लेख कर लिया गया ह ।

§ मन्त्रक लिए पाठलिपि तमार करनमें श्री योगराज धानीन गितना परिश्रम किया ह उसका तो आभार ह ही पर जिस प्रसन्न उत्साहके साथ यह सहयोग उहान ऐककी लिया ह वह आभार-स्वीकारसे पर उन दुःख विस्मयतर अनुभवकी जगामें ह जा हिन्दीक लेखक जावनको भा काम्य बना दत ह ।

—लेखक

§ इम पुनः नाम विद्यमानं गभीरं तत्र लक्षणं नाम विद्यमानं लक्षणं
 ह । ज्ञानं यथा त । इ वही विद्यमानं नाम लक्षणं उच्यते इति
 गता ह ।

§ विद्वान् नाम भाषास्मृत्या तद्व्याप्य उच्यते अनुगार इति लक्षणं
 ह । युरोपाय नामके युरोपाय इति वचनात् उच्यते अत्र लक्षणं विद्यमानं
 हिन्दुत्व स्वभावक अधिक निरूप्यता है और उच्यते नामके विद्यमान भा
 मुगमन्तर । ज्ञानं अग्रही तत्र परिचित इति और दशात् इति वचनात् मिश्र ह
 वही मूर्तिपाद इति अग्रही लक्षणं भा उच्यते इति गता ह ।

§ मन्त्रक इति पाठविधि तद्व्याप्य उच्यते आचार्यात् विद्यमानं विद्यमानं
 परिश्रम विद्या ह उच्यते ता आभार ह ही पर विद्यमानं प्रथम उच्यते
 साम यह सत्यात् उच्यते लक्षणक इति ह व आभार-स्वभाव पर
 उन दुःख विद्यमान अनुभवक इति ह जो हिन्दुत्व लक्षण जीवन्तो
 भा काम्य वता दत्त है ।

—लेखक



‘मेरे देसा—’

[परिसम पतनर ‘गीपक’ एक वतात्मक फिल्मक लिए चित्र उन समय एक सहनमिणी द्वारा लिया गया फोटो]

फोटो [एवा मस्किएति परिसम निसम्बर १९५५]

एक वूँद सहसा उछली

यूरोपकी अमरावती : रोमा

ज्ञान-वृद्धि और अनभव-सचयके लिए देगाटन उपयोगी है यह परानी बात है। एक समय था जब कि कविने लिए—और क्याकि कायकार ही एकमात्र कतिकार था इसलिए ममथ लीजिए कि अपन अयमें साहित्यकार मात्रने लिए देगाटन अनिवाय समथा जाता था। किन्तु देगाटन कम किया जाय इसका कोई विगप पद्धति शास्त्रकारान नही बतायी—तीघाटनकी परम्परा थी टर्किन उसका उद्गय अनभव-सचय नही बल्कि पुण्य-सचय था और वह भी भवानुभव उस मुक्ति पानके लिए।

दुनियाका जानकारो—और आज ज्ञान अथवा अनुभवम जानकारी ही अधिक महत्वपूर्ण समथी जाती है—प्राप्त करनेके और उसके विषयम अधिकारपूर्वक लिख सकनेके इधर दो अलग अलग तरीके हो गय है। एक तो यह है कि आप सप्ताह भरमें दुनियाका हवाई—बल्कि तूफानी दौरा करके लौट आइए फिर या ता एक सवाददाना सम्मलन' बना लाजिए और उगे अपनी प्रथम धारणाक वारमें एक-एक वयान दे डालिए, या फिर एक पात्रलिपिक बुला लाजिए और एक पुस्तक लिखा डालिए जो साथ-साथ छपती भी जाय—क्याकि अथवा आपने अनुभवके पुराने पडकर अरोचन हो जानका डर है। लिखनेके लिए अनुकूल समय और एकान्त आवश्यक हो तो पुस्तक लिपिककी बजाय रिवाड करनेवाले यत्रका भी लिखा दी जा सकती है।

स्पष्ट है कि यह माग बड़े आदमी ही अपना सकते हैं जिनके वयानका महत्व जितना उसकी विषय-वस्तुके कारण है उतना ही वयानके नामके कारण। आपन यह बात कहाँ सुनी? “जो, ठीक घाटके मुखसे प्राप्त

हुई ह। (आप एक गब तुछा अंग्रवा अनुसा कराने लिए गमिगीयी
 वा रही ह। अन यणी भी अंग्रवा गगारका अनुसा कर लिया गया है।
 इतना अवयव ह कि यदि यह अनुवा किमी गमिगी ड्राग किया गया होगा
 ता पाडर म_२ जगा गीधी और गहूँस बाग न कहकर हय-यन या
 तुरङ्गमय जग किमी प्रभावगाला पन्ना उपायग किया जाता। अतः
 अहरनता और गुग्गुलीनता खारार करता हूँ।)

दूसरा तराका यह ह कि आप बाला ह्यय निरवधि मानकर हम
 विपुल पथवा की परित्रमापर निकल जाइत और यह चिन्ता छोट दाजिए
 कि कब लौटना हागा या कब माया परा हागा प्रकाश-म्या रिम्प गिनर
 कब अमस्त्य नी लखर प्रयावननका आगाबी पाकर गिर उगकर
 पछ गयेगा कि प्रभु पाठ त्रिपि कब प्राप्त हागा ? आप यह माग अरनापे
 ता जो देग जितना समय मांग निम्नकाब दन बलिए पहल ही दगमे दा
 चार छ वय गग जाय ता भी चिन्ता न बाजिए य माग लाजिए कि
 आरम्भका यह विस्म्व भागवा प्रगतिर लिए निग भूमिनाका काम दगा।

स्पष्ट ह कि यह दूसरा माग सिद्धा सताका ह—सिद्धाका नहा तो
 असाध्य घमक्कडाका।

म साधारण बीच बचीठा आत्मी हानक नाव न सो इतना सोभाम्य
 गाली ही सका ह कि दूसरी काटिमि आऊ न इतना विशिष्ट अभागा हा हूँ
 कि पहला काटिमि गिन लिया जाऊ। मझ यूरोप भ्रमणक लिए छ मासका
 समय लिया गया जिन खाब खाबकर मन दम मास तक बग्या किन्तु
 इतना समय भी कवठ यही भर जाननके लिए पर्याप्त होना ह कि कुछ भी
 जाननक लिए बह किन्ना अपर्याप्त ह। यात्री अरन पहूँस सप्ताहका सब
 जाननावाग-गन खा चुकता ह और चिन्तासाआका सूची भर बनाकर
 लोट जाता ह।

किन्तु जानना ही सब कुछ नहीं ह। देखना और जा देखा उसके
 बारम सोचना भा बडी बात ह। और पूवग्रहाको छड सकना तथा

पूछनेके लिए सही प्रश्नाकी सूची बना लेना—यह और भी बड़ी उपलब्धि है। आजके युगमें, जब कुछ खोजने चलनसे कुछ मानकर चलनका अधिक महत्त्व दिया जाता है और जब यात्री प्रायः कुछ देखने नहीं जो मानकर चले है उसकी पट्टि पान निकलत है तब उसका महत्त्व और भी अधिक है। यात्री अधिक पूजा न लेकर लौटता फाल्गु असवावसे छुट्टा पाकर सहज यात्रा करना ही सीध आय यदा बहुत है। मैं उन लोगोंकी बात नहीं कहता जो महासे कई गक साली श्रोले लकर चलत है और लौटते समय जिनके कपडाके हर सलबटसे कलाई घड़ियाकी लथियाँ जूताके भीतरसे छ-छ जोडे नाइलोनके मौजे या कालक जस्तरमेंसे गजाल जारजेट निकलती है। मैं उन लोगोंकी बात कहता हूँ जिनके लिए स्वर्गीय आनन्द कुमार स्वामीने बहुत दुखी हाकर कहा था कि 'आप जब विद्वानमें आयें ता वहाँके लोगो यह भी अनुभव करनेका कारण दीजिए कि आप अपने साथ सब करनेके लिए पसाके अलावा भी कुछ लेकर आये है। * इन दाना प्रकारके यात्रिकाके दूर होस नमस्कार करता हूँ। जिनकी अधिक दूर व चले जाय उतना ही अधिक बात मेरा नमस्कार।

फाल्गु असवावसे छुट्टी पाते हुए सहज भावसे यात्रा करना सीखन चलना ही मेरा उद्देश्य रहा है—विदेशात्ममें ही नहीं जीवन यात्रामें भी। इस प्रकार प्रमाणन बसरोसामान हो जानमें मयामकी नाटकी तीव्रता या आत्यन्तिकता नहीं है लेकिन इसमें मिलनवाले हल्केपनसे मुक्तिका जो बोध होता है वह कुछ कम मूल्यवान नहीं है। लेकिन अन्तिम उपलब्धिकी बात अभीसे करना दार्शनिकताका पचडा ल बठना जान पड सकता है इसलिए उस छोड जापको गन्तव्यके विमानपर बिगाकर गन्त करानेके मेरे

७ मस्युते कुछ पूब श्रमराका प्राये हुए भारतीय विद्यार्थियोंको सम्बोधन करते समय स्व० कुमार स्वामीने भारतीय सत्कारोंपर बल देते हुए यह कहा था।

प्रयत्नम मया उद्यम्य मयी ह किं दम गतम् । अगत्या अतः मया तुम्ह
 आपना भी प्राप्ता मया गतु । यत् एतं मया ह त्रिगता मृगता इति
 आवयता गता ह । ता छात्रिण गुणम अगवाप एतत् एतत् विमानता
 शकारीय त्रिण तयार ग जाइत ।

अप्रत्यर उत्तराद्वया एत राता विद्वया एत । गुण आता ।
 वास्तवमें गुण आता । यथा वि जाता । त्रिण अगम धूत या धूप होती
 ह वह तो हमार नीचे ह । और एत उगमें ह भा नहा । एतो-भी यमन्तो
 धूप हा ह बहुत बारीक धना हृई म्का-मा

यह ऊपर आकाश नहीं है
 एषहीन आलोक माय । हम अचल-स्थान
 तिरते जाते हैं
 भार मुक्त ।
 नीचे यह ताबी धनी हकी उजली
 आदल सेज बिंदी है
 हव्यन मसृण
 या यहाँ हमों अपना सपना है ?

हम नीचे उतर रहे ह । धीरे धीरे आकाश कुछ कम खुला हो आता
 ह और फिर नाच बग्न धधली रोगनी दीग्न लगती ह । विमानक भीतर
 आलकक कबिनको आद्रियाक कमरस अलग करनेवाले द्वारके ऊपर बत्ती
 जल उठती ह । पेटियाँ ग्या लीजिए — सिगरेट बुवा दीजिए । एक
 गेज सी होती ह फिर स्वर आता ह घोड़ी देरम हम लाग रोमके
 धापीना हवाइ अउपर उतरेंगे ।

भारतम राम (इटालाम रामाका अप्रजी स्प) तब २२ घण्ट लग । देगसे ब्राह्मवलाम चन्ना हुआ था और रोमम ता अभी रात ही थी । अमबादकी पत्तालमें अधिक समय नही लगा, और रोम उतरनेवाल यात्री सवारी गाडीमें बठ गय । हवाई यात्राका सवम अधिक समय लेनवाला अंग वह होना ह जब भूमिपर होते ह शहरस हवा अटड तक या अडडस गहर तक आत-आते और विमानकी प्रतीक्षाम । पर रातक सन्नाम हमारी बस बन्द तजास मडकका लम्बाई नापती चलती ह और शाघ ही हम रोम गहरम प्रवेग करत ह । म जानता ह कि दिनक प्रकाशमें राम बिल्कुल दूसरा दाखने लगगा पर इस समय भा जा दाख रहा ह वह अपूव और आकषक ह । अगूरकी कटी-छटा बलें—इतनी मोधी कटा हुई कि पौधे मालूम हा । लिलाककी शाडियाँ जिनके बकायन जस फूलके गुच्छाका रग रातमें नहा पहचाना जाता । पर मधुर गंध वायमण्डलको भर रहा ह । तरह तरहके खण्डहर जिनम कुछ चित्रा द्वारा परिचिन ह कुछ अपरिचित । स्वच्छ मुँर सडकें जहा-तहा प्रतिभा मण्डित फव्वारे—ये फव्वारे न बवल इटलीकी मूर्तिगल्प और वास्तु प्रतिभाके उत्कृष्ट नमून ह बरन पौराणिक आख्यानास इतने गुथे हुए ह कि पूरी क्लामिक परम्परा उनकी फुहारक साथ माना शरती रहती ह । नगरके मध्यम फोनाना नि ब्रेवा मानो कल्पस्रोत ह—वहाँपर यात्री जलमें सिक्का फेंककर मन्त करत ह कि उनका फिर रोम आना हा । सुना ह कि ब्रेवीकी गकिन दिल्लाक हडिया पोर से कुछ कम नहीं ह किन्तु इटली फिर आना चाहकर भी मन उसका सहयोग नहा मांगा । या उत्सुक अथवा चिन्तित प्रेमी-युगलाकी मोड ब्रेवीपर लगी ही रहती ह और विदेशी यात्रियाको म्यायो स्मृति सुख दनक लिए गिद्धाकी-भी तीव्र दष्टिवाले फाटोग्राफरान्की पकिनर्याँ भी न्ति रात कमर और रोसनोवा सामान लिथ फुव्वारक आस-पाम मेंढरातों रहती ह ।

किन्तु मं अपनी बगस भी अधिक तज गतिस चलन लगा । मुडना

बंगाली हूँ मन्त्रों और पक्करदार ऊँची-नीची गणियों जिनमें विभिन्न बालियों विभिन्न स्थापय लियारे सार-जगह मरता भान भान बंगल मुन्दर और लियारा यन् विषय और पराकी बंगालीकी अना एक अलग गीत्य लिय हूँ ? और जग-जग अत्र्यागिग म्यनाप—त्रैमे गठकवि धीता-धीच या शोरालपर गलियाके मान्य गिगारियाके गड नातर चतुररके भाग-नाम मन्त्रीके गियर पारा धार—गूनी ब्यारियो ।

अनतर रामने श्लीव यूरोपकी गलियां बारम और भी बहुत कुछ जानगा पर यह ता पन्ने ही दष्टिम गगना है जि मुरापर परान गहराकी य बंगाला गलियां एक अन्तिय सौम्य त्रिय हूँ ह । बगी सडकाको देखतर चउ जाना मानो एक लिंगपका देखकर बिना उमव भीतरके निजी पत्रकी धात पड ही चउ देता है । रोमव उग पन्त पार श्निक प्रवासर वा म न इटलीके विभिन्न गहराकी गलियामें—विनापकर फिरेज (जर्वाप प्गारेंम) पञ्जिमा अगोती वाणि मध्य इन्नेके प्राचीन गहराकी गलियामें पन्ल भटक भटक कितन घञ् बिनाय ह और कितन मील नापे ह इमका हिसाब नही ह । और इसी प्रकार पेरिसकी गलियामें और जनीवा बीएना वान एम्स्टर्डाम डल्पन स्वाटहोम आनि पुरान और कम पराने गहराके पराने भागाकी गलियाम । और सबत्र इम वानस प्रसन्न हो मका हू कि यद्यपि बडी सञ्कासे हटकर गलियामें जानवा अय सबन्त यही हुआ कि किनी गहरके बारमें दावसे कुछ बह सकना कठिनतर हा गया गलियोमें जानपर गहराके निवासी महसा एक गति-युन कम रत परम्परा-सम्पन्न जीवन्त मानव समाजक रूपम मर निकट आ गये ह पद वान गय ह । काँ पूछ सकता ह कि यदि एसा ह तो क्या उनके बारम कुछ कहना कठिनतर हो गया ह ? तो उसका उत्तर पही ह कि श्मीलिए । अस लिए कि आग सहमा एक इतर समाजसे निकट आकर धरके-से लोग हा गय ह । धरके गेगाके बारम यह बह दना तो आसान नेता है कि

बच्छ लगन ह या कि हमें नहा अ-ठ लगते पर उनका वषण करना
उनका आसान नही रह जाता ।

नीडोंमें

जब जब जिस जिससे आँखें मिलती हैं
वह सहसा दिख जाता है

मानव

भगारे सा भगवान् सा
प्रकेला ।

और इस प्रकार आँखें मिलनक वाग उसने वारमें कुछ कहना कठिन
तर हो जाता ह—इसलिए और भी अधिक कि उसकी आँखामें प्रच्छन्न या
प्रकट रूपम अपनी प्रति-छवि झाँकनी जान पडती ह

खडा मिलेगा

वहाँ सामने तुमको

अनपेक्षित प्रतिरूप तुम्हारा

नर जिसकी अनभिष आँखोंमें नारायणकी द्यया भरी है ।

यों तो ऐसे एक अकेले ध्यकितके चित्रणसे भी एक पूर देशका, सम्पत्ताका
यका चित्र साचा जा सकता ह । यूरोपके एकाधिक देशमें मुझ ऐसे
व्यक्तियाका देखन या उनस मिलनका सहयाग हुआ जिनके माध्यमसे कुछ
क्षणामें ही मुय एक पूर समाजकी—या कम-से कम विशेष दुग स्थितिचे
समाजकी जीवन-परिपाटी विजलीकी-सी कौंधके साथ दील गयी—मुझ एसा
एगा कि मन सहसा पूर दगा—बल्कि समूच यूरोपकी आत्माजी एक झाँकी
पा ली ह । जसा कि ब्राउनिंगन कहा ह

बलवानी हुई सचें और चक्करदार ऊँची-नीची गलियाँ जिनमें विभिन्न कालाके विभिन्न स्थापत्य शालियाके तरह-तरहके मकान अपन-अपन ढंगम मुंदर और शलियाका यह मिरण और घराकी बनरतीबी अपना एक अलग सौन्दर्य लिय हुए ह । और जहाँ-तहाँ अप्रत्यागित स्वलापर—जसे सडकाके बीचो-बीच या चौराहपर शलियाके मोप्पर मिपाहियाके खड हानके चकूतरके आस-पास सन्तरीके छियके चारा ओर—फलाकी बयारियाँ ।

अनंतर रोमके इटलीक यूरोपकी शलियाके बारम ओर भी बहुत कुछ जानूंगा पर यह तो पहले ही दष्टिम दाखता ह कि यूरोपक परान गहराकी य बलवता गलिया एक अन्तिम सौंदर्य लिय हुए ह । बनी सडकाके देखकर चले जाना मानो एक सिफाफका देखकर बिना उसक भीतरके निजा पत्रकी बात पत् ही चल देना है । रोमक उस पहले चार शिनके प्रवामक बात मन इटलीके विभिन्न गहराकी शलियाम—विनापकर फिरेंजे (अर्वात फारेंम) पेन्जिया असोसी आदि मध्य इटलीके प्राचीन गहराकी शलियामें पत्ल भटक भटक कितन घण्ट बिनाय ह और कितन मील नापे ह इसका हिसाब नहीं ह । और इसी प्रकार पेरिसकी शलियामें और जनीवा वीएना वॉन एम्स्टर्डम डल्फ्ट स्ट्राटहोम आदि पुरान ओर कम पुरान गहराके परान भागाकी शलियाम । और सबत्र इस बानसे प्रमन्न हो सका ह कि अद्यपि बड़ी सडकासे हटकर शलियाम जानका अर्थ मवता यनी हुआ कि किनी गहरके बारम दावसे कुछ कह सकना कठिनतर हा गया शलियोमें जानपर गहराके निवासी सहमा एक गति-युत कम रत परम्परा सम्पन जीवन्त मानव-समाजके रूपम मर निकट आ गये ह पह चान गय ह । कोसे पूछ सकता ह कि यत्ति एसा ह तो क्यों उनके बारम कुछ कहना कठिनतर हो गया ह ? ता उमका उत्तर यही ह कि इसीलिए । एम शिण कि लग सहमा एक इतर समाजस निकट आकर घरके-से लोग हा गय ह । घरके गगान बारम यह कह देना तो आसान हाता है कि

अच्छे लगते हैं या कि हमें नहा अच्छे लगते पर उनका बर्णन करना उतना आसान नहा रह जाता ।

भीड़ोंमें

जब जब जिम जिममें घाँसे मिलती हैं

बहु सहसा दिल जाता है

मानव

अगारे सा, भगवान् सा

अकेला ।

और इस प्रकार आँसू मिलनक बाद उसक बारम कुछ कहना कठिन तर हो जाता है—इसलिए और भी अधिक कि उसकी आँसूय प्रच्छन्न या प्रकट रूपसे अपनी प्रतिच्छवि आँसूय जान पड़ती है

तडा मिलेगा

यहाँ मानने तुमको

अनपक्षित प्रतिरूप तुम्हारा

नर जिसकी अनभिष्य आँसूयमें नारायणकी व्यथा भरी है ।

आता एस एक अकल यकितक चित्रणम भी एक पूरे देशका, सम्यताका युगका चित्र खींचा जा सकता है । यूरोपके एकाधिक देशमें मुझ एसे व्यक्तियोंका दखन था उनस मिलनका सहपाण हुआ जिनके माध्यमसे कुछ क्षणमें ही मुझे एक पूरे समाजकी—या कम-न-कम त्रिनेव युग स्थिति समाजकी जीवन-परिपाटी बिजलाका-ती कौषक साध दीख गयी—मुझे लगा कि मन सहसा पूरे देश—वस्तुिक समूचे यूरोपकी आत्माकी एक झाँकी पा ती है । जसा कि आइनिगन कहा है

बढ़वाता हइ सत्केँ और चक्करदार ऊची-नीची गलियाँ जिनम विभिन्न कागजे विभिन्न स्थापत्य गलियाके तरह-तरहके मकान अपन-अपन ढंगस मुन्दर और गठियाका यह मिश्रण और घराकी बनरतीवी अपना एक अलग सौन्दर्य लिय हुए ह । और जहाँ-तहा अप्रत्यागित स्थलापर—जमे सडकाके बीचो-बीच या चौराहपर गलियाके माडपर मिपाटियके खड हानन खबतरक आम पास सन्तरीके ठियक चारा आर—फूलाकी ब्यारियाँ ।

अनतर रामके दृष्टीके यूरोपकी गलियाके बारम और भी बटुन कुछ जानगा पर यह तो पहली ही दष्टिमें दीखता ह कि यूरोपके पराने गहराकी य बलवाता गलिया एक अन्तीय सौन्दर्य लिय हुए ह । बनी सडकोकी देखकर खड जाना माना एक लिफाफको देखकर बिना उसके भीतरके निजी पत्रकी बात पत् ही चल देना ह । रोमके उस पहल चार शिके प्रवासने बान मन इटलीके विभिन्न गहराकी गलियाम—विगपकर फिरेजे (अर्थात् पलर्रेम) गेरुजिया असोसी आदि मध्य इटलीके प्राचीन गहराकी गलियाम पदल भटक भटक कितन घण्ट बिताय ह और कितन मील नापे ह एमका हिसाब नहा ह । और इसा प्रकार परिसकी गलियामें और जनीवा बीएना वान एम्स्टर्डाम डल्फट स्काहाम आदि परान और कम परान गहराके परान भागाकी गलियामें । और सबत्र एस वानसे प्रमत्त हा सका ह कि यद्यपि बनी सडकास हटकर गलियाम जानेका जय मवना यही हुआ कि किमी गहराके बारम दावस कुछ कह सकना कठिनतर हो गया गलियामें जानपर गहराके निवामा सहसा एक गति-युत कम रत परम्परा-सम्पन्न जीवन्त मानव-समाजके रूपमें मर निकट आ गय ह पत् खान गय ह । काँ पछ सकना ह कि यत् एसा ह तो क्या उनके बारमें कुछ कहना कठिनतर हा गया ह ? ता उनका उत्तर यही ह कि इसीलिए । एम लिए कि लग महमा एक एनर समाजसे निकट आकर घरके-स लोग हा गय ह । घरके गगाने बारम यज्ञ कहना तो आसान हाता ह कि

बूँट लगत ह या कि हमें नहा बच्छ लगते, पर उनका वापन करना उतना आसान नहीं रह जाता ।

मीडोमि

जब जब जिस जिमसे धाँसों मिलती हैं

वह सहसा गिब जाता है

मानव

अगारे सा भगवान् सा

अकेला ।

और इस प्रकार आँसों मिश्रण वाग नमन धारमें कुछ करना कठिन तर हा जाता ह—इसलिए और भा अधिक् कि उसकी आँसोंमें प्रच्छन्न या प्रकट रूपसे अपनी प्रतिच्छवि झाँकनी जान पड़नी ह

सडा मिलेगा

वहाँ सामने तुमको

अनपेक्षित प्रतिरूप तुम्हारा

भर, जिसकी अनभिन्न आँसोंमें नारायणकी ध्यया भरी है ।

पोंतो एम एव अन्त व्यक्तिव चित्रणम भी एक पूरे रूपका सम्भवाका युगका चित्र स्यात् जा सकता ह । यूरोपक एकात्रिक रूपमें सुन्न एमे व्यक्तियोंका दखन या उनस मिलनेका महयाग नृथा जिनके माध्यमस कृष्ण दाणामें ही सुन्न एक पूर समाजकी—या कम-स-कम विनोय यग स्थितिक समाजका, जीवन-परिप्राठी चित्रणकी-या कौंसक भाव शीत्व गया—सुन्न तेगा लगा कि मन महसा पूर रूप—व्यक्ति समूह युगांतका आत्माका एक झाँका पा ली ह । जमा कि आठनिगन क्या ह

देयर आर पलगेज स्टक फ्राम मिडनाइटस

(मयरात्रिमें कभी एमी कौब हानी ह)

और म समूच यूरोपका चित्र खाचना चाहता ता यह भी कर सकना और क्वाचित वह अधिक प्रभावगाली भी होना—जि एसे चार छ विंगिए ध्यक्वियाका चरित्र उपस्थित कर दता । किन्तु उपयासकारका दष्टि पय टक्का दष्टि नहा ह । वह विन्गी आत्माको देखनकी ओर बग्गा जबकि मुख अपनी देगी दष्टिक् सम्मल विन्गी भूमिको भी रखना ह । हा मिट्टीकी प्रतिमा इन जानके बाट उसम आत्माकी चलक् जाय ता वह मरा अहोभाग्य !

अनतर यह भी जाना कि रोम यूरोपका सबम स्वच्छ शहर नही ह । बल्कि स्वाटहाम और कापनहागनये लौन्डर इटलीके बगहर (और लन्दन और पेरिस भी) बस गदे जान पडत ह जस इटलीसे लौकर भारतक गहर । और यह भी जाना कि पहली दष्टिमें रोपकी जो विनापताए लगा उनमस बहुत सी समूच दक्षिणी-पश्चिमी यूरोपम भी पाया जायेंगी और कुठ ता सार यूरोपम ।

(कभी-कभी यह भी हुआ कि विन्गी शहरामें जो बात विन्नेप जान पया था भारत लौकर पाया कि वह यहाँ भा पहुच गयी ह । उगहरण क लिए भावफतमें रग विरगी बत्तिया द्वारा विनापन लौट कर देखा कि लिलामें भी उनका प्रथग हा गया ह । या कि लन्दन और पेरिसकी दुकाना अथवा विज्ञापनाम सित्रयाक् अण्णरविपरका अतिरिक्त प्रदगन—अपन यहाँ शात्रियामें लाउन्सीकरामे गोत्रियाकी बात्का तरह बरसनवाउ घटिया कि मा गानके समान गला पाए पाएकर अपनी ओर ध्यान खीचन वाल भाट विनापन—किन्तु भारत लौकर देखना हू कि लिली और बत्कत्ताक् कर्तीय बाजारके गत्रियार भा लहीसे पट गय ह—नीवारापर

उमार-उमारकर टांगी हुई चालियाँ और जमानपर बिगरी हुई उतनी हा
भड़ी रग बिरगी पत्रिकाए । मशीन सब कुछ उपादती चरती ह मशीनके
आत्मा नन्हा ह । लेकिन मशीनका दाम हावर मनुष्य भी निरन्तर अपनको
उपायना जा रहा ह—आत्मा उसके पास नहा ह यह मानना तो कठिन
ह लेकिन वह बनाहत ह यह नहना तो सरासर झूहागा !)

सन्तके बीचमें फूट इटलीम मिल सकत ह और स्वीडनम भा,
इंग्लडम भी और जमनीमें भी । हाँ इटलीके मध्यपुगीन नियमित अलटूत
उद्यानाका सौष्टव एक ढगका ह फ्रामकी सजीली वायियाका दूसरे ढगका
इंग्लडके विशाल तर राजियोसे छाये हुए खुले हरियाणै पाकोंका और एव
ढगका और जमनाक बनोद्यानाका और एक ढगका । सहज अकृष्टित
और अनाहत भावने बढ हुए पडकी शोभा क्या हाती ह यह इंग्लडमें
ही देखनको मिग । यहाँ भारतमें पडकीचाको पूज तो अेत ह लेकिन
सहज भावम पनपने नही देते जिनको गाय-बकरोके सानक लिए इतुवन
क लिए नोच नही गत उन्हें बने ही ऐसी तग जगहमें बाँधकर रखने ह
कि उनका सहज विकास नहीं होता । चमत्कारक लिए हम यह भी सिद्ध
करना चाहत हा कि किसी जातिके स्वभाव और उसक बनाय हुए
बगीचाम समानता होती ह तो उसक लिए मनचाही युक्तियाँ हमें यूरोप
में उतनी ही आसानीसे मिल सकता ह जिनो पश्चिमात्तर भारतक मुगल
उद्यानासे या बनारसकी फुलबाडियासे । पर उस छोड दें तो इतना
अवय कहा जा सकता ह कि प्रत्येक शैलीके उद्यान अपन-अपन प्रदेश,
परिवग और जलवायुमें ही अधिक सुंदर लगते ह । इटलीके तरतीन
दार सर और मोरपखोव पेड और पलस्तरकी मर्तिया वहाँके नीले
आकाश और नीले सागरके परिपास्वमें गोभा दती ह और आस-पासक
ऊँचे-नीच प्रदेशके जतून वृशासे भरी घाटियों और सजी हसमुख नर
नारियोंके साथ मेट राती ह । किक जस वहाँके विना प्रेमा जीवना
तुर सगीत मुखर शृंगार-वृत्ति लगाने वाच काले या भूर लवादे और

काठ या उनावी टाप पहन हुए क्वालिक पादरी और श्रमण सहज भावसे अपनका खपा लत ह वस हा अपनम लिप्ट तिमरे य सम्भ्रात मारपखा था भी बहाका दग्ग-परम्परामें अपना स्थान बना लत ह । और उहा उद्यानाका जब हम किसा गिरजाघरस सलग्न बिहारका चार दावाराक अंदर बंद पात ह ता दीवारक परान पत्थराक साथ इन वखाका कत्रान्त उदासीन भाव फिर एक नया सामजस्य प्राप्त कर नेता ह मानो विलासितासे ऊया हुआ काई अभिमान रसिक अब दूसरको याद दिना रहा हो कि कालो न जीर्णो बयमेव जीर्ण !

किन्तु गात्रीन उद्याना और मधुनायिनी अगूर-बलाकी चर्चसे यत् न समथ त्रिया जाय कि पश्चिमका जीवन अचञ्चल गतिसे चलता ह । पत्ली दष्टिमें यही सदस बना अतर पूव और पश्चिमका दाखता ह पूवका जीवन विलम्बित तयमें चलता ह और पश्चिमका द्रुत लयम । और भारत में तो हम—भोजनाओके बावजूत । आलाप लनम ही खाय रहत ह । या और दगाकी अपेक्षा इटली कुछ धीर चलना पसंद करता ह और जब-तब विध्राम करन या गलीक मोम्पर विलमानको तयार ह फिर भी वह असदिग्ध रूपस ह पश्चिमी दग हा । कम स कम आधुनिक इटली । परा कालमें जब वह पूव नहा तो मध्यपूवस आक्रान्त था रोमिक लोग अधलन्त भाजन करत थ और एक् ब्यालूमें छ घण्ट घीत जाना साधारण बात थी पर आजका रामी खल खड हा खाना ह । खानक बादका विध्राम वह अनिवाय मानता ह और इमलिए यूरोप भरमें इटलीके दफतरामें लचकी गम्बी छुटा हानी ह—नियमत दो घण्ट पर यवहारम तीन घण्ट । किन्तु दूसरी ओर वह काम देरतक करता ह और उसकी कारीगरी प्रसिद्ध ह । यूरोपम सबर उगत ही जावनकी दौड आरम्भ होती ह और राततक चगी ही जानी ह । मरा अनुमान ह कि औसत यरोपीयको प्रतिदिन छ-सात घण्ट ता परापर सन्-खल वातन ह—अधिक भी ह्रा ता अचम्भा नही । फिर वह खल रहना चाण घरपर नाना बनान समयमा खल रहना हो

चाहे ट्राम-बसमें दफ्तर जातेका सडा होना, चाहे मिनमाने टिकटके लिए लगी बत्तारका खर होना । और चाहे खाते-पीने समयका खडे होना—क्याकि प्राय निम्न एक बार ही बठकर भाजन किया जाना होगा ।

ऐसा क्या ह ? यत्रान इतनी सुविधा दी ह सा क्या केवल खड होनेके लिए ? हाँ, यत्रने साधन बहुत दिये ह, माग बहुत खाल ह हर यकिनवा यह लिखा गया ह कि वह तनिक और उनके तो कुछ और पा लंगा तनिक और तेज चले ता कही पहुँच जायगा । और इसलिए सारा जीवन लपककर कुछ पा लनका दौंवर कहीं पहुँच जानेका एक अन्तहीन प्रयाम हो गया ह । यदि आकाशाका प्रेरणास ही ऐसा होता तो भो कुछ बात थी—भारतीय दान कहता रहता कि आकाशाका अन्न नहीं ह पर पद्विचमकी अहकी तप्तिका गहरा सत्ताप मिलता रहता । पर बहुत-से यूरोपीय पहचानन गग ह कि आकाशाको प्रेरणास भी बलवती निर यत्रनी अनिवायता होती जा रही ह दौड इसलिए नहीं ह कि दौडना चाहत ह इसलिए ह कि रुक नहीं सकत । अहकी पुष्टि लिए बनायी गयी मशीन ऐसी हावी हो गयी ह कि वह यकिनका ही कुचने दे रही ह वह अपनको अधिकाधिक नगण्य पाना हुआ दौड रहा ह, दौड रहा ह और दौडता हुआ भी क्रमग और नगण्य होता जा रहा ह । अस्तित्ववादके नामपर यूरोपमें जो कुछ आया राब स्वस्थ नहीं था, पर जो स्वस्थ था उसके मूलमें इसी अविचनत्वका साहसपूर्ण सागान्कार था और मानवकी इस परिस्थितिसे उबरनके मागकी खोज । मात्रका मन्लीका दान केवल 'न कुछ के आर्तवकी छटपटाहट ह जा गानि उत्पन्न करती ह, पर ग्रेविएल मार्मेल और काल यास्पसका दान आधुनिक यूरोपाय विननकी मौलिकता और साहमका प्रमाण ह । यास्पसस मरी भेंट और मनोरजक बातचीत भा हुई थी उनस हाथ मिंगते हा लगा था कि चारा आर छायो अगातिव बीच यह यकित शात स्थिर और अर्धचक ह—कि उसा कुछ पाया ह । कहना न होगा कि यूरोपमें ऐसा अनुभव बार-बार नहीं हुआ !

काठ या उनाबी टोप पहन हुए कथालिक पादरी और ममण सज्ज भावम अपनको खपा लेन ह वसे ही अपनमें लिप्ट सिम्ट य सम्भ्रान्त मोरपखी झा भी बहाकी दय-परम्पराम अपना स्थान बना त ह । और उहा उद्यानाको जब हम किसी गिरजाधरस सलग्न बिहारकी चार दावाराक अन्तर बढ पात ह तो दीवारक पुरान पत्थराके साथ इन वक्षाका बलान्त उदासीन भाव फिर एक नया सामजम्य प्राप्त कर उना ह मानो विलासितास ऊबा हुआ कोई अभिजान रमिक अब दूसरको यात्रा टिंग रहा हो कि कालो न जीर्णो वयमेव जीर्ण !

किन्तु गान्धीन उद्याना और मधुनायिनी अगूर बलाकी चर्चामे यह न समझ लिया जाय कि पश्चिमका जीवन अचचल गतिमे चलता ह । पहली दष्टिमें मही सबसे बग अन्तर पूव और पश्चिमका दाखता ह पूवका जीवन विलम्बित लयमे चलता ह और पश्चिमका द्रत लयमे । और भारत म तो हम—योजनाओके बावजूत ! आलाप लेनमे ही खोय रहत ह ! या और दगाकी अपेक्षा इटली कुठ धीर चलना पसन्द करता ह और जब-तब विधाम करन या गरीक मोन्पर विलमानको तयार ह फिर भा वह असदिद्य रूपमे ह पश्चिमो दग ही । कम से कम आधुनिक इटली । पुरा कालमे जब वह पूव नही तो मध्यपूवसे आक्रान्त या रोमिक लोग अधलेत भाजन करत थ और एक यात्रुमें छ घण्टे बीत जाना साधारण बात थी पर आजका रामो खड खट हा खाता ह । गानक बादका विधाम वह अनिवाय मानता ह और इसलिये यूरोप भरमें इटलीके दफतराम लचकी म्बी छुटा हाता ह—नियमन दो घण्ट पर व्यवहारमें तीउ घण्ट । किन्तु दूसरा आर वह काम दरतक करता ह और उसका कारोगरी प्रसिद्ध ह । यूरोपमें सवर जगन हो जावनका दौड आरम्भ होती ह और रातनक चती ही जाती ह । मरा अनुमान ह कि औसत यूरोपीयको प्रतिदिन छ-भात घण्टा परापर खट-खट बातल ह—अधिक भी हा ता अचम्भा नही । फिर वह खट रटना चाट घरपर नाचना बनान समयका खड रहना हो

चाहें ट्राम-बसमें अन्दर जातका सड़ा हाना चाहे मिनेमाक टिकटके लिए लगी बनारका सरे होना । और चाहे गात-मीने समयका सरे होना—क्याकि प्राय तिनमें एक बार ही बट्कर भाजन किया जाता होगा ।

ऐसा क्या है ? यत्राने इतनी मुविधा दी है सो क्या बेवजह होनके लिए ? हाँ यत्रन साधन बहुत दिये हैं माग बहुत खाते हैं हर व्यक्तिका यह लिया लिया है कि वह तनिक और लपके तो कुछ और पा ल्या तनिक और तज चलता कही पहुच जायगा । और दमलिए सारा जीवन लपककर कुछ पा लेनका दौकर कहां पहुच जानेका एक अन्तहीन प्रयाम हा गया है । यदि आकाशाकी प्रेरणास हा ऐसा हाता तो ना कुछ बात थी—भारताय दान कहता रहता कि आकाशाका अन्न नहीं है पर पश्चिमकी अन्की तथिवा गहरा सताप मिलना रहता । पर बहुत-से यूरोपाय पन्चानन गग है कि आकाशाकी प्रेरणास भी बलवनी निर यत्रकी अनिवायता हानी जा रही है दौड इमलिए नहा है कि दौडना चाहते हैं इमलिए है कि रुक नहीं सतत । अन्की पुष्टिक लिए बनायी गया मगोन एसी शक्ती हो गयी है कि वह व्यक्तिका ही कुचने दे रहा है वह अपनकी अधिकाधिक नगण्य पाता हुआ दौड रहा है, दौड रहा है और दौडता हुआ भी क्रमग और नगण्य हाता जा रहा है । अस्मित्ववाक्ये नामपर यूरोपमें जा कुछ आया भव स्वस्थ नहीं था पर जो स्वस्थ था उनके मूलमें इसी अविचनत्वका साहसपुण सागाकार था और मानवकी इस परिस्थितिसे उबरनेके मागकी रोज । मानवा मतलका दान केवल 'न कुछ ब' आनकको छटपटाहट है जा गगनि उत्पन्न करती है पर प्रेजिएल मासे और फाउ मास्पसका दान आपुनिक यूरोपीय चिन्तनकी मौलिकता और साहसका प्रमाण है । याम्पयत मरी भेंट और मनोरजक बानचीत भा नई थी उनस हाय मिगत हा गगा था कि चारा और छापी अगातिव बीच यह ध्यक्ति धान्त स्थिर और धर्चवत् है—कि जगन कुछ पाया है । कन्ना न होगा कि यूरोपमें ऐसा अनुभव बार-बार नहा हुआ ।

किंतु रोम ! रोम और इटली और वहाँके लोग । अन्तर्विरोध सबत्र हात ह, और पुरान दग और परानी सम्म्यताम कन्तचित अधिन होन ह । इटालियन बडा हसोन् प्राणी ह । हसता-हमाता चलता ह हर समय हगन को तयार ह । एक तिन किमीस पूछा— आज क्या ह—सामवार ह न तो तपाकमे उत्तर मिग— जो हा आज सारा तिन सोमवार रहगा । लकिन दूसरी ओर कभी यह भी लगता ह कि उसमें विना भ्रात्र विन्कुल नहा ह । छाटा सा बातपर बगडा हा सकता ह । शृगारिकता इटालियन स्वभावका अविभाय अग ह और अलाउ कहानियाँ कहनमें वह दवा-दत्र ताआको भी नहा छाता । फिर दूसरी ओर उमम एसा दकियानूसीपन भी ह कि प्राचीन मूर्तियाकी नग्नता डकनके लिए उनपर पल्स्तरके छाट छाट टुकड चिपकाय गये ह । और इम अत्याचारमे मिक्लेण्जगेकी भन्म मूर्तियातक नही बकनी गयी ह । रोममें वाटिकानके—पापकी वह नगरी जो ससारका कदाचित सबसे छोटा राय और सबसे बड साम्राज्यका कन् ह जो एक ओर साँ पिएनोके विशाल गिरजाघरका पिठमाडा भर ह और दूसरी ओर ससार भरम बिलर हुए थदाल कथोत्रिकाकी भक्ति पाता ह— वाटिकानके सग्रहालयमें देखा कि देव गिगआकी मूर्तियातकनी पल्स्तरके बन हुए अजीरक पत्तेकी लगेटा पहनायी गयी ह । सुनकर इस बातका विश्वास नही हाता पर देख आया ह कि एसा मूसतापूण सकीणता वहाँ भी हो सकती ह—और उनमें जो कला रचिके सरसक और विधाता ह । सग्रहालयस जल्नी जल्दी निकलन हुए मन-न मन उन स्वदेशी दुग्गोफा स्मरण क्रिया जो खजुराहा मल्निकाके ध्वस कर दना चाहन ह । मात् आया कि एक इटालियन मि न कहा था सारा इटली देखना पर वाटिकानक सग्रहालयमें न जाना । वह इस बातका स्मारक ह कि कैसे धम थदा और प्राम्यता (बगोरिटा) सन्मिोंनक साय-साय चल सकती ह । इला इम बातका साथी ह कि महान कला धमक साय-साय ही चत्रती ह—जसे कि भारत भी इसका साथी ह । पर रोमका एक सग्रहालय ही

सिद्ध कर सकता है कि धमकी ओटम कलाकी कसी मिट्टी-मलीत हो सकती है—बल्कि श्रद्धाके नामपर धम और कला दानाकी । वैसे ही जैसे बनारस के एक घाटकी सादियापर बिछे हुए चित्र ही खिखा सकते हैं कि लेकिन इस वाक्यको अचूरा छाड़ देना ही श्रेयस्कर होगा । इतना ही कहूँ कि इटालियन लोग यूरॉपके हिट्टुस्तानी हैं । उनके गुण-दोष दोनोंका ही वर्णन हम वाक्यम आ जाता है और इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता कि जिसे हम गुण मानता हैं उसे आप दाप समर्थें, और जिसे हम दोष समझता हैं वह आपकी दृष्टिमें गुण हो !

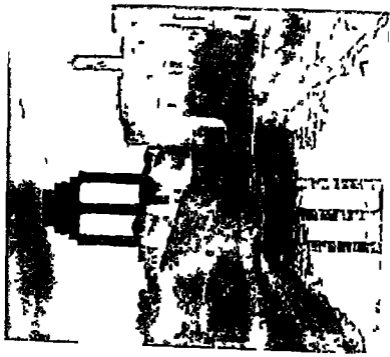
रोमका नगर परम्परागत सात पहाडियापर बसा हुआ है । सातकी संख्या अक्षरशः न लेनी चाहिए, सारी धस्ती कुछ चौटियाक बीचकी लहरोली भूमिपर बसा हुई है और कई स्थानासे आस-पासके प्रदेशका अत्यन्त मनोरम दृश्य देखा जा सकता है । अपना अपनी रुचिके अनुसार लोग अलग अलग स्थलासे दीखनेवाले दृश्याका प्रशंसा करते हैं । प्राचीन रोमिक खण्डहराके आस-पासके प्रदेशमें भटकना मुझे विशेष रुचिकर हुआ—ध्वस्त इतिहासके खण्डाके बीच पर रखत हुए चलनेके कारण ही नहीं बल्कि चारा ओर बिखरी हुई गोभाके कारण । कोलोसियमका विनाश क्रीणामच और उसका निकट ईसा पूर्व देवी देवताके ध्वस्त मन्दिर दूरकी वे गुफाएँ जिनमें ईसा पूर्व रोगी आश्रय पात थे और फिर आरम्भिक ईसाई धारण लेते रहे चारा ओर ढलती हुई दूर जाकर अगूरक उद्यानामें खो जाने वाली सड़कें एक पद्मगाह जिनमें एक दूसरे से थोड़ी दूरीपर एक ओर मन्त्रके एक सम्राट और दूसरी ओर मुना कवि काटसका समाधि है इस्पानी चौक (पियाल्सा डि इस्पाना) की सीलिया (स्कालिनाटा) जिनपर गैलीकी स्मृतिर्पा माना दवे-पाँव चलती हुई घूम सकती है—मेरे लिए यह सब दृश्याणीय और स्मरणीय थे । लेकिन किसी भी गिहरसे देखे हुए परिदृश्यको पूरा तरह आत्मसात करनेके लिए आवश्यक है कि रोमके बीच सर्पिल गतिमें बढ़त हुए टवरो (अप्रेडी टाइवर) नन्के किनारे

किनार कुछ भीलातक चला जाय । नदियाँ एकस एक सुन्दर कई देखा और बनारसने घाटाका अपना अद्वितीय रूप ह । गङ्गिन टवराक किनारे बस हुए रोमका आना अनिवचनीय ह । असलमें नयी कहनस भारत वासीके सम्मुख जो चित्र आता ह वह मात्रा फली हुई रता या जल विस्तार (और दोना किनार नाना प्रकारकी गद्दगी) का होता ह । यूरोपकी नदियाका पाट उतना चीना नहा हाता टवरा तो जाडाकी गोमतीसे अधिक नही ह । लकिन दोना आरके पवन किनार उस एक बलवानो नहरका स्वरूप दे दत ह और नया किनारकी सर घाटाकी या कठाराकी सर न हाकर नगरकी भी सर हा जाती ह । नहरस भी लघ इस नयाका नए उसक पुनामक कारण कहना होना ह । रामिक आग उसे पितवन मानत थ ।

नया विस्तार नयी दिल्ली भा शायद रामको रात पहाडियाके समान सुन्दर हा गवनी—यदि हमन साना पहाडियाको खोदकर सपाट न कर दिया होता और यदि स्थापत्यका हमारी अपना परम्परा होती । परम्परा क नामपर जो महान् वष या उससे अधिक पुराना ह उमीका इगित करनक हम इनन अम्पसन हो गय ह कि इस बातको भूल ही जात ह कि परम्परामें जा पूवापरत्व निहित ह वह तभी सायक हा सकता ह जब कि पूव न साय अपर भा हो । हम पूर्वोन्मुखताक नामें अपनस यह पूछना हा भूल जात ह कि अपर क्या ह । या रोमन रामिककाल और मध्यकालका ही सब उल्लेखनीय नहा ह । उनका परम्परा प्रथम महायुद्ध तक अशुण्य चनी आयी ह । उमक बाद मसोलिनीकी शालीका स्थापत्य मुझ तो अच्छा नहा लगा किन्तु वह अलग बात ह । मरी रुचिका भी दोष हा सकता ह । सबसेसत्ताक शासनमें बढ्यपनपर बल दना अनिवाय हो जाता ह और चारित्रिक गहराईकी विनिष्टता गौण हो जाती ह । राममें



रामा कोलोसियमके रोमिक सडहर



रामा रेमिक चाक [फोरम] पर सूर्यास्त



रामा इस्मानी चाक



रामा कवि फाटसका समाधिपर

या इटलीमें, अयत्र, मुसोलिनी द्वारा बनवाय हुए चौगाना या उनक आस-पासकी इमारताम बष्पनके सिवा सौंदयका बाई गुण नही था । और ठीक यही बात मुझे पूर्वी बलिनकी स्टालिन आला में भी जान पडी । बल्कि दानामें कुछ एसा असाधारण सोम्य था कि म स्वय चौक गया था ।

अत्याधुनिक स्थापत्य भा रोमम ह रोमके नये रल्ब स्टेशनका जो कि काँचका घर सा मालूम होता ह उखेख वहाँके लाग गवपूवक करत ह । पर आधुनिक बहुत कुछके रहत भी इटलीको यूरोपकी माता माननके कारण हमारा ध्यान पुरावस्तुआकी ओर ही जाता ह—और मध्ययुगाकी गौरव-वस्तुओकी ओर सान पियेनीके अलावा त्रिनिता दद मोती साता मरिया मज्जोर और पथीजानके प्राचीनतर गिरजाघर मिनेठ एजला द्वारा मडित सिस्टीन पूजागार जिसक विशाल भित्तिचित्र मानव मात्रकी अपूव निधि ह क्विरिनाल और वावैरीनी महठ रामिक कालके सभाभवन, (जूलियस, आगुस्टस ओर टायानके सभा भवन या व्यापार केंद्र) रगशाला (कोलोसियम), स्नानघर (काराकाल्ला) और मन्दिर (वीनस और रोमा) और इहें एक दूसरमे मिश्राने या पृथक् करनेवाठे निखर भाग और पौर इन्हीस प्रेरित वायरनन गाया था ।

“रोम ! मेरा देग ! आत्माकी नगरी !

सभी अनाथ हृदय तेरी ओर मुडते हैं ।’

एहीमें यह परम्परा मोती ह जो साथी भा जीवनका स्पन्दन देती ह और तिसके कारण रोमना नगरी आज भा अपना नाम साथक करता ह । चिविता एर्ना—अमर नगरी

विद्रोहकी परम्परामें

मुसोलिनीका इच्छा है। फासिस्ट सत्ताका आतंक जिसमें ऊपरी प्रगति और समृद्धि और साम्राज्य प्रसारकी हल्चलके नीचे जन मानसकी कुण्डा और प्रबुद्ध वयवा आक्रोश छिपा हुआ है। इस जात्राकी रूप या गन्तव्य न मिलत है। एसा नही है। किन्तु उस वाणी अभी तक नही मिली। और फिर ऐसी वाणी जिसकी लक्ष्यकार सबको विवश कर दे वह तब न जान कब कहां उठेगी।

सन १९११की तीसरी अक्टूबरका सायंकाल। ८ बजेका समय। निरभ्र गन्तुका नाल आकाश। सहसा रोम नगरके अनेक मीनारसिंभिदे हुए। विजयपर एक विमान प्रकट होता है। बहुत नीचे उड़ता हुआ वह नगरीके एक मकानमें एक मकानके ऊपर मण्डलकार घूमता है—यह मकान एक यवक कब्रिका है। क्या विमान उसीका अभिवादन कर रहा है? फिर वह आगे बढ़कर पियात्मा सिं स्पायाके सुठ चौकपर मडराता है जिसके छारपर एक छोटे ऊंचे मकानमें रहत हुए कभी शलीन मानव मात्रकी स्वप्नत्रयीका स्वप्न देखा था। चौक पार करके विमान मानो स्कालानाटाकी भय सीलियाके ऊपर आरोहण करता हुआ-सा मुग्धता है और विचित्रा उद्यान तथा बागोंके भवाका चक्कर काटता है।

आध घण्टे तक रोमकी जनता कौतूहल और आश्चर्यमे भरी उम विमानकी मनवाला उद्यानको देखता है जो मानो रोमकी सत्ता गलिया भवन उद्याना चौक-हवेलिया कटवाघर और रणगात्राआ और सबमें दम है। य जान जानवाके व्यक्तिपामेंस प्रत्येकका अलग-अलग सम्बोधन

करके विरोध कुछ, अत्यन्त आवश्यक कुछ, तात्कालिक कुछ कहना चाहता है।

क्या कहना चाहता है ? विमान यत्र है स्वयं इसका उत्तर नहीं दे सकता। और चालक उस यत्रके अनुपासनम यस्त है। उसे बोलनेका समय नहीं है और न उसकी बोली ऐसी स्थितिमें सुनाई दे सकती है। किन्तु उसे जो कहना है वह माना अजल धारामें विमानसे थर रहा है। जससे विमान क्षितिजके ऊपर प्रकट हुआ है तबसे उससे पश्चिमीकी एक छरी बरसती रही है। इटलीके राजा और प्रजा दोनोंका आवाहन करती हुई यह चार्ग लाव पश्चिमी। अभिनव दासताकी शृंखलामें जकड़ी हुई जनताका स्वाधीनताका सन्देश दे रहा है। वह सन्देश एक अकेली अन्ध आत्माका नाटकीय आवाहन भर रह जायगा या कि जन-जनके अवचतनमें डूबकर अघवारमें विद्रोहके बीज वा सकेगा इससे उस अनासक्त यक्ति को इस समय कोई प्रयाजन नहीं है जिसने उन पश्चिमीका सन्देश लिखा छपाया और अब विमानमें भरकर उन्हें वांटता हुआ रामके आकाशपर उड़ रहा है। वह मानो आकाशमें बाज बो रहा है कब उनसे पीडा अकुरित होगी, कब कमा फलेगी, उसे क्या फल देगा इसकी कान्शासे वह पर है—जसे कि सूयकी ओर उड़नेवाले सभी इकारस* पर होते हैं भले ही उनके पक्ष पुलसवर क्षर जायें और वे सागरमें खो जाय।

आधे घण्टेके बाद सभी पश्चिमी चुकाकर विमान सागरकी ओर मुड़

* इकारस यत्रवित् डेडालसका पुत्र। ब्रोट द्वीपमें राजा माइनोस द्वारा बन्दी किये जानेपर डेडालसने अपने और पुत्रके लिए पक्ष तयार किये थे उड़ते समय डेडालस नीचा उड़ता रहा किन्तु इकारसके सूयकी ओर उड़नेके कारण उसके पक्ष गल गये और वह सागरमें गिर गया।

जाता ह। सागर अधिक दूर नहीं ह कुछ मिनटों ही विमान नाच ही उमी जथाह नालिमाम घिर गायगा जो उमन ऊपर छाई हुई ह।

और उसके अत्यन्त हात न होत गितिजपर दूसर अनक विमान प्रकट हात ह। य सरकारा विमान ह या गिकारी विमान ह। स्वतन्त्रताका जा अनधिकृत ललकार नगरक नियमित वातावरणम नौव गया ह क्षपटकर सम मार डालना हा इनका उद्देश्य ह।

इस आग एक बहुत बड़ा प्रश्न विराम ह जिसम वह पवित्रयुक्त मुक्तिदूत खो गया ह। वह विमान अपन आपमें सागरम छा गया या कि गिकारिया द्वारा मार गिराया गया इसका कोई पता नग ह। किन्तु युवा विमान चात्रक कवि लाउरो ड वासिसका सदाग और अपनी अन्तिम विमान-यात्रास पठठ एक बचके नाम भजे गये पत्रका अन्तिम साग। मरी मत्वका इतिहास अविस्मरणाय ह।

लाउरो ड वासिसका जन्म सन १९०१में हुआ। उसका पिता एडालफो ड वासिस इटलीके निवासी थ और स्वयं कवि थ माँ जमरीकी थी। लाउरोका बाल्यकाळ गान्ति और स्वाधीनताके वातावरणमें बीता किंगोर अवस्थामें उसकी यूरोपकी अनक मन्व्य प्रतिमाका प्रभाव ग्रहण करनका अवसर भा मिलता रहा। पिता न केवल गलीके कामक प्रेमी थे वरन उसका मन्व्येष्ट इंगरीय अनवाचक भा। लाउराक दायम न केवल लागती परम्पराक उत्तम गुण मिल बल्कि एग्लामन्मन परम्पराके भी। एक ओर गलीका आत्म स्वतन्त्रता प्रम था ता इसरी ओर इटलीके पुनर्जागरण काका आत्म सदापना।

यक लाउराका गिमा भी अमाधारण रनी। लटिन और ग्रीकके साथ-साथ धनासा और अग्रेग साहित्यम भा उसकी गहरा पठ थी साहित्य और कलाका गिमाक साथ-साथ वह प्रसिद्ध गितानी और तराक

भी था। विज्ञानका अध्ययन करके उसने राम विश्वविद्यालयमें डाक्टरकी उपाधि प्राप्त की।

किन्तु लाउरोका मनोनीत क्षेत्र काय ही था। अपवयमें ही इस्काइसके प्रामथियुस तथा जम्म फ्रेजरके बहू ग्रय गाल्डन बाबा का अनुवाद उसने कर लिया था। किन्तु उसका मुख्य रचना इतारा नामका गीति नाटय थी जिसके लिए उस सन १९२७में एम्टरडामस आम्पिक पुरस्कार भी मिला।

क्या और विज्ञान दोनोंके प्रति समर्पित आर्गामिमुख कवि इकारस की गाथाके प्रति आकृष्ट हुआ हा यह स्वाभाविक ही ह। यत्रवि डे डाल्सके पक्ष लगाकर सूयकी जार उडना चाहनवाले पुत्र इकारसकी दु खान ग्रीक गायाने अनक युगाके कवियाका आकृष्ट किया ह। लाउरोक लिए उस गाथाका आकषण समकालीन सदभम और भी तीव्र हो उठा था। उसका गीति नाटय इकारोका विषय था—विज्ञानक द्वारा भौतिक वचनसे मानवकी भुक्ति-चष्टा। डेडाल्सका उडाकर आततायी गामककी दासता से भक्ति चाहनमें लाउरोके लिए एक समकालीन महत्त्व भी था। इस प्रयत्नमें इकारस रपम अपना सवम्ब खाकर डेडालम हठान उस समस्या क सम्मुख खडा हाता ह जो कि आधुनिक युगकी एक मू समस्या ह। और जा आज हमार सम्मुख और भा डरावन रूपमें आ खनी हुइ ह— विज्ञान और तात्कालिक यथायकी समस्या। डेडाल्स उनेवाल यत्रका आविष्कारक ह किन्तु आततायी गामक उसीका उसके उपयोगमे वचित करता ह। उपयोगका अधिकार अगली पीलीके दायमें मिलता ह— और अगली पीली अपनी यातना और बलिदानके द्वारा उसका मूल्य चुकाती ह। किन्तु यह दु ख-गाथा दु गान-गाथा नही ह विभ्रामेंस फिर मानवकी अन्म्य और अजेय आत्मा उठ खडी हाता ह।

जब हम स्मरण करते ह कि इस गीति नाटयकी मूल प्रेरणा लाउरो को वहासे मिली तत्र यह और भी स्पष्ट हो जाता ह कि इस कव्यनाका

उसके जपन जीवनपर कितना प्रभाव रहा। कल्पना गमित आर्गोमुल जीवनका एसा उदाहरण आसानीसे नहीं मिलता। लाउरोन अपनी माँकी एक फ्रासीसी कविकी इकारस-सम्बन्धी एक कविता पढ़त हुए सुना था। जिसकी कुछ पक्तियाँका जाण्य था— वह मर गया उच्च साहम कमक आह्वानका सामना करत हुए—आकाश उमकी आकाशाका ग्य और सागर उसका समाधि। ह क्या इससे भा सुन्दर कोई चित्र इस सम्पन्न तर काइ निष्पत्ति।

यही सुन्दरतर चित्र यहा सम्पन्नतर लाउरोन अपन जावनम प्राप्त कर लिया—आकाश उसकी आकाशाआकी सीमा सागर उसकी समाधि।*

अपनी किगोरावस्थामें लाउरो उ वासिसको फासिस्ट आदोलन प्रगतिकी सम्भावनाआ और जावनात्साहस भरा हुआ जान पण था—यह भूत उसकी पाणीके और भी यवकान की थी लेकिन लाउरो अधिक तिन धोखम नहीं रहा। जहा कई दूसर राजनातिन और व्यवहारकुशल व्यापारी उन्नति और समद्विका सम्भावनाए देखकर यस्त ही रह थ वहाँ कवि लाउरोकी दष्टिन आगक अघकारकी स्पष्ट देखा। तबतक उसन राजनीतिम कोई क्रियात्मक भाग नहीं लिया था किन आनवाली दासता की सम्भावनाए देखकर उसन अनुभव किया कि अब आर्गोव स्वप्न दखनना समय नहीं ह। उसन पहचाना कि आतनायी सत्ताका आतक ब्रमण बनना जाना ह और उस गक्ति इस बानन मिलती ह कि उसकी

*गैलीने भी इटलीके पश्चिमो सागर तटपर—रोम और जनोआके बीच—नौका बिहार करते समय जल-समाधि पायो थी। उसकी नौका का नाम था एरिपल—यामु-सन्तान गेवसपियरके नाटकमे एरिपल एक यामयी जीव है मिल्टनक महाकाव्यमे एक विद्रोही फरिश्ता। मृत्युक समय कीटसकी कविता पुस्तक उसक पास थी। —लेखक

विद्रोहकी परम्परामें

आरम्भिक अवस्थामें लग उमका सम्भारता नहीं समयते या कि साह्य
 पूर्वक उमका विरोध नहीं करते। सभी अत्याचारी गामक उदासीनता
 और शिथिलतामें पतपत ह। कुछ विवासी बघुआके माय एक छाटम
 का मगठन करके लाउरोन इस आण्यकी पंचिया छापवर वाटन
 आरम्भ किया कि उसके देगासियाका फामिस्ट मराचिकाके पारका भया
 नक मञ्चाइको दयना चाहिए और घोपिन किया कि फामिस्टको हार
 अनिवार्य ह।

इन हरकतका जो परिणाम होना ह वही हुआ गउराका दग
 छापर जाना पडा लेकिन विनामें भी उमन अपना काय नहीं छाडा।
 कुछ समय तक उमे पेरिमक हाटगमें द्वागपालका काम भी करना पडा
 लेकिन वह हताग नहा हुआ। किनु रोममें अपने दा बघुआकी गिरफ्तारी
 और पलिम द्वारा उल्पीडनक समाचारस उमका धय टूट गया। अनक
 बघुआमें ऋण उ लेकर उमने एक छोटा हवाई जहाज खरादा। विमान
 संचालनका गिगा ली और अपने सात्त्विक अभियानक लिए तयार हा
 गया। जिम समय वह अपने इवन पला और लाल घडवा विमान
 पर, जिमका नाम उमने पगाम* रता था सवार होकर मासेसे रामक
 लिए रवाना हुआ उम समय उस अवेग विमान चगनका कुल ५ घण्टेका
 अनुभव था।

इम अन्तिम उडानक लिए हवाई अड्डका बार जाते समय उसन एक
 पत्रकार बघुनो मेरी मत्युका इतिहास नामका एक अन्तिम साग भेजा
 था। जिमके कुछ अग इग प्रकार थ।
 मेरी पक्की धारणा ह कि फामिस्ट तब तक परास्त नहा होगा जब

* वेगासस एक पलपुक्त घोडा था जिसपर क्ला देवताओंकी
 विधेय घनुकम्पा थी। शीस्पतरकी मनोजात यादेवी मिनबनि उमे
 पाला था।
 —लेखक

तक कि बीसिया युवक इटालीय जनताकी मन गद्विके लिए अपन प्राणाका बलिदान नही करण । पनस्त्यान यगम सकडा युवक अपन प्राण दनक लिए तयार थे । किन्तु आज एस यकित बहुत कम ह । क्या ? एसा नही ह कि उत्तम अपन पुरखाका अपेणा कम साहस हो या कम विश्वास हो कारण यह ह कि अभी तक किसीन फासिजमका गम्भार महत्त्व नही लिया ह । क्या नता और क्या साधारण युवक सभी समझत ह कि फासिजम अधिक तिन नही चल सकता और उन्हें एसा लगता ह कि जो अपन आप मिट जान वाला ह जम्के लिए प्राण देना यथ ह ।

लेकिन यह भूल ह । हम बलिदान देना ही होगा । म आगा करता ह कि मर वाट दूमर भा हाग और उन्हें जनमतको जगानम सफलता मिलगी ।

लाउराको विश्वास था कि जीता रहनका अप न मरकर म अधिक उपयोगी हो सकूगा । उसका यह विश्वास यथ नही गया । अपन गाति नाटय इकारोमें उसन लिखा था—

किन्तु मेरा स्वप्न वह सत्य होगा शस्त्र युक्त होगा

और वह रणसकुलधे मध्यमे होगा ।

और भ्राजका स्वप्न कविम उज्जावित करता है ।

नये प्राण नया सामर्थ्य गति एक नयी पार्थिव शक्ति !

लाउरा स्वयं सागर और आकाशक रहस्यमय नीलिमामें खो गया लेकिन यह सामर्थ्य गति यह पार्थिव शक्ति बराबर क्रियमाण रही ।

और बीन कह सकती ह कि आज भी कविका स्वप्न उतना ही यथाथ और उतना ही शस्त्र सम्पन्न नठा हाना—नही ह ?

यूरोपकी पुष्पावती : फिरेंजे

फिरेंजे—अंग्रेजी स्थापनामें पलोरस—पूलाकी नगरी अथवा पुष्पावतीके रेलवे स्थानके बाहरका चौक जहाँसे कई सड़क अलग अलग दिशाओंमें जाती हैं। इस यायावरको अपने अनुकूल पर्यावरण खोज लेना कुछ ऐसा अभ्यास हुआ गया है कि वह मानो मूषकर पहचान लेता है कि उस किस दिशामें जाना चाहिए या कौन-सी सड़क पकड़नी चाहिए। इसी लिए उसने बिया साता बटरीनास जाने बदनका निश्चय कर लिया है। किन्तु मोड़पर एक मुमकरात हुए युवा सिपाहीको देखकर वह सोचता है कि रास्ता पूछ ही लिया जाय क्योंकि दाना हाथोंमें एक एक बग उठाये हुए जितना बग चलना पड़े उतना ही अच्छा है। एक बार बमरा ठोक करके मामान रख बदनके बाद तो रास्तसे भटक जाना भी प्रातिकर और मनारजक हो सकता है। सिपाहासे जो बात-चीत हुई उसे यह यायावर गामद कभी नहीं भूंगा।

यायावर क्षमा कीजिए महाराज आप बता सकने हैं कि पुराना नगर किस तरफ है ?”

सिपाही ‘पुराना नगर ? (उत्तर भाषसे दोनों हाथ फलान हुए) किन्तु महाराज सारा इत्या ही बहुत पुराना है।’

यायावर जो हाँ, निस्सन्देह। किन्तु पुरान दशके इस परान सुन्दर नगरका कोई भाव अधिक पराना भी तो होगा।’

सिपाही जो हाँ आप पुराना स्थापत्य और ऐतिहासिक मन्थियाँ देखना चाहें तो व यहाँसे नजदीक ही है।

यायावर ‘तब उगीका रास्ता बना दीजिए। कृपा होगा।’

बग उठाकर सिपाहीक वताय हुए रास्तपर मुत्त हुए यायावर
 बंधके पीछम फिर सिपाहीका स्वर सुनता ह महानाय मुनिए ।

इमस आगकी बातचात उधत करनेसे पढ़े यह वताना आवश्यक ह
 कि सारी बात घीत जटानि भाषाम हुई ह । यायावरका इस भाषाका
 ज्ञान नही ह लेकिन यात्रियाके लिए तयार का गया काम बलाऊ बार्नाल्ड
 की पुस्तकास वह बहुत-कुछ रटता रहा ह और अब तक परिवितासे सहा
 यता भी रता रहा ह । भाषा न जाननवागको कुछ फिर मित्रा देनका
 उत्साह इटालीय जन-माधारणमें भी उतना हा ह जितना जौमन हिन्दुस्ताना
 में हाना ह ।

महानाय आप क्षमा करेंग सही उच्चारण डक्क ह डक्क नही ।

(तब का पयाय जटालाय भाषामें यही गज ह ।)

यायावर धयवाद । मरा ज्ञान बहुत कम ह और मह एमा ही
 मिलाया गया था ।

मिपाग वह जम्ह रोमम सिखाया गया हागा । वहाँके लोग डक्क
 ही कहत ह । लेकिन सही उच्चारण डक्क ही ह जसा कि यहाँ होता
 ह—आप जानत ह कि फिज्जका उच्चारण ही हमारा भाषाका प्रामाणिक
 उच्चारण ह ।

यायावर धयवा दकर जाग बन्ता ह ।

निस्मदह परायी भाषाके उच्चारणम भूज होना या उस भाषाक
 जाननवाग द्वारा सहा उच्चारण बनाया जाना या तो कोई असाधारण बात
 नही ह । असाधारण बात यह ह कि यह काम सडक्के मात्पर पुलिसके
 एक मिपाग द्वारा किया जाय, और वह भी इतन गालान डग स । मर
 लिए यह आज भा उतन ही आचयका बात ह लेकिन आज यह भी अनु
 भव करता है कि फिज्जेक साधारण नागरिकका सस्कारिताका सही प्रति
 चित्र हम वानागमें मिल जाता ह । अपनी प्राचीन परम्पराका
 अभिमान अपना भाषाक प्रति निष्ठा और उत्तरदायित्वका भाव समकालीन

मासूतिक जीवनम अपनी सुन्दर नगरीका सम्मान राजधानी रोममे ऊचा बनाय ग्लनका गिष्ट हठ, और एक अत्यत आकषक और महज हंसमुख भद्रता—फिरेंजेमें विताये हुए एक मासक अवकाशमें बार-बार इसका अनुभव हुआ। या ता उत्तर और दक्षिणक सम्बन्धम यह बात समूचे यूरोपक वारम बही जा सकनी ह कि उत्तरके लग सोम्य गम्भार और आपसी व्यवहारमें धर और नीतिवान् ह जब कि दक्षिणी चञ्च और चाञ्चक ह लेकिन इटलीम, जहाँ कि मिलनसार और विनोन्शील तो मभा ह, व्यवहारका अन्तर विशेष लगित होता ह। स्वय इटलीके लोग इसका अनुभव करत ह और विदेशियोंको चनावनी द देते ह। फिरेंजेमें शून्य बताया गया था कि मध्य इटली तो ठोक ह किन्तु रोमके लोग बहुत धूर्त होत ह और उनसे सावधान रहना चाहिए। रोममें यह बताया गया कि राम तक तो ठोक ह और उत्तरके लग भा अच्छे ह किन्तु दक्षिणम नेपाली (अंग्रेजी नपस) के लोग समी ठग होत ह और राह-चलत आग मिमाके बपडे उनार ले सकने ह उनस और भी सावधान रहना चाहिए।* जहाँ तक मग अनुभव ह मुझे रोमम भी धूर्तताका एक उदाहरण मिला और नपोंगे ता बन्दरगाह ह ही इस लिए वहाँ उन उच्चका और उठाद गौराकी कोई कमी नहीं थी जा सभी बन्दरगाहापर मिल जाते ह। इतना ही ह कि जहाँ तक बन्दरगाहाका सवाल ह नेपोलीके प्रतियोगिता कर सकनेवाल और भी बन्दरगाह अवश्य ह और दो एक्का मेरा अनुभव भी ह। किन्तु अभी हम इटलीकी पुष्पावतीमें ह, और उसका विस्मय दूसर गहरोकी इन लिट-फुट्ट धुटियोमे किमी प्रकार कम नहीं होता।

* अमेरिकाके प्रसिद्ध गुण्डे—गगस्टर अस्ती प्रतिशत मूल इटालीय ह और उनमें भी अधिसह्य नेपोलीके, यह जानी हुई बात है। कहीं तक उनकी गुण्डागोरो जाकी इटालीय ध्युत्पत्तिका परिणाम है और कहीं तक अमेरिका वातावरण का, यह दूसरा प्रश्न है। —लेखक

फिरजे नगरी आर्नो नदाक तटपर बसी ह । मुख्य भाग और पुराना नगर दाहिन तटपर ह । किंतु यह समझना भूल हांगी कि बाया तट कम एतिहासिक या महत्वपूर्ण या कम सुन्दर ह । अनेक पुठ नगाक पाना भागा का एक दूसरेसे मिलता ह किंतु पीठ बकियो (पराना पुठ) सबसे विशिष्ट ह । बहा जा सकता ह कि यही फिरजेका हृदय ह । एक ओर पलात्सा बकियो (पराना मल्ल) और उसमे सल्मन उफिल्मीक संग्रहालय और दूसरी ओर पालातोन महल और पित्ती संग्रहालयाको यही पल्ल मिलता ह ।

पुलसे उस पार जानवाली सड़क आग चलकर बिया रोमाना हाता ह । पित्ती संग्रहालयाके पास भी बाबालोका प्रसिद्ध उद्यान ह । पराना पुठ अपन स्थापत्यके कारण भी उतना ही उल्लेख्य ह जितना कि अपना एतिहासिकताके कारण—उमके अलावा वह फिरजेक नवान और प्राधान बने गिपकी मानो जीतो जागती प्रदग्नी भी ह । पल्लपर दानो ओर दुकानाका पवित्रता ह जिनमें फिरजेकी विशिष्ट गलीके रानाभूषण उत्थाण प्रवाण और विभिन्न प्रकारक मूषवान पत्थर सान और चीनीकी मीना बारी श्याम्बे उत्कृष्ट नमून देखनका मिठ सकते ह । केवल इसा पल्लपर विभिन्न वस्तुएं दग्ध हुए घंटा बियाय जा सकत ह । महास नगीका दग्ध सुन्दर ह और नगीक किनारकी सर भा राचक । आग ता माटराक कारण किनाराकी सक्की सर इतनी प्रीतिकर नहीं रही ह जिननी कभी रहा हागा किन्तु कुछ पलापर खड रहनका आकषण आज भी उतना ही ह जितना दातक जमानमें रहा होगा । यहीपर मगाकविका पहल पटल किशोरिका बियात्रिचस वह दगमिलन हुआ था जो इटालीय चित्र और कायकला दानाका एक अपव निधि हा गया ह । या फिरजेको रूपश्री आज भा कम नगा सुन्दर ह और अनेक अलक्षित बियात्रिच उमकी गिप्यामें दूमना ह किन्तु दान ही दुग्ध ही गय ह क्याकि बसी श्रद्धा आजक दग्धमें नहा मिन्ता जिमक सन्दार बियाका कपना जावन और मरणका

यूरोपकी पुष्पावती फिरेंजे

स्वयं और मरकफा अतिक्रमण कर सकी आज हम इतना तो सकते हैं कि यही वही दान्तको उस अलौकिक प्रेमकी उपलब्धि हुई होगी और मान सकते हैं कि वसा होना अवश्य सम्भव रहा होगा लेकिन स्वयं उस उपलब्धिसे वंचित हो गया है तो फिरेंजेकी किसी कमीके कारण नहीं बल्कि स्वयं अपनी आंतरिक अपूर्णताके कारण

यो तो इटलीके अनेक नगर दशनीय और उल्लेखनीय हैं, और प्रत्येक में इटलीकी सांस्कृतिक परम्परा बोलती है, प्रत्येकके अलग अलग प्रासंगिक हैं। जो लोग अमर नगरी रोमको प्रथम स्थान देते हैं उनका तक भी समझम जाता है और जो मानते हैं कि जिसन वेनेत्सिया—वनीस—नहीं देखा उसने इटली नहीं देखा उनका भी खण्डन करना कठिन है क्योंकि वह अपने ढंगसे अद्वितीय है। किन्तु मेरी समझमें तो फिरेंजेम कुछ है जिसे न देखना मानव सस्कृतिकी एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धिसे वंचित रह जाना है। क्लासिकल परम्पराके मुख्य प्रेरणा-स्रोतोंम फिरेंजेका स्थान अब भी अद्वितीय है। यह अकारण नहीं है कि इतने कवि और कलाकार फिरेंजेकी कोर आश्रय होत रहें और नगरीकी अथवा उसके अतिक प्रदेशकी यश गाथा गाते रहें। फिरेंजेके महान् कवि फोस्कोलाने ठीक ही कहा है कि 'फिरेंजेमें सान्ता क्रोचे गिरजाघरमें इटलीका सम्पूर्ण गौरव संचित है। यह भी उल्लेख है कि इसी सात्ता क्राचम मिके-राजेलोकी समाधि है और उसीके सम्मुख गलिलेओकी। मिके-राजेलोन जिसकी कास्म मूर्तिया आज भी फिरेंजेकी शोभा है देवताआके लिए एक नये ओलिम्पसका निर्माण किया था। और गलिलेओने प्राणाका जोखम उठाकर घोषणा की थी कि पृथ्वी और अथ यह मूल्यके आस पास परिक्रमण करते हैं। इस प्रकार कला और विज्ञान दोनोंके क्षेत्रमें फिरेंजेकी देन अद्वितीय रही। और उसका प्रतिबिम्ब दांत्त और त्रेयोनार्नो दा विंचोक् कृतित्वमें देखा जा सकता है। फोलरिजन यह लिखा था

ओ फ्लोरेंस विथ दार्ई टस्कन फील्डस एण्ड हिल्स
 दार्ई फमस ग्रानों फड विथ ग्रात्स द रिल्स
 दाउ ग्राइटेष्ट स्टार ग्राफ स्टार-ग्राइट इटली !

(ओ फ्लोरेंस टस्कनीकी अपनी पहाणिया और खताके और अनक धरनासे पोषित अपनी प्रसिद्ध नदी आर्नेके कारण श्टलीक तारामणित आकाशकी सवाधिक दाप्तिमान तारिका !)

और गैलीन कहा था

ओ फास्टर नस ग्राफ मस एबडण्ड ग्लारी
 सिस एथेंस इटस ग्रेट मदर सक इन स्प्लेंडर
 दाउ गडोएस्ट फोय दट माइटी गेप इन स्टोरी,
 एव ग्रीकन इटस रेकड फेंस सिवोयर थेट टेंडर
 द लाइट-इवस्टड एजल पोएजी
 वास ड्रान प्राम द डिम वल्ड दु वेल्कम बी ।

(जबस सस्कृतिकी माता एथिंसकी कीर्तिका ह्रास हुआ तबसे तू ही मानवने खोय हुए गौरवकी धात्री रही इतिहासम उसके महान आकारको तू प्रतिच्छायित कर रही ह जस कि उसके ध्वस्त मन्दिरको सागर प्रति बिम्बित करता ह । निमम किन्तु कामठ कायको आभावपित देवी तर अभिनन्दनक लिए अवतरित हुई ह ।)

एलिजाबथ बारट ब्राउनिंगन तो हारकर कह गिया फ्लोरेंस क्या ह हमका वगन करनेमें मनुष्यका या कविकी वाणी सहज हा असमय हो सकती ह । कवियिका यह कथन और भा सायक जान पन्न लगता ह जब हम हम उमक और ब्राउनिंगन प्रम और प्रेम-कायके सम्भमें देखत हैं । मन मिहलाजला और गलिन्त्राका घर ता दगा ही वह स्थान भी दगा जहाँ ब्राउनिंग-दम्पति रहत थ और वह दग्ग भी दगा जो कि इटलीकी मुत्तर घूपके अन्तका दूमरा कारण था निमन उन्हें मोह गिया था । घूप उन्हें

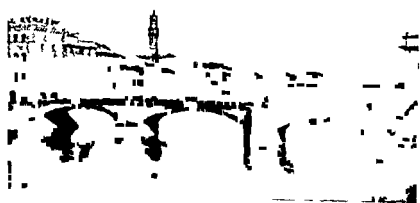
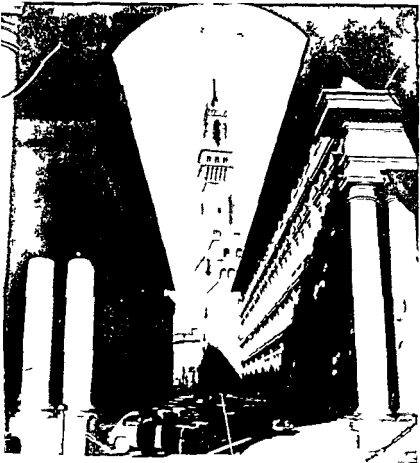
स्वास्थ्य देती थी किन्तु फिरेंजेका वह दृश्य उनकी आत्माको पुष्ट करता था

वास्तवमें फिरेंजे और एथेंसका नाम एक साथ लेना ऐतिहासिक अभिप्राय रखता है। दोनों नगर अपन उत्कृष्ट कालमें गणराज्य थे और उनकी सांस्कृतिक देनमें इस बातका विशेष महत्त्व रहा। निस्सन्देह दाना का समय अलग-अलग था और इसके अलावा एथेंसके गणराज्यमें अभिजातका सत्ता थी, जब कि फिरेंजेके गणराज्यमें सत्ता नागर अथवा व्यापारी वर्गकी थी। और इसीके अनुरूप दानाकी देनमें भी अंतर रहा। किन्तु एक स्वाधीन चिन्तन एक निशङ्क कौतूहल और शिल्पकी साधनामें एक निश्चित सुश्रेय और उत्तर विस्तारका भाव दोनोंमें रहा। मानसिक स्वातन्त्र्यकी इस परम्पराके और व्यापारिक समृद्धिके कारण फिरेंजे मध्य कालीन पुनरुज्जीवनका केंद्र रहा। १४वीं शताब्दीका उत्तरार्ध और १५वां शताब्दीका समय फिरेंजेका उत्कृष्टकाल का समय रहा। यह समय सुप्रसिद्ध मेडिची परिवारकी उत्थिति और समृद्धिका समय रहा उसी वंशक लोरेंजो 'लोरेंजो द मग्नीफिमेंट' के विरुद्ध प्रसिद्ध है। सन १८६० में जनमत द्वारा फिरेंजे इटलीके राज्यसम्बद्ध हो गया और कुछ वर्षों तक उसकी राजधानी भी रहा।

सभी पुराने नगरोंका असली जीवन उसकी नयी और चौड़ी सड़कोंमें नहीं बल्कि पुरानी और संकरी गलियोंमें पाया जाता है। जिन नगरोंमें लोक-जीवनकी परम्पराके साथ-साथ शिल्प और स्थापत्यकी परम्परा भी महत्त्व रखती है—और मच बात यह है कि किसी भी एकीभूत और सङ्गठित समाज जीवनमें रहने सहने और कला शिल्पकी परम्पराओंको अलग नहीं किया जा सकता जब कि किसी भी वंशके फल फूल पत्तोंको उसकी जड़ोंसे अलग नहीं किया जा सकता—उनके बारेमें ये बातें और भी सच हैं। भारतमें हम इसकी सच्चाईका इतना तीखा अनुभव नहीं करते क्योंकि हमारे अधिकांश नगर नये हैं और उनकी जड़ें कहाँ हैं ही

नही— न ही उतका रहन-सहन ही मिट्टीसे उगा हुआ और उमम सम्बद्ध ह न उनके स्थापत्य और शिल्प इत्यादि । कुछ एक परान गहर ह जिनकी जीवन विधि अपनी परम्परासे जड़ी चली बा रही ह उनमें परम्परागत स्थापत्य और शिल्प भी देखनको मिल जायगा—पुरानी हवतियाँ और अटारियाँ परम्परागत बठक-खान और अन्त पुर इत्यादि । लेकिन य अवशेष भी हमारे देखत-देखत मिटन जा रहे ह और जो नय गहर बन रह हं व तो ह ही फूड और अपरूप । किन्तु इटलीके लगभग हर गहरमें एक छाटा-बडा अण एसा मित्र जायगा जो कि पुराना ह या कि जिनमें परानका परम्परागत विकास देखा जा सकता ह । इटलीके नगर इनमें भा विगप उल्लेखनीय ह जैसे पट्रिजिया सिएना अमीमी इत्यादि और फिरेञ्ज ता प्रमुख ह ही । जिन फामियानमें (यह सराय और होटलके बाचकी चीज होती ह) म ठहरा था, वह अपन-आपम एक छाटा मोग सप्रहाय थी । किन्तु फिरेञ्जकी हर गला मानो एक चित्र-वीथी ह पत्थरके गच्चका हर खण्ड मानो शिलिन इतिहासका एक खण्ड ह । और स्थापत्यकी परम्परा गलियाम भी उतनी ही जीवन ह जितनी बड बड चौकापर बन हुए प्राचीन महला या हवलियाम । किमा भी मनीम चने जाइए यह जाना जा सकता ह कि कौन-सा मकान किम स्वपतिक आदेशसे बना स्थापत्यकी दृष्टि किम महाराव और किम खिन्काम क्या विगपता ह और शिल्पिया या कलाकाराकी वश-परम्परामें क्रमागत जा-जा परिवर्तन हुए उनका क्या कारण रहा । भारतमें गायक किमी भा नय-परान गहरक बारम एसा नहा कहा जा सकता । बहुत मावनपर बनारसक घाट ही मन्दिन इस दृष्टि उल्लेख्य तान पंगे किन्तु और अनक प्रकारका जानकारी उपलब्ध होनपर भा उनक स्थापत्य और स्वपनियारका शिमा शिमा मा युक्तियाका इतिहास अधूरा हा रह जान देना हागा ।

निस्सन्देह यह ता कहा हा जा सकता ह कि महाँपर कमसे-कम हमारा तान परम्परामें हमार वाम्नु शिमा वास्तवमें कबल दस्तकार हाव

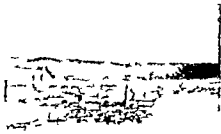
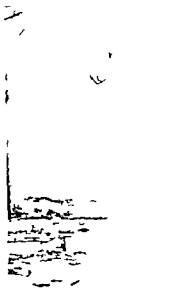


फिरजे ऊपर-उफिसा मप्रहालय और पुराना महल नीच-आनों ननीक पुत्र



फिरोजेका बडा गिरजाघर

[फोटा बुनर]



फिरोजेका बडा गिरजाघर

फिरोजे रलामगादीफ एक कुनम नगराका परिदृश्य



असीसा [बायेंका सन्त फ्रासिसका गिरजाघर गिद्धरपर परान दुग]



असीसी मन्वी वदगगाह



सुवासियोका गुफा विहार



ईमा मन्त्र प्रविम



परिस्तोपाला मरियमका गिरनाथर

दृष्टिसे कम्बुका रूप ज्याका-त्या बना हुआ ह नया पुरानेको काटता नही बल्कि और विस्तीर्ण करता ह ।

अनक उल्लेखनीय महत्त्व का चारका उल्लेख अनिवाय ह । पुराना महल (पलात्सो बकियो) १३ वी गतीके अन्त और १४ वीके आरम्भ में कम्बियो द्वारा निर्मित हुआ था अनन्तर उसमें कई परिवर्तन हुए । १६ वी गतीमें वासादीन उसके भीतर अनक परिवर्तन किये और मन्ची परिवारक वभवक अनुकूल बड़ बड़ कल्प प्रस्तुत किये । भीतर आगतमें वरोकिया द्वारा निर्मित पखा वाले बागकी प्रसिद्ध मूर्ति ह ।

इसी महत्त्व चौकक पाठमें एक और उल्लेखनीय इमारत ह । एक समय इसीमें गणराज्य प्रमत्तका निर्वाचन घोषित होता था । उसके सामने इटलीके मूर्ति गिल्पक कुछ श्रद्धा उगाहरण देख जा सकत ह जिनमें चर्चोनाका पर्सिमुस और ज्याम्बोलाया द्वारा निर्मित सावीन स्त्रियाका अपहरण तथा हरकु गेज और दानव उल्लेखनीय ह ।

पिता महत्त्व १५ वी गतीके मध्यमें पित्ती परिवारक लिए द्युनलेस्कीन आरम्भ किया था । किन्तु अनक परिवर्तनाके बाद उसे खरीन पूरा किया । अब इसी भवनमें सुप्रसिद्ध आधुनिक कला संग्रहालय ह ।

रचनाई महत्त्व अन्वर्तीकी वास्तुशिल्पका नमूना ह । इसक गिल्पकी विधि उल्लेखनाय बात प्रकाश और छायाका उपयोग ह जिसके द्वारा भवनक कोण और रक्षाओंको विधि उभार लिया गया ह ।

फिरेंजके महत्त्वमें अधिक प्रभावशाली कलाके गिरजाघर ह । यद्यपि प्लात्सा (और समारका) सबमें बड़ा गिरजाघर रोमका सान पिएत्रो ह जा कि पापका विगिष्ट गिरजाघर ह तथापि भव्यताकी दृष्टि और वास्तु गिल्पका दृष्टिसे फिरेंजक अनक गिरजाघर अपना महत्त्व रखत हैं । फिरेंजका कपिष्ठा सानपियत्रा क बाद ससारका सबसे बड़ा गिरजाघर

ह। इसको कमियोन सन १२९६ में आरम्भ किया था। किन्तु निर्माण का कार्य सन १४३६ में पूरा हुआ। इसके गुम्बत्ता त्रय वृणलस्कीका ह। गिरजाघरके निकटकी मीनार (कम्पानाले) जियात्तान सन १३३४ में आरम्भ की थी। उसे तलेन्सीन लगभग पचास वर्ष बाद पूरा किया।

कथिडलक सम्मुख सान् जियोवानीका वपतिस्मा घर भी उल्लेखनाय ह। इसमें तीन वास्य निर्मित द्वारामें एक जा कथिडलको ओर खलता ह स्वर्गका द्वार कह्यता ह। यह नाम मिकलाजगेन दिया था।

सान्ताक्राचकी चर्चा ऊपर आ चुकी ह। साता भरिया नोवलाका गिरजाघर गिल्गियोक भित्ति चित्रके कारण दानीय ह। सान् लारेजोका गिरजाघर और उसमें सम्बद्ध पुस्तकालय भी दर्शनाय ह। इन इमारतोंके निर्माणमें मिकलाजलोका विगप हाथ रहा।

नगरसे कुछ दूर पहाडीपर सान् मिनियाका गिरजाघर सन १०१३ में बनाया गया था। अनन्तर इसमें कई परिवर्तन हात रहे। इस गिरजाघरके सामने चौकसे फिरिजेका सुन्दर परिदृश्य दीखता ह। यह चौक मिकेलाजलो नामसे प्रसिद्ध ह और यहाँ उस कलाकारकी बनायी हुई विगाल वास्य मूर्तियाँ भी ह।*

सान मार्को वाडिया और आयीमान्तान गिरजाघर भातर सगहीत कला-वस्तु और भित्ति चित्रके लिए दानीय ह। फिलिपा लिपी देग रोविया वात्तिचगे गिल्गियो और सान् जियोवानीक अनेक चित्र इन गिरजाघरोंमें हैं।

पुरान मह्यमें लग हुए उज्रिस्सो सग्रहालय तथा पिती महलमें स्थित पालातीन तथा आयुनिन कला सग्रहालयोंके नाम पहल लिय जा चुके

* यहाँ प्रदर्शित डबिड वास्तवमें प्रतिवृत्ति है घसली मूर्ति सान् मार्कोके निकट एक सग्रहालयमें है जहाँ दूसरी मूर्तियाँ भी हैं।

ह। उफित्सी सग्रहालय विश्व भरके सबसे विख्यात सग्रहालयाम अपना स्थान रखता ह। जारम्भम मन्ची परिवारके निजी सग्रहकी रक्षाके लिए इसका निर्माण हुआ था। किन्तु गनियासे इसका विकास होता रहा ह। मूर्त्तिगल्पके लिए बाजेलो राष्ट्रीय सग्रहालय अवश्य देखना चाहिए।

किन्तु गिरजाघरा महला और सग्रहाय्याका वणन नगरका वणन नहीं ह। वणन मान अभीष्ट भी नहीं ह पर फिरेंजके अपन रसका आस्वादन करा देनेके लिए—उसस जो रागानुभूति मिली उसकी एक अनुगूज ही दूसरक चित्राकागम कपा दनके लिए—इसस अधिक कुछ चाहिए। सग हाठयामें जो चित्र ह, उनके प्रतिचित्र थोरा और आग ले जात ह—पर सारभूत फिरेंजे उसकी कला गोभा भी नहा ह। न उसके सुन्दर सजील बाजार और हसमख यवतिया उसके रहस्य तक पहुचाती ह यद्यपि उन्हें देखना कुछ और बनावे जावनक निक्कट जाना ह। ब्राउनिगन फ्लोरेंसके प्राचीन चित्र आदि कितनी ही कविताआमें उस अलग कुठको कह देना चाहा ह जो उस नगरीका अना ह सभा कुछ और आग ले जाती ह पर उमसे आग कुठ और ह जा रूढ़ जाता ह

फिर नगरीके आस-पासक प्रदेशकी सर—बन्नेमगासे तीसर पहर दखा आ नगरका परिदृश्य—(कितना अचूक परख थी ब्राउनिगकी जो उस पहाणपर जाकर रका तो तिक गया और बहासे जीवन पाता रहा।)

या उत्तरी अल्बिक्का पहाडियाम बिबर हुए छान-छोट टस्कनीय ग्रीके गन्ध या मिय गाव घर अगूरक खन जूनक बाग इटालीय देवताके बन, क्रिस्ताक पुरान विहार (मानास्टरा) को बितन और आत्म गुडिके लिए बना ई वाठरिया (और कुछ दूरकी रोमिक रगगाला) या गिरजाघरक बाहर पहाणका गन्धपर खन हाकर देखा हुआ फिरेंज और आनों ननीकी घाटाक पारका गिरि शृङ्खलाक पीठका सूर्यास्त सौन्दर्यबोध स होनवाठ अकारण दनको कालिदासन भा पहचाना था पर फिरेंजका

परिदश्य उसे मानो हृदयपर गहरा उनेर जाता ह फिरेंजे म अपन गला द्वारा लिखा सका, यह मानना मुझे तभी साधार जान पडगा जब म उसी ददका तीला जगा दे सकू ! संस्पग बहतका उतरा सुर-भरि-मा—हम बह न सके ' रूपका प्रतिचित्र काई उपलधि नही ह उसमेंगे यदि विराटकी बटना तक पहुँचा जा सक तभी उपलधि ह ।

हृदयके भीतरसे

सहसा क्रुद्ध उमडकर बोला

सु-दरके सम्मुख यह तुम्हारी जो उदासी है—

यह क्या केवल रूप रूप रूपकी प्यासी है ?

जिसने बस रूप देला है

उसने बस—

भले हो कितनी भी उरकट लालसासे

केवल क्रुद्ध चाहा है

जिसने पर दिया अपना है दान

उसने अपनेको, अपने साथ सबको,

अपनी सबमयताकी निवाहा है

हो विराटकी हम बटनाकी प्रेषित कर सकनके त्रिए— अपना सब मयताको निवाहन के लिए—छटपटानवाला मैं ही अकेला गहा हू कहीं अधिक प्रतिभागाली इसीके लिए इसी प्रकार छटपटाये—इसीसे मैं शान्तवना पा लूँ तो पा लूँ ! अपने सामर्थ्यसे न सही उन्हीकी प्रतिभाके सहारे म अपने ध्येय तक पहुँच जाऊँ, तो भी कुण्ठित नहीं हूँ

खुदाके मसखरेके घर . असोसी

स्टेशनस बन्द कर मारिया दलिया आजली (फरिस्तावागी मरियम) के गिरजाघरके पासमे जिसमे बसन्तमें कण्टकहीन गुलाब तिलत हैं और अमीसीके सन्त फ्रांसिसकी असोसिं लोगा तक पहुँचात ह होती हुई सडक असोसीकी उपयना पार करती हुई गिखरपर बन हुए प्राचीन दुगकी सीन्यासे कतराती हुई पगडणी बनकर जतूनके उद्यानामें खो गयी ह । थोडा अतरपर बन हुए दा दुग अमीसीकी बम्नीक ऊपर छाय हुए ह और चारा ओर दूर तक लहरात प्रदेशकी मानो आज भी रखवाली कर रहे ह । बम्नीके दूसर छोरपर बना हुआ सत फ्रांसिसका गिरजाघर और बिहार इस दुगस देखनपर बहुत छोटा जान पडता ह और नाचे स्टेशनके निकट बना हुआ दे-यो आजली गिरजाघर ता और भी छोटा । पारिव सत्ताके प्रतीक सब्जा पारलौकिक सत्ताके प्रतीकासे ब हात ह या होना चाहते हैं । यहाँ तक कि धम-सत्ता भी जिस पारलौकिक ही होना चाहिए जब इहलौकिक सत्ताके गोभमें पडती ह तब उस भी बडप्पनका चस्का लग जाता ह । रोमका सान पियत्रा (सन्त पाटर) गिरजाघर जो कि पापका विनिष्ट गिरजाघर हाँवा ह ससारका सबसे बग गिरजाघर ह और गिरजके लिए उसस बग इमारतका योजनाको रामको स्वीकृति नही मिल सकती बयाकि बम्पनक पारिव स्थाणका महत्व अब बूत हो गया ह । सान पियत्राके प्रापर निगान गगार ससारक अब ब गिरजाघरकी आनुशानिक स्थाणा प्रयन आगन्तुकक लिए माना पत्रियापर लिखकर रख दी गयी ह । थडाल लाग आकर पात है कि छनका सनाक और प्रापर लिखे हुए पमाङ्गी आङ्गका नाम नपकर उनकी थडा माना बन्त छानी हा गयी ह या

धीर भी अधिक सकुचाती जा रहा ह । भारतमें भी सम्पन्नतर मन्त्रिरामें जानेपर लोगोंका ध्यान ठाकुरकी ओर नहा बल्कि ठाकुरकी पत्नकी आखा या मानिकके निलककी ओर आकृष्ट किया जाता ह क्याकि मूल्यवान तो रत्न ह ठाकुरका क्या मूल्य हा सकता ह ।

किन्तु यह जो पगडण्डी बस्तीकी पार करती हुई और दुगसि बनराती हुई जतूनके उद्यानके पार निरतर बनाच्छान्ति गिखरकी ओर बन्ती गयी ह उसे किमी भी सत्तासे सरोकार नहीं ह । वह वास्तवमें पवत गिखरकी ओर भी नहीं बन्ती । सुवासिया गिखरके एक पाद्वपर छाये हुए घने जगलके भीतर एक गलामें चट्टान काटकर बनाया गयी गुफा रूपी कुटिया ही उसका लय ह । वननिवृत्त सम्प्रणायके उदासियाने यह गुफा सत फ्रांसिसको एकान्त वासके लिए भेंट की थी । अब यद्यपि गुफाक साथ कुछ और कोठरियाँ भी बन गयी ह और एरेमो दल्ले काचैरी दानीय स्थान माना जाकर सलानियकि लिए प्रस्तुत की गयी सूचना पुस्तकामें स्थान पान लगा ह तथापि उसका एक कथ अब भी बसो ही अयम्भुवन तत्स्यता लिये हुए ह । वहाँ पहुचकर सलानीको भी हठान अवाक हो जाना पडता ह जो सत फ्रांसिसके जीवन और साधनासे परिचित ह उनका तो कहना ही क्या-वे तो गुफा-द्वारके निकट बन हुए छाने-से उभामनागृहमें प्रवेश करते न करत विभार हो जाने है । एक गहरा मात्रपुत मौन उनके अत करणमें भर जाता ह और मन नीरव निष्कम्प लयमें गा उठता ह । सुवासियो गिखरके पथपर ही सन्त फ्रांसिसको क्रूमपर टग हुए ईसाका वह स्वप्न दीखा था जिमके सम्माहनमें वह ईसासे इतन एकात्म हो गय थ कि उनकी ह्येलिया पर कीलके धाव बन गये थ । साधना-गुफाका धात्री श्रद्धा भरा होकर भी एसी एकात्मता तो नहीं प्राप्त कर सकना क्विन सन्त फ्रांसिसका स्नह-स्पर्श मानो उसे छू जाता ह उनका वह विन्व-ग्रम जो कि गधेको भी भाई गया और गरीरका दागनवागी आगकी भी भाई आग बना देता था माना उसक लिए भी मुल्म हो आता ह

मध्य इटलीका उम्ब्रिया प्रदेश मानो इटलीका वन ह असीसी मानो उम्ब्रियाका ओर इसलिए इटलाका हृदय ह । इटलीम नगर राज्य ओर छोटे बड़े देग राज्य अनक होते रह और प्रत्येक राजधानीका अपना अपना सौन्दर्य ह । रोम फिरेञ्ज वनत्सिया—तीनाका सौन्दर्य जगत्स्थिता ह । मिलाना नपाली और जनोआ इतन प्रसिद्ध या प्रिय नहीं ह पर अपन अपन सम्पदक रखत ह । अनक छोटे-छोटे नगर भी ह जिनके अलग अलग हिमायती ह । एसे भी ह जो कहत ह कि अगर उन्हें अपन रहनेक लिए ससार में कोई स्थान चुन लेनकी छट हो तो वे पेरुजियामें रहेंग या वाप्रीमें रहेंग । किन्तु म अपन सम्पद जब यह विकल्प रखता हू तो भारतके बाहर जो दा-सीन स्थान भरे सम्पुष्ट आत ह उनम असीमा क्वाचित पहला ह । या या कहू कि यूरोप भरमक जो दो स्थान इम दृष्टिसे मज्ज रखत ह असीसी ओर फिरेञ्जे ह । फिरेञ्ज नगर ह नगरकी सब सुविधाए वहाँ मिलती हैं असीसी छोटी जगह ह । किन्तु असीसीमें जो ह वह मध्य इटलीम या उम्ब्रियामें भी ओर वही नहीं ह । ओर इसका ध्य जितना उसकी भौमिक स्थितिकी ह उतना ही सन्त प्रासिसकी छायाकी जो आज भी असीमीक रूपमें क्वाचित जीवनकी ओर संवत्नाकी मानो अनु-छायित किये हैं ।

या असीमी पेरुजिया प्रांतमें ही ह पेरुजियास पच्छिमो दक्षिण पूव । सागर-तलस उसकी ऊँचाई लगभग १४०० फुट ह दुग प्राय तीन सौ फुट ओर ऊँचा ह ओर वाषेरीकी गुफा बस्तीसे प्राय एक हजार फुट ऊँची है । असीमीसे टवरा (टाइवर) ओर टापिनो नदियाकी घाटियाँ दासनी हैं । सारी बस्ती पहाड़की छाँवर बस्ती हुई है । बारहवीं शताब्दीसे एकर आधुनिक वाड तकक आठ सौ वर्षोंमें बन हुए मकानामें एसी आश्चर्य अनक एकदमना ह कि उनका दूररा उपाकरण क्वाचित संसारमें न होगा । एसा जान पटना ह कि सारा बस्ती एक ही समयमें एक ही वास्तुकारके निर्देशनमें बनायी गया हागी और सब वास्तुकार भी सनक रहा होगा ।

क्याकि सभी इमारतें एक ही सन्दली रगके पत्थरकी बनी हुई ह । आधुनिक नगर निर्माणमें तरह तरहके द्रव्योंका और रगाका जमा उपयोग सौन्दय और विविधताके लिए अनिवाय माना जाता ह, उसका यहा कोई लक्षण नहीं ह । वह मानो किसीकी कल्पनामें ही नही आया । वास्तवम विविधताके द्वारा सामञ्जस्य लानेका उद्योग वहा अपेक्षित ह जहा बहुत-सी चीजें अलग-अलग हो और बमेल हा, जहाँ अधिक-से अधिक उनके बमेलपनसे चित्र विचित्र पटनमें गू था जा सके । किंतु जहाँ ह ही इकाई वहा विविधताका प्रश्न कैसे उठ सकता ह ? और असीसी वास्तवमे इकाई ह । आज भी उसमें एक विस्मयकारी एक रूपता और एक प्राणता ह । इसी एक और अखण्ड असीसीकी सटका और गलियाम सत्त फ्रांसिम अपने रगीले और मनचले सहचरोके साथ रगरेलियाँ करते रहे यहीपर उन्होंने अपने दिव्य स्वप्न दख यहीपर वह कोडीसे गले मिले, यहीपर उहान इट-पत्थरों और कीच-कादाकी बौछारें सही, यहीं उन्होंने नाम-गान किया यहीं डाकुओं द्वारा पक्के जानपर अपनेको एक 'राजाधिराजका दूत बताया और यहीं नगरवासियोकी ठिठालियाक जवाबमें अपनेको खुदाका मसखरा या भाड घोषित किया । यहीपर उन्होंने निघनताकी प्रशस्ति की और अन्तमें मत्पुके समय यही स्वयं अपने जीण शरीरमे यह कहकर क्षमा मागी कि मरे गध भाई मरे शरीर, तू मुझे इसके लिए क्षमा कर देना कि भ ईतनी निममता से मुझे हाँकता रहा हूँ । सब कुछ बीत जाता ह, घामिक उत्साह और आवेश भी क्षीण हो जाता है सेवा धम लुप्त हो जाता ह और सेवादारकि संगठनके रूपमें अपना कंकाल छोड जाता ह । लेकिन विचार वास्तवमें कभी नही मरते वे समाजो जातिया और युगाको नया संस्कार दे जाते हैं । असीसीमें अलग-अलग युगाके और धम-भस्कारोके आवग वमी हैं रोमिक कालके सभा भवन और देवी मन्दिर भी ह, लेकिन असीसीका संस्कार ईसाई संस्कार ह ईसाईमें फ्रांसिसकन संस्कार और फ्रांसिस्कन संस्कारोंमें समूचे जीवनको एकताका संस्कार ।

फ्रांसिसका जन्म असासामें सन ११८२ में हुआ। मृत्यु भी यहीपर सन १२२६में हुई। सन १२२८म उहें पाप द्वारा सन्त का पद प्रदान किया गया और उसी वष फ्रांसिस्कन सम्प्रदायक विहारका निर्माण आरम्भ हुआ। सन १२५३ में यह पूरा हुआ। सन १८१८ में इसका तलघर बनाया गया और उस समय सत फ्रांसिसका वफ्रन भी वहा मिला जिसे अब तलघरमें ही समाधि दी गयी ह। विहारक साधका निचला गिरजाघर जिआत्तो चिमाबुए आत्कि बनाय हुए भित्ति चित्रसे अलङ्कृत ह।

फ्रांसिसका जन्म उच्च मध्यवर्गमें एक सम्पन्न व्यापारीक परिवारमें हुआ। उनका यौवन रगरलिया और साहस-कर्मोंम बीता। आमोन् प्रमोन्में वह असीसी भरके युवकके नाथ थ। इक्कीस वषकी आयुमें वह असीसीकी रक्षाक लिए युद्धम गय और बन्दी हुए। एक वष बाद पन असीसी लौटनपर वह सख्त बीमार हुए। इस बीमारास उठनपर यद्यपि उहान फिर आमोन् प्रमोन्का जीवन आरम्भ कर लिया तथापि यहीसे कदाचित्त वह आध्यात्मिक परिवर्तन आरम्भ हुआ जिसन गीघ्र ही बन् नाटकीय ढंगसे उनक जीवनका ढांचा बन्ल दिया। फ्रांसिसन एक दिन यार-दोस्ताको दावन दी। सा-थीकर सब लाग मंगालें तैर जलूम बनाकर गहरकी सरके लिए निकल—फ्रांसिसका रमिकराज की उपाधि दकर उसका अभिषेक किया गया था और मांगाए पहनायी गयी थी और वास्तवमें मंगालाका जन्म अभी अभिषेकका गोमा-माना था। बन्त चलन अचानक लोगाने स्पष्ट किया कि फ्रांसिस उनक मध्यमें नहा ह। खाज हुई तैकिन कोई पना नहा मिला। चकिन और विमून् जन्म उमी पषमे बारिम लौटा। फ्रांसिस राम्भमें नि मग पन् था—उम नि मगअवस्थाका मूच्छा कहा जाय या समाधि या धागनिग जब बन् जाग तब वह फ्रांसिसनहा थ। न उनक सगी उन्हें पहचान सकत थ और न वग सुगियोंका। किमी भानरी आपातम भानो इनका जवन-मान हगन किसा दूमर आयाममें चग गया था और नयी पन्धर चलन लगा था फ्रांसिसन पर लौटकर एकांत अथनाया।

फिर रोमकी तीययात्रा की जहाँ सान पियेत्राक बाहर एक भित्तमलेके साम उहोन पोगाक बरल ली और चियडामें वापिस असीसी लौटे । घर लौटत समय राहमें एक कोनीको देखकर वह स्थानिसे पीछ हट गये फिर इस स्थानिपर भी उहें इतनी आत्म स्थानि हुइ कि लौटकर उन्हाने कोनीका हाथ चूमा और उसस गले मिले ।

इस परिवतनको फ्रांसिसक सगो-साथो न पहचानें, यह स्वाभाविक ही था । उसकी वे अबका करें, यह भी अप्रत्यागित नही था । उन्हान राह चलते फ्रांसिसका देखा और कीचसे भत्कार किया । अपमानित और और विरक्त पितान फ्रांसिसको उत्तराधिकारसे वंचित करनेका निश्चय किया और वेन्के लेकर असासीके विशपके सम्मूलन पहुचे । जब सब समझाना मुशाना यय हुआ और फ्रांसिसको सम्पत्ति व्युत करनेका दस्तावज तयार किया जान लगा तब फ्रांसिसन अपन गरीरके सब कपडे उतार कर पिताके सामन रख लिय और कहा, अब म अधिक सच्चाईसे प्राथनाका यह पद दाहरा सकता हूँ कि ' हे मेरे स्वगमें रहनेवाले पिता ! ' विगपकी दी हुई पोशाक पहनकर वह गाने हुए सुवासियो पवतके जंगलकी ओर चउ गये । वनम उहें डकुआन पवड लिया तो वह खिलखिलाकर हँसे अपना परिचय उन्हान यह दिया कि ' म एक बहुत बडे राजाविराज का दूत और सुदेशवाहक हूँ ।

तीन वष बाल मारिया देल्सी आजली गिरजाम मध्यमे एक पाठपर उपदेश देतें हुए उन्हान अपन अक्चनताके सिद्धान्त की प्रतिष्ठा की । "अपन पयपर सबन उपदेश दा और कहा कि ईश्वरके रायकी प्रतिष्ठा होने वाली ह । रोगियोकी सेवा करा कान्तियोके पाव पोओ तुम्हें सुते हाया जो मिला ह उसे मुल हाया लौगावा सोना-चाँदी मत रखो अंटीमें पसा न रखो न झोला, न दूसरी पोगाक न जूता, न लाठी । जो श्रमिक ह वह उतनका ही अधिकारी ह जितना वह श्रममे कमाना ह ।'

असीसीके शोधका का यह सम्प्रदाय सन १२०६ अथवा १२१० में स्थापित हुआ। पसीसीके नीचेकी समतल भूमिमें बना हुआ फरिस्तो वाली माता मरियम का गिरजाघर उपदेगके लिए उहें मिल गया। प्रोतिस और उनके गिप्यान इसीके आमपास डालें और पत्तिया बोनकर एपर बना लिये। किन्तु उनके रहनेका कोई निश्चित स्थान नहीं था। दिन मजदूरी भाँति व मम्मले रगका एक झाला पहनते रोज मजदूरी करक गजर करते और गिरजाघरके छाजा या खरिहानाम रात काट देने। शरीरो अपाहिजों मजदूरी कोशिया और बहिष्कृतोके बीच उनका सामा व ना और हभेगा बे प्रसन्न भावसे गात रहत। खदाके मसखर ईश्वरके भाँइ --- अपने लिए इसी गाम और खरिन्नका सन्धान वरण किया भा। ईसाका निर्धनताका शिजाप्त उनका धम व व्यवहार करते हुए भाँति रसना उनके लिए विविद्ध था।

भाजन कमान घे मजदूरी हो करके वे
भी बधागा कुछ भी जेदम थी। कुछ
भविष्यन या आगामी नि लेना
उनके लिए निविद्ध था। जुटाना
जाय उसीकी प्रसन्न मनस है निया

नि स्वता आन
य तीन बीज-मन्त्र घे। 11
जहाँ मानान भा तुझ छा
तरे साय गूरीपर च
प्याला तैयार किया। उमा
उमन तरा साय न छौग
दूसरा ठौर न मिया
नि स्वताको यह निधि तू मुय
आनका सिद्धान्त

निर्जीव वस्तुएँ भी उनके लिए भाई और बहन थी। अन्तिम बीमारीमें रोगी अगवो दागनके लिए लाटकी सलाख गम की गयी तब उन्हान उसका भी उसी मुदित भावसे स्वागत किया—‘ भाई आग मेर साथ दयाका ही यवहार करना ।’ राह-चलत वह हककर पक्षियाको भो उपदेश देते थे और उनके भक्त मानत ह कि पक्षी चुपचाप उनकी बात सुनत थे ।

शरीरक माय उनका जसा अनासवन सम्बन्ध था वह सच्चे जितेंद्रिय था ही हो सकता ह । मृत्युक समय कर्णा विगलित भावसे उन्हान स्वय अपनी दहसे धामा मांगी थी । अन्तिम निनामें वह अन्धप्राय हो गये थ लेकिन इसस उनक आनन्द विभोर भावको या स्तवगानको कोई आघात नही पहुचा । खुदाका यह मसखरा हसता-गाता हुआ ही अन्तमें स्वय अपने आनन्द और अपनी आस्यामें विलीन हो गया ।

सुवासिया शिखरके नीचे वन प्रदेशमें खाय़ा हुआ काचेंरीका गुफा विहार अब भी ज्याका त्योँ खडा ह । साय प्रात गंध द्रव्याका घुर्माँ उसके पूजागृहमे उठना और वन-गंधामें वित्रीन हो जाता ह । जिन पक्षियाको सन्त फ्रांसिस उपदेश देते थे उनके वशधर गुफाक आसपास कूजन करते ह और चुप हो जाते ह । यह एक परम्परा ह—असम्पक्न आत्मस्थ और किसी अलौकिक स्वरके माय एक-तान ।

दूसरो ओर असोसीकी बस्तीकी चहल-पहल ह रोमिक कालके मन्दिर के अक्वोपसे सटा हुआ नया नगर भवन ह । रोमिक कालकी वापीके निक्कट सडक बनाते हुए आधुनिक इजन हैं और बस्तीके सिरेपर बस्तीस विमुक्त फ्रांसिस्कन सम्प्रदायका विहार और गिरजाघर ह । बीचमें ऊँचाईपर उज्ज्वल हुआ दुग ह अब विलकुल निजन किन्तु फिर भी अपनी अतीत सत्ताकी सूचना देता हुआ । ये सब भी एक परम्परामें बचे ह । किन्तु यह परम्परा असम्पूक्न नही ह एतिहासिक होनके नाते देग-बालस और मानवीय राग विरागासे निविडताके साथ बधी ह । यह परम्परा आत्मस्थ भी नही ह

असीसीके शौचका का यह सम्प्रदाय सन १२०६ अथवा १२१० म स्थापित हुआ। असीसीके नीचकी समतल भूमिमें बना हुआ फरिंतों वाली माता मरियम का गिरजाघर उपदेगक लिए उहें मिल गया। फ्रांसिस और उनका गिप्यान अभीके आमपास डाठें और पत्तिया बीनकर छप्पर बना गिये। किन्तु उनके रहनका कोई निश्चित स्थान नहीं था। निधन मजदूरीकी भाँति व मटमल रगका एक झोला पहनत रोज मजदूरी करक गजर करत और गिरजाघरक छत्ता या खन्डिहानाम रात काट दत। शरीबा अपाहिजा मजदूरी कोटिया और बहिष्कृताके बीच उनका समय कटता जोर हमगा व प्रसन्न भावसे गात रहत। खदाके मसखर शरकरके भाँड —अपन लिए इमी नाम और चरित्रका उन्होंने बरण किया था। ईसाका निधनताका सिद्धान्त उनका धर्म था उसका व्यवहार करते हुए सम्पत्ति रखना उनके लिए निषिद्ध था। प्रतिदिन मजदूरी करके वे भाजन बमानथ मजदूरी न मिन्नपर ही भिशाकी अनुमति थी। कुछ भी बचाना कुछ भी जेबमें रखना धन ग्रहण करना या भीखमें लेना भविष्यक या आगामी दिनक लिए भी किसी तरहका सामान जटाना उनके लिए निषिद्ध था। खान पानका कोई निषध नहीं था जो दे गिया जाय उसीको प्रसन्न मनस ग्रहण किया जाय एतना ही अपेक्षित था।

नि स्वना आनन्द और रहस्यमय ममपण—सत फ्रांसिसके जीवनके य तीन बीज-मन्त्र थे। निधनताकी स्तुतिमें उहान गाया था (ब्रूमपर) जहाँ मानान भा तुझ छात्र गिया वहाँ भी तरी नि स्वतान तुझ नहा छोण तरे साथ गूँगीपर चर गयी। तू जब प्यामा था तब तरे लिए उसन विपका प्याला तयार किया। उमा नि स्वताके आलिंगनमें तू मरा। मरनपर भी उमन तरा साथ न छात्र क्योंकि तरी दहका मगनीकी कब्रके सिवाय दूसरा ठौर न मिला आ नि स्वतम आ नि स्वतम यीगु चरम नि स्वताको य निरि तू मय प्रणन कर

आनन्दका सिद्धान्त सभको उनका आत्मोप और मुहदु बनाना था

निर्जीव वस्तुएँ भी उनके लिए भाई और बहन थी। अन्तिम बीमारीमें रोगी अगका दागनके लिए लाहेकी सलाख गम की गयी तब उहाने उसका भी उसी मुदित भावसे स्वागत किया— 'भाई आग मेरे साथ दयाका ही व्यवहार करना। राह चलत वह रुककर पक्षियाको भो उपदेश देते थे और उनके भक्त मानत ह कि पक्षी चुपचाप उनकी बात सुनत थे।

शरारक माय उनका जसा अनासवन सम्बन्ध था वह सच्च जितद्रिय का ही हो सकता ह। मृत्युके समय करुणा विगलित भावसे उन्हान स्वय अपनी दहसे दामा भागी थी। जितिम दिनमें वह अघप्राय हो गये थ, लेकिन इसस उनके आनन्द विभोर भावको या स्तवमानका कोई आघात नहीं पहुचा। खुनाका यह मसखरा हसता-गाता हुआ ही अन्तम स्वय अपने आनन्द और अपनी आस्थामें विनोत हो गया।

सुवासिया शिखरके नीचे वन प्रदेशम खाय हुआ काचैरीका गुफा विहार अब भी ज्याका त्या खडा ह। साय प्रात गध द्रयाका धुआ उसके पूजागृहसे उठता और वन-मघामें विनीत हो जाता ह। जिन पक्षियाको सन्त प्रासिस उपदेश देते थ उनके वशधर गुफाक आसपास कूजन करत ह और चुप हो जाते ह। यह एक परम्परा ह—असम्पक्त आत्मस्थ और किसी अलौकिक स्वरके साथ एक-तान।

दूसरी ओर असोसीकी बस्तीकी चहल-पहल ह रोमिक कालके मन्दिर के अबोधने सटा हुआ नया नगर भवन ह। रोमिक कालकी वापीके निकट सडक बनात हुए आधुनिक इजन ह और बस्तीके सिरेपर बस्तीसे विमुख प्रासिस्वन सम्प्रदायका विहार और गिरजाधर ह। बीचमें ऊचाईपर उजडा हुआ दुग ह अब विल्कुल निजन किन्तु फिर भी अपनी अतीत सत्ताकी सूचना देता हुआ। ये सब भी एक परम्परामें बध ह। किन्तु यह परम्परा असम्पूक्त नहीं ह एतिहासिक होनके नाते देग-कालसे और मानवीय राग विरागासे निविडताके साथ बैधी ह। यह परम्परा आत्मस्थ भी नहा ह

क्योंकि बहिर्मुख और सामाजिक और कम रत ह । और उसमें अलौकिक भाव भी नहीं ह हम कृतन हो सकन ह तो इसीके लिए कि लौकिक होत हुए भी उमन एसी एकतानताका निवाह किया ह कि असीसी अपन ढगका एक-मात्र नगर हो गया ह । स्टेशनसे ही देखनपर वह जिस सम्पुजित एकताका प्रभाव देता ह वह घूमन फिरनके बाद भी ज्याका-त्या बना रहता ह और यात्री वहाँसे जो प्रसन्न और रमपूरित भाव लेकर लौटता ह उसमें जिनना योग सन्त फामिसकी आनन्पूण तमयताका होगा उनना ही असासीक संस्मित मयात्त निवाहका भा । अगर लोग सत फामिसको दूसरा र्सा कहत हैं अथवा असीसीका समूच इटलाके सरदाक सत का नगर मानत ह तो उचित ही करत ह । यूनान यूरोपीय मभ्यताका पिता ह तो इटली उसकी माता ह असीसा उस मात अपने चहरका स्मित भाव ह—मुक्ति करणामय और सबत्त एक-सा वात्सल्य भरा ।

यूरोपकी छतपर : स्विट्जरलैण्ड

दुनियाकी नही तो यूरोपकी छत अपने पवतीय प्रदणक कारण स्विट्जरलण्डको प्राय यह नाम लिया जाता था—किंतु हिमालयको घरक किमी बढकी तरह सहज भावसे जाननेवाले हम भारतवासियाको यह नाम पहल भी प्रभावित न करता, और अब ता यूरोपके लागाका भी नही करता क्योंकि इधर उनका भी हिमालयसे परिचय काफी बढ गया ह । अनब यूरापीय देशके पवताराही विभिन्न गिखराकी चर्चाके सफल और असफल आयोजन कर चुके ह । इसीलिए इंग्लण्डक स्वीडन गिखरकी चर्चाकी चर्चा करत समय एक अग्रेज अध्यापकन अपनी बात हठात अधूरी छोडकर मुनसे कहा था—अर आपसे क्या इसकी बात करें । हिमायन सामने तो हमार पहाड एक फुसोके बराबर हागे ।

पहाडकी ऊचाईकी तुलनामें भी स्विट्जरलण्डके पहाड उतने नागण्य तो नहा ह । और पहाडी समामामें जो एक सहज आत्म-सन्ताप और स्वत सम्पूणता होती ह वह जितनी हमार देाके पहाडी समाजामें पाया जा सकती ह उतनी ही स्विट्जरलण्डमें भी मिलेगी । फिर भी भारतम प्राय जो तुना की जाती मुनी थी उसे जब-जब मन दुहराया तब-तब कुछ निविधा हुई—यह कहनेको मन नही हुआ कि स्विट्जरलण्ड यूरोपका कागीर ह या कि कश्मीर भारतका स्विट्जरलण्ड ह । एक बार इतना कहा था कि कागीरके कुछ प्रदेशका साबुनसे खूब धो लें तो कुछ-कुछ स्विट्जरलण्डसे लगन लगेंगे । यह बात किमी ह तक ठीक ह पर इसका भी पूरा अभिप्राय उसीकी समझमें आ सकता ह जिसने दोना देाकी दखा हो । क्याकि बात बेव इतनी नहा ह कि स्विट्जरलण्ड बहा साफ-सुधरा देा

ह या कि वहाके जीवनका स्तर यूरोपकी भी दृष्टिसे बहुत ऊंचा ह । बात इससे कुछ अधिक ह । स्विस दृश्यको देखकर उसका अतिगम्य सौन्दर्य मनमें सजीव-सा जमता नही ह कुछ ऐसा जान पड़ता ह कि एक रंगीन चित्र देख रह ह । म नही जानता कि एसा मेरा ही अनुभव रहा या कि और भारतीयाका भी ऐसा होता ह या कुछ एमे अति उत्साही भारतीय भी मझे मिले जो स्वित्जरलण्डके सौन्दर्यके सामन दुनिया भरके पहाडको फूँकसे उडा देत ह । भारतक हिमालयकी तो बात ही क्या ? किन्तु एस तो एक भारतीय राजदूतकी भी बात सुनी थी जिहान समूचे भारतकी हा यूरोपके एक पहाडी बगलेके सामन तु-उ ठहरा दिया था । जिन यूरोपीय महिलांन यह बात मझ सुनायी थी—उहीसे यह कहा गया था—उन्हान यह टिप्पणी भी की थी हमार देशमें भी एस लोग होते ह तो अपन देशकी बुराई बरत रहत ह—पर हम उन्हें राजदूत बनाकर नही भजत । पर एसे गान धनियाको छान । मझ तो जगह जगह बार-बार एसा लगा मानो सामनके दृश्यका सौंदर्य ता स्पष्ट हो मगर उसकी यथायता ही मानो सन्निध्य हो । एसा क्या ? सब कुछ मजा बला उजला ह हरी घास माना सघनत्वकी घाससे कुछ ज्यादा हरी ह आकाश सचमुचके आकाशसे कुछ अधिक नीला गुन्ना मधुसूय कुछ अधिक चमकील फूल कुछ अधिक रंगीन और इसलिए जस उनपर विश्वास नहा होता उनस अपनापा नही जटना । जय जिम घरव बउनेका बहुत अधिक झाड-पाउकर और तरताइसे रखा जाना ह उसमें चाकर प्रमावित हानपर भा एसा नहा लगता कि यर्ग बोई रहता ह जिमुफ सम्पास कमरका वातावरण आवित ह—कुछ एसा ही भाव स्वित्जरलण्डम बराबर भर मनम रहा । हो सकता ह कि मैं हा प्यारा सबन गान रहा हू पर स्वित्जरलण्डकी आन्ध्र श्रेणीसे विस्तृत सन्धन इतालियन आन्ध्रोंमें या आम्ब्रियाक पवनाम एसा नगें लगा—इन्नाका परिदृश्य सवना प्रतहमान आवनस स्पन्दगोठ जान पना ।

वसे एक अथमें जहर न्विस पवत यणी यूरोपका छत ह वहाँसे बहा हुआ पानी नदिमाके रूपमें यूरोपके विभिन्न भागमेंस गुजरता ह । राइन, रान, पो और इप्र नदियाँ सब इसा श्रेणीस प्रमत होती ह । इन ती शीघ्र ही बरफमें जा मित्ती ह बाब्रा तानों वास्ट्रिया जमनी फ्रांस और इटलीक प्रदेगाका सींचती हुई विभिन्न दिशाओंमें जाती ह जाके तट प्रदेगाका अपना अलग-अलग सौत्प ह प्रत्येकके तटकी मुख्य खता अगूरक अलग-अलग नाम और प्रासक । स्वित्जरलण्डक प्रदेगमें भी नदिया ह, और नदी तटपर बगी हुई राजधानी बनका सौन्दय दानीय ह । मुझे वही वहाँका सबसे सुंदर शहर लगा और उसके बाद बाजल या वात्रिक नदी-तटका नामा निरानी ह । लूरिख (जूरिख) अपन अन्तराष्ट्रीय हवाई अड्ड और उद्योगके कारण और जेनाका अपन अन्तराष्ट्रीय सम्मेलनाक कारण अधिक प्रसिद्ध ह । जेनाका विज्ञान शाल लेमाना उसके सौन्दयकी वृद्धि करती ह पर इन शालका भी वास्तवमें दूसरा अर्थान लोजानकी आरका तट अधिक सुन्दर ह ।

नदियाके रहत भा स्वित्जरलण्ड नदियाका नहा शालका ही दंग ह—शीलाका और पवत गिबराका । जेनाका और गोजान दोनों विशाल छमान शीलपर वसे हुए अलग-अलग नगर ह जिनके बीचके छोट छोट गवह बमब अंग ह गोग अपनी अपनी र्विक अनुमार इन छोट छोट पहावामेंस कई एकको कई दूसरको पसन्द करत ह । किन्तु पूरी शालकी दृष्टिमें जूमनकी शील छोटी हानपर भी सबसे सुन्दर ह । या जेमान शीलपर लोजानके आस-पाससे दीखनेवाला सूर्पान्त बडा सुंदर ही सकता ह और शियाकी पुरानी गडी भी—जिस वापरनका कविता द प्रिञनर आफ शिया ने प्रसिद्ध कर लिया—बडा सुंदर ह । पर जूमनक काल-कालपर इतना सौन्दय बिभरा पडा है और शालकी आरसे आँस हटाय तो गिरि गिबरा की आवाज इन मधुर आसपक स्वरमें बुला लेती ह, कि जूमन देख बिना स्वित्जरलण्ड देखा पूरा नहीं माना जा सकता । मर जस व्यक्तिका कभी

कभी यह जरूर अनुभव होता कि मकन टूरिस्टाकी इतनी भरमार न होती तो कुछ बुरा न होता—पर टूरिस्ट तो आधुनिक जीवनका जुकाम है—जो कभी भी कहीं भी हो सकता है और जिमका कोई इलाज नहीं है। और स्विटजरलैंडके उद्योगोंमें तो टूरिस्ट उद्योगका बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। वहाँकी घण्टियाँ कमर और अनक प्रकारकी छाटा मशीनें और उपकरण तो प्रसिद्ध हैं ही वहाँके डिके दूध, पीर चाकलेट आदिका निर्यात भा दुनिया भरकी होता है और उत्तम कोटिकी दवाइया भी वहाँमें आती है पर इस छोटेसे देगकी सम्पन्नता जितनी इन उद्योगों पर निर्भर है उतनी है टूरिस्टापर वहाँ इसर लिए जो नाम प्रचलित है वह है परदेशी उद्योग। गर्मियामें धूप और खरी हवा पहाडी सर और बालू भरताने स्नानका आकर्षण और जाडामें बर्फ खाना आकर्षण—इनके कारण प्रतिवर्ष दो लाख टूरिस्ट सौजन हो जात है इसके अलावा विधाम या प्राकृतिक चिकित्सा दूध मद्यक कल्प या जन्मी-बूटियाकी यात्रामें भी लोग आत ही रहत हैं। और यूरोपाय राजनीतिमें अपनी विगत गठस्थता-नानिके कारण स्विटजरलैंड अनक प्रकारके राजनीतिक सम्पन्न और आशान प्रदानका मो कर्त है। सालमें कम ही दिन एस होते हाय जब वहाँ कार्मिक-कोई कामकरत न हा रती हो। जनीवाका तो नाम ही माना अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनका पर्याय हा गया है पर लाजान लाजानो वाजल सभी इतिहासमें सघिया और सम्मन्तके कारण प्रसिद्ध हा गय है।

स्विटजरलैंड का भाषा देग है। जमन फामामा और एलायाय उमने तान सन्त है उत्तर और पश्चिमात्तर जमन भाषी है पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम फ्रेंच भाषा दक्षिण पूर्व इटालियन भाषी। भाषा अपन भाषामें अलग कुछ चाड नहीं जानी। उमके साथ सभृति विचार धाराए और प्रवर्तिका और जातिगत मान्यमन्यियाँ भी बनी होती हैं और यह विमत्या सम्बन्ध वहाँ भाषा ना मकना है। उन्परणतया रामन पाषका

विशेष सनावा प्रत्येक सिपाही स्वित्जरलण्डके पवतीय प्रदेशसे आता ह य स्विस प्रहरी' अपन शस्त्र और रगोन बन्दियाके लिए भी उत्तम हा प्रसिद्ध ह जिनन अपन गिट्ट यवहारक लिए । स्वित्जरलण्डमें तीना भाषाआका समान राजकीय प्रतिष्ठा दी गयी ह पर वास्तवम किसी भी प्रदेशमें मुख्य रूपसे एक भाषाका चलन ह और गौण रूपसे एक दूसरीका समान रूपसे विभापी प्रदेश या समुदाय कही नही मिलेगा । हमार जैसे बहुभाषी देशके लिए इसमें कर्क संकत ह । भाषाआके परस्पर विद्वेषसे मुक्त रहना देशकी उन्नतिके और देशमें एक देशीय भावनाक विकासक लिए आवश्यक ह और स्वित्जरलण्ड दम भाषा मन्त्रावा उत्तम उदाहरण ह । लेकिन दूसरी ओर मरी समझमें यह भी बह सिखाना ह कि बिना एक भाषामें पूरी तरह दृष्टे रचनात्मक साहित्यिक कार्य नही हो सकता । नयाकि भाषा सञ्चृतिका जीवन रम ह । अतएव जडामें सोचा जाकर और रंगे रसमें बहकर बह रस पौधको पट्टि न द तत्रतक पौधपर रंग विरगे कागजी फूल खाम दनसे कृष्ट नही हो सकता । स्वित्जरलण्डमें बडे साहित्यकार अधिक नही हुए ह जा हुए ह वे उसका विभाषिकताक उदाहरण नही ह बल्कि स्पष्टतया एक भाषाके और भाषिक सञ्चृतिक वातावरणमें पड़े ह—जमनके या फ्रेंचके । या फिर ऐसा हुआ ह कि बाहरसे आकर जमन या फ्रेंच भाषा साहित्यकार वहाँ बस गये ह । बिना एक भाषाकी सञ्चृतिमें पूरा तरह दृष्टे हुए बिना उस भाषाको धारमसान किये हुए कोई बड़ा साहित्य नही रचा जा सकता । यह जान लेना हमार लिए बड़ा जरूरी ह—जो कि बार् एक परीक्षा पास कर लेनेपर अपनका भाषाक अधिकारी समझन लगत ह या कभी एना भी करने ह कि किसी भी भारतीय भाषापर अधिकार न होनेके कारण अपनका बड़ा अग्रजी दी ले मान बठन ह । दूसरा भाषाए जानना बुरा नही ह और हम लोग दूसरीकी अपेक्षा ज्यादा ही दूसरी भाषा सीख लेने ह पर भाषापर बह अधिकार जा सञ्चृतिका माधन बन सक—बह और चीज हानो ह । यसा अधिकार एक ही भाषामें मिल सकता ह—और

कभी यह जरूर अनुभव होता कि सबन टूरिस्टाकी इतनी भरमार न होती तो कुछ बरा न होना—पर टूरिस्ट तो आधुनिक जीवनका जुकाम है—जो कभी भा कभी भी हो सकता है और जिसका कोई इलाज नहीं है। और स्विटजरलैंडके उद्योगमें तो टूरिस्ट उद्योगका बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। वहाँकी घाँस कसर और अनक प्रकारकी छाटा मशीनें और उपकरण तो प्रसिद्ध हैं ही वहाँक डिब्बक दूध पनीर चाकलेट आदिका निर्यात भी दुनिया भरको होता है और उत्तम कोटिकी दवाइयाँ भी वहाँस आती हैं पर हम छोटेसे देशकी सम्पन्नता जितनी इन उद्योगों पर निर्भर है उतनी है टूरिस्टापर वहाँ इसके लिए जो नाम प्रचलित है वह है परदेशी उद्योग। गर्मियोंमें धूप और सखी हवा पहाड़ी सर और झील तराने स्नानका आकर्षण और जाहाम वफके सलाफा आकर्षण—इनके कारण प्रतिवर्ष दो लाख टूरिस्ट सौजन हो जाते हैं इसके अलावा विद्यालय या प्राकृतिक चिकित्सा दूध मटुके कप या जूनी-बूटियाकी मोजमें भी लोग आते ही रहते हैं। और यूरोपीय राजनीतिमें अपनी विराय तटस्थता-नानिने कारण स्विटजरलैंड अनेक प्रकारके राजनीतिक सम्बन्ध और आन्तक प्रयत्नका भी केंद्र है। सालमें कम ही दिन ऐसे हाते हाग जब वहाँ कहीं कोई कानकरस न हो रही हो। जनावाका तो नाम ही माना अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनका पर्याय हो गया है पर लोजान सत्रानों वाजल सभी इतिहासमें सधिया और सम्मेलनके कारण प्रसिद्ध हो गये हैं।

स्विटजरलैंड बहुभाषी देश है। जर्मन फ्रांसिसी और इटालियन उसके तीन भाग हैं उत्तर और पश्चिमात्तर जर्मन भाषी हैं पश्चिम और दक्षिण पश्चिम फ्रेंच भाषी दक्षिण-पूर्व इटालियन भाषी। भाषा अपने आपमें अलग कुछ बात नहीं होता। उनका भाषा मुसृति विचार धाराए और प्रवृत्तियाँ और नागरिक महानुभूतियाँ भी बनी जाती हैं और यह विमथा सम्बन्ध वहाँ भाषा जा सकता है। उदाहरणतया रामन पापका

एक यूरोपीय चिन्तकसे भेंट

न कोई घण्टी बजी न गान्धन या इजनन सींगी दी । समय होन ही गाड़ी घोर-मे चल पड़ी और मर लपक कर मवार होते-हाते उसकी गति बाक्री तज हो गयी । बिजलीका गान्धियाको गति पकडते देर नही लगती । बठकर सोचा, ठाक ही ता ह, स्विटजरलण्ड घडियाका दस ह और यहा सब काम अपन आप समयस हाना चाहिए । समय हुआ और गाडा चल पनी—सीटीकी क्या जरूरत ? और जो प्लेटफामसे कुछ दूर पर ह, उसे भी सीटी गुनवर दौडनेकी कोई जरूरत नहा ह । वह तो जहाँ ह वही अपनी घडी देखकर जान सकना ह कि गान्धी उस मिलेगी या नहा मिलगी ।

जेनीवासे निकलते ही दाहिनी धार लमान झोल दोतन लगा फिर गाड़ी और झीलने बीचकी डालू जमीनपर अगूरकी बटो छनी लताआके खत । आध घण्ट बाद लोजान पहुचकर हमने पीलका विनारा छोड लिया और थोन बायेंको मुडकर यूरा पवन थणीकी उपयकामें पहुँच गये ।

मं जनीवासे बाजल (अथवा फ्रासीसी 'व' चारणस बाल) जा रहा था जहाँ मस काल मासमस मिलना था ।

अस्तित्ववाकामें मरी दिउचस्पी क्या रही इसके कारणामें जाना आवक्यक नही ह । हिलीक जा परिश्रम विरोधी महजवानी आलीवक मुनका हो अस्तित्ववाकाने और साप्रका अनुयायो यह दन है उनक सम्मुख ता मह निवेदा करना भा निप्रयाजन ह कि साप्रका साहित्यिक अस्तित्ववाक मरे लिए त्रिगप आवकक कभी नहीं रहा ह यद्यपि मने पन्ना और समयना उस भी चाहा जसे कि अज साहित्यिक सिद्धान्ताको समयना चाहता रहा हूँ । केविन उन दा प्रयत्तियामें, जिन्हें ईगार्द अस्तित्ववाक और वपानिक

अधिकतर अपनी ही भाषाम मिल सकता है। जिन डूबा तिन पाइया गटर पानी पठ —भाषाके सागरके लिए भी उतना ही सच है जिनना जानके पानके द्वारा हम सत्यका वास्तविकताको पहचानन है तो भाषाके गरा उसकी सुदरताकी।

ऊपर पापके स्विय अगणकाकी चचा की गयी है। यह सेना स्वच्छासेवा है य कहनकी तो उरुरत नहीं। स्वियजरलण्डकी अपना छाटी-सी सनाका संगठन भी उल्लेखनीय है। दगाके सभी वयस्काको था न्निकी अनिवाय सनिक सवा दनी पता है—पत्नी वार पतालास दिन उसके बाद हर आतर वप सालह न्नि और फिर हर चौध वप नो न्निके लिए। किन्तु वर्दी और हृदियार बराबर लोगके पास हा रहत है और समय समयपर उनका निरीक्षण हा जाता है। आर मनाम सम्पूर्ण लोकतन्त्री व्यवहार होता है—छाट वका भद नहीं माना जाता है और बहुवा साधारण जीवनके स्वामी और सेवक सेनाम एक साथ और बराबर होकर रहत है। एमा हा व्यवहार स्कूत्राम जाना है शिक्षा अनिवाय है और निरक्षर काइ नहा है। पहाणमें कहा-कहा तो पुरान ढगकी गणतन्त्र प्रघाए अभीतक चली आती है जैसे कहा-कही पूर समाज अथवा गणकी सभा हाती है जिनमें हर वयस्को अनिवाय रूपस आना पता है और सभाके काममें भाग लेना पडना है।

स्विय लग अपना लोकतन्त्र प्रवर्तिका अपन स्वाधानता प्रेम और अपनी शान्ति प्रियताका बडा गव करत है और उचित ही करत है। उहने समारका काइ महान कवि या चित्रकार नहीं दिया पर एक सम्य और आधुनिक जावन-परम्परा ता दा है जिनकी बनिपा है सत्य दया और स्वतंत्रता—और कौन कगा कि मानव ससृतिके लिए एस देनका कम मन्त्र है ?

एक यूरोपीय चिन्तकसे भेंट

न कोई घण्टी बजी न गाडने या इजनन सीटी दी। समय होल ही गाडी घोर-मे चल पडी और मेर लपक कर मवार हाते हाते उसकी गति काफी तज हो गयी। दिजनीकी गाडियाकी गति पकडते देर नहा लगती। बठकर साचा ठाक ही तो ह स्विटजरलण्ड घडियाका देग ह और यहा सब काम अपने आप समयस होना चाहिए। समय हुआ और गाडी चल पडी—मीटीकी क्या जरूरत ? और जो प्लेटफामसे कुठ दूर पर ह उस भी सीटी सुनकर दौडनेकी कोई जरूरत नही ह। वह तो जहाँ ह वही अपनी घडी देखकर जान सकता ह कि गाँी उसे मिलगी या नहा मिलेगी।

जेनीवासे निकलते ही दाहिनी आर लमान शील दोखने लगी फिर गाडी और शीलक बीचकी ढालू जमानपर अगूरकी बटो छटी गताआके खत। आध घण्टे बाद लोजान पहुचकर हमन शीलका किनारा छाड लिया और थोडा बायेंकी मुडकर पूरा पवत-श्रेणीकी उपत्यकामें पहुच गये।

म जेनीवासे बाजल (अथवा फासीसी उच्चारणसे बाल) जा रहा था जहा मुझ काल यास्पससे मिलना था।

अस्तित्ववात्ममें मेरी लिचस्पी क्या रही इसके कारणमें जाना आव 'यव' नही ह। हिन्दीके जो परिश्रम विरोधी सहजवादी आलोचक मुझको हा अस्तित्ववादी और सात्रका अनयायी कह दत हैं उनन सम्मुख ता यह निवदन करना भी निष्प्रयोजन ह कि सात्रका साहित्यिक अस्तित्ववाद मेर लिए विगप आकषक कमी नही रहा ह यद्यपि मन पन्ना और समझना उसे भा चाहा जसे कि अज माहित्यिक मिद्वानाको समझना चाहता रहा ह। लेकिन उन दो प्रवृत्तियामें, जिन्हें 'ईमाद अस्तित्ववा' और 'वनानिक'

अस्तित्ववादी कहा जाता है मरी विधि रुचि रही क्याकि म समझता था और अब भी मानता है कि यूरोपकी बनमान मन स्थिति और उसक सफ्ट को समझने लिए इन प्रवृत्तियोंका अध्ययन आवश्यक है। इसीलिए यून्स्वाक निमित्तम जब यूराप जानका संयोग हुआ तब मन भेंट करनक लिए जिन वक्तियोंकी सूचा बनाया उनमें गरिब मासॉल और काउ यास्पम भी थे। दाना हा प्रतिष्ठित चिन्तक है किन्तु एकन पीछ वयो लिक ईसाई ननिक चिन्तन है और दूमरक (यद्यपि दूमरा भी कथोलिक ईसाई है) विज्ञान और मनस्तत्त्वका गहरा अध्ययन। भारतम प्रस्थानस पहल दानाकी कुछ कृतियों में पढ़ गया था और दोना हा मन आधे लगी था पर यास्पमका स्पष्ट और सतक विचार-मद्धनिन विधि आकृष्ट किया था।

यून्स्वाकी मध्यस्थास भेंटकी व्यवस्था हा गयी थी और जिन तथा समय निश्चित हो गया था और इसीलिए म उस विधि गान्धीसे बाजल जा रहा था जहाँ यास्पमका निवास है।

मर माध दुमापियने रूपम फाउलीन त्रिस्तल स्फूलर था। कुमारी स्फूलरम मरा परिचय भारतमाय दूतावासके अधिकारीन कराया था जिनस मन दुमापियका साजमें सत्यापना चाही था। यास्पम यद्यपि अंग्रेजी जानन है तथापि बोझमें उन्हें संकाव था। सम्भव है कि उसका कारण यहा रहा है कि का भी चिन्तक गान्धी सती-सती प्रयागपर अधिक आग्रह करता है और वस्तुनिक चिन्तक तो और भी अधिक और इसलिए यास्पम अपने विचारोंका अनवरत स्वयं करना न चाहत रहता।

कुमारा स्फूलर मर पास भजा गया तो जमन-गिण्ट दुमापियन नान किन्तु नोट हानपर एक हुआ कि वं हिंसा भा जाननी है यन्वि हानका दुमापिय विद्यार्थी नहैं अंग्रेजोंक साथ गिण्टाका भी हिंसा गिण्टा है। उनका आशय यहा था कि दुमापियन नाने एशियाम स्थित किन्ती दूतावासमें उनका निश्चित है—भारतमें अथवा एशियामें हा

जाय तो कहना क्या । यास्पस मित्रनेका उनका उमाह मृत्युस कुछ कम न था । जमन स्वभावकी बल्बनागोलता उनमें पर्याप्त मात्राम थी, भारतीय चित्ता धाराका आकषण भी और यास्पसके प्रति सम्मानका भाव । इसी लिए जनोवाक अपन कामस उन्होंने एक दिनकी छट्टी ले ली थी और मर साय जा रही थी ।

बाइल पहुचनेपर हम लोगान अपन-अपन शौले इत्यादि स्नानपर ही जमा करा लिये और मह-हाथ धोकर बाहर निकल पडे । यास्पसके पतेक अलावा बाइल गहरका एक शवशा भा हमार पास था । टक्की हमने नही ली । एक टाममें बठकर वाटिन लियामें चल पड । जिस सडकपर हम जाना था वह ट्रामके रास्तेसे कुछ हटकर था लेकिन हमारा अनुमान था कि ट्रामक ठियस यास्पसके घर तक पहुँचनेमें हम त्म मिनट लगेंग, और उनको गुजाइश हमार पास थी ।

लगभग एक मे मकानाकी बजारमें नम्बर देखकर हम लोगान द्वा गलटखटाया । एक मेविकान आकर द्वार खोला और नाम बतानेपर पीछे जानका सकत किया । मकान दोमजिला था और यास्पसका अ-पयन-कण ऊपरकी मजिलम था ।

परिनय और उपचारके बाद हम लोग जामन-गामने बठ गय । औप धारिक बातचीतके दौरानमें भी और बठनेके बाद कुछ क्षण तक भी मैं यास्पसके चित्रका अध्ययन और बरकरा व्यवस्थाका पयवेगण करता रहा था । बाटनी दीवारके कारण कमरका धुधला प्रकाश और भी मद्धिम हो गया था और यास्पसका स्वर भी बहुत मंदु और धोमा था । यह सब अच्छा था, लेकिन इससे भी अच्छा था वह भाव जो कि यास्पससे साक्षात होने ही मर मनमें उन्ति हुआ था ।

घट्टके भावके अलावा हर एन ब्यक्तित्वका अपना एक पर्यावरण रहता ह जो मागे एक अत्य प्रभा-मण्डलकी तरह ब्यक्तिकी घरे रहता ह और उमके साथ-साथ चलता ह । पहली भेंटम ही बभी-कभी जो तीस्र अड्डक

या प्रतिकूल भाव मनमें उठिन हो आत ह उनका कारण क चित्त इन प्रभा-मण्डलाका सस्य या टकराहट हा होता ह । यास्पससे मिलत ही एक स्निग्ध अनुकूल भाव भर भीतर उदित हआ जो वातचीतके अत तक बना रहा । अन्त सघष यूरोपीय चरित्रका अनिवाय अग जान पडता है और उसकी प्रति-छाया प्रत्यक् यूरोपीय चहुरपर दीख जाती ह—बल्कि जबसे यरोपमें उतरा था तबसे बराबर यह प्रश्न भर मनमें उठता रहा था कि य सब लोग एसे सन्नस्त क्या दीव्यत ह कौन-सा भीतरी सघष इहें पाय ता रंग ह—किम समस्यान इनके चित्तको एसा विभाजित कर दिया ह कि दाना खण्ट बराबर एक दूसरसे तन रत्ते ह और किमी स्तर पर भी उनका मल नहीं होता ? यास्पमका चहरा देखत ही पहली बात जो भर मनमें आयो वह यही थी कि मह चहरा दोहरा नहा ह यह ब्यक्तिव विभाजिन नही ह । जसा कि मन भेटके बाद बाहर निकल कर अपनी विभाषिकास कहा था तिन मन इज एट पीम कि हिम मफ ।

पहल प्रश्न यास्पमन ही पड । आप यूरोप क्या आय ? यूरोपमें आत्को क्या और क्या चिन्चम्पा ह ?

मैन कहा मरी चिन्चस्पी दोहरी ह । एक ता म समानताए पह धानन आया ह । यूरोपन और हमार मासृतिक समयमें बन्द-ना चौजा का माया ह अनिहाम कहा हम माझीगरीक भावको पुष्ट करता आया ह ता कहा एसा निचाय भा उत्पन्न करता रहा ह कि हम उम मन्वघ का भूठ आवें या उच्छिन्न कर दना चाहें । मरी समझमें अपन दायम निरन्तर नग मन्वघ जात उरना जानाक तिनमें ह और उम परिस्थितिमें और भा अधिक त्रिममें व्यापक यन्त्रीकरण जानाक बाहरा जीवनको अधिक एक-रूप बनाता जा रहा ह और उनको उमक आभ्यन्तर आधारामे अरुण करता जा रहा ह । दूसरा ओर मरा उननी हा चिन्चम्पा यूरोप का और ज्ञाना अममानतामें भा ह । व अममानता ह जना म जानता

हैं, लेकिन उसका ठीक-ठीक निरूपण नहा कर सकता न उसको उसके मूल स्रोत तक ल जा सकता हूँ क्योंकि यूरोपसे मेरा परिचय दूरवा हो रहा ह ।

यासमान मेरा बातको स्वीकार करते हुए-से स्वरम फिर पूछा, यह असमानता क्या ह ?'

मन कहा मेरी समझमें इस समय संसारमें तीन सांस्कृतिक प्रणा लियां जीवित हैं । एक पश्चिमकी ह जो धम विन्वास प्रधान ह । (यूरोप की यत्र मस्वृति को छोड लीजिए क्याकि यत्र मस्वृति हर जगह एक ह । वास्तवमें वह सस्वृति नहा ह ।) दूसरे छोरपर चीनी सांस्कृति परम्परा है जिसमें धम विदवासका कोई महत्व हा नहा ह और चर्चा हा मुख्य ह । या भी कह लीजिए कि पश्चिमकी सस्वृति ईश्वरपरक ह और चीन की संस्कृति लौकिक । इन दानाके बीचमें कही हम हैं—भौगोलिक दृष्टिसे भी हम बीचमें ह । भारतकी ही संस्कृति ऐसी ह कि उसे धम विन्वास मूलक भी कहा जा सकता ह और लौकिक भा । हमारे लिए धम विन्वास रहित हाकर सस्वृति रह ही नहीं सकती किन्तु दूसरी आर सस्कारकी पहचान हम लौकिक आचरणसे ही करते हैं । ईसाईके लिए जसा कि मुस्लिमके लिए धम विन्वासकी एकता और एकरूपता आवश्यक ह, वह प्रमाणित हो जाने पर आचरणकी छूट हो जाती ह । चीनी परम्परा में आचरणकी एकरूपता अपदित ह क्याकि उसमें अलग कोई धम विदवाम ह ही नहीं । भारताय परम्परामें आचरणकी एकता या एकरूपता अपे णित ह उसकी प्रतिष्ठा हा जानपर धम विदवाममें विविधताकी छूट ह—कबल विविधताकी अनुपस्थितिकी नहा । यूरोपीय कहत हैं तुम समझमें विन्वास करो फिर आचरण तुम्हारा चाहे एमा हा चाहे बगा हा । भारतीय कहते ह, तुम्हारे आचरणका नियम अमुक ह उसके बाद तुम विन्वास इसमें भी कर सकने हो और उसमें भी कर सकन हो और दोनमें एक साथ भी कर सकत हा ।'

सहसा खबर मन कहा लेकिन प्रश्न करने तो म आया हू। उत्तर आपसे अपेक्षित ह !

यास्पम मुसकरा दिये। अंग्रेजी वह समझते थे इसलिए मेरा बातचीत प्रतिक्रिया उनमें तुरत प्रकट हो जाती थी किन्तु उनके जमनमें दिये गये उत्तरक अनुवादकी मुझे प्रतीक्षा करनी होती थी।

उन्होंने पूछा तो भारतके दार्शनिक पश्चिमकी नज़र क्या करते ह ?

एक प्रश्नका अनुवाद मुझ बताया हा जा रहा था कि उन्होंने और भी क्या क्या हम लोग भारतमें राधाकृष्णनकी बहुत बड़ा दार्शनिक माना ह ? क्या आनन्दकुमारस्वामीन भा बन्त-भी बातों पश्चिमो चिन्तनके साथ एमी रियायत नही की ह जो उन्हें नहीं करनी चाहिए थी, या कि जिसकी अनुमति उन्हें अपना चिन्तन नहा देना था ?

मेरे लिए य प्रश्न कुछ असमजकारी था। मेरा क्षत्र दान नहीं ह। दार्शनिकक विचाराका म अपनी ओरस मूयावन कर सकू इसकी योग्यता म नहा रखना और अनिवायत दूसरके मतामनपर निर्भर करता हूँ।

मन कहा राधाकृष्णन पश्चिमके लिए पूरक भाष्यकार और व्याख्याता ह। हर किमोका मौलिक चिन्तक हाना आवश्यक नहा ह। एकक मौलिक चिन्तनस दूसरका अवगन कराना भा मन्त्रका काम ह।

यास्पमन हन्हा मुसकराया साथ कहा नि सन्नेह नि सन्द ।

उन्होंने भारतमें कम्यनिज्म और भारतका तटस्थ नीतिक विषयमें जिज्ञासा प्रकट की। मन स र्गमें बताया नि भारत संघर्षमें नया पन्ना पाना किन्तु नतिक मूल्याके बारेमें उसकी नानि तटस्थताकी नहा ह। मन क्या कि यद्यपि व्यक्तिगत रूपस मेरा स्वभाव एना ह कि म मनसा जो टाक समझना हू कमणा उसस उत्पन्न जाना भी चाहता हूँ फिर भी मेरी समझमें भारतन जा नानि अनाया ह उसम भिन्न कार्य नानि कर्तवित् उसक लिए कर्तव्य न हाता। और यन् भी हा मकता ह कि प्रजातन्त्र कर्तव्य नद्विषयक लिए भारतका वर्तमान रवया हा अधिक चिन्तकर मिद ह।

यास्पसने कुछ सोचते हुए सिर हिलाया। फिर सहसा मुसकराकर कहा, 'लीजिए अब आपकी धारो ह।

मैं समझा कि उनके प्रश्नाका उद्देश्य यह भी रहा होगा कि मरे प्रश्नों का उत्तर दनसे पहले स्वयं यह जान लें कि मेरी वचारिक पण्टभूमि क्या है और मेरे राजनीतिक विचारोंकी प्रवृत्ति किधर ह।

मने कहा प्रश्न पूछनसे पहले म एक बात स्पष्ट करना चाहता ह। मैं दार्शनिक नहा ह। दशनका विधिवत अध्ययन भी मन नहीं किया ह। मैं केवल लक्षक हू और मरी दार्शनिक जिनासाएँ भी लेखककी ही जिनासाए ह। म उम दुनियाको समझना चाहता ह जिसमें म रहता हू और लिखता हूँ, जिमसे कहानी उपयासके पात्र पाता हूँ जिसमें उनके चरित्र बनते ह उनकी कम पद्धति प्रकट हाती ह और उनका प्ररित करनेवाली चिंतन और भाव प्रवृत्तियाँ रूप लेती हैं। जा सच ह वह म जानू इस गुद्ध दार्शनिक जिनासासे मेरी जिनासा कुछ भिन्न ह कि म जो लिखूँ वह सच हा। मैं मान लेता हूँ कि यह जिनासा गुद्ध दार्शनिक जिनासासे कुछ घटिया दर्जेकी ह।

यास्पसने धीरसे सिर हिलाया।

भेंटका तयारी करते समय मने कुछ प्रश्न लिख लिये थे तो केवल इसलिए कि बातचीतका धन और जिना अपने सामने स्पष्ट कर रखूँ। उस प्रश्नावलीको देखना या तद्वन् सामने रखना आवश्यक नही था। मन सघन विभाजित यूरोपीय चेतनामे ही आरम्भ किया। 'यूरोपीय व्यक्ति वसे क्या है ?

यास्पसने नपे-तुले शब्दोंमें उत्तर दिया। पश्चिमी जीवन ईमाइयतसे बट गया ह, यही उसका आन्तरिक तनाव और सघपका कारण ह। अन्त संघर्ष और अनिश्चय-जय आगकासे उसे मुक्त कर सके ऐसी किसी आस्थासे उसका सम्बन्ध टूट गया ह। मध्य कालक कला और कलाकार धमके साथ—बल्कि उसने अनुगत थे। मध्य कालमें सागठिन घम अर्थात्

मन्ना खरकर मन बना लकिन प्रान करन ता मे आया है। उर
भानु अपगित ह ।

मान्य मन्करा न्य । अनेवा वह मन्ना य इनलिय मरा बनकी
प्रदिशिया उनमे तुरत प्रकट हा जना या किन्तु उरर जनमे सि न्य
उतरर अनुवाका मम उतीगा करना हाया या ।

उन्होंने पूछा ता भारतक दानिक पचिमका मन्ना कौ बन ह

इउ प्रानका बनवा मम दना हा या रहा या कि उन्ने और मा
कहा का हन राग भारतकमे रपाहानुका बन बा दानिक
मानत है का आनकुमारस्वामन भा बनभा वतामे पचिमा
चिन्तनके साथ एसा रिमान नही को ह या उन्ने नग करना घटिए या
या कि जिसकी आनति उन्ने बना चिन्तन नये दना या ?

मर लिए य प्रान कुछ अमनजनकारा य । मरा धन नये ह ।
दायनिकके लियारोंका मे आनी आरस मन्नावन क सकू इसकी यन्त्रा
मे नहो राना और अनिवार्य दूमरके मजानतर निभर कला ह ।

मन बना रपाहानुन पचिमक लिय पबक भायकार और धाराना
है । हर किसका मौलिक चिउक हाता आनक नया ह एक मौलिक
चिन्तनस दुरका अवगत करना भा महत्वका वान है ।

यासमने हका मुककराऊ साथ कहा कि सुन नि सुनेह ।

उन्होंने भारतमे कम्यनिम और भारतका तस्य नतिक विषामे
जिना प्रकट का । मैन सभामे बजाया कि भारत सभमे नहा पना
चाहता किन्तु नतिक मन्नाके बारमे उमकी नति ठारसतको नहो ह । मैन
कहा कि मद्यति व्यक्तिगत मन्ना मरा स्वभाव एना ह कि मे मनता जो
ठक समनता हू कम उमस उरर जना ना चाहता ह । फिर भी मेरी
समने भारतन जा नीति बनया हा उरर भिन काई नति कचिन
उरर लिए उररगय न होजा । और या भा हा सकता ह कि प्रजातन
वान नविमक लिए भारतका वतमान रवया हा अधिक हितकर सिद्ध हा ।

मास्पसन कुछ सोचते हुए स सिर हिलाया । फिर सहसा मुसकराकर कहा, ' लीजिए अब आपकी धारी ह । '

मैं समझा कि उनके प्रश्नका उद्देश्य यह भी रहा होगा कि मेरे प्रश्न का उत्तर देनेसे पहले स्वयं यह जान लें कि मेरी वचारिक पृष्ठभूमि क्या है और मेरे राजनीतिक विचारकी प्रवृत्ति विधर है ।

मन कहा, प्रश्न पूछनेसे पहले मैं एक बात स्पष्ट करना चाहता हूँ । मैं दार्शनिक नहीं हूँ । दार्शनिक विधिवत अध्ययन भी मने नहीं किया है । मैं केवल लेखक हूँ और मेरी दार्शनिक जिज्ञासाएँ भी लेखककी ही जिज्ञासाएँ हैं । मैं उस तुनियाको समझना चाहता हूँ जिसमें मैं रहता हूँ और लिखता हूँ, जिसमें बहानी उपयोगके पात्र पाता हूँ जिसमें उनके चरित्र बनते हैं उनकी कम-गड़बड़ प्रकट होती है और उनका प्ररित करनेवाली चिन्तन और भाव प्रकृतियाँ छ्य ठेती हैं । जो सब कुछ मैं जान इस गूढ़ दार्शनिक जिज्ञासासे मेरी जिज्ञासा कुछ भिन्न है कि मैं जो लिखूँ वह सब हाँ । मैं मान लेता हूँ कि यह जिज्ञासा शुद्ध दार्शनिक जिज्ञासासे कुछ घटिया दर्जकी है ।

मास्पसन धीरसे सिर हिलाया ।

भेंटकी तयारी करते समय मने कुछ प्रश्न लिख लिये थे तो केवल इसलिए कि बातचीतका क्षेत्र और दिशा अपने सामने स्पष्ट कर सकूँ । उस प्रश्नावलीको देपना या तद्बन्धु सामने रखना आवश्यक नहाना था । मने सघष विभाजित यूरोपीय चेतनासे ही आरम्भ किया । ' यूरोपीय व्यक्ति वैसे क्या है ?

मास्पसने सप-सुले दार्शनिक उत्तर दिया । ' पश्चिमी जीवन ईसाइयतमें बट गया है यही उसने आन्तरिक तनाव और संघषका कारण है । अन्त संघष और अनिश्चय जन्य आत्मासे उभ मुक्त कर सके, ऐसी किमी आस्थासे उसका सम्बन्ध टूट गया है । मध्य कालक कला और कलाकार घमने साथ—शक्ति उसने अनुभव थे । मध्य कालमें संगठित घम क्षयान

पचा बलाआ और बलाकाराका अन्त्य बन्धि बन्धित कर दिया । तब से घामिन प्रेरणाआम पचाका सम्बन्ध टूट गया और बलाकाराका विनाग मित्रुड लोकिब एीकपर हान गगा । गाति त्ममें भी सघपका प्रनिट्या तभास हई ।

मन कहा यत् तो मध्य काल्म बात्सी बान हई । मध्य काल्ममें तो एसी कोई दूरी या विरोध नो था । बन्धि और भी पीछ चल—^१मा-पूव कात्म या ग्रीक काल्ममें—तब भी ता सघपकी प्रनिट्या था ?

उहान कहा हाँ ^१मा-पूव कात्म भी एक अनिचय था—आस्था न आधार उनन दू नहीं थ । ईसाइयाका भाव आन्वस्त भाव रहा ^२सा^३ कलाकार आस्थावान् रहे । मध्य कात्मी कलाका बुनिपात्नी स्वर अन सघप और अत्ताहका नर्मी ह ।

मन कहा एतिहासिक घारीवियाको छोड दें तो क्या यह कहना ठीक नही होगा कि पचिमके ओर भारतक कला सम्बन्धी आत्मा सन्व एक अतर रहा ह ? भारतका आत्मा ह कि लिपना उसोका चाहिए जा सघप की अवस्था पार करके वही पहुच बका ह जो समन्गी और अनासक्त ह । इसके विरुद्ध पचिमका आत्मा यह रहा ह कि कवल सघपम डूबा हुआ और छटपटाता यक्ति हो कलाकार हा सकता ह ।

उहान कहा मोट तौरपर यह बात ठीक ह और यह अन्तर पूव और पचिमकी साहित्य दष्टिम रहा ह । पर यूरोपमें मध्य कालके बात् जो नयी प्रवत्तिया दीखी उनका कारण बहुत कुछ कला घारा ओर ईसाइ चिन्ता घाराकी बन्ती हुए दूरी ही था । रनमांसका बौद्धिक उमप भी और रोमाण्टिक जादालन भी उस दूराक ही पहलू हैं ।

यास्पस क्षण भर चुप रह । फिर एक नटखट हसी उनक चटरपर सल आयी और उन्होन पूछा ' क्या भारतीय ऐवक सचमच बस ही होन ह असा कि आपका जादन ह—समन्गी और अनासक्त ?

मन भी कुछ वसे ही डगसे उत्तर दिया जो नही हमार बहुत-से

एक पश्चिमी आदर्शोंका आर बचना चाहते हैं—पश्चिमी पागावके साथ पश्चिमी चिंतनके रागाणु भी वहाँ काफी फल गये हैं ।'

हम दाना हस पडे । फिर यास्पमन कहा 'समकालीन भारताय साहित्यक वारमें मेरा नाम बहुत कम ह । क्या वास्तवमें भारतीय साहित्यकी मूल प्रवृत्तिया पश्चिमम उतनी भिन्न ह ? और भारत सपपका सिद्धांत नहीं मानता तो वहाँका रंगमंच क्या ह ? नाटक कसे होत ह ?

मन स्वीकार किया कि समकालीन नाटक पश्चिमस बहुत अधिक प्रभावित ह, बल्कि कहा जा सकता ह कि समकालीन भारतीय नाटक पश्चिमी परम्परामें ही लिखे जाते ह । इसका एक कारण यह भा ह कि यहा रंगमंचकी परम्परा प्राय नामोप हा गया थी और अब जो हो रहा ह वह जितना पुनरुत्थावन ह उससे अधिक रोपण ह । रंगमंचपर जो कुछ जीवित बचा था या मुमुक्षु सिन्तु सजीव्य था वह नाटक नहीं बल्कि दूसरे नाटय प्रकार थ जो नत्य अथवा सगानस अधिक सम्बन्ध रखत ह । किन्तु नाटकको छान्कर दूसरे साहित्य प्रकारामें नया एसा बहुत कुछ मिला जा कि पश्चिमी साहित्यसे मूलत भिन्न ह—प्रभावित होकर भी भिन्न ह ।

विषय चलत हुए मन अस्तित्ववाणियाकी इस अवधारणाका उल्लेख किया कि मनुष्य अनुभूतियाकी ही प्राथमिकता दन लगा ह क्योंकि वह मानता ह या पाता ह कि यह अस्तित्व ही सब कुछ ह । मने पूछा यह निष्ठा-परिवर्तन या प्रत्यावर्तन क्या इस कारण ह कि मानवने आधुनिक भौतिकवादी विज्ञान दानको कष्य पाया ह या अधिकतर इस कारण कि समन नय विचारवादाको कष्य पाया ह ? विज्ञान और भौतिक प्रगतिने जो आगाएँ बधाया थी व उनासवी सतीकी बात ह पर विचारवादान जो आगाएँ उत्पन्न की थी उनका विकास और विनाश दाना हो इसी सदोमें हुए और अस्तित्ववादका प्रचार भी लगभग समकालीन रहा ।

'नहीं', यास्पम बोले 'उसका कारण यह ह कि मानव अनुभव करता

मन कहा अगर एक व्यक्ति वरणका अधिकार बरतता है—अगर यह प्रमाणित हो सकता है कि एक व्यक्ति उसका उपयोग किया तो उससे यह सिद्ध होता है कि ससारका कोई भी व्यक्ति बसा कर सकता है। इस लिए एक व्यक्तिका कम मानव-मानकी सम्भाव्य गतिका प्रमाण बन जाता है। क्या इस प्रकार हर व्यक्तिक नतिक विकल्पका महत्व मानव जानि मात्रके लिए नहीं है ?

मन कहा नही मर लिए नही सम्पूर्ण मानव जानि लिए।

उहान अमहमति प्रकट की।

मन कहा, अगर एक व्यक्ति वरणका अधिकार बरतता है—अगर यह प्रमाणित हो सकता है कि एक व्यक्ति उसका उपयोग किया तो उससे यह सिद्ध होता है कि ससारका कोई भी व्यक्ति बसा कर सकता है। इसलिए एक व्यक्तिका कम मानव-मानकी सम्भाव्य गतिका प्रमाण बन जाता है। क्या इस प्रकार हर व्यक्तिक नतिक विकल्पका महत्व मानव जानि मात्रके लिए नहीं है ?

उहान इस निष्पणस सहमति प्रकट करत हुए सकन किया कि यह प्रश्न वास्तवमें पहले प्रश्नमे निहित है। मर विकल्पका महत्व इसलिए है कि उससे सिद्ध होता है कि विकल्प सम्भव है यह एक बात है और विकल्पका अपना महत्व दूसरी बात है।

मर प्रश्न अभा चक नया था। लेकिन कुछ मिनट पहलेसे मझ यह अनुभव जान लगा था कि नैत्रका समय चूक गया है। इस अनुभवका आधार बवल मरा घडा नहीं था यद्यपि उसक अनुमार भी प्रायः टूट घण्टा हो गया था। कुछ दर पहुँच थोमत्रा याम्पस भी बगलक कमरका दरवाजा धाँगा सा खालकर साँककर लौट गयी थीं और उसके बाद दूसर कमरस पराका चापक साप-साय काट-बम्मच लगाय जानका हल्का-सा गान भी आन लगा था। य भा सकन काँडा हात। लेकिन वास्तवमें बातचीतमें ही अल्प रूपस कुछ ऐसा भाव आ गया था कि वह पूरा हाँसी जा रहा है।

मन कहा "मर प्रश्न अभी चुक नहीं है बल्कि बातचीतमें कई नये प्रश्न भी उठते हैं। लेकिन मन आपका बहुत समय लिया है और आपके अनुग्रहका दुस्प्रयोग नहीं करना चाहता। आपका अनुमति हो तो इस वरणका समस्याके बारेमें बड़ा एक प्रश्न और पूछना चाहता हूँ।

उन्होंने अनुमति दी। मन पूछा 'पृथ्वीपर हम आये तो अपनी इच्छासे नहीं आये। पार्थिव जीवनका हमने वरण नहीं किया। तब वरणपर आधारित हमारे नीति शास्त्रका प्रमाण क्या है ?

वह हम लिये। बोले, 'एसे कई किन्तु होने हैं जहाँसि लखवकी खाज का रास्ता दार्शनिकके रास्तस अलग हो जाता है।'

स्पष्ट ही मेरा प्रश्न टाल दिया गया था। क्याकिन्तु जन्मीमें उसका कोई उत्तर हा भी नहीं सकता था।

मन त्रिज्या माँगी और उठ खड़ा हुआ। साथ ही यह भी पूछ लिया कि क्या मैं भविष्यमें लिखकर या शवारा भेंट करके और प्रश्न पूछ सकता हूँ ?

उन्होंने सह्य अनुमति दी, पर साथ ही संकेत किया कि वह दोन्वार न्ति बाद छ सप्ताहके लिए एक दूररे विश्वविद्यालयमें भाषण देन जान जात है भेंट या पत्र व्यवहार उमत्रे बाद ही हो सकेगा। कुमारी स्टेपन को उन्होंने घबराव लिया और फिर मरी ओर उभुय होकर उनक विषयमें कुछ कहा। अनुवाद करनमें डिभाषियाको कुछ शिज्ञकते पाकर मन हसकर कहा 'मैं समय गया आप अनुवाद चाह न भी करें। मास्पस मझ बघाई दे रहे थे कि मैं बहुत धाम्य और निष्टावान कुभाषिया साथ लेकर आया हूँ।

नमस्कार करके हम लाग बाहर सहरपर आ गये और थोड़ी दूर बाद ही ट्राम और रक्ते गार भर वाजवरण में।

×

×

×

कुमारी स्फुलरन पूछा क्या मैं अपनी बात-चीनको ठिख डालूँगा ?
क्याकि उम दगामें उसकी एक प्रति वह भी चाहेंगी ।

मन कहा मेर आध प्रश्न तो बिना पछ ही रह गय है ।

वह बोली हा और मरी समझमें वरण वाटे प्रश्न का ठीक उत्तर
उहान नहा लिया—म उनमे इससे कुछ अधिस्की आगा करती था ।

म भी करता था । लेकिन यह भी समझ रहा था कि य प्रश्न एमे नही
थे कि उनका सीधा साधा सक्षिप्त उत्तर दिया जा सके । यह म मानता हू
कि बग बात छाटमें कही जा सकती ह बल्कि छोटम ही कही जा सकती
ह पर वह इसलिए कि सुनका अथ केवल उसके गगाम नही होता उसक
पीछे सस्कारम होता ह । और अथके साझीगार होनेके लिए पहा
सस्कारका साझीगार होना हाता ह ।

ग्रीनस पहले हम लोग बाजल नगरका सर करन गय । नगी तटपर
बस हुए नगर यूरोपमें अनक ह लेकिन उनमें बाजल वसा ही विन्क्षण
ह जसा भारतके नगराम बनारस । हमग नदीके उसपार जाकर
(उस पार अबिकतर बगले ह जा छाट ह, जबकि स्टानवाली आरका
नगी-तट विगाल भवना और अट्टालिकाआम छाया हुआ ह) तटकी
गालार्परम वरता हुआ प्रकाग और नगी-आतपर उसकी चल्मलाती
प्रति छविर्षा देवन रह ।

मै मन-हा मन यास्ससे हा चकी बाताका प्रतिस्मरण करता हुआ
नय प्रश्न साचना रहा ।

हमार अनभवका मय क्या ह ? प्रमाण क्या ह ?—केवल गोचर
अनुभूति ?

—या दुख ?

दुख वरणका प्रमाण ह एमलिए स्वान्त्र्यका प्रमाण ह ।

—एकिन जा दुख वरा नहा गया ह वह ?

—एकिन दुख तो माया ह । ससार भा माया ह ।

—तब वरण भी भ्रम है और स्वातन्त्र्य भी धोखा है ।

—तब कुछ नहीं है । कुछ-नहीं का डर —अच्छी बात है डर भी मिथ्या है, किन्तु वह है ।

क्या जड़वान्के बिना भी यह स्थिति आती ? यह डर हाता ?

ईसाइ परलोक मानते हैं, जीवनोत्तर दूसरा जीवन मानते हैं । हिन्दू भी परलोक मानते हैं, जन्मात्तर दूसरा जन्म मानते हैं । बौद्ध अन्तमें जीवन मरणके क्रमसे छुटकारा मानते हैं—निर्वाणकी न-हानकी एक अवस्था ।—पुनर्जन्म या परजन्म भी नहीं मान पाता क्योंकि वह, और इस जीवनमें वरणका अधिकार मल नहीं खाते । अगर इस जीवनमें वरण होता है तो किसी दूसरे जीवनकी कोई जरूरत नहीं है बल्कि दूसरे जीवनकी कल्पना वरणको अथहीन कर देती है

—लेकिन न-कुछकी अनस्तित्वकी कल्पना हमें ता आतंकित नहीं करती ? बौद्धाका निर्वाण आतंककारी नहीं है । फिर पश्चिममें यह आतंक क्या है ?

अनस्तित्वका अर्थ क्या है यदि सभी का समवर्ती है ? भूत और भविष्यत भी यदि साथ वतमान है ता हाना और न-होना भी समवर्ती है । फिर डर क्या ?—म इस डरको नहीं जानता । तो क्या मैं जीवनको नहीं जानता ?

जिनमें आस्था थी या है उन्हें यह डर नहीं था न होता है ।—पर अपनकी आस्तिक कहते मुझ संकोच होता है, यद्यपि मैं जानता हू कि मैं नास्तिक भी नहीं हू । किसी भविष्यत जीवनमें मेरा विश्वास नहीं है, लेकिन उससे इस जीवनके बाँट जो न-कुछकी स्थिति सिद्ध होती है उसका मुझे डर भी नहीं है । आगा मुझमें नहीं है लेकिन आतंक भी मुझमें नहीं है ।

बाज्राम नगीके उस पार कोई बाधिवक्ष नहीं ह । म अपन प्रश्नाक साथ ही बहास गैट आया ह । म यास्पससे बहुत-से प्रश्न पूछना चाहता ह । यास्पससे ही नहीं बहुत से दार्शनिका बनानिका चिनका लेखका चिन्तामकन सता आवारा और पागलास भी बहुत-से प्रश्न पूछना चाहता ह । सबसे मुझ अनुमति नहीं मित्री ह पर जिनसे मिली भी ह उनसे भी अभी पूछ नहा पाया ह—क्याकि अभी ठीक ठीक प्रश्नाका निरूपण ही नहीं कर पाया ह । अल्लाहके नियानव नाम ह क्याकि सौर्वे नामम य सब नाम समा जात ह और जो उसका उच्चारण कर सकता ह वह अल्लाहको पा लेता ह । इसी तरह नियानव प्रश्न ह क्योंकि सौर्वे एक प्रश्नमें य सभी समा जाते ह और जो उस सौर्वे प्रश्नका निरूपण कर लेता ह वह सब जिनासाआका उत्तर पा लेता ह ।

इस प्रकार हम फिर जनवा गैट आय जहासे गाडिया बिना सीटी दिय छूटती ह सब काम ठीक ठीक घड़ीकी मशीनकी तरह चलता ह और प्रश्न कोई सतहपर नहा आत ।

‘तो यह पैरिस है !’

जिम प्रकार आगरका प्रतीक ताजमहल है या जिलाका कुतुबकी लट उसी प्रकार परिमना विश्वविज्ञापित प्रतीक नोत्रदामके भय गिरजा घरके ऊपरमे झंझता हुआ एक अपरूप कालिमुष है—एक शतानका चहरा जो हाथपर ठोड़ी टके एक विचित्र अवहेलनामे भरी हुई विद्वृत मसकान के साथ नोचे जिछे विगाल नगरको देख रहा है। प्राय यह चित्र जिम गीपकके साथ छपता है वह माना उस मुसकानकी—उसे मुसकान कहना भी चाहिए या केवल मुहकी विचकाहट यह चित्र है—याख्या करता है तो यह परिम है।

जो हाँ, तो यह पैरिस है। पत्थरके बन हुए कालिमुखकी लार नहीं टपकती नहीं तो यह वास्तवमें सम्पूर्ण प्रतीक है जाता क्योंकि और जगह चाहे जो होना या हो सकता हो, पैरिसके मामलेमें आवरणकी विद्वृति और विद्वृति आवरणको पथक करना सम्भव नहीं है। पैरिसका प्रेमी अनिवाय रूपसे एक प्रबल आवरणमें बंधा और उस बंधनको माननेपर अपने प्रति गानिसे भरा हुआ होता है इस आवरणको वह घानक मानता है किंतु साथ ही जानता है कि वह उसका बिना जी नहीं सकता। कसा घानक है वह विष जिमने बिना कोई जी न सके। जिलीक लड्डू तो सुनने आये हैं पर उनके साथ दोनों तरफ जो पछनाना बधा हुआ है वह भी उतना ही फीका है जितना कि लड्डू पर परिम—परिमवा काटा पानी नहीं माँगता—क्याकि वह माँगता है और कभी विष जिमसे वह डमा गया है हाँ, उगम थोड़ी गराव भी मिली हो ता कोई मुझायका नहीं उससे आत्म प्रतारणाकी चरपरहाट घोरी मोठी भी हो जायगी।

या परिम यूरोपके सुन्दरतम नगरमेंसे एक है इसमें सदेह नहीं। किन्तु जमा कि मुझसे एक प्रेक्ष भाषिणी किन्तु मूलतः इतराष्ट्रीय महिलाएँ परिस की सफाई देते हुए कमाती थीं। परिम बहुत सुन्दर है—परिसियन लोगका घाबजूत। अगर नगरका सौन्दर्य उसके वास्तविक नागरिकाका प्रतिबिम्ब होता है तब तो इन सड़कोंको बिना साय पछताना ही श्रयस्कर है। लेकिन अगर सुन्दर सज हुए बाजार अच्छा काटका पागाक घाग घगीचे कोन-कोनपर फूटाकी दुकानें रंग बिरंग चंदोव और उनक नीचे सुदृष्टि से बिठायी हुई मज कुर्मिया जिनपर आप खुशी हवाम बर-बठ कहवा या चारणीका सेवन करते हैं जगका मजारा ले सकते हैं विमानकाय पड सुन्दर स्थापत्यके बर बर भवन सुदाध नगी सट कुजा और चौरहा पर खडा भय कला मूर्तिया खिन्किया चौबारासे युक्त हुए फूट भर गमले चौदास घण्टा जगमगाहट विराट नाटय और नृत्यशालाएँ बन्दियास-बडिया सुगंध द्रव्य और शृंगार साधन आगिस्थान पाठ कला दाना कला संग्रहालय बीसिया पुस्तकालय पचासा रंग गागाएँ सक्ता प्रमाद-गह जहाँ आप करतेब लिखान वाली मखियासे लेकर आवरणहीनताकी विभिन्न शिष्यापर अन्वीरताके विभिन्न स्तरान हाव लिखाती हुई नतकिया तक सभी तरहके कौतुक दस्त सकते हैं—अगर इन सब चीजासे नगरका सौन्दर्य बनता है तब निस्सन्देह परिम सरीखा सुन्दर दूसरा नगर खोज नहीं मिलगा। और यह सौन्दर्य भी अपनी पराकाष्ठापर हाता है बसत ऋतुमें या गरद ऋतुमें—अप्रैल मईमें और अक्टूबर-नवम्बरमें। मज इन दोनों ही ऋतुआम वहा जानका सुयोग मिला इसके अनिर्विकन अगस्त और निसम्बरमें भी परिमका रूप मन दला इसलिए अपन कथनकी पुष्टि कर सकते हैं। विगत कर अक्टूबर नवम्बरका समय ही परिमके लिए सर्वाधिक उपयुक्त है गरदकाके विविध रमाकी कल्पना भा कनि है और उन निता परिसक किसे उन्नतमें—यथा सुप्रसिद्ध बाआ न बुलाय में बन्दर घटा पन्नि पत्तोंको दया जा सकता है और एक एक करके

क्षर हुए पत्ताकी गन्धपर परिमके बसस्थ इन और सेंटाका निछावर
 विधा जा सकता ह । परिमक आस-पासके सुरित वन मा बकूबरमें
 दानीय होते ह यथा परिमस शत्रु हीके (जहावा गिरजाधर युराप
 मन्का एक अमृत्य निधि ह) मागमें पन्न वाला स जमेंका वन । य
 दूसरी वान ह कि परिसवामी इन स्थानापर वन विचार आन्विक लिए हमस
 कुछ पन्नकी क्रतुमें ही जाना ह जम आट घना हा पराके नीचे पत्ताकी
 खटखट कस हा और दर रात तक भी बठनेक लिए ठड अधिक न
 हा । किन्तु बाहरसे लोग परिम प्रकृतिका आनन्द उगान नही जात और
 प्रकृतिक मामलमें परिसवामीका माग शक मानना ता भूलता हागी । वह
 जिस नौदय-मुपमाका पारखी ह वह दूसरा ही हागी ह ।

यह दूसरा सुपमा भी शरकालमें परिसपर छा जाती ह । अगस्त
 का उजाड सन्नाटा दूर हा जाना ह आपरा और नाटक घर नये सोजन
 क लिए शत्रु जाते हैं शत्रु विदेगा सलानियामि वन ही भर जानी ह
 जम काच मन्का दुकान नया पागाका और नय दगस सजायी हुई सेंटाकी
 बानलामे कहवापरामें फानीमी भापाका नकियाहटके ऊपर अमरीकी
 अग्रेजीकी और भा कणकट्टु नकियाहट सुनाई पन्ने गली ह । और रातको
 राह चलना कठिन हा जाता ह हर भा चौराहेपर तीस्रो मुगवासि महकती
 हुई अपरिचिताए ‘बा-स्वार क फासोसा अमिवात्तने साथ गुड टाइम
 डीपरा ? का अग्रेजी प्रगमन देनी निकल आता है । और बन्ती रातक
 साथ-साथ उनका आग्रह और उनका उदृग्ना भी बन्ती जाती ह
 यद्यपि इम सबका मा अधिकान विदेगा सलानीके लिए ही ह उस कि
 त्तिमें शहरक कुछ इगकामें प्रत्यक यात्रा-एजेंसीक बाहर धूमनवाल व
 धिनोल लोग जो केंककी तर एक ओरका शत्रु हूप पास आकर हासमें
 ताक पत्ते-सा छिग हुआ कुछ लिखाते हुए जानमें कह जात ह डर्टी
 पिकचस ? तयापि इममें सन्देह नहा कि परिसवामी भी जावनका आरम्भ
 सँकस ही मानता ह—यह दूसरी वान ह कि उस जीवनका भोग करनका

अबसर हर किसीको न मिले या प्रतिनिधि न मिले जीविकोपाजनकी और घर गिरस्तोकी चिन्ताएँ उमे सिर न उठान दें ।

परिसके रानके जीवनकी बातें तो सारी दुनियां न सुन रखी ह । किन्तु उससे आकृष्ट होकर आनवालेको सुविधाएँ भी ता मिलनी चाहिए ? और सुविधाके लिए वह अतिरिक्त खर्च भी तो करनेको तयार ह । आपेरा सिनमा नाटक आदिके टिकट स्वयं खरीद सकना परिसम आसान नहा ह अतः इसके लिए एजेंसियाँ ह जा टिकट प्राप्त करनेके लिए पन्ध्रस पचीस प्रतिशत तक कमीशन लेती ह । यात्री अनिवायतया इनकी गरण जाता ह । कहवाघरा-हाटलामें बिस्पर १५ प्रतिशत कमीशनके रूपमें स्वयं जोड़ दिया जाता ह यात्री प्रायः उसके ऊपर भी कुछ दानको अपनको लाचार समझत ह । साधारण होटल तक कम मजदूरी लगानका चाज इससे अलग होता ह और हाथ पाउनके लिए जो नपकिन दिया जाता ह उसका अलग । एजेंसियाँ आपको सर करानके लिए गाइड भी दे सकती ह उनके लिए एजेंसिया जो लेती ह उसके अतिरिक्त गाइडको भी कुछ देना हा हाना ह । गाइड प्रायः स्त्री होती ह—यही सलानी पसंद भी करते ह—और इम अवस्थाम उसक घमन फिरन कटवा पानी भाजन मनोरजन आदिका खर्च भी सब दना ही होता ह । एसी गाइड स्त्रिया एजेंसियामे अलग भी सहज ही भिठ जाती ह । बहुधा एसी मांग-दर्शिकाएँ उन होटल या रानक कम्बधरोस भा कुठ प्राप्त करती ह जहा व यात्रियाका ले जाती ह । किन्तु वह जो हा इनकी जानकारीके विषयमें सदेहकी गजाइंग नहा सलानी मित्रना भी अद्भुत चाजका फरमाइंग क्या न कर वह कहा प्राप्य हागी य गाइड महिगाए बना सकेंगी । फिर वह परिसका प्राचीनतम गिरजाघर हा या कि चौबीस घण्ट खल रहनवाला होटल या कि वह रस्तराँ जहाँ मुर्गेपर आपका नम्बर लगाकर उस पकाया जाता ह या जहाँ आप अपना पसन्दका मेत्र चुनकर उसकी टांगाकी तरकारा ला सकत है या वर बाजार जहा मक्खियाँ बिकना ह या वह नाचघर जहा सुप्रसिद्ध

साहित्यकार और कर्ताकार एकको गन्धे हाथ डालकर नाचत ह । य सब चार्जे ता केवल कौतूहलकी वस्तुए भी हा सकती ह । क्विन टूरिस्टकी रचि निरे कौतूहलस अधिब भी हा सकती ह । ता उसकी जिनासाके गमन या वाचनाकी तप्तिके उपाय भी परिसमें लम्ब ह और उनक भी गाइड मिल जायेंग । कौन व्यसन या विकृति ऐसी न हाग जिसकी मानव कल्पना कर सता हो जिसक अपकरण परिसमें न मिः सकत हा और यह भी नही ह कि क सन्द बहुत महंग ही मिलते हा, जानकारोंका हा जरूरत ह । या सलानीक पास पसेका बाझ अधिब हो तो उस हका करनके कतव्यमें परिसका विक्रेता या दाल या गाइड या कोई भा यया सम्भव चूक नहा ज्ञान दता । परिस यूरापका कर्ताजिन सबसे महंगा शहर ह और अनजानके लिए तो वह याल मुक्के कुः कम नहीं ह फिर भी यसनका की पूर्ति वहाँ और कः गहरासे रहा कम खचमें हा गमती ह—एसे यसनका की जिनकी अयत्र बचा भी खतरनाक हो पसन मःरे पूर्तिकी बात ता दूर ।

मयाग कहिए कि भाष्यकी कृपा कहिए इन सब बानोंमें मरी रचि सतनी जानकारासे अधिक कभी नही रही । कलाकारकी प्रतिभाका विकृतिया के मनोबानिक अध्वपनकी प्रवृत्ति रहा ह अवश्य पर जहा तक परिसका प्रः ह, यह प्रवृत्ति निरा किताबीपन ह और कः लेकर आनवाग विःगी गःनी उद्योगक लिए निरा कः परिसमें कवाद । बनकर रहनमें भुः लानि नही थी कयाकि इम प्रकारकी निम्नगतासे म और अःः तरह उग किनाल सुःर कबाहषानको देग सका जो कि परिस वास्तवमें ह । उग कबाहमेंसे कुछ अत्यःत मूःवान् ह और सभःहःयोंमें सगःहात ह कुछ और एक दूमरी दृष्टि उचना ही मूःवान भल ही हो पर नीवल हावक माल गःगःनीनी ठाकरें ताता पिःता ह यः दूमरी बान ह । सधमुक परिस जसे सौदय और मौल्य प्रभाषनका केःद्र ह कम ही जोकिन मालवारा कःगःगःना भी ह, साहित्य और कःगका नयी मूःक उतम ह यग ही इनका विकृतियोंका पूरका भी दर ह ।

कृष्णागी किन्तु तरंग चपटा सन नया परिस नगरका दा भागाम
 बाँटती ह और नयेक दजना महाराबगर पल उन्हें फिर मिलात है ।
 नये गटकी सर परिमका एक मुख्य जाकपण ह अपन सन सौदयन लिए
 भी और इसलिए भी कि इमा धरीर आम पाम गहरके प्रेम-जावनका
 अपनाया प्रातिकर अग घूमता ह । दूसरा और कम प्रतिकर अग जिसे
 कदाचित प्रेम जावनका अग न कहकर विन्ध्य रमिक जीवन ही कहना
 चाहिए गहरकी गलियाम बिखरा हुआ ह—बहुत बिखरा हुआ भी नहा
 क्याकि उसक भी दो अलग अलग धर ह । दक्षिण तटपर मामान जो
 सक्क रके गिरजाधरके नीच फला हुआ एक पराना मल्ला ह और पिछे
 गताधिक वर्षोंस युरापके कला जावनका कद्र रहा ह—कलाक उत्कृष्ट
 और निकृष्ट दाना अर्थोंमें । आज भा यहाका कौनुक भरी गलियाकी
 पिचपिचम अनक चित्रकार गिना और उलक अपना समस्यागाके लिए
 हल अपनी वनाआके लिए हाला और अपना आत्म विनागिनी कुण्डके
 लिए हालाहल लून हुए रहत ह एक महाराबक नीच आपको किमी
 महान कगारका स्तूडियो मिल सकता ह जिकके अगने ही महाराबक
 नाच काई बन्नाम नाचपर या गराबखाना हा सकता ह गलाके नुक्कपर
 एक छाग-सा दगाय और उसीका ओम्भ रासायनिक नगाका गर काननी
 अन्डा या कि शव-मजकाका दाशा कद्र । सेन नयेके दूसर तटपर—जो
 वाम तट हा प्रसिद्ध ह—स मिनाड और स जमैतक आम पासका प्रयेग
 दूसरा क ह किन्तु यहा मामात्र जमा सकरना नही ह और यह वास्तव
 में स्वच्छता प्रेमी वडिजाबियाका (और हाँ उनक नेकलचियाका)
 प्रयेग ह । यहाँ आपका अनक प्रकारका आन्पक और अनाकपक दाटिया
 मिनेगा फणाल किन्तु निगावान कलाकार निघत किन्तु लगनवाडे
 विदायी निम्नाघन वनानिक रागा अथवा पग गिना अत्र प्राय बहु
 भाषाकि बरिद प्राय संगान-न्यष्टा वगल और तत्र और हठयोगके
 हना माषक विना गगके कदल विराम चिह्न और अकसि कविता और

बिना तूला या रगक चिन्दिया और चल्यास चित्र बनानेवाले प्रयोगवादी या तिन भर कन्वा घरम बठकर दूसराका डाट फटकार और गालिया सुना कर प्रतिष्ठापूर्वक (या उसके बिना भी) जावन यापन कर दना चाहनेवाले प्रगतिवादी—मत्र मिल जायेंगे । प्रतिभाका विवृत्तिया प्रनिभाकी प्रखर ज्ञानि किरणास टकराती और फुल यन्िया छोटती मिलेंगी । किमा कहवा घरम बठ जाइये—हर कला या साहित्य सम्प्रदायना अपना अपना कहवाघर ह । एक ओर दान बगये और उनीदिमे थालें गये किये निराल दीखेंग तो दूसरी ओर कोई कवि तल्लीन भावस कविता लिखता भी दीख जायगा बला बजाकर पस मागती हुइ हममुख यायावर (जिप्सा) कयास छड खानी करते मनचल दीखेंग, तो जात जात उसने हाथाकी मुद्राया उमर नासामूलपर यकानका सूमतम रखाया उमकी स्थिर मुमकराइटमें छिय नाना विरोधी भावाकी सकुलनायाके दजना द्रुत स्त्रच बना लनवा सजग चित्र गिली भी दीख जायेंगे और गोरे काल भूर पाले सभी वर्णोंकी त्वचाए गाल लम्बी कजी भूरी नीली काला सभी प्रकारकी आँखें वण भू और जाति भेत्का जिनना कम प्रभाव पग्निमें दाखना ह उनना किमी दूसर यूरोपीय गहरमें नही । इम अथमें परिस सचमुच स्वतन्त्र नगर ह और यह सहज ही समझमें आता ह कि कया स्वान्त्य प्रेमी कलाकार सहज हा परिमका आर उमुख हाना ह और परिममें एक बार जम जाये तो हनकी बात नहा सोचता हटता ह तो बाध्य हाकर हा और निरंतर वही गीटने स्वप्न देखने हुए । परिसका स्मति एक टीमभी हमेगाक लिए उमने साथ रह जानी ह ।

भेकिन इस स्वतन्त्रताकी माडी और गहरी पन्ता करे तो धीर धार कई बाने गित होन लगती ह । वण भे और रंग भद परिसमें बहून कम ह इसके कारण जहाँ एक ओर उन्नरता ह वहाँ दूसरा आर उपेगा भी ह । कई कया करता ह कया पन्नता ह कया खाग-पीता ह इसपर परिसवादी टीका टिप्पणी नहा करते उनकी तरफस सबको मुली छट ह

कि जो जसा चाहे खाय पढ़े कह सोच कर । एक ओर इसकी जन्म यह विश्वास है कि मानव व्यक्ति को इस मामले में आत्मनिर्णय का अधिकार होना चाहिए और उसपर टीका टिप्पणी करना या उसको बदलना चाहना अनधिकृत हस्तक्षेप है । दूसरा ओर इसकी जन्म दूसरे मानवाके प्रति एक गहरी उदासीनता है । कोई क्या करता है इसमें हमें क्या ? कौन जीता मरता है इससे हम क्या ? जो जिसके मनमें आय कर या न कर हमें क्या ? हमने सबका ठका थोड़ा हा लिया है । इसलिए जन्म परिसंसार का सबसे स्वतंत्र नगर है वही यह भी कहना गायब अयाय यही होगा कि वह संसार का सबसे हृदयहीन नगर है । यह तो है ही कि मानव प्राचीन समाजमें कभी उतना अकेला नहीं हुआ जिनका आजकल यत्र समाजमें हो गया है—आज हर व्यक्ति भीष्म अकाल है और हर भीष्म अरुणाकी भीड़ है—किंतु इसके आगे भी ऐसा लगता है कि अकेला व्यक्ति परिसंसारमें जितना अकेला ही सचता है उतना संसारमें कहीं नहीं ।

पत्नीका एक पहलू और भी है । परिमवामीकी अपनी भाषा और संस्कृतिका अभिमान है । अभिमान अपने आपमें अनिवायतया बरा नहीं है और भाषा या संस्कृतिका अभिमान तो बस हस्तक अष्टा ही है । किन्तु प्रासमें यह परस्पर व्यवहारमें बाधक हो जाता है । इटलीमें आप वहाँकी भाषा न जानें तो आपको इसके लिए पूरा प्रोत्साहन मिलेगा कि आप टूटी-फूटी भाषामें ही अपनी बातें अभिव्यक्त कर सकें । और इसके लिए एंग्लियन व्यक्ति स्वयं टूटी-फूटी इंग्लियन या कोई भी और भाषा बोलनेका तयार हागा । उसके साथ उसका हममेल भाव यह कल्पना जान पड़ता है कि—हम लोग एक भाषा नहीं बोलते तो हुआ क्या फिर ? भाषा इन्मानकी रज्जा है । एक रज्जा काम नया देनी तो हम जैसे-सैसे दूसरा माधन पा लेंगे—अभा अभा । जरा और सत्र काजिण जरा और जार लगाए इधर म भा काजिण करके देखना है । म जा बनी जनी धान-बन्धन एंग्लियन बालन रग गया था (भूत भा गया) लेकिन उगमे

क्या ? फिर मौका मिलन ही स्मृति सस्कार जाग जायेगा) उसका कारण यहा महज प्रोत्साहन था । इसके विपरीत फ्रासीसी आपको फ्रासीसी भाषाम लडखटाता हुआ देखता रहेगा और आपका काम आसान करनेका जरा भी प्रयास नहीं करेगा । आपको भाषा जानता भी होगा तो भी फ्रासीसी बोलना पसंद करेगा—आप न समझें तो दोष आपका । यह उपेक्षाका एक दूसरा स्तर है जो एक प्रकारका स्वातंत्र्य देना है या देता जान पड़ता है ।

या कि ऐसा भी है कि फ्रासीसी 'यदि किसी हस्तक अकेलेपनसे श्रुता है ? सभी फ्रासीसी बातचीतमें कुशल और सभा चतुर होते हैं । खासकर वहाँके इण्डलक्चुअल 'यदि'म बात करना तो एक स्मरणीय अनुभव होता है—उनकी बौद्धिक बलावाजिया और शान्तिक बाजीगरीपर अनभ्यस्त श्रोता चमत्कृत होकर रह जाता है । ऐसा जान पड़ता है कि सरक्सका खेल या किसी अच्छे नाटकका प्रभावशाली अभिनय देखा हो । उस समय श्रोता यह पूछना ही भूल जा सकता है कि यह कुशल बाजीगर या अभिनेता का रूप दिखा रहा है क्या वह सचमुच उसका रूप है ? क्या उसे स्वयं अपन इस रूपपर प्रत्यय है ? क्या जो मत या विचार वह प्रकट कर रहा है उनपर सचमुच उसका विश्वास है ?

जो श्रोता ऐसे प्रश्न पूछता है वह कभी भी अपना मत स्थिर नहीं कर सकता । न यह मान सकता है कि वह सब सच है न इस निष्कपपर पहुँच सकता है कि सब झूठ है निरी एक मुद्रा (पोज) है । उसे जमन या अर्थ उत्तरी देगाने प्रबुद्ध 'यक्तियासे बातचीत करनेपर फ्रासीसी बुद्धिजीवीकी यह विशेषता और भी तीव्रतासे लक्षित होन लगती है । (यहाँ मैं मानो फ्रासीसीकी यह पूर्णतः सुन सकता हूँ कि क्या फ्रांसके बाहर भी कहा प्रबुद्ध 'यदि' हाते है ?)

एक मया जिसमें सब झूठे हुए हैं

क्योंकि एक सत्य जिससे सब ऊब हुए हैं

कि जो जसा चाह लाय पहन कहे सोच कर । एक ओर इसकी जन्म यह विन्वाम ह कि मानव व्यक्तिको इस मामलेम जात्म निणयका अधिकार होना चाहिए और उसपर टीका टिप्पणी करना या उसको बदलना चहना अनधिकृत हस्तक्षेप ह । दूसरी ओर इसकी जन्म दूसर मानवाके प्रति एक गहरी उदासीनता ह । काई क्या करता ह हमें हम क्या ? कौन जोता मरता ह इसस हम क्या ? जो जिसके मनमें जाय कर या न कर हमें क्या ? हमन सबका टका धोड हा लिया ह । इसलिए जहा परिस ससारका सबसे स्वतंत्र नगर ह वहा यह भी कहना गायत अचाय यहो होगा कि वह ससारका सबसे ह्यहीन नहर ह । यह तो ह हा कि मानव प्राचीन समाजमें कभी उतना अकेला नही हुआ जितना आजक यत्र समाजमें हो गया ह—आज हर यकिन भीष्म अकेला ह और हर भीष्म अकालकी भीड ह—किंतु इसक आग भी एसा लगता ह कि अकेला यकिन परिसमें जितना अकेला हो सक्ता ह उतना मसारम कही नहा ।

भूमिका एक पहलू और भी ह । परिसवामीको अपनी भाषा और संस्कृतिका अभिमान ह । अभिमान अपन आपन अनिवायतया बुरा नही ह और भाषा या संस्कृतिका अभिमान नो बहुत हतक अजा ही ह । लेकिन फ्रांसमें यह परस्पर व्यवहारमें बाधक हो जाता ह । इटलीमें आप वहाकी भाषा न जानें ता आपको बसक लिए परा प्रोत्साहन मिग्गा कि आप टूटी-फूटा भाषामें ही अपनको अभिव्यक्त कर सकें । और इसक लिए इटालियन यकिन स्वयं टूटी फूटी इटालियन या को भी और भाषा बान्मको तयार होगा । उसक साथ उसका हतमख भाव यह कटना जान पग्गा ह कि—हम लाग एक भाषा नटा बान्त तो हुआ क्या फिर ? भाषा धनमानकी जा ह । एक र्जज्ञान काम नहा देनी ता हम जैसे-तैसे दूसरा साधन पा लेंग—अमा अभी । जरा और सत्र कीजिए जरा और जार लगाने एकर म भा वागिन करव देवना ह । म जो बनी जन्नी यागी-बन्म इटालियन बान्त गग गया था (भूल भा गया ह यकिन उमसे

क्या ? कि मीका मित्र ही स्मृति-सम्कार जाग जायगा) उमका वारण
 यहा सृज प्रोत्साहन था । इसक विपरीत फामीमा आपको फामीमा
 भाषामें लखवाना दुआ दगता रहेगा और आपका काम आमान
 करनेका उरा भा प्रयाम नहीं करेगा । आपकी भाषा जानना भी ज्ञाता तो
 ना फामीमा बान्ना पसन्द करेगा—आप न ममज्ञें ता दाप आपका । यह
 उपमाका एक दूसरा स्तर ह जा एक प्रकारका स्वातन्त्र्य देता ह या देना
 जान पता ह ।

या कि एसा भी ह कि फामासी व्यक्ति किमी हस्तक अकेपेनस
 करता ह ? समा फामामा बातचीतमें बुद्ध और सभा चतुर हात ह ।
 सासकर वहाके इच्छाबुद्धक व्यक्तिस दान करना ता एक स्मरणीय अनुभव
 हाता है—उनकी बौद्धिक कलाशक्ति और ग्राहिक बाजीगरापर अनभ्यस्त
 थाता समस्तृत हाकर रह जाता ह । एसा जान पडता ह कि सरकमका
 हा या किमी अज्जे नाकका प्रमात्राणा अभिनय दगा हा । उम समय
 थीता यह पूछना ही मूल जा सकता ह कि यह कुशा बाजागर या अभि
 नना जा रूप दिता रहा ह क्या वह मन्त्रमव उसका रूप ह ? क्या त्य
 स्वयं अपने हम रूपपर प्रत्यय ह ? क्या जा मत या विचार क प्रकट क
 ला ह उनपर सचमुच उमका विज्ञास है ?

जा थाता एम प्रश्न पूछता ह वह क्या म अनना मत म्थिग नना क
 सना । न यह मान सकता ह कि क म्थिग नना न इस निरूपण
 पदुच सकता ह कि सर हा ह निरा एक म्थिग (पात्र) है । त्य जमन
 या अय उत्तरी दगाके प्रबुद्ध व्यक्तियोंके बावजूत इतपर फामासा
 बुद्धिजीवीकी यह विरोधता और भा तात्रास म्थिग नना गता ह ।
 (यही म माना फामीसीको यह पछत मुन म्थिग है कि क्या प्राय
 बाहर भी वहा प्रबुद्ध व्यक्ति हात ह ?)

एक मया जिसमे सब हूव हुए है

क्योंकि एक सत्य निगम सब व्यक्त है

कि जो जसा चाहे खाय पहन वह साचे कर। एक आर इसकी जन्म यह विश्वास है कि मानव व्यक्तिको इस मामलेमें आत्म नियंत्रण अधिकार होना चाहिए और उसपर टीका टिप्पणी करना या उसको बर्णना चाहना अनधिकृत हस्तक्षेप है। दूसरी आर इसकी जड़में दूसर मानवके प्रति एक गहरी उन्मत्तता है। कोई क्या करता है इसमें हमें क्या ? कौन जीता मरता है इसमें हमें क्या ? जो जिमके मनमें आय कर या न कर हमें क्या ? हमने सबका ठका घोट्टा हा लिया है। हमलिए जहा परिस ससारका सबसे स्वतंत्र नगर है वहा यह भी कहना गायद अग्याय यहो होगा कि वह ससारका सबसे हृत्यहीन शहर है। यह तो है ही कि मानव प्राचीन समाजमें कभी उतना अक्रा नही हुआ जितना आजक यत्र समाजम हो गया है—आज हर व्यक्ति भोत्रमें अकेला है और हर भी अक्राकी भीड़ है—किंतु इसक आग भी ऐसा लगता है कि अक्रा व्यक्ति परिसम जितना अकेला हो सकता है उतना ससारम वही नहा।

स्त्रीका एक पहलू और भी है। परिसवामीको अपनी भाषा और सस्त्रुतिका अभिमान है। अभिमान अपन आपमें अनिवायतया बरा नहा है और भाषा या सस्त्रुतिका अभिमान नो बहुत हदतक अछडा ही है। केकिन फ्रांसमें यह परस्पर व्यवहारमें बाधक हो जाता है। इटलीम आप वहाको भाषा न जानें तो आपका स्त्रुके लिए पूरा प्रारसाहन मिलेगा कि आप टूटी-फूटी भाषामें ही अपनका अभिव्यक्त कर सकें। और इसक लिए स्त्रुलियन व्यक्ति स्वयं टूटी फूटी इंग्लियन या कोई भी और भाषा बान्त्रुको तयार द्रागा। उसक साथ उमका हममुख भाव यह कन्ता जान पडता है कि—हम लाग एक भाषा नही बान्त्रु तो हुआ क्या फिर ? भाषा इनसानका रजा है। एक रजा काम नही दनी ता हम जमे-तसे दूसरा माधन पा लेंग—अभा अभा। जरा और सत्र कीजिए जरा और तार लगात स्त्रु म भा कागिग करव देवना है। म जा बनी जल्ल घाग-बन्त्रु स्त्रुलियन बान्त्रु गग गया था (भूठ भा गया है लेकिन उमसे

क्या ? फिर मौका मिलने ही स्मृति-मस्कार जाग जायगा) उसका कारण यही महज प्रोत्साहन था । इसके विपरीत फ्रांसीसी आपको फ्रांसीसी भाषामें लडखवाता हुआ देखता रहगा और आपका काम आसान करनेका जरा भी प्रयत्न नहीं करगा । आपको भाषा जानना भी हागा तो भी फ्रांसीसी वाग्ना पसन्द करगा—आप न समझें तो दोष आपका । यह उपेक्षाका एक दूसरा स्तर है जो एक प्रकारका स्वातन्त्र्य देता है या देता जान पड़ता है ।

या कि ऐसा भी है कि फ्रांसीसी व्यक्ति किसी हदतक अकेलेपनसे डरता है ? सभी फ्रांसीसी बातचीतमें कुशल और सभा चतुर होने हैं । खासकर वहाँके इण्टेलक्चुअल व्यक्तिसे बात करना तो एक स्मरणाय अनुभव होता है—उनकी बौद्धिक कलावाञ्छिपा और शान्तिव बाजीगरीपर अनम्पस्त थाता चमत्कृत हाकर रह जाता है । ऐसा जान पड़ना है कि सरकारका खल या किसी अच्छे नाटकका प्रभावगाली अभिनय देता ही । उस समय श्रोता यह पूछना ही भूल जा सकता है कि यह कुशल बाजीगर या अभिनेता जा रूप दिखता रहा है क्या वह सचमुच उसका रूप है ? क्या उसे स्वयं अपन इस रूपपर प्रत्यय है ? क्या जो मत या विचार वह प्रकट कर रहा है उनपर सचमुच उसका विश्वास है ?

जा श्रोता ऐसे प्रश्न पूछता है वह कभी भी अपना मत स्थिर नहीं कर सकता । न यह मान सकता है कि वह सब सच है न इस निष्कर्षपर पहुँच सकता है कि सब झूठ है निरी एक मूना (पोज) है । उस जमान या अर्थ उत्तरी देगाक प्रबुद्ध व्यक्तिसे बातचीत करनेपर फ्रांसीसी बद्धिजीवीकी यह विवेचना और भी तीव्रतासे उगित होने लगती है । (यहाँ मैं मानो फ्रांसीसीकी यह पछने मुन सकता हूँ कि क्या फ्रांसके बाहर भी वहाँ प्रबुद्ध व्यक्ति हाते हैं ?)

एक मया जिसमे सब झूठ हुए हैं

क्योंकि एक सत्य जिससे सब ऊबे हुए हैं

मारते हैं मरते हैं
 क्योंकि जीवनसे डरते हैं ।

तो यह परिस ह । लेकिन क्या सचमच यही परिस ह ? रगा ध्वनिया प्रभावाका यह मकुठ जा सतही और पवग्रु युक्त भी हो सकता ह जा केवठ हल्की गगनि या हन्की उतेजना दकर मनको वाग्मविकताकी खोजस विमल कर दे सकता ह ?

सतही वह हा सकता ह लेकिन वह केवठ इमलिए कि गहर जानके लिए अधिक समय अप्पित ह इसलिए नही कि वह झटा ह । यह भी कहा जा सकता ह कि वह परिसवासीसे विच्छिन परिसका चित्र ह । स्स लिए अधूरा और एकांगी ह । एसा कहना ठीक भी हा सकता ह क्याकि अतनागत्वा दखनवात्री दष्टि परिसकी नही ह और यह मानकर चली ह कि परिसका सौदय वहाके निवासियाके बावजूत ह उनके कारण नही । डॉर्-नोन महीनम एक जातिको या सस्त्रुतिको कितना जाना जा सकता ह ? और सम्पूण न जानना दोष क्या ह अगर उसका कोई दावा नही किया गया ह ?

या एसा भी नही ह कि फासीसी सम्त्रुति या साहित्यसे उतना ही परिचय हो जितना परिसमें रहकर प्राप्त किया बल्कि उस सद्भमें तो नया वहाँ बहुत अधिक नहीं सीखा । (स्मका एक कारण यह भी हुआ कि अधिक समय दस्तावडा क्रिम बनानक प्रगिणणम उगाया—कमराक उप यागक भा और निर्णकके भी । जिम उद्देयस मह गिणा पायी थी वह अधूरा रह गया—पर कौन विद्या कब काम आ जानी ह क्या ठिकाना ।) अधडा साहित्यका अध्ययन अनिवायनया फासाभी साहित्य और चिन्तनस परिचयका अपगा करता ह और यूरापियन कलाका अध्ययन ता बिना फासाभा बकि काम परिसका कलाक अध्ययनक हा हा नही सकता । निष्ठत अस्सा एक वर्षोमे यूरापाय कला प्रवर्तियाका इतिहास मन्थनया

परिस स्कूल का इतिहास है, और अब भी उसका प्रभाव क्षीण हो गया है।
 ऐसा नहीं है यद्यपि ऋई बहुत बड़ी नयी या उदीयमान प्रतिभा इस समय
 नहीं दीख रही है। मझे तो यही लगा कि परिसका प्रभाव अब भी जावित
 होते हुए भी अब उतारपर है—यूरोपके सांस्कृतिक जीवनमें फ्रांसीसी
 संस्कृतिके प्रभावकी भांति ही। किसी भी क्षणमें आत्मापूण जीवोत्मुखता
 वहाँ नहीं दीखी। सांस्कृतिक जीणता और अवसादक लक्षण प्रत्येक क्षेत्रम
 प्रकट है और उनका प्रति ऐसा एक उदासीन स्वीकृति भाव जा कि मेरी
 ममत्तमें सक्रिय दुष्टतासे अधिक घातक—या साघातकताका चिह्न—होता
 है। मैं मर रहा हूँ मैं जानता हूँ कि मैं मर रहा हूँ, ‘मन स्थाकार कर
 लिया है कि मैं मर जाऊँ—मृत्युमुखताकी भांति तीना सीन्धियाँ फ्रांसीसी
 संस्कृति—कमसे कम फ्रांसीसी साहित्य—पार कर चुका है। परमावसा
 की इस अवस्थामें जिसका एक विस्फोट यद्दकालमें और उसके तत्काल
 बादक युगमें हुआ अपनी जीवन परिस्थिति—अपनी अर्थात् यक्तिगत
 अपनी नहीं मानव मात्रकी जीवन-परिस्थिति—उसे घण्य, अधहीन उवान
 वाली ही नही बरिक् उक्वाई लानेवाली जान पन्ने लगी है। अस्तित्ववादके
 साहित्यिक पक्षके अर्थात् सात्रके साहित्यिक मतवात्के मूलमें यह विनोप
 रूपस लक्ष्य है उसका दान मतलीका दान है जिसे उपयासामें गूथनेमें
 उसन अपनी असाधारण प्रतिभा और अविधात पयवर्षण गक्ति लगा दी
 है। कम्पू और आचोल भी इसी सम्प्रदायमें हैं। धार्मिक अथवा ईसाई
 अस्तित्ववाद हमसे अलग है अनस्तित्वस सागात्कारक उस दानमें
 चिन्तनका जा निमम साहस है उसका अपना भी महत्त्व है और वह आधु
 निक जीवनके आधुनिक परिस्थितिमें इस भूतपूर्व और अद्वितीय अस्तित्वक
 वारमें एक नयी दृष्टि भी देता है। खिडकी खुलनपर उसके बाहर जो
 दीखा उमक वारमें एकमत होना ही सय-कुछ नहीं है सार परस्पर विरोध
 के बावजूद इस वातका महत्त्व अनुष्ण रहता है कि खिडकी खुली है

मारते हैं, मरते हैं
 क्योंकि जीवनसे डरते हैं ।

ता यह परिस ह । लेकिन क्या सचमुच यही परिण ह ? रगा घनिया प्रभावाका यह सकुल जा सतही और पवग्रह धवन भी हा सकता ह जा कवल हकी ग्यानि या हकी उत्तजना दकर मनकी वास्तविकताकी शोचम विमख कर दे सकता ह ?

सतही वह हो सक्ता ह लेकिन वह केवल इमलिए कि गहर जानवे लिए अधिक समय अपेक्षित ह इसलिए नहा कि वह शठा ह । यह भी कहा जा सकता ह कि वह परिसवासीस विच्छिन्न परिसका चित्र ह । इस लिए अधूरा और एकागो ह । एसा कहना ठीक भी हा सकता ह क्याकि अन्तनागत्वा दखनवाली दष्टि परिसकी नही ह और यह मानकर चगी ह कि परिसका सौम्य वहाँक निवासियान बावजू ह उनके वारण नहा । दार्शनान महीनमें एक जातिको या ससृतिको कितना जाना जा सकता ह ? और सम्पूण न जानना दाप क्या ह अगर उनका कोई दावा नही किया गया ह ।

या एसा भी नही ह कि फालासी ससृति या साहित्यसे उनना ही परिचय हो जिनना परिसमें रहकर प्राप्त किया बल्कि उस सद्भमें तो नया वनी वस्तु अधिक न हो सीखा । (हमका एक कारण यह भा हुआ कि अधिक समय तस्त्रावज्ञा किम बतानक प्रणिष्णणमें लगाया—कमराके उप यागव भा और निष्णक भा । जिय उद्दयम यह गिणा पायी थी वह अधूरा रह गया—पर कौन विद्या कब काम था जानी ह क्या ठिकाना ।) अथवा गान्धिका अध्ययन अनिवायतया फामोमी साहित्य और बितनस परिचयकी अरणा करना ह और यूरानियन कणका अध्ययन ता बिना फामोमी बकि नाम परिसकी कणक अध्ययनक हो हा नही सकता । निष्ठ अग्नी एक वर्षोंमें यूरानिय कण प्रवक्षियाका इतिहास मुन्यनया

परिस स्कूल का इतिहास है, और अब भी उसका प्रभाव क्षीण हो गया है। ऐसा नहीं है यद्यपि कोई बहुत बड़ा नयी या उदीयमान प्रतिभा इस समय नहीं दीख रही है। मुझे तो यही लगा कि परिसका प्रभाव अब भी जातिव्रत होते हुए भी अब उतारपर है—यूरोपक साम्प्रतिक जीवनमें फ्रांसीसी सभ्यतिके प्रभावकी भाँति ही। किन्ती भा क्षेत्रमें आधाधुनिक जीवनोत्थिता वहाँ नहीं दीखी। साम्प्रतिक जीणता और अवमानक रक्षण प्रत्येक क्षेत्रमें प्रकट है और उनका प्रतिष्ठा एक उदासीन स्वीकृति भाव जा कि मरी ममझमें सक्रिय दुष्टतासे अधिक घातक—या साधनिकताका चिह्न—हाता है। म मर रहा हूँ ‘मैं जानता हूँ कि म मर रहा हूँ, ‘मन स्वाकार कर लिया है कि म मर जाऊँ—मृत्यु-मुक्तताकी मानो हीना सीटियाँ फ्रांसीसी सभ्यतिके—कमसे कम फ्रांसीसी साहित्य—घर कर चुका है। परभावज्ञान की इस अवस्थामें जिसका एक विस्फोट मुद्रकालमें और उसके तत्काल बादके युगमें हुआ अपनी जीव-परिस्थिति—अपनी अर्थात् व्यक्तिगत अपनी नही मानव-भावकी जीव-परिस्थिति—उस घण्टी, अथहीन उमाने वाली ही नये घटिके उमकाई लानेवाली जान पड़न लगी है। अस्तित्ववादके साहित्यिक पक्षके, अर्थात् साधके साहित्यिक मतवात्क मूलमें यह विरोध स्पष्ट है उनका दान मतलीका दान है जिसे उप-यासामें गूथनमें उसन अपनी असाधारण प्रतिभा और अविश्रांत पयवर्णन शक्ति लगा दी है। कम्यु और आ-वोट भी इसी सम्प्रदायमें है। धार्मिक अथवा ईसाई अस्तित्ववाद हमसे अलग है अनस्तित्वम मान्यात्कारक उस दानम विन्तनका जा निमम साहस है उसका अपना भी महत्त्व है और वह आधुनिक जीवनके आधुनिक परिस्थितिमें इस भूतपूर्व और अद्वितीय अस्तित्ववादके वारमें एक नयी दृष्टि भी देता है। धिन्की खुलनपर उसके बाहर जो दीखता उसका वारम एकमत होना ही सब-कुछ नहीं है सारे परस्पर विरोध के बावजूद इस बातका महत्त्व अनुष्ण रहता है कि खिडकी खुली है

मारते हैं मरते हैं
क्याकि जीवनसे डरते हैं ।

तो यह परिस ह । लेकिन क्या सचमुच यही परिस ह ? रगा ध्वनिया प्रभावाका मह मकुल जा सतही और पवग्रह युक्त भी हो सकता ह जा केवल हल्की शक्ति या हल्की उत्तेजना देकर मनको धाम्त्विकताकी खोजसे विमुक्त कर दे सकता ह ?

सतही वह हो सकता ह लेकिन वह केवल इसलिए कि गहर जानके लिए अधिक समय अपेक्षित ह इसलिए नहा कि बट झूठा ह । यह भी कहा जा सकता ह कि वह परिसवासीसे विच्छिन्न परिसका चित्र ह । इसलिए अधूरा और एकांगी ह । एसा कहना ठीक भी हा सकता ह क्याकि अन्ततोगत्वा देखनवात्री दृष्टि परिसकी नहा ह और यह मानकर चली ह कि परिसका सौंदर्य वहांक निवामियाके बावजूद ह उनक कारण नहा । टार्-मीन महीनमें एक जातिको या ससृष्टिको कितना जाना जा सकता ह ? और सम्पूर्ण न जानना दोष क्या ह अगर उसका कोई दावा नही किया गया ह ?

या एसा भी नही ह कि फ्रानोसी ससृष्टि या साहित्यसे उनना ही परिचय हो जितना परिसम रहकर प्राप्त किया बल्कि उस सन्दर्भमें तो नया वहाँ बहुत अधिक नही सोला । (एमका एक कारण यह भा हुआ कि अधिक समय दस्तावेजी फ़िल्म बनानक प्रगतिगम गगाया—कमराक उप यागके भी और निर्णयके भी । जिस उद्देश्यसे यह गिना पायी भी ब अधूरा रह गया—पर बौन विद्या कव काम आ जाती ह क्या ठिकाना ।) अग्रजा साहित्यका अध्ययन अनिवायतया फ्रानोसी साहित्य और चिन्तनसे परिचयकी अपेक्षा करता ह और युरोपियन कलाका अध्ययन तो बिना फ्रांसीसा बकि साम परिसकी कलाक अध्ययनक हो ही नहा सकता । पिछले अस्मी एक वर्षोंसे युरोपीय कला प्रवृत्तिका इतिहास मध्यतया

परिस स्कूल का इतिहास है, और अन भी उसका प्रभाव क्षीण हो गया है। ऐसा नहीं है यद्यपि कई बहुत बड़ी नयी या उदीयमान प्रतिभा इस समय नहीं लेख रही है। मचे तो यही लगा कि परिसका प्रभाव अन भी जाविन होन हुए भी अब उतारपर है—मूरापके सांस्कृतिक जीवनमें फामीमी संस्कृतिके प्रभावकी भांति ही। किसी भा क्षेत्रमें आगापूण जीवनी मखना वहाँ नहीं दीखी। साम्प्रतिक जीणता और अवसादक लक्षण प्रत्येक क्षणमें प्रकट ये और उनक प्रति ऐसा एक उन्मोचन स्वीकृति भाव जो कि मेरी समयमें मन्त्रिय दुष्टतासे अधिक घातक—या साघातिकताका चिह्न—होता है। ‘म मर रहा हूँ मैं जानता हूँ कि मैं मर रहा हूँ, ‘मन स्वीकार कर लिया है कि मैं मर जाऊँ—मयू-मुग्धताकी भांति तीना सीनिया फामोसी संस्कृति—कमसे कम फामोसी साहित्य—पार पर चुका है। परमावसाय की इस अवस्थामें जिसका एक विस्फोट युद्धकालम और उसके तत्काल बादके युगम हुआ अपनी जीवन-परिस्थिति—अपनी अर्थात् व्यक्तिगत अपनी नहीं मानव मात्रकी जीवन-परिस्थिति—उम घण्य अयहीन उदान वाली ही नहीं बल्कि उबनाई लानेवाली जान पड़ने लगी है। अस्तित्ववादके साहित्यिक पक्षके, अर्थात् मात्रके साहित्यिक मतवालेके मलमें यह विषाण रूपसे लप्य है उसका दान मत्कीका दान है जिसे उपयानामें गूँघनमें उसन अपनी असाधारण प्रतिभा और अविश्रान्त पर्यवेक्षण शक्ति लगा दी है। कम्प्य और आन्वील भी इसी सम्प्रदायम है। धार्मिक अथवा ईसाई अस्तित्ववाद इससे अलग है अनस्तित्वम साक्षात्कारक उस दानमें चिंतनका जा निमग्न ग्राह्य है उसका अपना भी मन्त्व है और वह आधुनिक जीवनके आधुनिक परिस्थितिमें इन मूनपूव और अद्वितीय अस्तित्वक धारमें एक नयी दृष्टि भी देना है। किसी खुलनपर उमक बाहर जो दीगा उसक धारमें एकमत होना है सब-कुछ नहीं है सार परस्पर विराध के बावजूद इन धारका महत्व अनुपुण रहता है कि गिडकी गुला है

एक दूसरा फ्रांस

नहा निश्चय ही एक दूसरा भी परिस होना चाहिए क्योंकि निस्सन्देह एक दूसरा भी फ्रांस है जिसकी आर गताश्रित्यास यूरोप देखता आया जिसकी सस्कृतिस उसन प्रेरणा पायी और जिसके मुकुटमें उसन बाकी दुनियाको भी देखा सस्कृतियाँ देगकी होती ह पर मुख्यतया राजधानीसे फलती ह जो कि वह देगका प्रतिनिधित्व करती ह—तब फ्रांसकी देन प्रधानतया परिसकी ही देन होनी चाहिए क्या यूरोपीय जम भारतमें गोपन भारत की रोजमें आत ह बस ही हम गोपन फ्रांस की खोजम नही जा सकत ?

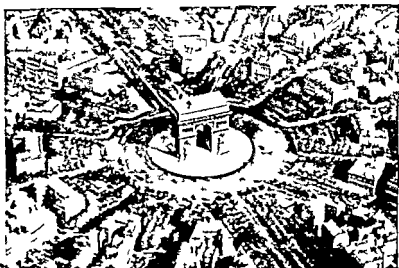
(राजधानी दिल्ली भी ह पर एक तो वह नयी राजधानी ह—दिल्ली भी नयी ह—दूमर वहाँस भी जो फलता ह उसे हम अपनी गवारू वाली में भारतीय सस्कृति न भी कह सकें तो इडियन कल्चर कहनको तो बाध्य ह हा और दिल्लीके कल्चर अधिकारा के लिए भी क्या बाहरका संस्कारी भारत उतना ही गोपन भारत नही ह जितना कि विदेगीके लिए वन्कि कुछ अधिक हा क्योंकि विदेगी गायन भारतीय गायन पुराण धोना बहुत पन्कर आया ह !

गापन फ्रांस । गापन परिस । निस्सन्देह वह परिस भी ह । जीर एसा गापन भी नहा ह—खाजन वाउहा एस आत है कि गोपन और जुगप्स्य का भू भूलकर उसीक अन्वपणमें रन जात ह जा जुगुप्प्राजनन हा कइपाका ता एक-मान खान वहा हानी ह और एम अनक भारतीयाना भा मन परिसमें दखा ह ता उसकी गन्ध्यामें भटकत फिरत ह और अन्ना दगावासी दखकर बनराकर निकत जान ह । यह नही कि म विन्गाम



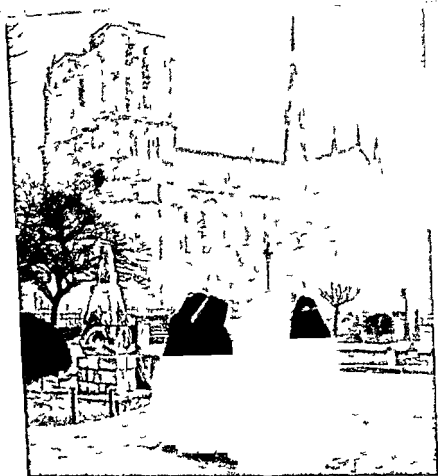
स्नेनमें सूर्योदय





—उपर-प्राकाशितम् आण्डल मानार । नाग-विजय स्मारक ('एटाल')

[मरुभारो काल]



पेरिस—उपर—नोत्रदामसा गिरजाघर । नीच—नात्रदाम और सेन नदा।

[प्रोफा डॉरिंग इन्वजनर]



पिपर-नखि गोरका मठ



पिपर सिन्धु गोरका मठियम



पिपर सिन्धु-गोर मठका द्वार

[वाग्य मठ द्वारा प्राप्त]

जाकर अपन ही दशवालाके समाज तक सीमित रहना अच्छा समझता है। लेकिन कतरानेका कारण जब यह हो कि अपनी तलाशपर किमीके मनमें जुगप्साका भाव है तो वह कतराना दूसरपर भी एक म्लानिकी छाप छोड़ जाता है। अस्तु भिन्नरुचिहि लाक कहकर इस बगस ता बिन्कुल छुट्टी पायो जा सकती है। एक अधिक सस्कारी बग है जो बग साहित्य, स्थापत्य संगीत और दान आदिमें रुचि रखता है किन्तु उस बगके लोग भी जब परिम जात हैं ता उनके मनमें इन सब विषयाक 'माहन कहगान वाले अगका ही आग्रह बिगप होता है। लूत्रका सप्रहालय पयियोन नोत्र दाम तथा अय गिरजापर आदि भी व दम्बते है, पर उनका उल्माह विरोप तथा 'माहन कलाकी ओर ही हाता है। गायन इमीलिए कि लौटकर अभिनवनम प्रवृत्तियाकी चर्चा करना अधिक प्रभावगाली हा सकता है और साथ ही उम क्षेत्रमें कम पूंजी लेकर भी अधिक दूर जाया जा सकता है—सर्वांच नय नाम ३ दनेमे ही लोग राबमें आ सकत है और मन भेदक लिए ता इतनी गुजाइग है कि आप कोई भी राय दे दीजिए, उसे अपना राय नहीं कहा जा सकता। और तो और, भारतस कितने चित्रकार ऐसे गय है जो जब गये तब अ-टे-म्बासे कलाकार थ किन्तु जब लौं तब बवल माहन रह गय।

माहन के प्रति ऐसा भाव प्रकट करना जिसे अपना समझा जा सकता है अपनी जायममें डालना है। इसलिए हम पणका छाड अपनी ही बात कहें। मुझ उम दूसर परिममें जानका अवसर भा मिला जा एक दूसरे फ्रासकी राजधानी है और वहाँस परिचय-पत्र लेकर मैं इस दूसर फ्रासमें जहाँ-तहाँ प्रवग पा सका।

। कई जिनकी तपन और उमसके बाव भूमध्य-सागरमें प्रवग करके ठही हवाक शांतिसे मर्माहित होकर और फेनोच्छ्वसित प्रगाढ़ नीलिमाकी देखकर

रोमांचित होता हुआ भारसेस उतरा तो अप्रत्यागित ठग थी। जात हुआ कि पात हीके प्रदेशमें असाधारण गीतकी लहर आनसे बफ पड़ी ह और इसीलिए वहा भी इननी ठण्ड ह। क्या ठण्ड ह इसका कारण जान लेनस ही तो वह कम नही हो जानी पर दक्षिणी फ्रासका सागर-तट और उसके निकटवर्ती चगानी द्वीप इन सुंदर ह कि उह देगत रहनके लिए सुनसान डकपर बटखनी हवामें ठिठरत खग रहना भी स्वीकार था। या भूमध्य सागरक पानीको ही घण्टा खग-खड देखा जा सकता ह किन्तु मरा जहाज जिस राहसे गया था उसपर और भी कई भय दय देखनको मिल गये। भारके समय क्रीटी द्वीपका चट्टानी अन्तरीप लियोनोस जिसके आस-पास छापी हुई घुघमें सूर्योपकी किरणें मानो सोनके जालमें खो गयी थी। मसीनाके जगडमरुब दोना ओर इटली और सिसलीकी तट रखाए और दूर एटना ज्वालामखीके हिम-भन्ति गिखरकी आकागम निराधार टगी हुई रखा। सिल्ला और करिन्थुकी चट्टानें और मवर जिनके लभावन आकषणसे यूगिसाजके बच निकलनकी क्या अनक बार पनी ह। लिपारी और उसके आस-पासका द्वीप-समू और सागरमें छितराय हुए गिला खण्ड जिनमेंसे प्रत्यकमे सम्बद्ध पराण-भाषाका स्मरण उन नया आकषण देना रहा। स्त्राम्बोलोका ज्वालामुखी पवत-नीर जो अनवरत घर्षा उगल रहा था और जिमका एक पात्र गिखरसे सागर-तल तक लावा और राखसे ढका था तो दूमरी ओर हर भर उद्यान और समझील गांव चमक रहे

१—बल्कन द्वीपमे बिन्वकर्मा बल्कनकी भटठी थी जिसम द्योस्पितर के बय ढलते थे। इयोतियन द्वापम इयोतिसने हवाप्राको बंदी कर रखा था। तुफानो हवाप्राका यह राजा बहुत बडा ज्योतिविद् था और नाबोक पातका धाविष्कार भी यलम बंद कर रखी हुई हवाए उसन मुलि सोत्रको भेंट दे दी थी जिसम उसकी यात्रा निविघ्न समाप्त हो सके। यूगिसाज सायियोन अन-तर उहें मुक्त कर दिया।

ये फिर मारसेल्सके विन्कुत्त निकटके तटवर्ती द्वीप जिनमें कुछका तो नाम नहीं जान सका और कुछ पहलम परिचिन थे—जिनमें मुख्य था इफ द्वीप जिमपर म्यिन दुगमें डघमाकी क्यावे नायक काउण्ट माण्ड्रिस्टोको बंदी करके रक्खा गया था। फिर स्वय मारसेल्स बंदरगाहकी सरािका देवी मरियमकी प्रतिमा दूरसे ही दीख रहा था

दक्षिणी लागाने स्वभावमें गायन सूयका अण अधिक होता ह इमी लिए वे प्राय परिहास प्रिय हाते है। इसीलिए गायन उनके परिहासमें शार या चरपराल अधिक हानी ह। मारसेल्सको परिहासकी विगिष्ट परम्परा ह जिसक कुछ उदाहरण जहाजन उतरकर बंदरगाहके बस्त्रम आदिके नाना उपचार पूर करके स्टेशन पहुँचने तक हा मिल गये।

मारसेल्स कई तेज गाडिया परिमत्री आर दौडती है और लगभग आठ घण्टेम वहाँ पहुँचा देती ह। रकी पटरी लिया तक रान नगीक माय माय जाती ह। रोन माना दक्षिणी फ्रासके अत्यंत सुन्दर प्रदेशका मेखला ह—जनवाकी चालसे निकलत ही वह प्रासीसी प्रदेशमें प्रवेश करता ह और यहीसे बनुविष प्राकृतिक सौन्दर्यका मुजरा गती हुई चलती ह। रान का तट अपन अगूरके बगाचोंके लिए भी प्रसिद्ध ह—अथान अपनी गरावा क लिए भी। घूपनी साजमें उत्तरमे आनेवालाका ताँता रानक किनारे किनारे उतरता हुआ दक्षिणी फ्रासक सागरकी ओर फल जाता ह या प्रामासी आल्प-श्रेणाक छात्रे-छाट गाँवाकी ओर मुड जाता ह कुछ लाग किमी ओर भी न मुडकर रोनके किनार ही कोई मजचीता कोना डड लत ह। इम्प्रेगनिस चित्रकारान इस प्रदेशक सौन्दर्य और चण-उटाकी रूपाति दूर-दूर तक फगा दा ह। आस प्रदेशके खेना और आवियाके आस-पाम फलके बगीचाके धान भोज्य द्वारा बनाय गय चित्र मर कपोंके परिचिन ह और उनका स्मरण भी घूपन-नहाय प्रसन्न वर्णोंको आँखाने सामन े आता ह

लियोँका प्राचीन एनिहामिक नगर भी सुन्दर ह। यह रोन और

साओन नदियाका सगम भी ह । यहाँसे प्राकृतिक दग्ध कुछ बदलन लगत ह किन्तु अगूरको बल्का महत्त्व इस प्रदेशम भी कम नहीं होता— बाजोके और बगण्नीकी गरावाने अपन अपन प्रसक्त ह ।

म यद्यपि लियसे सीधा परिस ही गया था तथापि जो स्थल—या जसे स्थल—मरी इम यात्राक लक्ष्य थ व परिससे दिग्गम ही पडत है और परिसस आवश्यक सूचनाए तथा परिचय पत्र लेकर म फिर इमा दिग्गो प्रदेशम लौट आया । इमलिए इस यात्रा-वर्णनको परिस तक न जाना आवश्यक नहीं ह । जैसेपरसे गाखा-पटरीस एक टामनुमा गागम बढकर मोन नन्दीके किनार किनार एवलोम गया फिर एक छोटी सी देहानी बसम फटाकी पेटिया मछलीकी उलिया और कीट-नागक दवाक कनस्ट्राके साथ लकर दुदकता-पत्रकना और अय सवारियाके साथ टापरकी बिल्कुल त्वराहीन ठिठौली सुनता हुआ दापहरकी सडकके किनार एक छाटे गिरजाघरक पास उतर गया । गत-य यहाँस गगभग चार किलामीटर (ढाई मीठ) की दूरी पर था । सामानका झोला कंधपर उठाया और हल्की-सी फुहारकी परवाह न करता हुआ चल पडा ।

प्रायः दस सौ साल पहले एक स्वप्न द्वारा प्रेरित पेयल मुआर एस वन प्रदेशमें बहिन हुए एक छात्र-स घरनक किनार पहुच थ और अपन हाथास पत्थर बीन कर उहाने एक छोटी सा कुटिया बनाया थी । यह कुटिया अब 'पयर मुआरका कुटिया' नामस प्रसिद्ध ह । गामक अनि विश्वामी लोग यत्र भा मानत ह। कि वत्र एकान्त साधक श्री कुटियाम निवाम भी करता था । किन्तु वास्तवमें उम कुटियाम उहान कमा त्निमें विग्राम भले ही कर लिया हा रहनका स्थान उममें नहीं ह । जो हा व्ही कुटियाक आस पास और घरनक किनार क्रमग एक-एक पयर जाडकर एक छात्र मठ

बनाया गया, जिसमें बनडिकनी मन्त्रालयके कुछ ईमाई संघासी (मक) रहने लगे । अनंतर उसके साथ और इमारतें जुंती गयीं और कुछ वष पहले एक नया मठ तथा अतिथिशाला, एक मुद्रणालय और कुछ अन्य काम भी बन गये । नये मठके कर्णपूण प्रवेश-द्वारके किवाड़पर माना मौनका स्तंभ करती हुई ईसाकी काष्ठ मूर्ति है । इसी मूर्तिका ओंठम चूप चाप प्रविष्ट होकर मन एक खिडकीसे अपना परिचय-पत्र भीतर बठ हुए संघासी की आरचना किया थाही दरवाज एक और संघासी डबानिमें आ गया और उनके नीचे इगितका अनुसरण करता हुआ, दो लम्बे गन्धार पार करके और एक सीटी उतरकर, म नये मठकी उस एकान्त वाठरोमें पहुच गया जो अब इस प्रयासकी अवधि-स्यत मेरी होगी

कोठरोमें एक ओर बिटाना है दूसरी ओर एक बन्द छोटी मेजपर बाइबिल और दो एक प्रायना ग्रन्थ रखे हैं कुर्सी इतनी छोटी है कि उमे स्तूठ भा कहें तो अबना न होगी । खिडकीके पाम छोटी बमिनी और पानीका बल है । खिडकीसे बाहर मठका भीतरी आंगन लोखता है जिसके पार इसी खिडकी जमी और खिडकीसे अनुमान हा सकता है कि उधर भी कोठरियाकी पक्कि होगी । तीसरी ओर कुछ बनी खिडकियाँ हैं वह गन्धार है जिसमे एक रास्ता बाहर होकर गिरजाघरका और उसमे आग पाठशाळाको जाता है और दूसरा मण्डारघर पस्तकाग्र तथा प्रायना काम (चपेन) के पामसे होता हुआ नीचे पाकशाला और भोजनालयको ।

आंगनना चौपा पांच दूर होनेके कारण पूरा नहीं दीखता त्रिनना दीखता है उसमे एक सपाट दीवारका अंग और एक बिना फाटकी महाराव है, उसके आगे कुछ पेठ दीखते हैं । यों उस तरफ मुद्रणालय और निम्नका है ।

अग्र-अग्र कामका अग्र-जलग नाम लिये गये है, लेकिन वास्तवम सारी इमारत एक बंगाल प्रायनागार है । कुल मिलाकर पांच-छ घण्टे तो बिधिवन् आर्थिक-आराधिवमें बीन जात है किन्तु गिरजाघरमें विनाये हुए

इस समयके अलावा बाकी समयको भी भरसक आराधनाका ही रूप लिया जाता है। सत्त्व सम्भाषण यूनतम होता है बल्कि लगभग नहीं होता शरीर-श्रम भी द्वापित माना जाता है और भोजनके समय भी एक स्यासी किसी धर्म ग्रन्थ अथवा उपदेश ग्रन्थसे पढ़कर कोई अंग सुनाता रहता है।

ईसाई-संन्यासियों अनेक सम्प्रदाय हैं। उनमेंसे कुछसे भारतका परिचय सदियासे रहा है। किंतु जसा वह परिचय रहा है उसका यह अभाव परिणाम है कि इन सम्प्रदायोंका सत्यतः पक्ष हमारा सामन नहीं आता बल्कि केवल प्रचार अथवा सामाजिक कर्मका पक्ष सामन आता है। हम मिशनरों ही जानते हैं संन्यासी नहीं जानते—यहां तक कि एक पद लिए और यूरोप घूमकर और हुए भारतवासीन मुझसे अचम्भित पछा था अच्छा! यूरोपम अब भी क्या मर होन है? म तो समझता था कि म मध्य-युगका बातें हैं।

अब सम्प्रदायोंके संन्यासियोंकी भांति ईसाई संन्यासियोंमें भी कुछ सम्प्रदाय सामाजिक कर्म अथवा समाज सेवापर बल देते हैं और कुछ दूसरे एकान्त साधनापर चिन्तनपर प्राथना अथवा स्तवनपर। सत्कर्म (गुड वर्क) ईसायतका एक महत्वपूर्ण अंग है। हमारा सम्भव जिन सम्प्रदायोंमें रहा है उनका आग्रह सेवा-कर्म अथवा साधना-कर्मपर ही रहा है। मिशन गार्ह अतगन ये दाना आ जाते हैं यही भारतमें ईसाई मिशन जोर मिशनरियोंकी मर्यादा है—उनके सम्प्रदायोंकी भांति और उनका सगठन-जय दूषणका भी।

वनद्विक्ता सम्प्रदायमें आग्रह प्रायनापर है। एक प्रकारसे वे भारतीय विना धाराके अधिक निकट हैं वह सेवा द्वारा दूसरेके कल्याणका अपना साधना द्वारा आनामय नहीं ता कर्म कर्म भगवद्गुणोंकी आगा करता है। वनद्विक्ता संन्यासी एक मिशनर दूसरे मिशनमें नहीं भ्रम जाते जो

जिस मठ अथवा सघम दीना केना ह वहीका हो जाता ह और उसी समुदायमें जीवन बिता दना ह ।

पेयर मुबारन क्या वह स्पल चुना इसका इतिहास ह । बल्कि स्पलका इतिहास पेयर मुबारसे कही अधिक पुराना ह । स्थानक नामस मठका नाम पीएग क्वि वीर' ह जिसका अर्थ ह 'धूमनेवाला पत्थर । यह नाम एक बहुत प्राचीन चट्टानका था जो ईसाइयतक प्रवेगक पहलेस पवित्र समझी जाती थी । एक प्रस्तर-खण्डपर सतुलित यह गिला प्रकृतिका एक आदर्शय तो थी ही मसीही धर्मके आनस पहल स्थानीय सर्वेश्वरवाणी धर्मकी बलि पीठिका भी थी । अब ता इस उपरली गिलाको सीमटसे पुष्ट कर्के इसक ऊपर मरिचमका मूर्ति स्थापित कर दी गया ह किन्तु चट्टानपर अब भी छाटे छाटे कुण्डा और प्रणालियाके अवगप दीखत ह जिनके बारेमें कहा जाता ह कि बलि पशुआका रक्त इन्हीम एकत्र होता था बरता था । इस बातकी सच्चाई जो भी हो इसमें सन्देह नही कि यह स्पल और इसके आग-वासका वन प्रदेश पुराकालस ही पवित्र माना जाता था । आज भी वनमें प्रवग करत ही जो भय विस्मय, शक्ति और श्रद्धाका भाव हठात उभिन हाना ह, उसे आप चाहें तो पुरान सस्काराका प्रभाव कह लें चाहे आलावरणमें बसे हुए देवी-मुख भावाका गूज चाहे केवल सम्प्रदायक अगुलस निकलकर प्रकृतिके क्रोडम आनेका मूलि बोध पर इसमें सन्देह नही कि वनके बीच स्थित मठ तक पहुँचते-न-पहुँचते व्यक्तिका मन बान कुछ बदल जाता ह । ईगाकी वरु षाष्ट मूर्ति उस भ अक्षर चौकाती नही बल्कि यात्राका स्वाभाविक निष्पत्ति-नी लगती ह—मानो उमके न हानये ही चर्चित बरत जाता । या वह मूर्ति केवड एक प्रतीक ह और मठके प्रवासका जो प्रभाव पटना ह वरु वहाँके जीवनकी सम्पूर्णताका हा ह—उमके मसमम आ जानेक वान उस मूर्तिका प्रतीकत्व अपने स्वाभाविक स्तरपर आ जाता ह—गर अन्ननेगत्वा द्वार ह, देव-मन्दिर वह नही ह । मों मन्दिर भी मन्दिर ही ह, देवताका सागात वहाँ नही हो सकना, अथवा

अगर वहाँ हो सकता है तो कहा नहीं हो सकता ? अनुकूलता वहाँ मिलती है पर अनुकूलता भी मूलतः अपन मनकी हीनी है ।

प्राचीन सर्वेस्वरवाणी यत्र भूमिपर ईश्वर मठकी प्रतिष्ठा एक प्रकारसे बनडिक्की सम्प्रदायके इतिहासका प्रतीक है । यूरोपमें मनीही धमके प्रसारका अर्थ मुख्यतया इसा सम्प्रदायको है । सन्त ग्रेगोरी और सन्त आगुस्टीन इसी सम्प्रदायके थे और बनडिक्की मठासे ही धम प्रचार करनेके लिए बाहर गये थे । आगुस्तानन इत्यादिमें एक बनडिक्की मठकी स्थापना की थी सन्त बनडिक्की जन्मभूमि इत्यादिके बाहर यह पहला बनडिक्की मठ था । बनडिक्कीका जन्म पाँचवीं सदीके उत्तरार्द्धमें सन् ४८०के लगभग मध्य इटलीके उम्ब्रिया प्रांतमें नुसियामें हुआ । उनके जीवन-व्रतका जो कुछ पता लगता है सन्त ग्रेगोरीके देखाते ही किन्तु कोई कारण नहीं है कि उन्हें प्रामाणिक न माना जाय । पिताके द्वारा वह स्कूलमें पढ़नेके लिए भेजा गया किन्तु स्कूलके दुराचार-पूर्ण वातावरणमें खिन्न होकर वह किंगोरावस्थामें—अथवा प्रारम्भिक युवावस्थामें—विद्यालय छोड़कर वनाम मठके निकल गया । इसी प्रकार भटकते हुए वह आनुत्सी पर्वत श्रृंगीमें एक स्थानपर पहुँचे जहाँ एक छोटी धाराके एक किनारेपर सम्राट नारोके महलके छान्दहर थे और दूसरे किनारेपर कुष्ठ गफाए । भुवियाकीकी एक कान्ठामें तीन बघ रहकर वह एकान्त चिंतन करते रहे । उस गफामें उनके प्रवामका पता बसल उमा प्रदग्ग एक मठके एक स्यासीका था जिमन उन्हें एक पराना चावर दिया था और जो समय समयपर कुछ खाद्य-शामशा भा गुनामें रख जाता था ।

क्रमशः उस एकान्त भाषणका पता लगाया लगन लगा और उसका नाम जहाँ-तहाँ सम्मानपूर्वक दिया जान लगा । प्रदग्गके एक मठके स्यासी बनडिक्की आषट्पुवक अपना भुविया बनाकर गये किन्तु जब बन

डिक्टने मठके भ्रष्ट जीवनका सुधार करनका प्रयत्न किया तब उन्हें विप दे निया गया । वह फिर गुफामें लौट आय और यही रहते हुए उन्हान आस पामकी पहानियामें कई छोटे छोटे मठ स्थापित किये जिनका निर्माण वह अपन स्थानस ही करते रहे । यह स्थान रोमसे केवल चालीस मील दूर था रामके अठ्ठ धरानाके वास्तु उनके निर्देशमें गिगा पानेके लिए उन मगामें भेज जाने लगे । दूसरे मठके विनोप और पडयन्त्रासे विरक्त होकर वेनडिक्टने फिर वह स्थान छोड दिया और रोम तथा नेपोलाके अद्य-बीच कमीनी पवतक गिह्वरपर आसन जमाया । माटे कसीनीका यह मठ ही सार पश्चिमी यूरोपक लिए ईसाइयनका हा नहीं उदार आध्यात्मिक जीवनका प्रेरणा-स्रोत रहा ।

वेनडिक्टनी सम्प्रदायकी जीवन-चया पर्वोप चर्चाआकी तुलनामें ता विनोप कनी नहो ही थी या भी उसकी दृष्टि उत्तार थी और अनावश्यक आत्म पीडनके लिए उसमें स्थान नहीं था यद्यपि सरल जीवनपर सच्चा आग्रह था । गरीर-श्रमके सिद्धान्तमें भी इसकी गुजाइश रखी गयी थी कि मठके अथवा स्थानीय जीवनके संदममें वह उपयोगी हा सके । उत्तारणके लिए पिएर विव-वीरक मठमें श्रम-शानके अधोन जहाँ खतीका श्रम आता है वहाँ काठ-मुटाई चित्रकारी मूनिक्ला और छपाई भी श्रम-शानके रूप ह मठका मन्णालय धार्मिक कलाका मुद्रण और प्रकाशन करता ह । सोलेमक मठन धार्मिक सगातपर विनोप गोप-श्राय किया ह । वास्तुकला और गिन्यकी भी कई मठोंम श्रमके कार्यक्रममें स्थान दिया गया ह ।

वेनडिक्टके अनुगासनमें दो और विगपताएँ थीं । उनकी व्यवस्थामें इम बातका ध्यान रखा गया था कि एकान्त साधकामें आत्म-पीडनकी जो हाड

१—पिछने महायुद्धमे मोंट कसीनो घमासान लडाईका क्षेत्र रहा और लगभग व्यस्त हो गया—नपोलीसे बढ़नेवाली मित्र राष्ट्र सेनाओंका माग वही था । मठका पुनर्निर्माण हो गया है ।

सी लग जाती है— जिसके कारण तपस्याका उद्देश्य ता शोथल हो जाता है और केवल कष्ट सहनकी प्रतिस्पद्धा ही गौरवकी बात बन जाती है—उसे प्रथम न लिया जावे । दूसरी ओर इस बातका भी ध्यान रखा गया था कि मठाकी अथवा व्यक्तिगत सत्याभ्यासकी, सत्ता ग्रहण करनकी प्रवृत्तिकी प्रोत्साहन न मिले । प्रत्येक मठ एक स्वायत्त समाज था । आग चलकर जब ऐसे अनक समाज हो गये तब भी उनके परस्पर सहयोगका स्वायत्त रखनका ही आग्रह रहा और बीच-बीचमें केनीकरणकी जो चष्टाए हुई उन्हें पनपन नहीं लिया गया । मठके प्रधानके लिए बन्डिक्टन जो नियम बनाये थे उनकी उदार दृष्टिक (जिम आज कालके मानववानी प्रवृत्ति कहा जायगा) उदाहरण थे । प्रधान सब सम्मनिस चुना जाता है और प्रत्येक महत्वपूर्ण प्रश्नपर सभीकी राय लेता है । उसका निर्णय अन्तिम है और अनिश्चित सबको मानना होता है किन्तु वह ऐसा नही मानना चाहिए कि किसीको भी । उचित आपत्तिका अवसर मिले या अवसर हो ।

किन्तु ईसाई मठवाचक इतिहासमें जाना यहाँ प्रयोजनीय नहीं है । विभिन्न युगमें मठाकी विभिन्न प्रकारकी विवृत्तियाँ और सुधारकी चष्टाओंका विवचन भी यहाँ असंगत होगा । एक समयमें विभिन्न प्रकारके दमन और धातियाँ प्रभावित उन्हें लगभग निरपेक्ष कर लिया था किन्तु उनका मूल प्रेरणाओंका आन्तरिक गतिमान समाज जीवनमें फिर उनके लिए स्थान बना लिया । आज के राजनीतिक जीवन और राष्ट्रीय सत्ताओंके सघनपन पट्ट-मा स्थान नहीं रखते हैं और यह उचित ही है कि न रखे । सामाजिक जीवन में भी उनका वसा स्थान नहीं है और यही भाव स्वाभाविक ही है जब समाज-कल्याणकी एक लौकिक उद्देश्य मानकर राजकीय नागरिक अथवा सांस्कृतिक संस्थाओंका सौंर किया गया है । किन्तु इन सब क्षेत्रोंमें हट जानका मननय यही है कि वे अपने क्षेत्रर मर्यादित हो गये हैं । यह क्षेत्र यन्त्रि रम्यनय और गानन है ता किमा छिटावक अयमें नही बन्दि हगी अयमें कि वे आन्तरिक है व्यापारिक है—उम्मा अयमें जिगमें कि धम

भी गोपन होता है और ईश्वर स्वयं धमका प्रकाशक न होकर गाप्ता हो जाता है—

त्वमद्यपि गदित्त धम गोप्ता

सनातनस्त्व पुरुषो मतो मे ।

—श्रीमद्भगवद्गीता

पिएर कित्त-कीर । वह पत्यर जो धूमना है । चक्रमिन गिला । चक्रान्त गिला । चक्रान्त जो सक्रमण करके फिर गौट लौटकर आता है वह का'क अतिरिक्त क्या है ? समयकी गिला

समय की गिला पर मधुर चित्र कितने,

किसी ने बनाये किसी ने मिटाये ।

—गम्मूनाय सिंह

चक्रान्त गिला समयकी गिला युगाके आवतनका क्रम जिसपर धम सिद्धांतकी प्रतिमा अडिग रही है । धम कालजित है । इसीलिए बुद्धन धमके शाश्वत भाव और चक्रमणके काल-सापत्य भावको एक करके धम-चक्रकी उद्भावना की थी—जो धूमना भी है और स्थिर भी है यहा धूमती हुई गिरापर सनातन श्रद्धाकी प्रतिमा है—एक साग है और प्रतीक अभिप्राय भरा सिंहप्रयोग ऊपर धम-चक्रकी प्रतिष्ठा की गयी ता उसका भी प्रतीकत्व सम्पूर्ण साधक था—एडिक सत्ताको धम सिद्धांतक पत्तलमें ही आधम दिया गया था । (आज हम सिंहप्रयोगके अधीन ता हैं पर सिंहप्रयोगके ऊपरका वह धम चक्र वहाँ छिप गया है न जान ! इस राष्मिन प्रतीकसे शासित हाकर हम क्या उम कमलस कुठ सात्वता पा सरते हैं त्रिगुवा भित्तिपर स्वयं सिंहप्रयोग लखी है—कम' जो कि श्रुतका प्रतीक है ?)

हम प्रकार मत्का नाम जो वास्तवमें कव' स्थानका नाम है एक प्रतीकाय प्ररुण करके भर सम्मुख आता है और प्रतीककी सत्ता निरंतर

नये-नय विम्ब मूक्त करती रहती है । मठक आस-पासकी वन भूमिमें अकेला घूमता है तो य विम्ब उस अकेलेपनको मर्यादित किये रहत है । कोठरीमें अकेला बठना है ता नीरव वायु मण्डलमें व मडरात रहत है । कुछ लिखना है तो उसम उका स्वर बोलन लगता है । उस लिखत हएकी कभी शरन के पास बठकर मानस आवृत्ति करता है तो उनके स्वर शरनकी कल-कलमें उस मुखर भावमे दोहरा जात है कभी "गाय", यह लिखा हुआ भी पकाम आव

स्थविरकी ओरमे एक अग्रेंडो भाषी स यासीको मझसे वातवात करने की अनुमति है काई जिनासा होनेपर उन्हें सूचिन किया जा सकता है और उसी त्तिन या अगठे त्तिन उनसे बात चीत हो सकती है—अपराह्ल तीनसे चार तकका समय बघा हा हुआ है । लगभग प्रतित्तिन उनसे बातें होती है—क्याकि जिनासाका अंत कहाँ है ? और उन बातका आधार प्रायः मानस आकाशमें मन्त्रानवाते य विम्ब और प्रतीक हात है

मसीही चच क्या ईसाकी एतिहासिकतापर इतना बल देती है ? ईसा ईश्वर-पुत्र है स्वय ईश्वर है—जो य दा बातें मान सकत है उनको यह मनवाना क्या जरूरी है कि वह एक वास्तविक एतिहासिक मानव पुरष भा रहा ? फिर यह भी कि वह एतिहासिक मानव भी उसा अथमें एक और अन्वित्य रहा जिममें ईश्वर एक और अन्वित्य है—याना वसा पुत्र्य न कभी पहल हुआ और न टुवारा हो सकता है ? क्या एतिहासिकता का यह आधार ही ईसाके मगानन अथवा व्यापक (कोस्मिक) छपका सग्न नहा करना ?

क्या पश्चिमी मानव या भी काशकी भावनामे आरूत नहीं है ? जिस वह अपना एतिहासिक चाना कता है—और जिमके नि सतह बन्तस्य गण भा है—और जिमकी अनुपस्थितिका व पर्वीय मानव विषय तथा भारताय मानवका बन्त बहा दाप बनाता है—क्या वह एतिहासिक चनना स्वयं एक व्यापकतर चननाका सग्न नहीं है ?

ऐतिहासिक चेतना पूवापरका अनिवाय सम्बन्ध जोती है वनमान को अनीत और भविष्यन्के साथ जोकर जीवनकी भय और आकांक्षाके साथ बाध देती है। हाने को 'हाना चाहने तथा नहानस डरने के अधान कर देती है—और इस प्रकार जो अमर है उसे नश्वरताका बगवर्ती बना देती है। दौडता हुआ अगुलिमाल क्यों नहीं निश्चल खड तथागतका पकड पा रहा था—बवल मात्र इसीलिए तो कि वह दौट रहा था पीछा कर रहा था बालके बग हाकर उस पाना चाह रहा था जो बालजित है

पाप क्या है ? सनातन पाप क्या है ? क्या मानवका हाना ही उसका मौलिक पाप है ? एकक बलिदानमे दूसरक पाप धुल सकते है यह मान सकना ऐमा बठिन नहीं है। किन्तु ईसाके बलिदानमे अगर समूची मानव जातिन पाप अपन ऊपर ओर लिय ता उनका क्या जो ईसास पहले हुए ? अगर इस बलिदानका प्रभाव न केवल परवर्ती अनन्त काल तकक लिए है बल्कि भिन्न उर्मा जागके लिए भी ईश्वरका कृपाका माध्यम बन सकता है और उसके साथ ही पूर्ववर्तियाका भी पाप मुक्त कर सकता है ता फिर एतिहासिकताका सिद्धांत क्या हुआ ? यह नहीं कि अतीतकी आर जानवाके प्रभावको मानना अपन आपमें इतना बठिन है किन्तु यह स्पष्ट है कि उसकी तत्-सगति एतिहासिक तत्-सगति नहीं है बल्कि इन दोनोंमें अनिवाय विरोध है। अगर कारण काय सम्बन्ध और पूर्वापर सम्बन्ध अलग नहा किये जा सकते (और यही तो एतिहासिकताकी प्रतिभा है) ता फिर यह उलटा प्रभाव कस माना जा सकता है ? और अगर उसे मानना है ता एतिहासिकताका आप्रह क्या नहीं छोडा जा सकता है ?

इन सब प्रश्नोंको लेकर बहुत बातें होती रहीं। किसा निश्चयात्मक परिणामपर कस पहुँचा जा सकता था—श्रद्धाके निश्चयात्मक परिणाम तक न निश्चयात्मक परिणामसे अलग होत है इतना ही नहीं, अलग अलग श्रद्धाआने अपन अलग-अलग निश्चय भी हात है। बल्कि वास्तवमें सारी ब्रह्म ही क्या यह नहीं थी कि श्रद्धाके निश्चयाका क्या तकक निश्चय

माननका आग्रह किया जाये ? किन्तु विचार विनिमय अत्यन्त सहज और निर्बाध भावसे होता रहा । मुझ उसमें एक भिन्न प्रकारकी आस्था और सस्फारकी अंतरंग चाबी मिली और मैं समझता हूँ कि पेयर जिविमरका मनोभाव भी कुछ ऐसा ही रहा होगा—नहीं तो विदा रत समय जिस भावसे उन्होंने कहा प्रे फार मा (मर लिए प्राथना करना) वह शिष्टाचारके नात आवश्यक नहीं था—बसा और बहुत-कुछ, और सच्च भावसे कहा जा चुका था । मैं स्वविर पयर प्लासीडस ही उस डगम भेंड होनी और मरी जिगासा बढिको उनका आगावाँ मिलता ।

वास्तवमें इस समूच प्रसंगका स्थान एक यात्रा-वृत्तांतमें नहीं है । मैं ऐसे विषयाकी अधिक चर्चा करके मैं उस स्थित्य मौनका अपमान करना चाहता हूँ जा पिएर कि वारमें मझ मिला था—

पर सबसे अधिकम

घनक सनाटेक साय मौन हूँ मौन हूँ—

क्योंकि वही मुझ बतलाना है कि मैं कौन हूँ

जोड़ता है मुझको विराटसे

जो मौन अपरिवर्त है अपीर्यय है

जो सबकी समोता है ।

किन्तु परिम और इस प्रकार फामचे एक चित्रको सही परिप्रेक्ष्य दनके लिए विनालनर भूमिका एक दूमरा चित्र दना आवश्यक था । प्रचलित चित्र बन्न मन्कीला है और जो चित्र उसकी आत् हो गया है वह था भा बने मूम रक्षाअग्नि शिक्षा दृशा है इसलिए उसकी आर थाडी देर स्थिर भाव और एकाग्र दृश्यम रचना वालिन था ।

लिएर चित्र-आरम लोकर फिर पाल मामियमि मिग—मर जानस

पहल भी उनस मिलकर गया था। यह ईसाई सूफ़ी गेही सयामी
 अध्ययन गाल रहस्यवादी अम्मी वफ़ा नवयुवक एक एमा आच्यमय
 व्यक्ति ह कि उसक वारमें कोई भी बात बिना विराघाभासक नही कही जा
 सकती—उपयुक्त वणनमें भी विरोधी विगेषणके जाडासे हा यह बात प्रकट
 ने जानी चाहिए। मासिया अरबीक विज्ञान ह और अरबक सन्ता तथा
 रम्यवादी कवियापर उन्हाने विगेष काम किया ह यह तो पहलेस जानता
 था। यह भी जानता था कि सत्याग्रह सिद्धातमें उनका विद्वास ह और
 वह उमका प्रयाग भी कर रह हैं। (पहली बार मिला तब वह अभी जलम
 छूटकर आय थ दूसरी बार मिला तब तक वह और एक बार जल हा आये
 थ। सत्याग्रहका लक्ष्य था नज़रबन्दीक कानूनका विरोध। अंगारियाके
 स्वाधीनता आन्दोलन प्रश्नको विगेष महत्त्व द दिया ह।) किन्तु कौन
 क्या करता ह यह जानना एक बात ह और कौन क्या ह यह जानना
 बिल्कुल दूसरी बात। मासियाक वारमें यह कहना ठीक होगा कि यह
 व्यक्ति क्या ह यह जाननक लिए यह जानना अनिवाय ह कि उसन क्या
 क्या किया ह पर एमा इसीलिए कि वह सब जाननक बाद ही यह जाना
 जा सकता ह कि जो कुछ उसन किया ह (और वह कुछ कम रगीन
 साहसिक और आच्यमय नहीं ह।) उसम उसका कुछ भी अनुमान नही
 हा सकता जा वह ह—क्याकि वह उमसे अधिक रगीन साहसिक और
 आच्यमय ह। यह भी उन विरोध मूत्र बानामेंस एक ह जा मासियाके
 सन्धमें अनिवाय हा जाती ह।

औरसे भा मिला जिनक वारमें गिफ़ा जा सकता ह। किन्तु गायक
 इन सब बातके लिए भी यह उपयुक्त स्थान या अवसर नहीं ह। अन्तमें
 उम आगीवादीका उल्लेख कर दना चाहना ह जो चलत समय मासियासे
 मिला—विगेषणया इसीलिए कि परिस एक अयम दुनियाका सबसे अक्ला
 गहर ह। मासियाने जब कहा म तुम्हार लिए आत्माके इसी अक्ले
 पनकी कामना करता हूँ— तब उनका लक्ष्य उस अक्लपनकी ओर नहीं

था जो परिस दे सकता ह और जा मनप्यको बगाल बना देता ह । मै यह भी जानता हूँ कि उस समय उहान अगर कंगालीकी भी बात की होती तो वह उस मोहताज अवस्थाकी बात न होती जो इनसानके बे (ईश्वर-पत्र) मनप्यको मारती ह बल्कि उस नि स्वनाकी जिसका गान रहस्यवाचियान किया ह और जिसक वारम वाइविठमें भी लिखा ह "सेड आर द पथर इन स्प्रिट फार देअस इज द किंगडम आफ हवन । उनके आशीर्वासे वह अकेलापन और वह बगाली मुक्त मिल जाय तब तो म घय हुआ कृती हुआ



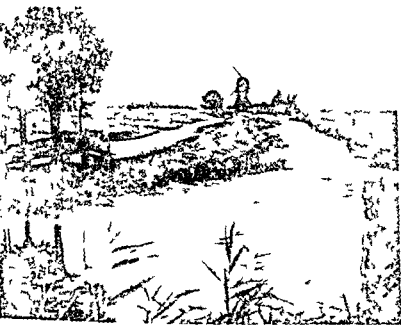
हालंड एक पवन चक्की

[सरकारी फोटो]



हालंड राजधानीसा सागर-तट—स्टेननिडेन्

या जो परिस दे सकता ह और जो मनुष्यको कगाल बना देता ह । मैं यह भी जानता हूँ कि उस समय उहान अगर कंगालीकी भी बात की होती तो वह उस मोहताज अवस्थाकी बात न होती जो इनसानव बट (ईश्वर-पुत्र) मनुष्यको मारती ह बल्कि उस पि स्वनाकी जिसका गान रहस्यवायियान किया ह और जिसके बारम वाइविलमें भी लिखा ह "सेड आर द पुअर इन स्पिरिट फार देअस इज द किंगडम आफ हवन । उनके आगीर्वास वह अवेलापन और वह कंगाली मुझ मिल जाये तब तो म घय हुआ वृत्ती हुआ



7 - 11



घा जो परिस दे सकता ह और जो मनुष्यको कगाल बना देता ह । मैं यह भी जानता हूँ कि उस समय उहान अगर बंगालीकी भी बात की होनी तो वह उस मोहताज अवस्थाकी बात न होती जो इनसानक बेट (ईश्वर-पुत्र) मनुष्यको भारती ह बल्कि उस निम्नताकी जिसका गान रहस्यवादिमान किया ह और जिसके बारम वाइविलमें भी लिखा ह — सैड आर द पअर इन स्पिरिट फार देअस इज द किंगडम आफ हवन । उनके आगीर्वाग्निमे वह ध्वेलापन और वह कगाली भुज मिठ जाय तब तो मैं घाय हुआ कृती हुआ



1 11



या जो परिस दे सकता है और जो मनुष्यको कगाल बना देता है। मैं यह भी जानता हूँ कि उस समय उहान अगर कगालीकी भी बात की होती तो वह उस माहताज अवस्थाकी बात न होती जा इनसानके बटे (ईश्वर-पत्र) मनुष्यको मारती है बल्कि उस नि स्वनाकी जिसका गान रहस्यवाचि्यान किया है और जिसके बारम वाइविलमें भी लिखा है - 'सेडे मार द पअर इन स्फिरिट फार देअस इज द किंगडम आफ हवन। उनके आगीर्वाग्मे वह अवेटापन और वह कगाली मुअ मिल जाये तब तो मैं घबरा हुआ श्रुती हुआ

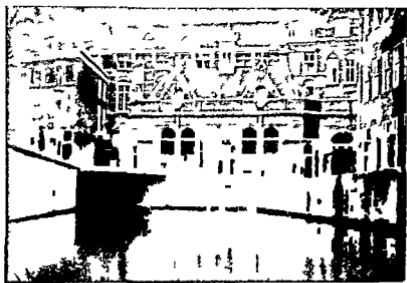


हाल्लंड एक पवन चक्की

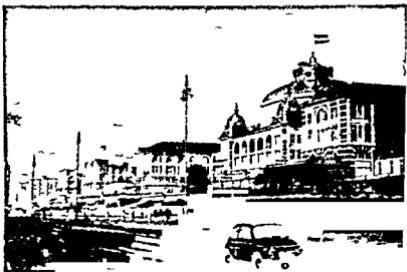
[सरकारी फोटो]



हाल्लंड राजधानीमा सागर-तट—स्टेभिनडेन्



एम्स्टर्डामकी एक नहर



हार्मेट स्वयंनिष्कृता 'स्वास्थ्य-भवन'

बालूकी भौतपर

समुन्नी मिट्टी नगीची मिट्टी और बालू और हॉ कृच्छ नरमलके मट्टे इनमे दंग बनाया जा सकना ह या नही यह सबाल पूछा जानेपर बहुतमे लाग अचकचा जायग । छकिने हाण्ड—या उसका उसका सही नाम दें ता नीटरलेडस (नोका देग—अघाण्ड)—इन्ही पत्थरोंसे बनाया गया देग ह । और बना हुआ नहा, बनाया गया वहना हा साथक ह क्याकि वास्तवमें उसका बहुत बग अग इन्हा तत्त्वाक उपयोगसे मानव द्वारा बनाया गया ह समुद्र-तटवर्ती या जल मन प्रदण्डता बांध-बांधकर और पानी उलीचकर धनी-बारी और बमार्दक योग्य बनाया गया ह । और यह काम एक बार करक समाप्त कर लिया गया हा एसा नहा ह जा बनाया गया ह उसे बनाये रखनक लिए टच जानिकी अदिराम परिश्रम करना पडना ह और यह जानि-ब्यापी उद्योग टच जीवन टच समाज सगठन और टच पापार-व्यवसायका बुनियात ह ।

हालमें बहुत बग देग नहीं ह—हमार देगके एक जिलके बराबर उगका प्रमार होगा—जेकि समुद्रके साथ गनालिया लम्बे सधपन उसका भूमिकी जा रूप और उगक निवासियाका जा चरित्र लिया ह दाना ही उन्नेमनीय ह और यूरोपमें इतिहास और जावनमें अपना विगिष्ट स्थान रखने ह । हाण्डके प्रणका ०० प्रतिगन माग एसा ह जिसका समतलमे ऊँचाई ५ मीटरस कम ह और इनका बहुत बडा भाग समुन्नी सतहस उनना ही नीचा ह उगने नगर टाग उमान पर नहीं, समुन्नी वायूमें जमाये गये सतहाक क्षमताका बुनियातपर गडे ह जिगना उत्तम उपाहरण एम्प्टर्डीमका सुन्डर और प्राचीन नगर ह । और उसके हर मरे मन भी बालूपर धोरतर

जमायी गयी मिट्टीकी उपज है। बागूकी भीत क्षण भंगुरताके लिए प्रयाग है लेकिन बागूकी भित्तिपर खड़ा यह देश आज भी एक विचित्रताके साथ भविष्यकी ओर देखा रहा है और उमना अतीत तो घब साहम और वीरताके उदाहरणसे भरा पड़ा है। यूरोपके जय देगाकी भाँति उमन भी अनक बार विजय और पराजयके दय दरा आक्रमणकारी सेनाआके और आततायी विदेशियाके अत्याचार सह और स्वय भी स्थल और जल सनाए बाहर भजा यद्ध किय उपनिवण जीत और साम्राज्य वसाय। य सब बाने आयी-गयी हो गयी क्याकि स्वातन्त्र्य प्रम मानवके स्वभावमें निहित है और कोई भी अत्याचारी व्यवस्था वह चिर-कालके लिए नहीं स्वाकार कर सकता है पर उसके नागरिका और उसके सागरिकान धय और साहम और चरित्र गठनकी जो परम्पराए गढ़ी हैं व स्मरणाय है। इस दृष्टिम इगुड और हालडका जावन इतिहास प्राय समांतर चलता है। यह समानता आकस्मिक नहीं है सागरसे दोनाका सम्बन्ध एक सा रहा है और हम सम्बन्धके सहारे ही उनके चरित्र उनकी सस्कृति और उनके इतिहासको समझा जा सकता है।

मन हाउसमें उत्तरकी ओरसे विमान मागसे प्रवण किया था। उन माफकी राजधानी कपेनहागनसे उठकर एम्स्टर्डमके हवाई बन्दर स्थापोल पर उतरा था। हाउड आनका प्रवण-पत्र (बीजा) मन बहुत पहल पेरिस में किया था और आज समय मय इस बातका ध्यान नहीं रहा था कि बाजाका जो मगनकी अवधि तो पूरा हो चुकी है। बाहर निकलते समय कस्टम वालान रोक किया और बताया कि भरा बीजा तो व्यय हो चका है। नया जानना कि और दगोंमें एमी परिस्थितिभ बना हाता—या या क कि जानना है कि कुछ दगोंमें या ता दा चार दिन नडरवतीकी-या हाउसमें पना रना पना अयका अगु है। विमानम वापिस चक जाना पना। मर कस्टम वालाके म कहतार, कि य भूत अनजान हो गयी है और प्रवण-पत्रका अवधि बना बड़का दे उहान उत्तर किया कि यह

उनके बसकी बात नहा क्याकि यह ती के द्वाय विदेश मन्त्रालयका सम्बद्ध विभाग ही कर सकता था । किन्तु उहान आश्वासन लिया कि वह प्रयत्न करके देखेंगे और भरसक जल्दी मुझे सूचित करेंगे । मन्त्र एक तरफ आराम कुर्सीपर बिठाकर कमचारी मेरा पासपोर्ट लेकर चला गया । भयठकर सांचन लगा कि मैं तो एम्स्टर्डाममें हूँ और मन्त्रालय राजधानी हैग (अथवा डच नामके अनुसार डेन हाव) में न जान कितनी देर लगगी

लगभग छ मिनट बाद कमचारी मेरा पासपोर्ट लेकर लौट आया । उसपर अवधि घटानेका प्रमाण पत्र मुद्रित था जिसके साथ मन्त्रालयके सत्मन्वधी फाइन्का नम्बर इत्यादि भी लगा हुआ था । मन घमघमाव देकर पासपोर्ट ले लिया और बाहर चलनेकी तयारी करने लगा । कमचारीने कुछ आत्मतुष्ट भावसे मुसकराते हुए कहा इसे आप अत्यधिक विलंब तो नही कहेंगे न ? मन एक बार फिर घमघमावके साथ उसे और उसके मन्त्रालयकी बर्षा ली और आगे बढ़ गया ।

उस समय मैं एम्स्टर्डाममें अधिक रुक कर सीधे पूर्वोत्तर हालडके खोनिडन नगरकी चला गया था, जहाके विश्वविद्यालयमें तन्त्र-युग और आधुनिक सभ्यताकी प्रवृत्तियाँ विषयपर एक विचार-गोष्ठीमें मुझे भाग लेना था । खोनिडनका विश्वविद्यालय हालडके उन प्राचीनतर विश्व विद्यालयामस एक है जो मिलकर प्रतिवर्ष एक अन्तर्राष्ट्रीय विचार गोष्ठीका आयोजन किया करते हैं । इसमें प्राय २५ ३० देशके अध्यापक और विद्यार्थी—और कभी-कभी मूल जसे घुमन्तू लखक—भाग लिया करते हैं । इस बार गोष्ठी कुछ दिन खोनिडनमें रही, कुछ दिन हल्फ्टम जुगी, किन्तु इन दोनों विश्वविद्यालयोंक अलावा और के द्वासे भी अन्वेषण गण आय हुए थे ।

मानिलेसे दक्षिण-पूर्वके देशोंमें जाना हुआ । यह प्रदेश अपेक्षया कुछ ऊँचाईपर है और इसलिए समीचीन विनोय रूपसे एक राष्ट्रीय उद्यान

को तरह सवारकर रखा जाता है कि विदेशी यात्रियोंको आहूट कर। या तो सभी यूरोपीय देश व पमानपर यात्रियोंका व्यवसाय करते हैं। पर कुछ देशोंकी अर्थ-व्यवस्थाका आधार ही इन टूरिस्टोंके आगमनपर निर्भर है। ऐसा तो नहीं है उसका दूध मकान व नीरका निर्यात और उसका समस्त व्यापार दोना विश्व विख्यात है। और ही उसका फूलाका निर्यात भी ससारका एक अचरज है। फिर भी सत्रानियोंका उपयोगिता उसके लिए काफी है। दक्षिण-पूर्वक प्रशासक सहज सौख्य डच शासकों भी आहूट करता है। आनहमें रात नशोंकी तट रखा देखन या गर्मियोंका सासवके शासक उद्यानमें घूमन कम लोग नहीं जात। पर जपन देशमें कौन सुले हायस उच करता है ? और फिर डच गृहस्य तो कतना प्रसिद्ध विज्ञान सार है कि डच आतिथ्य का अर्थ ही अलग ही गया है। होटलम दा गयी दावनमें अनिधि और आनियस सभा अपना-अपना हिसाब अलग चकायें या बिल आराममें बैठकर चुकता करें तो यह अर्थ आनियस कहगता है। और शासक समपर इस भी सक्त है किन एगो परिस्थितिमें सभी लोग परिवर्तित हो गये हैं जब कि आत्म-सम्मान बनाय रखनका वही एक मात्र उपाय रहे जाता है। हम विनाय प्रकारकी व्यवहारिकताका एक पहलू यह भा है कि हालैंडमें पि दनकी प्रथा लगभग नश है। न ही कुछ दूमर देशोंकी शक्ति विन्में १० या १५ प्रतिशत जो नशिया जाता है। बन्कि एमा भा अनमत्र इमा कि नश नश जानपर बटर उम ग्रहण करनेमें स्नकार कर द मा पूछ द किमलिण विनाय रूपमें जय परिमस हमका तुना करें—जरी कि विन्में बकागत हमें १५ प्रतिशत जा दनर बश भ स्वच्छा कु नश जानका अपना बटर करना है—नद समनमें अश है कि नशमें व्यवहारिकता और आभासमानता क्या दश उन्मियत किया गया है।

जो हा सामवेङ्के राष्ट्रीय उद्यान या एसे अय दानीय स्थलाकी समुचित यवस्था और द्वाकी अधिक समष्टिके लिए हालइकी भी टूरिस्ता की तलाग करना पन्नी ह । राष्ट्रीय उद्यानका सुरमित भूमिका सौन्दर्य सचमुच बना आकषक ह और इमक बीचमें क्रौंर मूलर म्युजायम नामका आधुनिक कलावा जो सुन्दर संग्रहालय बना ह धकेले उसीकी देखनेक लिए हाउद आना सायक हो सकना ह ।

राष्ट्रीय उद्यान वास्तवमें बनाद्यान अथवा सुरमित बनलण्डा ही ह जेकिन उसक एक छोरपर एक यत्नपूर्वक पोषित हरियाला भा ह जिसम जम जे छायादार पुरान पेडाके नीच बच्च क्रीडाके और बयस्क युग वायुमेवनके लिए आन रहत हैं । सामवेङ्क इसी उद्यानम खुलेमें मति बना का अन्तर्राष्ट्रीय प्रशाना हानी ह । मूर्तिकार मूर्तिको कल्पना रूपमें नहीं करता ह एक परिवर्णका ध्यानम रखकर हा करता ह यदि एमा ह तो स्पष्ट ह कि एक बन्द कमरमें बन्दुती मूर्तियाँ एक साथ जमा कर बनस हा प्रशानी नहीं हा जाती—क्योंकि इम प्रकार बन संगठित ह्वाइ सामन आ ही नहीं सकनी जो दृग्-वन्द्याक मनमें थी । सायदरकी मूर्तिकर प्रशानीमें यह प्रयत्न किया जाता ह कि एमी मूर्तियाका भरमक बसे ही परिवर्ण बयवा परिवर्णमें उपस्थित किया जावे जिसक लिए बह रची गयो थी । यह भा ध्यान रखा जाता ह कि किसी एक मूर्तिको देखनेमें दूसरा मूर्ति बाधक न हो—एक एकाग्र होकर मूर्ति महित परिदृश्य देख सक । हा, जा छागे मूर्तियाँ घरक भीतर या कमरमें रखी जाना लिए बनी ह उनके प्रशानरे लिए एक बार छात्रा हुआ स्थान भी ह । एमी प्रशानी न बवल बन्दु अधिक् तलिकर हाती ह चरन् दगकके लिए भी और स्वय मूर्ति काराके लिए स्फुतिप्रद और निशात्र भी । जिन निना में बर्झा गया उन निना य प्रशानी हा रही थी और उगकी कुछ मूर्तियाँ अत्र भा ज्याकी त्या मेरी दष्टिके सामन आ जाती ह—रूपमें नहीं पूरे परिवर्णम जशी देखी जानके लिए ब बनी था ।

क्रोत्रर मूलर सग्रहालय एक निजी सग्रह था जो कि राष्ट्रको दान कर दिया गया । यूरोपके इम्प्रगनिट कालकी—जो कि मरी समझमें आधुनिक यूरोपीय चित्र-कलाका उत्कृष्ट-काल था—चित्र-कलाके दो सुन्दर सग्रह हालडमें ह जिनमें एक क्रोत्रर-मूलर सग्रह ह दूसरा सग्रह एम्स्टर्डामके नगर सग्रहालयमें । क्रोत्रर मूलर दम्पति समकालीन चित्र-कलाके पारखी और सग्राहक तो थ ही अपन समयके कई प्रसिद्ध कलाकारासे और विनाय तथा वान गोगसे उनका सौहाद भी था । वान गोगके चित्राकी अच्छीसे अच्छी प्रतिकृतियाँ मन दग्गी था पर उन दाना सग्रहालयामें उनके सक्डा चित्र देखकर समझमें आया कि यत्र-बौगल कभी कला गिल्पकी नहीं पा सकता कुछ रह ही जाता ह जिस केवल कृतिकार कह सकना ह—कुछ ऐसा जो एक ही हो सकता ह और आवृत्तित पर रत्ता ह परम्परागत ढङ्ग चित्र-कलाका मुख्य सग्रह एम्स्टर्डामके राजकीय सग्रहालयमें ह जहाँका रम्ब्राट सग्रह दानीय ह । या सग्रहालय हालडमें कई ह और टूरिस्ट लोग राजधानी इंग्लैंड मोरिटिज्जानामका सग्रहालय देखन प्राप्त जात ह । इम सग्रहालयक भा कुछ चित्र जगतप्रसिद्ध ह यथा योहानस बर्मीयरका दृष्टिके घाट का चित्र । आज भी दृष्टका यह व्यापार-केन्द्र उम चित्रके बन्द बन्ना नहीं ह—मैं जब दृष्ट गया तत्र उम दृष्टका सामन पाकर भी तीन सौ वर्ष पन्डका बर्मीयरका चित्र ही मानो मरी आँसुक सम्मग रहा । हाउसके प्राग्निह दृष्टके सनाधिक प्रसिद्ध चित्रार रोमडाल (१७ वा गनी) क कुछ चित्र भी इम सग्रहालयमें ह । उगमें कुछ विनाय प्रतिभा थी कि उमक घर (१९९९) यथायथ भा अत्रिक सच्च हा वान ह । हाउसमें घमन हार कई बार महमा किया दृष्टका देखकर यह बाध घोरा दना कि आ सामन ह नम न देखकर म उमक रोमडाल द्वारा अत्रिक चित्रका हा दम रहा है—कि प्रग्निह अष्टिम पूर्वम्भनिका गक्ति अत्रिक ह । विन्दर रूपन जिन प्रकारक मया-छन्न आकाशम वगैर आकाशक चित्र दम थ वह दृष्टक पन्डका हाउसमें हा दृष्टका भिगा । इम साच सगरे

इ कि आखिर तिनका प्रकाश सबत्र एक-ना होना ह तो यहा और वहाँके प्रकाशमें ऐसा क्या अन्तर होगा । लेकिन वास्तवमें ऐसा नहा ह । भारतका या साधारणतया भूमध्यवर्ती देगोका प्रकाश कुछ ऐसा तीखा होना ह कि दस्यके रगको मानो सोख लेना ह—हमें वण उतने नही दीखते जिनकी कि वर्णोंकी एक प्रकारकी चींध ।* समातोष्ण देशाका तिरछा प्रकाश बहुत निम्र होना ह—वह रगको मोखता नहीं, सहजाता ह, जिसस उनमें एक नय प्रकारकी कान्ति आ जाता ह । पर इम प्रदेशके सागर-तटवर्ती या द्वीप प्रदेशमें यह तिरछा आलाव हल्की घुघमें या नमकस लदी दूइ नम समुदा हवामें बमकर और भा नया रूप ले लेता ह—प्रकाश मानो मूयसे पथ्वीकी ओर नहीं आता बल्कि प्रकाशित वस्तुआके भीतरस फूटा ह यह अद्भुत प्रकाश विणेष एपसे हाल्डमें और कहा-क्या ब्रिटिश द्वीप समूहमें देखनकी मिला । फिर उत्तरमें प्रकाश और भी धीमा हा जाना ह और रग घुघल पडने लगते ह—ध्रुव मण्डलम तो रग प्राय टुप्त ही हो जाते ह

पर सप्रहालय देखनवाले टरिस्ट कम हा हाने ह इसलिए हाल्डके अनेक प्रजाको जीवितसप्रहालय-भा सजाकर भी रखा जाता ह । एम्स्टर्डाम स उत्तर मार्केन नामका छाना-सा द्वीप और बालडामका गाव भी ऐसे ही प्रदेश थ । हमारे देगमें गाँव दबने जानका विणेष उसाह नहा हाता क्याकि देग गाँवसि भरा पटा ह पर यूरोपमें जर्न नागर अथवा थोछा गिक संस्वृत्तियाने शक-अमृत्तियाका प्राय नामगेष कर लिया ह, परम्परा

* गम देगोंमें गदरे रगोंका—ताल, गेहूया, सिद्धूरी नीना, बागना, पड्डा पोला मूगई, तोतापरी आदिका—चलन निम्सन्देह प्रकाशके इस गुणसे सम्बद्ध है ।

गत ग्राम्य-जीवनकी परिपाटीपर चलनवाले गाँव दुलम हो गय ह और जहाँ भी एसी परिपाटियाँ थोड़ी-बहुत भी अशुण्य बनी ह वहाँ उन्हें बनाए रखेनका संगठित प्रयत्न होना है। कुछ तो इसका सहज आकषण ह हाँ पर जहाँ इसकी जड़में आर्थिक लाभकी प्रेरणा मुख्य होती ह वहाँ कभी कभी हमी भी आन लगती ह। खोनिचैन विन्विद्यालयके अपन कामके एक रविवार छुट्टी निवालकर म बोलडाम देखने गया था। छोटा सा सुंदर गाँव था जिसमें हर गली-कूचमें गुलाबकी बार्से फूलासे लगी झम रही था और विन्कियाके भीतरसे लाल धारीके परदे उजले चमक रहे थे गाँवके चौकम और सागर-बाघकी सड़कपर परम्परागत पागाकें पहन अनक नर-नारी घम रहे थे। चारा ओर हँसी-खुशीका वातावरण था। पहले तो म समझा कि गावने लोग सचमुच रविवारको एतन उत्साहमे छुट्टी मनाने ह और टरिस्टासे मित्र जुडत ह लेकिन योनी ही देरम जान गया कि इन परानी पागाकामें मटरगन्ना बरत हुए बाघमे अधिक लोग विदेगी टरिस्ट ह जा बघक किनारेकी दूकानामे पागाकें और लकडाके खगाऊ किरायपर चकर फाटो खाचत विचवात ह और चठ देन ह ! कुछ दूकाना पर विनायन भी दगा मवा मय घंटा किरायपर पूरा पागाक मित्र सकती थी—कवल फाटा विचानक लिए दग आनपर ! परम्पराआकी बच मानकी यह प्रवृत्ति सार पश्चिममें मित्रनी ह और कुछ भिन्न रूपमें यहाँ भी ह हाँ (और क्या भारतमें भा गक-नस्त्रिता परम्पराना कम गापण हा रहा ह ?) एमलिए बार्सेमक परिधमी मन्त्राओ दाप क्या लिया जाय पर विन्विद्येन परम्परागत गाँव का वातकी अमन्वित समयमें आ गया।

एकित हाँकवा और एक अतीथ म्गनीय चाउका आनार इतना विचवग नहीं ह। क ह वनीक फडाओ मना—विोप एगस उन फरेंडा जा मीने हन है—जम नरगिम लाग सामन मू-चम्यक बगर म्ग बगर—अन्ना नाम लें ता नामिसम टपुग्ग आयरिम

लिली आऊ द बनी, ब्राक्स, डफ्राडिल इत्यादि । इनमें गुल्-गाला अथवा टयूलिप हाउडका विनोप चीज ह । एम्स्ट्रडामस हेगको जो सख जाती ह, उसक दोना ओरका प्रदेश इसकी खतीना विनोप प्रदेश ह । अप्रक अन्तिम दिनमें मई भर सड़के आस-पास बाई बीस पचास मी लम्बी फूगकी ब्यारा दमी जा सकती ह, जिस विभिन्न रंग और जानियाके टयूलिप फूगका नियमित बनारें एक अलौकिक हुबूका रूप दे देनी हैं । यह स्थल दखन भा टूरिस्ट आने हैं पर इसमें बनाकर कुठ महा ह न यह दावा ह कि ये फूग जगती भा नर्मागिक ह या कि खत न हाकर उगान ह । महा यह फूगकी खेती ही ह, पर उसी रूपमें जगत्प्रसिद्ध ह और प्रसिद्धिका पात्र ह । डच नागरिक सभारकी सबसे बग फूगकी ब्यारा पर भा उतना ही गव कर सकता ह जितना कि राट्टरामका सभारकी दूसरी सबसे बनी बर्रगाहपर और इमरिण और भी अधिक कि जिम भूमिपर बह फूग उगाता ह बह भा उसने उमी प्रकार सगरस छाना ह जिस प्रकार उसने राट्टरामको जमा रस पिठे महायुद्धमें मटियामर हा जानक बाद फिरस बना लिया ह । युद्धस पूव कारवारका दृष्टि राट्टराम बर्रगाहका स्थान यूयाक और हामबुगक बाद तामरा भा अब दूसरा रह गया ह और अचरज नहीं कि सारे यूरोपके आयात निर्यातका बन्धित करता हुआ पाध नी पहला हो जाय ।

युद्धकालन विध्वंसक लक्षण विनोप रूपस जमनीमें बहुत देखनको मित्रे और युद्धोत्तर पुननिर्माणकी दृष्टिस पश्चिमा बर्लिनका पुननिर्माण कम आश्चर्यजनक नहीं ह । किन्तु राट्टरामका पुननिर्माण न बबुन डच जानिकी दुर्म जिवाविपाका प्रमाण ह बल्कि बर्ररामक दृष्टिस भी विशेष महत्व रखता ह । राट्टराम युद्धनया समली व्यापारका केंद्र था—वहाँ व्यापारी बग प्रनिनिधि अब भी सगर सार यूरोपकी राट्टरामका पिठवाण बन ह ब्याकि वहाँका आयात निर्यात राट्टराममें केन्द्रित ह । इसलिये नगर और बर्ररगाहका पुननिर्माण केवल व्यापारिक सुविधाकी दृष्टिस ही किया

लिनी बाफ द चली क्रोम हडाडिल, इत्यादि । इनमें गुल्-गाला अथवा ट्यूम्पि हारडका विशेष चीज ह । एम्प्टीमसे हेमको जो सक्त जाती ह उनके दोना ओरका प्रदेश इसको खेतौका विनोप प्रदेश ह । अप्रत्यक्ष अन्तिम तिमि म भर सडकक आम-बास कई वास पचोस मौल ग्वी फ्लाकी कपारा देखी जा सकतो ह, जिसे विभिन्न रसा और जानियाके ट्यूम्पि फूलाका निर्मित बतारें एक अलौकिक दुकलका रूप द देती है । यह रूप दखन भी तूरिस्त ध्यान ह, पर इसमें बनावत कुछ नहीं ह न म दावा ह कि य फल जगता या नसर्गिक ह, या कि यन न हाकर उद्योग ह । नहा, यह फूलकी सता ही ह पर उसी रूपमें जगप्रसिद्ध ह और प्रसिद्धिका पात्र ह । हव नागरिक 'मसारकी सवम बनी फलाकी क्यारी पर भा उतना हा गन कर सकता ह जितना कि राट्टीमकी मसारकी दूसरी सवम बनी बरगाहपर, और इसलिए और भी अधिक कि तिम भूमिपर वह फूल उगाता ह वह भी उसन उनी प्रकार सागरस छानो ह जिस प्रकार उसन राट्टीमकी अभी इस पिछल महायुद्धमें मटियामत न जानके बाद फिरस बना लिया ह । युद्धसे पूव कारवारकी दृष्टिम राट्टीम बरगाहका स्थान यूषाक और हामबुगके बान तीमरा या अब दूसरा रह गया ह और अरज नया कि मारे यूरोपक आयात निर्यातको कन्ति करता हुआ गीछ ही पहा हो जाय ।

युद्धकालन विजयक लण विाप रूपसे उमनीमें बहुत दखनको सिने और यदात्तर पुननिमाणकी दष्टिम पश्चिमा बलिन्का पानिर्माण कम आश्चर्यजनक नहीं ह । किन्तु राट्टीमका पुननिमाण न केवल हव जातिकी दुःख जिजाविपाका प्रमाण ह बल्कि कलात्मक दष्टिम भा विनोप महत्व रखता ह । राट्टीम मन्त्रनवा समुदाय 'याशरका क था—बहोन 'पापानी बगर प्रतिनिधि अब भी सगव सार यूरोपका राट्टीमका पिटवाला कन्त है क्यकि वहाँका आयात निर्यात राट्टीममें कन्ति ह । इसलिए नगर और बरगाहका पुननिर्माण केवल व्यापारिक सुविधाकी दष्टिम ही किया

गया होता तो भी अचम्भकी बात होती किन्तु नगरक निर्माणाआन इन ही से सन्तोष नहीं किया बराबर इसक लिए भी यत्नशील रह कि उनका नगर स्थापत्यका दृष्टि भी महत्त्व रख । राटडामका नगर भव्य भी ह और सुन्दर भा—और उपयोगी भी । मयहन स्वय कुछ समय निकालकर हमारी छोटी सी टोलीको उसके विभिन्न कृषि लिव्वाय तो उसमें अभ्यागतक सत्कारकी उदार भावना जितनी थी उतना ही इस बातका गौरव भाव भी था कि उनका भवन आधुनिक युरोपीय स्थापत्यम अपना स्थान रखता ह । राटडामक व्यापार मण्डलका भवन अत्यन्त प्रभावशाली था और आधुनिक स्थापत्यका एक उल्लेखनीय नमूना । विंगाल भवनमें कामसे आनवालाका सकेडा मोटरें खड़ी करनक लिए स्थान भवनक बाहर नहीं बल्कि दूसरी मजिलम रखा गया ह और मोटरें सीध दूसरी मजिलम जाकर ही रक्ती ह । सबसे ऊपरकी मजिलम काँचसे जड हुए विंगाल बरामदमें कटीनम चाय पीन हुए पूर नगरका विहंगम दृश्य देखनको मिला ।

स्थापत्यकी ओर डब जाति विंगप ध्यान दे रही ह । राटडामका वाड-मैन्म—स्थापत्य-कृषि—अपन-आपम स्थापत्यका मणविद्यालय भी ह और सप्रगण्य भा । हगका मद्रुरोडाम उद्यान भी अपन ढगकी एक चीज ह । महापर हाउड भरका प्रसिद्ध इमारतकि छात्र प्रतिष्ठप स्थापित किय गय ह और उन्हीका एक छोटा-सा नगर बनाया गया ह । इसका बनेस व । मयहन भी छ फरस कम ऊंची ही णगा किन्तु यह न समझा जाय कि यह बवल बचाक मनारजनका एक नय ढगका साधन मात्र ह । बच्च और स्कूल्क विद्यार्थी वहाँ पयाप्त सन्गम जान ह और मनारजनक साध-साध गिना पात हैं । किन्तु उनका आकषण अथवा उपयोग बड़ी तर सामित नहा ह । स्थापत्यका और भवन निमागमें मोट्यकी आर गिणय सजगताक प्रचारमें मद्रुरोडाम काफ़ा योग दना ह क्योंकि इसक भवन सब

बनानिष्ठ आनुपातिक प्रतिक्रिया (स्कल माडल) ह । इससे होन वाली आय एक विद्यार्थी सहायकनिधिमें जाती ह ।

इच जातिका उसके पडोसी कभी मजाक भी उडाते ह । कोई उसे कपना विहीन बताना ह नो कोई उसमें विनोदकी कमीकी आलोचना करता ह । पर जधक उद्यम अदम्य साहस उत्कट स्वातन्त्र्य प्रेम और अमुखर दया नाव यन्त्रि किसी जातिको श्रद्धाका पात्र बनाते ह तो इच जाति निस्सन्देह श्रेय ह । और अधिकाशमें मानव निमित नीचा और मपाट होकर भी स्वच्छ मुखर, और सजीव नैदरलड प्रदेश दशनीय भी ह रमणीय भी ।

सयुक्त राज्य : दो राजधानियाँ

लन्दन

हर नगरका अपना एक स्वाद होता है। किसी भी नगरक स्वादका वखान बन्द किया जा सकता है लेकिन वखानसे किसी दूसरको वह चखाया नहीं जा सकता। और एम प्रयत्नसे स्वादका जो आभास होता है वह उमसे अधिक सच्चा नहीं होता जितना कि वजीरकी गहमें ढबी हई दांती चूसकर ईरानके बाग़हाक़ा आमके स्वादका आभास हा सका था।

स्वाद-बाधकी यह समस्या और भी विकट तब हा जाती है जब कोई यकिन एस नगरम पहुँचता है जिस वह वणनमे बहुत अच्छी तरह जानता है जितनी चचा सुनत सुनत और ज़िमक महक़ा और रास्ताका वणन उपयाम-कानियाम पत्त पत्त वह उससे कतना परिचित हा गया है मानो स्वयं वहा रहे चका है—पर जहाँ पहुँचकर वह पाता है कि इस किताबी परिचयने आधारपर कानिया द्वारा रच हुए नगर और वास्तविक नगरक रूपमें सम्पूर्ण एकता रहत भा दानास स्वादमें आकाश-पातालका अन्तर है। (यह नहीं कि आकाश या पातालका स्वाद म जानता है—कमसे-कम पातालका ता बिन्दु नहा जानना।—लेकिन आकाशक हा दो स्तराका स्वाद एक-दूसरसे और भूलक स्वादम जितना भिन्न हाता है उमसे य निकाय ज़हर निकाल सकता है कि पातालका स्वाद बिन्दु भिन्न हागा।)

दिर एस नगरका स्वाद दूसराका बरानमें अनिरिकत समस्या होती है कि कयदि वणन ता उखाका करता चाहता है जा पहलस सुपरिचित है

तथापि अनुभव उससे बिल्कुल भिन्न प्रकारका कराना चाहता हूँ। इस प्रकार यह चाहता हूँ कि पुराना पाटीपर नय रगकी स्याहीसे नयी भाषामें कुछ लिख दू और यह मान लूँ कि उसके लिखनसे ही न केवल वह नयी भाषा बोधगम्य हो जायगी बल्कि पराना लिखा हुआ मव मिट भी जायगा।

जिन्होंने अग्रजो पद्धतिमें शिक्षा पायी है—और भारतक शिक्षिताका अधिगम्य वय अभी तक एमा ही है—उन सभीके लिए लन्दन ऐसा ही नगर है। जिन्होंने देखा नहीं है व भी उसे काफी जानते पहचानते हैं। यह दूसरी बात है कि उनमेंसे बहुतराका लन्दन वह हो जो कि सन १६६६ का आगमें जल गया और जिसका वणन डिक्सेन्ने किया है कुछका वह हो जिसका रूप अठारहवाँ शताब्दी नाटककारान तत्कालीन नागर समाजक कृत्रिम जीवनके ध्येय नाटकामें किया है और कुछका लन्दन वह है जो गाल्सवर्दीक घनसंठाके समाजका नगर है। कुछका अवश्य वह लन्दन भा होगा जो बोड्डहाउम द्वारा वर्णित कल्वा अभिजात परिवाराकी हवेलिया या रियासतों अनन्तमाह गहरियाँ फ्लॉट अथवा कमरा चाँची एगाथा जम सम्बन्धिया मयवा 'जी-२' जैसे नौवरोक वणनस मत होता है।

क्या मर लिए यह सम्भव होगा कि इस जाने-पहचान लन्दनके ऊपर उस दूसरे लन्दनका आरोप कर दू जिम केवल मन दखा और जिसका स्वाद केवल में जानता है—जिम स्वादमें परिचितक अपरिचितका अनिवचनीय स्वाद भी मिला हुआ है? विगपतया जो लाग टेम्स नदीके पुलपर लड हाकर उस अपनी आँखाँसे नहीं, बल्कि स्मरण का हृद्द व स्वयकी पवित्रयास*

* घप हैज नाट एनीथिंग टु गो मार फयर

दल बुड ही बी आरु सोल हू कुड पास बाइ

ए साइड सो टर्चिंग इन इटस मेजस्टी

गिफ्त टावस, डोम्स, पिघेटस, गड टेम्पल्स इत्यादि

—यह स्वरय, 'श्रवान वेस्टमिस्टर सिज

संयुक्त राज्य : दो राजधानियाँ

लन्दन

हर नगरका अपना एक स्वाद होता है। किसी भी नगरक स्वादका बखान बहन किया जा सकता है लेकिन बखानस किसी दूसरको वह बखाया नहीं जा सकता। और ऐसे प्रयत्नसे स्वादका जो आभास हाता है वह उससे अधिक सच्चा नहीं हाता जितना कि बगीरबी गहमे डूबी हुई दानी चूमकर ईरानके बादशाहको आमके स्वादका आभास हो सका था।

स्वाद-बोधकी यह समस्या जोर भी विकट तब हा जाती है जब कोई व्यक्ति ऐसे नगरम पहुँचता है जिस बह वणनस बहुत अच्छी तरह जानता है जिसकी बचा मुनन-मुनन जोर जिकके महुला और रास्ताका वणन उपयास-कानियाम पत्र पत्र बह उममे कतना परिचित हो गया है मानो स्वय वहाँ रहे बका है—पर जहाँ पहुँचकर बह पाता है कि इस किताबा परिचयन आधारपर कल्पना द्वारा रच हुए नगर और वास्तविक नगरके कपमें सम्पण एकता रहत भा दाताके स्त्रामें आजाग-मानाग्रा अर है। (य नग कि जाकाग या पानाका स्वाद म जानता है—कमम-कम पानाका ता बिल्कुल नहीं जानता।—केबिन आकागन हो दो स्तराका स्वाद एक-दूसरस और मूनक स्वादम जितना भिन्न होना है उसमे यह निष्पय जरूर निकाल सकना है कि पानाका स्वाद बिल्कुल भिन्न हागा।)

दिर एस नगरका स्वाद दूसराका करानमें अनिरिकन समस्या होनी है कि यदपि बान ता उभाका करना चाहता है जा पहल्य सुपरिचित है

तथापि अनुभव उससे बिल्कुल भिन्न प्रकारका कराना चाहता हूँ। इस प्रकार यह चाहता हूँ कि पुराना पाटापर नय रगकी स्याहासे नयी भाषामें कुछ लिख दू और यह मान लूँ कि उसका लिखनस हा न बबल बह नयी भाषा बाधगम्य हा जायगी बल्कि पुराना लिखा टूआ सय मिट भी जायगा।

जिन्हान अग्रबी पद्धतिमें गिना पायी ह—और भाग्नक सिगिताका अदिमस्य बग अभी तक एसा हा ह—उन समीक लिए लदन ऐसा ही नगर ह। जिन्हान दखा नहा ह व भी उसे काफा जानत-यहबानते ह। यह दूसरी बात ह कि उनमेंस बहुतराका लदन बह हो जा कि सन् १६६६ की आगमें जल गमा और जिसका वणन टिकेंसन किया ह कुछका बह हा जिसका रूप अठारहवा गताके नाटकवागत तत्कालीन नागर समाजक वृथिम जीवनक व्यय्य नाटकामें किया ह और कुछका लदन बह हो जा गात्मवर्तीक धनसटाके ममाजरा नगर ह। कुछका अवय्य बह लदन भी होगा जा वाडहाउम द्वारा वर्णित बलवा अभिजात परिवाराकी हवलिया या रिवासना अनयाहै गहरियके फल्ट अथवा कमरा चाचा एगापा' जमे सम्बधिया अथवा जीज जैसे नीवराके वणनम मूत हावा ह।

क्या मर लिए यह सम्भव होगा कि इस जान-यहबान लदनक ऊपर उस दूसरे लदनका आराप कर दूँ जिसे बबल मन दखा और जिसरा स्वावक म जानता हूँ—जिस स्वादम परिचितक अपरिचयका अनिवरनाय स्वाभी मिगना ह ? विगतया जा लोग टेम्स नगीर पुलपर मर हाकर उमे अपनी आँसासे नहा बल्कि स्मरण का हूर्द व स्वयकी पकितयामे

* अथ हैम् नाट एनीयिग दु गो मोर फयर

इत घुट ही बी भाक सोन हू कूड पात याह

ए साइट सो टचिंग इन इटम मेंजस्टी

गिप्त टावस, डोम, विघटस एड टप्यत्स इयादि

—यह शय्य, 'अपान वर्यदिपर मिट'

प्रत्यक्ष करते हैं या हम्पस्टड जाकर अपनी आवाके सामनक मन्तनको न देखकर केवल कीटसकी चली हुई भूमि दखत है उनसे लिए टम्सके घाट आजके अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारका एक केन्द्र-स्थल न होकर क्वथ बह रहस्यमय प्रदेश है जिसमें एनीसन और स्टीठ घमत थ जातसन और पोप्स अपनी पनी उक्तियाके लिए सामग्री ढूँढत थ मालों गराव पीकर मल्लाहाकी तरह झगडत और फमात् करत थ कोलरिज और डक्विन्सी नगा करक पिनकचियाकी तरह रगीन स्वप्न दखत थ उनके लिए कसे उस लम्नको मूत किया जा सकता है जा आज है ?

म अपन युरोपीय प्रवासमें तीन चार बार लन्दन गया । प्रत्येक बार परिचय अपरिचयका यह दाहरा भाग मर मनमें जागा—इसके बावजूद कि पहली बारके बाद तो म यह नहीं कह सकता था कि अभी वहा नहीं गया है ।

पहली बार लन्दन मईके आरम्भम गया था, रोम और परिम होता हुआ । इटली और फ्रान्के वसन्तके बाद लन्दनका नीरस और रूपथी विहीन लगना स्वाभाविक ही है । फिर लातीनी और अग्रजी स्वभावका अन्तर भी ऐसा है कि लन्दनकी सहज धूसरताके ओर भी मत्प्रला बलि वालिखन्ता बना देता है । जब अग्रज मडाक करता है और हसता नहीं है या सक्ष्य चाहता है पर बोलता नहीं है बसे ही उदर गहर जोना चाहता है पर निश्चयताक तलके नीचे मुग्गता है पर राखकी मानी पतके नाच छिपकर ।

राम और परिमकी तुलनामें लन्दन कुम्प है स्टाकहोम और कोपेन हागनकी तुलनामें गन्ना बर्लिनका तुलनामें गिबिल और निक्म्मा । लकिन कार् विविध कारण है कि लन्दन एक सहज धरम्पनका भाव उत्पन्न करता है । उसमें कार् ठन्क भन्क नहीं है लकिन उसकी सम्कारर चन्ते हुए धार धार म् बाध मनपर छा जाता है कि यह एक महानगर है जो अपन

काममें दूरा हुआ है और जानता है कि अधिक गार मचान या हड़बडानसे ही काम अधिक नहीं हो जाता ।

दूसरी बार जब लग्न गया था तब ग्रीष्म-काल था जिसमें सारा पूराप मगन हाकर छुट्टी मनाता है और लग्नसे भी एक एक पखवारके वार्षिक विधामक लिए जानवाली टानियाँ सब दिशाधामें जा रही थी फिर भी दूसरी राजधानिया और लग्नका अन्तर स्पष्ट था ।

परिस ग्रीष्ममें परिस भुर्ना शत्रु हाता है—ग्रीष्म भर यहा कोई हलचल नहा होती । जहाँतक कामका सवाल है काम तो या भी एक मुमीबन है जब बरना पडता है तब करना ही पडता है—तब फिर अभी क्या उसकी बात साचें ?

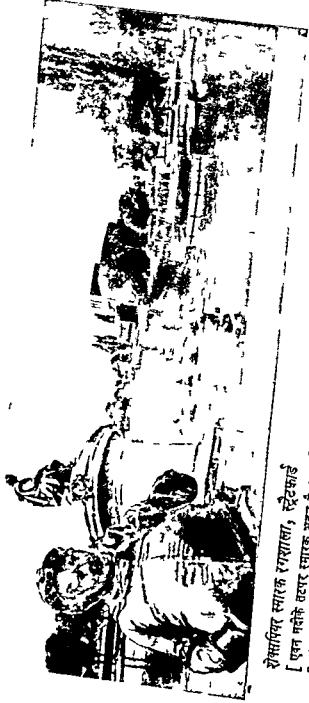
स्टाकहोम साफ सुधरा और स्निग्ध किन्तु जहाँतक किसीस मिलन का प्रश्न है गर्मियामें सब लाग बाहर चल जाते हैं—गाम ही कोई मिल सके । और जहाँतक कामका सवाल है—थोडा-बहुत काम होता रहता है क्योंकि आखिर इनसानकी कुछ न-कुछ तो करना ही चाहिए ।

कापेनहागेन स्टार्कहोम-सा ही स्वच्छ उससे कुछ और गम, और इसलिए पाशाकके नामपर कुछ और भी कम पहने हुए । 'किसीस मिलना है ? तब किमी-न किसी सागर-नटपर धूमन चले जाइय कहा-न-कहां बाई-न-बाई मिल ही जायगा जिससे आप मिलना चाहेंगे । या सभी तो हसमुख और मिलनसार हैं किसीस भी मित्र लीजिए । काम ? हा-हाँ, जल्द काम भी करेंगे, जब उमका समय होगा । तब उसकी बात भी बर्र सौची जायगी ।

विन्नु लग्न यहाँ भा अवकाशका समय है लेकिन तब भा बाता वरण कामका है लगनसे और परिश्रमपूर्वक किय जानवाल कामका । लग्न लिए अघोर बचाको दूर देहातमें सागर नटपर, शीलाके प्रदेशमें उद्यानामें या चाह कही भा भज दिया गया है । जाओ बच्चो, बाहर जाकर राता—मुस काम करता है ।'

सचमुच काम करनेके लिए गहरामें लन्दन अच्छा गहर है। परिसमें मोज बहुत हो सकती है और उसके लिए साधियाकी कमी नहीं है। किन्तु जो अक्ला पड़ जाय वह परिसमें इतना अकेला हो जा सकता है कि दुनियामें और कहीं उस निजनताकी बराबरी नहीं हो सकती। किमी हफ्ते तक ऐसा अक्लापन किसी भी बड़ गहरमें हो सकता है लेकिन परिस गाय दुनियाका सबसे अकेला गहर होगा। लन्दनमें भी अक्लापन सम्भव है लेकिन बसा नहीं। दूसरी ओर साम्प्रतिक आयाजनाका दृष्टिकोण लन्दन ससारके किसी दूसरे गहरसे कम तत्पर नहीं है और उसके साम्प्रतिक जीवनकी सम्पूणता अतिनीय है। लेकिन जहाँ जा मनोरजन और कला विनोद चाहता है उसके लिए लन्दन बड़ी प्रस्तुत करता है वहाँ चाहमखाह सड़कापर लौड़ी पीटना हुआ चलकर काम करना चाहनेवालाको बाधा नहीं देता। अब सभी राजधानियामें कोई महीना ऐसा अवश्य होना है जब कि साम्प्रतिक आयाजन बन्द रहने लगे हैं लेकिन लन्दामें ऐसा कभी नहीं होता—यदि अवकाशके लिये आयाजनक क्रियाशीलता लक्षित होती है। सम्प्रतन्तय नया प्रदर्शनियाँ रायल आपेरा हाउसमें नये आपेरा आलबट हाल और फ्रिस्टिवल हालमें संगीत और नृत्य-नाटक, डूरी केन एल्फ्री फोनिक्स ग्लोब लिटिक और अपात्रो विएटराम नाटक और आन्विकमें गवसपियरके नाटक—ये सभी स्थान छुट्टीके मौसममें भी कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं।

अधिकांश गणित भारतवासीका इत्यना-विचित्र लन्दन एक हिन्दुस्तानी लन्दन है। हमके अन्तर्गत चाहें तो दूसरा हिन्दुस्तानी लन्दन भी मूत किया जा सकता है—लन्दनमें रहनेवाले भारतवासी लन्दन। क्योंकि यहाँ के भाग्याय विद्यार्थियोंका मध्याह्न खाने के बाद गवसपियर ऊपर शान्त स्थान अतिरिक्त यहाँ बस जानकार भारतवासीका स्थान बननी ही जा रहा है। निगमेट



रोसापियर स्मारक रंगशाला, स्ट्रीटफाई

[एबन नदीके तटपर स्मारक भवन है, पास ही उद्यानमें स्मारक मूर्ति जिसके कोणोंम नाटकोंके प्रमुख पात्र ।
चित्रमें पारस्टाऊक दीख रहा है]

सबमच काम करने के लिए गहरोंमें लन्दन अच्छा गहर है । परिसमें मौज बहुत है। सक्ता है और उसके लिए साधियाका कमा नहा है लकिन जो अकेला पड जाय वह पैरिसमें इतना अकेला हो जा सकता है कि दुनियामें और कही उस निजनताकी बराबरी नहीं हो सकती । किमी हू तक एसा अकेलापन किसी भी बड गहरम हो सकता है लेकिन परिम गायन दुनियाका सबम अकेला गहर हागा । लन्दनमें भी अकलापन सम्भव है लेकिन वमा नहा । दूसरी ओर साम्कृतिक आयोजनाकी दृष्टिमें लन्दन ससारके किसी दूसरे गहरसे कम तत्पर नहीं है और उमक सास्वृतिक जावनकी सम्पूणता अन्तिम है । लकिन जहा जा मनोरजन और कला विनो चाहता है उमके लिए लन्दन वही प्रस्तुत करता है वहाँ खाहमछाह सबकापर टौडी पीटना हुआ चलकर काम करना चाहनवालाको बाधा नहीं देता । अय सभी राजधानियाम कोई महीना एसा अवश्य होता है जब कि सास्वृतिक आयोजन बन रहन है लकिन लन्दनम एसा कमा नहीं हाता—बल्कि अवकाशके दिनमें आन्वयजनक क्रियाशीलता लभित होती है । सग्रहालयमें नया प्रदर्शनियाँ रायल आपरा हाउसमें नय आपरा आश्रम हाल और फ्रिस्टिवक हालमें संगीत और नट्य-नाटय टरी गन एन्टरफा प्रोनिक्कत गाय लिरिक और अपालो थिएटराम नाटक और आन्विकमें गकसपियरक नाटक—य सभी स्थान शुक मीसममें भी कायक्रम प्रस्तुत करत रहत है ।

अग्रज निमित्त भारतवासाका इन्पना-विश्रित लन्दन एक हिन्दुस्तानी लन्दन है । एक अन्तवा चाहे ना दूसरा हिन्दुस्तानी लन्दन भी मूत श्रित जा सकता है—लन्दनमें लन्दनवाल भारतायाका लन्दन । कनाकि वहाँ क भारतवा विद्यार्थियोंका सङ्ग बार सङ्गम उपर हाता सङ्ग अनिरिकत वहाँ बन जानवाउ भारतायाका सङ्ग बनता है जा रहा है । निगन्ह



रोक्सपियर स्मारक रंगशाला, ट्रिस्टफोर्ड
[एकल नदीके तटपर स्मारक भवन है, पास ही उद्यानभ स्मारक मूर्ति जिसके काणोमे नाटकोके प्रमुख पात्र ।
विषमे फलस्टाक दीस रहा है]



एडिनबरा दुर्ग [रातमें]

इन भारतीयोंमें अनेक ऐसे भी ह जो केवल वश-परम्पराय भारतीय हैं और जिनका भारतसे कोई निजो सम्पर्क नहीं है—जैसे मारीशस दक्षिणी या पूर्वी अफ्रीका, वस्त इण्डोय मा गियाना या फीजीमें बसनेवाले भारतीयोंकी सत्तान, जो उच्च शिक्षाने लिए वहाँ जाकर वहीपर नौकरी या व्यवसाय करने लगती है। लेकिन लन्दनके भारतीयोंमें सब पढ़े लिखे या विद्याकी नहीं हैं विद्यार्थिया, डाक्टर, वकानिया, बरिस्टरा और पत्रकारके अलावा प्रायः अनपठ व्यवसायी मजदूर और जहाजी भी वहाँ पाये हैं।

एक तीसरे भारतीय लन्दनको भी निरूपित किया जा सकता है। यह भारतीय संस्कृतिके अध्यक्षता और खोजियाका लन्दन है। भारतीय कला और पुरातत्वकी अपुव सामग्री प्रचुर मात्रामें लन्दनमें पायी जा सकती है। नि स देह औपनिवर्तिक इतिहासका स्मरण करके हमको आक्रोशका कारण बनाया जा सकता है कि इतनी मूल्यवान वस्तुए क्या यहाँस ले जायी गयीं या ले जाने दी गयी बहुत मो वस्तुओंपर भारतका दावा है और आगा की जा सकती है कि अनतिदूर भविष्यमें वे फिर यहाँ लौट आवेंगी। लेकिन एसा भी बहुत कुछ लन्दनमें सगहीत है जिसका मूल औपनिवर्तिक गोपणमें नहीं बल्कि गुढ कला प्रेममें या एक प्राचीन संस्कृतिके सम्मानमें है। जस जमनान स्वयं हमारी उपे तसे हमारा साहित्यका उदार किया वम ही अनक दृष्टि-सम्पन्न अग्रज्ञान हमारी कला-वस्तुजा और पुरातत्व सामग्रीको हमारी अन उपासीनतासे बचाकर रखा और नये सिरसे हमें उसका सम्मान करना सिग्याया। भारत विद्याकी सेवा और रणा करनेवाले इन अप्रज्ञामें कई ऐसे भी थे जिन्हें राजनीतिक दृष्टि हमारा कट्टर शत्रु गिना जा सकता—शक्ति भारतक अंग्रेज शासकामें साधारणतया जिनको कला-दृष्टि जितनी ही उदार और संवेदनशील थी उननी राजनीतिक प्रवृत्तियाँ उननी ही सखीण और अदूरदर्शी रही जिसका एक कारण यह भी था कि हमें अपनी संस्कृतिके प्रति कतना उपासीन देख

कर उनके मनमें हमारे प्रति अवहलनाका भाव उमड़ता था। जो हो इन कला-संग्रहाके लिए हम कृतज्ञ ही हो सकत ह और इनका उद्वेग भी एक अलग भारतीय लन्दन ह जिसमें प्रवेश करके हम भारतका ही एक अधिक प्रभावमय रूप देख सकत ह जो भारतके वर्तमान देश कालका अतिक्रमण कर जाता ह।

ब्रिटिश म्यूजियम तथा विक्टोरिया एण्ड आल्बर्ट म्यूजियमके भारतीय कला-संग्रह और विक्टोरिया म्यूजियम तथा इण्डिया लायब्ररीके ग्रन्थ-संग्रह सत्तार प्रसिद्ध हैं। लेकिन लन्दनसे बाहर छोटे भारताय संग्रह भा कम मूल्यावान नहीं ह। आक्सफोर्ड और केंब्रिजके संग्रहालय भी उल्लेखनीय ह और बर्मिंघम संग्रहालयकी गढ़वी कांस्य प्रतिमा तो अनुपम ह।

लन्दनके देशका अलग अलग बणन इस सन्दर्भमें कोई प्रयोजन नहीं रखता। बर्मिंघम महल और उसके सामन (अथवा सेण्ट जम्स महलके सामन) सन्तरियाकी रंगीन बस्तियाँ और मुनियत्रित परड पार्कमेंट भवन और बस्टमिस्टर एवे उद्वेग टावर और उसके सामनका टम्सना पल सन्त पालका गिरजाघर—य सब दूसर यात्रियोंने बणनामे या चित्रासे हमारे अतिपरिचित हा गये ह। हाइड पार्क और उसमे लगा हुआ केंसिंग्टन उद्यान हाइड पार्कमें कहा भा कभी भी एक पेयेपर खूब होकर उक्कर बाहन रगनवाते तरह-तरह खोजी आगवाणी पागड और पाखण्डी और सवाला या व्यय्य बाणासे उनकी बोली बोल करनवाते मनचर श्रोता—अप्रेजी साहित्यसे ध्यान-बहुत परिवय रगनवाते भी इनसे परिचित हैं। बकि यत्र हरमन-यार व्याख्यानदाना ता हाइड पार्क मनाबहार फूलमे गिना जाता ह। पिकाटिया और ट्रफगारक चौक भी प्रायः एतन्ना परिचित है। अगर ट्रफगार स्कवायरक फव्वारक आस पास हर समय महराज और गटरनू करत अगडक-गण बव्वार कौतूहली

दशाब्दों का उपना करते हैं और आसपासकी विंगल ऐतिहासिक वास्तव्य भूमि पर एक-सी उन्नतमानतास बाँटे करते रहते हैं ता यह भा कोई विशेष उल्लेखनीय बात नहीं है—एसे ही दृश्य भारतक गहरामें बासिया जगह देख जा सकत है और दिल्लीक चौकी चौकमें भी देख जा सकत है । यह दूसरी बात है कि दृक्लगाए चौकक एक तरफ राष्ट्राय विष-संग्रहालय है जो कि ससारक प्रथम काटिक संग्रहालयमें गिना जाता है और दूसरी ओर सत मार्तिनका गिरजाघर है जब कि चाँदनी चौकक विकटारिया महाराना क वृत्तक पाछ टाउनहाल है और सामने नये सड़क की बनारसी साड़ियाकी दुकानें । पिकाडिली और ससक आम-पामक रंगाल रात्रि जावनकी चर्चा हो सकती है लकिन जिनकी उमीमें लिचवस्ती हो उनके लिए परिस या रोम अधिक आकषक होगा । या पिकाडिली लन्दनक गुण्डाका भी केन्द्र है और अय बन्द नगराकी भाँति इनमें भी इटालीय गुण्डाका प्राधाय है यद्यपि उनक अन्तवा इन्डियन समा उपनिवागके गुण्ड वहाँ पाय जा सकत है । इटालियन और वस्त इण्डोयनके लाग यहाँ अधिक संख्यामें बासते हैं, और इटालियन भोजनालया और बहुवाघरास पिकाडिली भरा हुआ है । इधर इन्डियन युवा अग्रज गुण्डाका जो नया संग्रहालय बढन लगा है—टडा बाँजक—उनकी बेसुकी पागाक भा पिकाडिलीमें काफी लीख जाता है पर उनका काम-सोत्र दूर दूर तक फला हुआ है और पिकाडिलीका उनका विशेष कन्द्र नहीं कहा जा सकता ।

वस्तमिस्टरमें हा पार्निमें भवनस अथवा वस्तमिस्टर एक्स कुछ हटकर सन्न मार्गारटका छाटा गिरजाघर है जिस हावस ऑफ काम-सुका गिरजाघर माना जाता है । मुझे यह गिरजाघर बहुत सुन्दर लगा और यह साबकर अब भी आश्चर्य होना है कि इसका उल्लेख इतना कम क्यों हुआ है ।

लन्दनका परिवर्त सुन्दर है । यन्कि बड़े शहरमें बाहर निकलकर इन्डियन शारा दहान ही बन्द सुन्दर है । और उमें इतना विविधता

ह कि एक एक जिलेके घणनमें एक एक पस्तक लिखी जा सकती ह । मैं लन्दनमें अपन कायमें इतना व्यस्त रहा कि आमपाम अधिक नहीं घूमा और निकला तो लन्दन छोड़कर दूसरी जगह जानके लिए ही फिर भी ब्रूका वनस्पति-उद्यान जिसमें लगभग सत्तर हजार भिन्न जातियाके पौध और वन ह मन दो-तीन-बार देखा । हम्पटन को भी देखा जिस कार्डिनल वूल्सान हनरी अष्टमको भेंट किया था—और जो अब भी हनरीकी दो पत्निया और छठ एडवार्डके प्रेताका आवास ह ।* आठ सौ वर्ष पुराना विन्सरका महल और उद्यान और उसके निबट ईर्नका विद्यालय देख आया टम्मक किनार हनरे नहीं प्रतिवष पाल्मर नावाकी प्रतिमागिना हाती ह रिचमण और वहाके हम हाउसका सप्रह भी देखा और य सभी दानीय हैं ।

लेकिन तीसरी बार जाडामें लन्दन जाकर वहाके कोहरका और ठण्डी वर्षके साथ हाड भेदनवाली हवाका अनुभव कर लेनके बाद भी मरी वहा धारणा रहा जो कि आरम्भम बनी थी लन्दन रहन और काम करनके लिए अच्छा नगर ह । अतमें इना उममें और जो सवा हू कि यह इसक लिए भी अच्छा ह कि व्यक्ति बराबर वहामें बाहर आना-जाना रह सके—अग्निमें डवन और वानवाड तो उत्तरमें एग्निवरा और स्वाटलण्डका शीलों तथा उत्तर-पश्चिममें बम्बरलण्ड और वेस्टमोरलण्डकी पाल्म या बरनके पहाडी अथवा देहानी प्रेण तक और ही जब-तब जहाँ सहीक सागरनट तक ।

* एन्ग्लैडम घनक भवन हैं जो भुनहे प्रसिद्ध हैं भवनकी रक्षाके साथ भूतकी और उसके सम्बद्ध साहित्य का भी रक्षा की जाती है क्योंकि यहथा भूतोंक विनापनन घ्राहृष्ट सलाना हा उस घ्रायके साथन हाते हैं जिसस भवनकी मरम्मत घ्राहि होना रह !

एडिनबरा

देग विदग घुमे हुए किमा यकित्तस पूछा गाय कि ससारका सबसे सुन्दर नगर कौन गा ह ता इसका सम्भावना कम ह कि वह एडिनबराका नाम लगा । रामा, परिस किर्रेजे बनरिसिया (बनिस) स्टानटोम, सान्फामिस्को—य नाम इस प्रसगमें बहुधा सुने जान ह । विपनामें लाट पयिक लारससे भेंट हुइ थी तो उन्हाने कहा था कि बुढापस्ट अवय देरू क्याकि वह ममारका मवम सुन्दर गहर ह । वॉनमें अपन चकाग्ला वाकिया जानकी तयारीरी बात फाउलीन ब्राउटमट्रकमे की थी तो वह कुछ क्षणाक लिए स्मनि विभार हा गयी थीं फिर उन्हाने कहा था 'श्राग ससारका सबसे सुन्दर गहर ह—वहाँ जाआग ता सन्त सोफ्रियाक गिरजा घरस नगरका ददय देगता और उस समय मरी औरस सारी नगरोका नमस्कार दना ।'

किन्तु काई अगर यह दावा कर हा दे कि एडिनबरा सबसे सुन्दर ह तो ये ममजना हूँ कि उसका सण्डन करनस पहले थोडी देर सोचना पडगा । क्याकि गनिबरामें अवय बहुत कुछ एसा ह जा सुन्दर और आकषक ह और जिसकी बराबरोका कुछ अवय आसानास नहा मिलगा । सम्भव ह कि सौन्दर्यके जा तत्त्व यहाँ मिलन ह अलग-अलग उनमेंसे कोई भी अवय और अधिक मात्रामें मिल सकते हा, किन्तु प्रान उनके एक साथ और ठीक उभा अनुपातमें पाय जानका ह । क्याकि जादू अलग-अलग तत्त्वोंमें नहीं बनिक् उनके योगमें होना ह कोई भी रमत्रिद् इसकी पुष्टि करगा ।

या तत्त्वामेंस मुख्य कुछ गिनाय जा सकते ह । गवन पहा नगरके बावकी पहाडी और उसक गितरपर बना हुआ दुग ह । नारमें वहाँ भी चक जावें, यह दुग ऊार छाया रहता ह और इसक कारण दयका गिति रमा सन्व सुन्दर रहती ह । रातको जब दुग आलाकिन हा जाता ह और गितरस हटकर पन्हाहाकी रीङ्गार बनी हुई इमारतें जगमगा उटती ह तब

क्षिति रेखाका रूप भी निखर आता है। एडिनबराकी मुख्य सड़क प्रिंसेज स्लीट इसी पहाड़ीसे लगी हुई चलती है। सड़कके पहाड़ीवाले पार्वपर कोई इमारतें नहीं हैं जिससे सड़कके दूसरे किनारेपर बनी हुई इमारतें और भा उभर आता है और टुकक दृश्यमें कभी व्याघात नहीं पड़ता।

दूसरा तत्त्व नगरके भूतलकी असमता है। सीधी सपाट भूमिपर न बन हुए होनेके कारण एडिनबरामें जगह जगह ऐसे स्थल मिलते हैं जहाँसे नगरके एक बड़ जगका विहंगम दृश्य मिल जाय और दृश्यको मोह ले।

मरी धारणा है कि सुन्दरताकी गणनामें जिन शहराके नाम लिये जाते हैं उनमें प्रायः यह तत्त्व पाया जायगा। असमन्त भूमि या पानीका विस्तार, या दोनोंका योग नगर-मौदयका एक बन्त बना अंग है। यह बात इटलीके शहराके बारेमें कही जा सकती है यही परिसरके यहाँ बुगपस्ट और सानफ्रान्सिस्कोके। और यही कदाचित् नयी स्ट्रिटीके बारेमें भी कही जा सकती है। यही नया बजारमें उमकी सब पहाड़ियाँको छील और काटकर सपाट न कर दिया गया होता। अब भी गंग राष्ट्रपति भवनके पीछकी पहाड़ियाँपरसे न केवल पूरके दृश्यकी प्रशंसा करते हैं बल्कि पश्चिमकी ओर दृष्टि वास्तु शिल्पकी दृष्टिमें अत्यन्त कुरूप कलाका बस्तीको भी सुन्दर पाते हैं—क्योंकि हमें कि असम भूतलका तत्त्व अब भी कुछ बचा रह गया है। निम्न प्रामाणिक पहाड़ियाँका योंका-न्या रहने देनेसे शहरकी गलीकी निकासीकी समस्या कुछ कठिनतर होता—क्योंकि नये नगर कलाकर्मियोंकी निकासीके लिए तो नई बसाय जाते। किन्तु हमें बात शिष्टीकी नही एडिनबराकी करनी है।

एडिनबराके मौसमका नामरा तत्त्व है उत्तरा प्रशान्त विहंगम वायु और स्वाभाविक प्रकाश। या तो पर्वतकी उष्ण मजलाम उत्तरकी आर जाने हुए जब हमें हमें शान्त प्रशान्तमें पहुँचते हैं तो सबत्र पर शान्त शान्त है कि बसके प्रकाश कुछ जोर दगका है—यून भी भिन्न है और छाँट भा और तपता घूम भा प्राकृतिक रसाका और निवारता है है, एकत्र मान नही

ऐसी जगह कि भूमध्यक निकटक प्रदेशों में हाना है जहाँ रंग उत्तम नहीं
 दोषों जितनी रंगाकी चौध । लेकिन सूफकी किरणोंके सीध न घरसवर
 निरुद्ध धरमस जो अतर आना है उसकी अपेक्षा कहीं बड़ अन्तर सागरकी
 निवृत्ता पवतका निवृत्ता सागर और पवत दोनोंकी निकटता और
 वायुकी गति या गतिस हो जान है । वायु-मण्डलीकी नमी प्रकाशकी बल
 देती है फिर नम वायु मण्डलीमें तापमान और वायुविक दबाव भी उसे
 और बलते रहते हैं । धूम और उड़ती हुई बली और घप-छाँहके खेल
 जा चमत्कार लाते हैं व इनके ऊपर हैं । बहनोंमें जान पड़ता है कि यह
 सब धाने-सी बातका बहुत अधिक तूल देना है लेकिन वास्तवमें प्रकाशका
 यह भी न केवल दृश्यको बल देना है बल्कि उसपर आधारित चित्र
 बनाका भी बल देता है पहलाकके रंग-रंगको बलकर सामाजिक जीवन
 का ही बल देता है । लण्डनकी चित्र-कला अगर ब्रितानी द्वीप-समूहमें
 या हाण्डमें ही विशेष रूपसे विकसित हुई तो यह अकारण नहीं था—
 प्रकाशकी रंगरंगे वारमें जो कुछ कहा गया है वह हाण्डपर भी लगभग
 उनना ही पटित होता है । फिर भर आँकनेवाके चित्रकारोंकी प्रतिभा
 ब्रिटेनमें जहाँ रंगाकी और हाण्ड अथवा वलजियममें तल रंगाकी और
 सुकी ता इसका कारण भी मुख्यत आलोकके इसी भ्रममें है—ब्रिटेन और
 स्काटलण्डका नम आकाश अधिक अन्तरालोचिन होता है और पारदर्शी
 जल रंग उसके अधिक अनुकूल होते हैं । गर्दके पत्र खेन या हरियालाकी
 बालपर दहकते हुए पौन्तके फूल या गिलाम और अलूचका 'गुग्गुलु'
 ब्रिटेनमें भी होता है और हाण्ड या वलजियम या तटवर्ती भूमिमें भी
 लेकिन महापत्र चित्रकार इन चीजोंकी दक्षत हैं और इन्होंने निमित्तस
 उग प्रकाशको जो आकाशसे भरकर इनपर गिरा है जब कि ब्रिटेनका
 चित्रकार स्वयं आकाशमें बस हुए प्रकाशको देखता है और उसीके निमित्त
 स भूतक रंगाका दक्षता है जो उस प्रकाशकी गहराईपर बल देते हैं ।
 परिणाम चित्रणकी दोनों परम्पराओंका समान्तर अध्ययन क्या राखव हो

मक्ता है और आन्दोलनाकी उबर भूमि परिसरक प्रभाववादा (इम्प्रग निस्ट) सम्प्रदाय या आलोक-वणवाणी (प्वाटिलिस्ट) शलीको नया सदभ देता ह । सेजान मोन, मान सर्रा रवार और वानगोवके चित्र और उनके कला-सम्बाधी वाच विवाच इसी सदभमें सायक हात ह ।

एडिनबराक सौदयको अन्तिम माना जाय या न जाय एक नगरके रूपम उसका चरित्र विनिष्ट ह । वास्तवमें वह अब भी एक राजधानी ह यद्यपि स्काटलड अब अलग राष्ट्र नहा ह ।

राष्ट्रीयताके बोधके दा तत्त्व होत ह राजनातिक एकताका गान और एक जातीयताकी भावना । स्काटलडमें पहलेसे जीविन प्रतीक अब नही रह गय ह किन्तु जहाँ तक अलग जाति बसवा जनकी भावना ह उसमें अब भी कोई अन्तर नही आया ह । प्राय तीन सौ बष पहले पन्थ संयक्त न होकर भी स्काटो जाति जसो होती आज भी बसी ही ह पन्थक भावजू रि अंग्रेजा द्वारा दमनक एक कालमें स्काटो पहाडा इगजाके बन्तसे दबग उद्धत और आज्ञा-तबोयन बाँकाको देग निकाला द दिया गया या देगातर—मह्यतया बनाडा—भज किया गया । सत्रहवी गताक आरम्भमें स्काटलड अपना राजा जम्म पण्ड इग्लैण्डका दे दिया—सन १६०३में स्काटलडका जम्म इग्लैण्डके सिंगसनपर आरुद्ध हुआ । अठारहवी गताके आरम्भमें स्काटलड प्रट रिन्न और आयरलडके संयक्त राज्य का अग बन गया । इम प्रकार अपना राजा और राजवग इग्लैण्डको देकर स्काटलडन अपना स्वतंत्र राज्य तो छोड दिया किन्तु अपन स्वतंत्र जातिव्वका बनाय रखनका और भी अच्छा व्यवस्था कर ली । उम गताय चरित्रका विगपना चार सौ बष पन्थक उम मधपमें प्रकट हा गया था जा उहोंन अग्रजसे अपनी स्वतंत्रताकी रक्षाक लिए किया था । सन १३१४ में बनकवनका जा लण्ड हई वह इतिहास प्रसिद्ध ह किन्तु

अंग्रेज या फ्रांसीसी इतिहासकारों ने उसका सही वर्णन नहीं किया है। वनकवनमें स्वाटियाकी विजय हुई और इस प्रकार इनका देश कुछ क्षतिपूर्ति के लिए सुरक्षित हो गया, यह तो सही है इस एक परिणामको स्वीकार कर लेनेसे ही युद्धका वास्तविक रूप स्पष्ट नहीं होता। अंग्रेज और फ्रांसीसी इतिहासकारों ने फ्रांसीसी मूरमाई परम्परा का अनुसरण किया है जिसके अनुसार युद्ध दोनों पक्षोंके गिन-चुन मूरमाया अथवा महा रथियोंका शीघ्र प्रदर्शन हो जाता है। निःसन्देह मध्यकालीन युद्ध एसे ही होते थे, लेकिन वनकवनकी लड़ाई स्वयं भी ऐसी नहीं थी और जिस युद्धका वह अंग थी वह तो बिल्कुल ऐसा नहीं था। वास्तवमें राबर्ट यूम और उसके अनुयायियोंका सपना योद्धा उल्लेखनीय मूरमाया और बहुतसे नगण्य अनुचरोंका युद्ध नहीं था, बल्कि एक जन-युद्ध था जिसमें जनक स्वाधीनता प्रेमी और स्वाधीन-चेता जन-योद्धा स्वतंत्र रूपसे याग दे रहे थे। राबर्ट के लिए एक दुग एक क्रिमाने जीता, दूसरा एक नौकराने दूग अपने शक हुए सहयोगियोंको बहानियाँ सुनाकर सहजते या बलावा देते रातकी समय क्रियाओंके क्षणभंगमें सोना वह वास्तवमें सैनिक अधिनायक उतने नहीं थे जितने एक ऐसे बड़े सम्प्रदायके अप्रज जिसके सभी सदस्य अप्रजमें श्रद्धा रखते हुए भी मनचले, अवलोक और स्वयं ही और मनमान ढंगमें बिना नताकी अनुमति मांगे मौका देखकर युद्ध करते घावा बोलते या घान लगाते, और सशुक्र गठ या टिये छान लेते।

स्वाटो कवि बाबरने अपने काव्यमें इस युद्धका जो वर्णन किया है उसमें स्वाटो जातिका शत्रु उमरकुर सामने आता है। स्वाधीनताके साथ एक बुनियादी बर्गकी समताका भाव (जितने आज गायद प्रजातांत्रिक प्रवृत्ति कहा जायगा) स्वाटो स्वभावक मूल गुण है। स्वाधीनता सभी निरदुःखताका रूप भी ऐसी है, तब स्वाटो गण हिंसकी पाने है (बिहृकी बाबिर उहीकी ईजा है) और योग्य बपारने हैं या लहने है। समताकी भावना सभी सभी दूसराने मामलामें उचितत अधिक शिष्टता या अका

रण आलोचना करनेकी ओर प्रवृत्त करनी है लेकिन उनका प्रवर महज बुद्धि उन्हें सन्व अतिस बचा गयी है। वृद्धि, तर्क और स्पष्ट अथवा प्रगल्भ युक्त बचनका उनमें बड़ा सम्मान है। प्रोटेस्ट ईसाई मतक अन्तगत स्वाटियाका जो विविष्ट सम्प्रदाय बना उमके मूठमें भी यह माग थी कि घम विश्वास भी स्पष्ट और वृद्धि-सगत और समताकी भावनापर आधारित हान चाहिए।

स्काटी जातिकी चरित्रगत विगपताआका प्रतिबिम्ब एडिनबरा है। उसकी भौगोलिक अथवा भौमिक स्थितिने उसे जो सौख्य दिया है उसे य चारित्रिक विगपताए पुष्ट करती है। दक्षिणमें इंग्लन्डसे पयक करनवाली सामान्तका गिरि शृखलाआ और उत्तरमें दुगम पवनोय प्रदेशके बीच तल हटीमें बस हुए एडिनबराके लिए कभी यह सम्भव नहीं हुआ कि वह स्काट लडमें उस प्रकारका सत्तामूलक शासन स्थापित कर जसा इंग्लडमें था और जसा आज किता भी मुख्यवस्थित देशम आवश्यक माना जायगा। किन्तु इसी विगप स्थितिने उसे उस समानीकरणसे भी बचा रखा हो जो उस प्रकारकी यत्रस्याके साथ आता है। स्काटलडका घम-सगठन अलग है गिगा-वृद्धि और यत्र-व्यवस्था भी अलग है। समीका के-ए एडिनबरा है, जा इनक अनिरिकन चिकित्सा विज्ञानका विश्व विख्यात केंद्र है। यत्र उद्याग स्काटलडक दूसरे कचे नगर ग्यासगोम वृत्त है। जगजाके निर्माणने क्लाइके महानर के-ए ट्रिनिम सवम अधिक समय है। ग्यासगा और उमक आमपामका यत्र उद्यागकी वस्तिपाँ कुरुपतागी हात्म पन्ना पक्तिमें आयेंगी जगका कारण यह है कि औद्यागिक क्रांति ट्रिनिमें ही आरम्भ हुई और उमक प्रथम सुपरिणाम बना प्रकट हुए। उमक गिगा प्रन्ना कर दूसर दगान यत्र विवामकी पय यत्रस्थित दगम नियंत्रित गिगा पर ट्रिनिमें—तरा वृत्त और दक्षिणी स्काटलडमें—जा हा चना या वृत्त चना या। उद्यमक एक गगार-म में अद्याध कारणान और मउदूर वस्तिपाँ बन गया था और धर्मा और गन्गा उगलन ग्या

थीं। आसपासक देहाती प्रदेशासे किसान मात्र मुग्धसे खिंचे चले आये थे और मजदूर बन गये थे। मकड़ो वर्षोंकी परम्पराए मिट गयी थी और दो ही पीढियामें प्रतिष्ठित जीवन परिवारटोका स्थान अयवस्थाने ले लिया था। अन्तर कानून बने सुधार हुए, जावन-व्यवस्था कुछ समली, लेकिन ये कुरूप वस्तियाँ हठपूर्वक कुरूप ही बनी रही।

उधर उत्तरमें अठारहवीं शतीमें चार्ल्स एडवर्ड स्टुअर्ट (प्रिंस चार्ल्स) के नतस्त्वमें ग्रेनेनके विरुद्ध जा विद्रोह हुआ था उसके कुचले जानेपर अग्रेजोन जो बठारता बरता उसके कारण उत्तरका जीवन भी बदल गया। अग्रेज सेनापति कम्बरलण्डकी गतिविधि ऐसी थी मानो वह विनाह भावके साथ-साथ हाइलण्डर जातिको ही मिटा देना चाहता हो—बल्कि उसका वश चले तो पवत-त्रायियाके साथ-साथ पवतीय प्रदेशाको ही मिटा द। इम विनाग-लीलाके बाद सदरलण्डको यह सूझी कि पवतीय प्रदेश मानवा की अपेक्षा भेड़ें पालनेके लिए अधिक उपयोगी हो सक्ता ह बहुत बड प्रदेशकी कुल जन-संख्याको वहाँमे हटाकर बनाना भेज दिया गया या भखा मरनेके लिए छोड दिया गया। भेड़ें पालनकी नयी योजनाए सफल नहो हुई और अन्तम उजाड पवतीय प्रदेश गोष्ममें आनेवाले सलानिया और गिकारियाकी क्रीडा भूमि रह गयी। इस प्रदेशका निजन बीहड और कुछ कुछ डरावना सीदय अब भी अपना आकषण रक्ता ह और अभिमानी स्काटरे आत्म-गौरवको पुष्ट करता ह। जहाँ तहाँ किसाना भेड पालन वाता ऋन वातन और बुननवाला और मछराको फिरस बमानक प्रयत्न भी हो रहे ह। बीहड प्रदेशामें बसनेवाल इन परिवारामें—जमा कि एसा परिस्थितिमें प्राय हाता ह—एक आश्वयजनक विनय और सौत्रय सूक्ष्म सबदना और शान्त और सन्तोषपूर्ण जीवन-श्रि मिन्गेगा। पर जो सफलता वादी आधुनिक यात्रिक जावनने मूयाको मानत हैं उन्हें इम सादे और कठिन जावनः मूय अथवा परितुष्टियाको समचनमें कठिनाई होगा।

इही विरोधाके बीच एडिनबरा नगर बसा हुआ ह । वह इन विराधाको प्रतिबिम्बित भी करता ह लेकिन इहीके कारण इनसे अलग बना भी रह गया ह । उत्तरक दुर्गो महला और शिकारगाहामें प्रतिवष इग्लण्डका अभिजात-वर्ग जाता ह और वन प्रदेशामें इग्लण्डके अलावा अनक देशाके सलानी घूमत ह इग्लण्डके राज-परिवारके एकाधिक महल वहाँ ह और ट्रिनिनके राजा या रानी प्रतिवष विधिपूर्वक वहाँ जाते ह और निवास करते ह । लेकिन उस समयक राष्ट्रीय जीवनके जिसका केन्द्र और राजधानी लन्दन ह एक भातरी मण्डलमें एक अलग जाति-जीवनकी राजधानी के रूपमें एडिनबरा अपना स्थान अग्रणी बनाय हुए ह । इसी अग्रणीताक नाममें सुरभित स्वाधी अपनी पीठ भी ठाक केता ह और अपनपर हस भी लता ह । स्वाधी कजूम प्रतिष्ठ ह किन्तु स्वयं अपन इस गुण के बारेमें जितन चटकुटे वह आपको सुनायगा उतन आपको बनी और नहा मित्रिंग इस प्रकार अपनी भिन-ययिताके बारेमें आश्वस्त होकर वह जितनी उता रता वरतगा वह भी कम से-कम ट्रिनिनमें अग्रण नहीं मित्रगी । अपनी ह्विस्कीका वह दूर दूर तक निर्माण करता ह इधर उम और बगानन लिए वह स्वयं बाहरसे आया ई घटिया ह्विस्किया भी पीन लगा ह—मच मुच ।—और यत्र-उद्यानाके साथ उद्यक कुटीर उद्योग भी उग्रनि करन लग है । और आधिक स्तरपर आवस्त हाकर उमन जा विगाउसासृतिव आयाजन आरम्भ किया ह—एडिनबरा कम्प्लिन्ट—क सात समारमें विरुधान हा गया ह उमने आशयनम दूर दूरक गग वनी पदुवन लग ह । मन ही तो पत्र दत्ता उममें दनिग नय-नाट्य समाराणी और अशीवा वन ट्रिनिन अमरिबी नाटक उमन मगान आदि य ट्रिनिन प्रतनिनीमें वामसे अधिक देशाके चित्र थ । भारतय नय-नाट्य वनी हो रका ह जागाना नाटक और कठपुतला चाना आपरा सम प्रकार व सासृतिव सृतिव साथ चलता ह पर हृत्पम वना वन-मुत्तम गान जावन-पुष् आम-नौरवमय सारय त्रिय ग ह जा उमने राष्ट्रीय कवि रावत वसव गानोंमें प्रतिबिम्बित हाता ह ।

'ओ माइ लव'ज लाइक ए रेड रेड रोज
 बट'स यूली स्प्रेग इन जून
 ओ माइ लव'ज लाइक द मेलोडी
 दट स स्वीटली प्लेड इन ट्यून !' *

×

×

दु सी हर इज दु लव हर
 एण्ड लव बट हर फार एवर
 फार नवर मेड हर ह्याट गी इज
 एण्ड न र मेड सिक एनिदर । †

* रायट ब'त 'ए रेड रड रोज' । व्हो वानी लेस्ली ।

ताल-तलहटी, श्रोत और स्रष्टा

[तीन पत्र]

प्रिय—

आज रात बारह बजस र हस्पताल हो जायगी । मै आगा करता हू कि यह पत्र इससे पहले महांस निकलकर लान तक पहुँच जायगा क्याकि वहांसे आग तो तुम तक विमानस जा ही सकेगा—हडतालके बावजूत । या तो यह भी सम्भव ह कि कठ गूँ होकर हडताल परसा समाप्त भी हो जाय क्याकि एसा नही जान पडता कि परिस्थिति उतनी विपम या तनाव उतना अधिक ह जितना पिछली "यापक" हडतालके समय था लेकिन कुछ कहा नहा जा सकना—दय-मह तिन तो च ही सकती ह ।

यह तिन मन यात्राक लिए पहलेस नियत कर रमा था और उमो कार्यक्रमका पानन कर रहा हूँ—इतना ही ह कि रलक टिक सब वापिस कर िय है और वमासे यात्रा करता रूगा ।

बन बमिगहम पत्रेवा । जा तो रहा था स्ट्रुक्चर जा गवमपियरकी भूमि रग और जहाँ अब गवमपियर स्मारक बियटर ह—वगैसि पत्र लिख रहा हूँ—और उमक बा शालाके प्रदगमें जा व स्वय आति कवियाका प्ररणा दता रहा लेकिन लानमें जब कार्यक्रम तय कर रहा था तत्र मनस पूछा गया बमिगहम ता जाआग ही—वहाँक मग्रगत्रयमें कामकी बढ मूर्ति दवन ? मै सगहात्य बन दवता रहा हूँ और उनक भारनाय संग्रह

विगप रूपसे और इस विषयमें मेरी रुचि सभी जान गये हैं। इसलिए बमिगहम होकर ही स्टूफाड जानेका निश्चय हुआ और अब बहुत प्रमत्त हूँ कि क्या हुआ। गाजार गलीकी कासेकी मानवाकार बुद्ध प्रतिमा मन दूमरी नहीं देखी और भारतक सग्रहाण्यमें कहीं भी इससे तुलनीय कोई मूर्ति नहीं है। बुद्धकी प्रस्तर मूर्तिया अवश्य इससे अच्छी हैं लेकिन कासे की ऐसी त्रुटि विहीन भव्य मूर्ति नहीं। काल पत्थरकी पद्म-पाणिका भी एक सुन्दर मूर्ति देखी और कुछ अन्य मूर्तिया भी।

प्री राफ़ेलाइट सम्प्रदायक चित्राका बहुत बड़ा सग्रह भी देखा। लन्दनमें भी राष्ट्रीय चित्र-सग्रहाण्यमें बन जाय और मित्र और रोज़ेटीके कुछ चित्र देखे थे लेकिन यहाँ बन तल चित्राक अलावा छोटे चित्र और रखा चित्र बहुत बड़ा संख्यामें दखनकी मिले और मरा धर्पोंकी एक कामना पूरी हुई। इस गलाके दिन बीत गये और अब ऐसे कला-समीक्षक बहुत हैं जो सारे सम्प्रदायके समूचे कृतित्वको एक 'उह' के साथ उग दना चाहते हैं लेकिन अग्रेजा रोमाटिक कविताके साथ हमका जो अभिन्न सम्बन्ध है उसका अध्ययन रोमाटिक प्रवृत्तिका और रोमाटिक काव्यको समझनेके लिए आवश्यक है। प्राब्रराफ़ेल कलामें एक साथ ही प्रकट होनवाला एक ओर दहिक आग्रहके, और दूमरी ओर देहकी नन्दरताके तत्त्व रामाटिक काव्य और भावनापर विगद प्रकाश डालते हैं।

बमिगहमस स्टूफोड आकर ऐवन नगीके किनार बना हुआ भव्य शेक्सपियर थियटर देखा। आजकल शेक्सपियर उत्सव चल रहा है और प्रतिदिन नया नाटक खला जाता है। इनके टिकट महीना पहले बिक चुनते हैं और यहाँ आकर हालके हाल टिकट पा लेनकी आशा दुराणा ही होती है—या कोई बचा-खुचा या लौंगया हुआ टिकट मिलता भा है ता बहुत अधिक दामाका। किन्तु ब्रिटिश कौंसिल विदेगा अध्ययनाओंके लिए कुछ स्थान सुरगित रखती है और उनके निम्न क्रमानुसार उमक आमन्त्रित व्यक्तियोंको मिल सकते हैं। यून्स्वीकी एजेंसीज रणमें ब्रिटिश कौंसिल

मर ट्रिटन प्रवामका प्रज्व कर रही हूँ इसलिए दा टिनके टिकट मन भी मिल सके। एक सुखात नाटक रात देख लिया— टक्पय नार्न् जिसमें वायालाका अभिनय विविध लन किया और मान्वालयोका गारेंस आलिवियर न। इसके बाद एक दुस्मान्त भी देख सकूंगा—हमलट। सम्भव हूँ कि दो एक और भी अभिनय देख सकूँ क्योंकि प्रत्येक खलके लिए दा सो टिकट उसी दिन खर्च पहले विकत हूँ जिनके लिए पाँत लगाकर सडा होना पडता हूँ। ये टिकट किसी सुरात स्थानके लिए नहीं केवल खर्च होन भरकी जगहके लिए होते हैं जिसकी गुजार्ण हालत रखी गयी हूँ।

स्मारक विपटर भवनके नेक्सनियरकी स्मति रणा और प्रतिष्ठाके लिए क्रिय जानेवाले आयोजनाके और साधारणतया सारे ट्रिटनमें रगमचको पुनरुज्जीवित करनके लिए ट्रिटनकी आठ स कौमिलक उद्योग सहयोग और अनुदानके बारमें बहुत कुछ कहना चाहता हूँ किन्तु अभी नहीं। काग कि एसी कोई संस्था हमार देगमें हानी। आठ स कौमिलको पार्लामेंसे अनुदान मित्रता हूँ—पार्लामेंका अनुदान क्याकि निर्वाचन प्रतिनिधियाने बटुमनमे मिलना हूँ इसलिए उस सरकारा सहायता नहीं बना जाता और एगा अनदान पानवागे संस्थाए एम भन्पर बन बनती हूँ। और उनका बना करना मायक हूँ यह सब स्पष्ट हा जाता हूँ जब हम एगो संस्थाआरी काम विधिवी तुटना अपन दगकी अकामियासे करते हूँ जिहें सरकारी अनुदान मित्रता हूँ और जिनकी अधीनता प्रति दिन बढ़नी हा जा रता हूँ।

इकिन स्पष्टकी बात करूँ। अभिनय अन्ग था यद्यपि दगक मस्त्रामें मरा स्थिति कुछ विकट थी। दाना जार अमरिकी टरिस्ट बने थे—तुम्हारे नाम गत्रसियर स्मारक विपटरका बन बन सगारा हूँ और आदक उनका मोनम हूँ। दा टिन आर टक्मामका एक परिवार मर सायकी कुर्मीर मिटर टक्माग तुव एम्ब और छानर धार जम करीये

चेहरे वाक, उसके वाक उनकी दोना मन्तान और पन्नी । इण्डिया आये ह ता स्ट्रुट्फो-आन ऐवन जाय जिना लौटना कस हो मयना ह ? लेकिन यह नेकसपियर कय हजा और क्या सचमुच बडा लोकप्रिय नाटककार ह ? हों तो कुछ कुछ पुराना जान पड़ता ह भर दूमरी आर एक मुटकी आपरिंग अमरिकी स्त्री जो सुनलानी थी और इन दा अमेरिकाओंके बीच वातचीन बरामर जारी थी । थोचो एसी मुथावतमें थैकसपियर कये देखा जा यवना । इयमें तो याँय लेना भी मुयबिल था ।

नाटक दायकर बाहर निकल ता आकाग खुग गया या और चाँद निकल आया था । रणगागस कुछ दूर नदीक पुलपर जाकर बठा रहा और बडा देर तक नदीका दाय दखना रहा और थियटर भवनय आते हुए लोगका बात सुनता रहा ।

ये पच्छिमी सगना लाग मेरी ममथमें नहा आत । सुदरक प्रति ये समपिन ननों होन बमक-बस छिठले और मतही बन रह जाते ह । म सोचना हूँ जव य स्वय जान हाग तो नयन काननमें पडुचकर कहत हाग नाइस स्पॉट —श्रीर जवम सणविच निकालकर खान बठ जाने हागे— या खबठवे बुलभुलाकी मिठाई—ब्रमल-नम ! नहीं तो यि आल इन्—यि एन्फिण्ड एण्ड मग (पुरानी कयवारी—एरावन और बज्रदण्ड) की तलाग में चण पडने हाग, जनी एक एक मग सोमरम पान पान बारमड-अप्सराम धाटा हूलरी चुण होतो रह ! (म जानता हूँ कि यह अनिरजना भा हूँ और अनन्यरता भी लेकिन अभी मुने अपन मनाभावक अलगा किमास बोई मनय नहा ह !)

यव अभी गया नहा और रण-हस्ताड गुरू ने गयो ह । स्नान मून पठ गम ह और काम ठण्डा पठ गया हूँ । जा ग एक गाहियाँ कयनी भी ह तो बिलकुल लागे क्याकि यह जोगम बोई नहा उगना चाहता कि

गापी कहा रास्तम अटक जाव । य छट्टियाके तिन ह और वीन अग्रज अपनी छुट्टीकी खटाईमें डालना चाहगा । पर मन शुक्रवारकी आरम्भ किया था आज सोमवार ह । कन्मे ही महा सचाखच भोड हो गयी थी और आज सोमवारकी तो पूणे मत । सप्ताहात ह्वि मनड बैक हाठिड रल-हडनाउ और खुली चटक धूप—सब एक साथ हो गया ह । तीन ग्रह भी एक घरमें आ जावें ता राज याग हा जाता ह यहा ता पाच ग्रह य हा गय और छटा गन्मविमर उत्सव तो ह ही । स्टफोडका चौक और छोटी-वटा सडकें सब बसा और मोटरसे पट गया ह । गली-गलियारामें और नौक किनारपर त्रोगाकी टल्म ठेठ ह । जो कुछ भी करना हो उसके लिए बनार लगाना पड रहो ह खान-पीन तरक लिए लोग कट्वा घराके बाहर बनार लगाय खड हैं ।

मैं भा इस समय बनारमें हू—लेकिन खरा नहा हू अपन सूटकेसपर बसा हूँ । एक हाथमें सूटकेस और दूसरम एक अटची और एक झोठा उगाय हुए म बमिगहमेके बगक अड तक पहुचा हूँ और बनारम अपना स्थान पर बठ गया हूँ । बमिगहमेसे आग झालके प्रदेश जानक लिए छिपेकी बमक टिकता पन्ने रते ह लेकिन स्टफोडम बमिगहमेकी सविम गहरी सविम ह जिमका टिकट बममें गवार होकर ही लिया जाता ह । मयम आग गमग छ सोकी बनार ह और पीछ ता इम बनारका छोर मय दावता ही नही ह । दमन्म मिनटकी सविम ह बममें चाचास पनागम सवारियाँ भरती हैं । मरी बारी कव आवगा मका त्तिमाव गगात बतिन नहो ह पर आवक भा नहा ह—वना मोच लना काडा ह कि छिपेकी त्तिमका पयान समय ह । प्रयक म मिनट बाट मानान उगाकर म एक गड आग बड जाना हाता ह बस ।

म बाब गन्मविमरम मन्वड सब स्थान दग आया था । अच्छा ही हुआ कि गन्मविमरका बन्ना-भा घूम लिया नहा ता हर जगह बनारलगाकर दमन जाना पन्ना और बनारमें एक एक कन्म टाउत त्तिम कन कुछ

देखा जा सकता है म तो मोच नहीं सकता है। गैकमपियरकी पत्नी एन हयावका बगला (सभारका सबसे अधिक काटाप्राफित पर) हॉलम क्राफ्ट जा गैकमपियरकी बन्धन मूसन और उमक पति डाक्टर हॉलका पर था और जहाँ अत्र ब्रिटिश बौंसिलका बायान्य और गैकमपियर संग्रहालय है और मेरी आर्टनका बंगला जिसमें कविका जम हुआ समी देख लिये। इसके अगवा गैकमपियर और उसके अभिनयक सम्बन्धमें विद्वानाके भाषण भा सुन लिये। यहाँ पत्रमें अभी और बटा रहना पन्ना, लेकिन रात तक किमी-न किता तरह बमिगहम पहुँच ही जाऊगा। वहाँसे बल पीलबि प्रयोगकी बस मिलेगी। बमिगहममें कुछ घण्टे सानय बिताये जा सकेंगे या फिर यदि वहाँके रपटरी थियेटरमें कुछ हा रहा हागा और उसका टिकट मिल सकेगा तो वह देख लिया जायगा। रपटरा थियेटर भी आठ म बौंसिलकी मन्गमनासे चलना है छाना है पर प्रसिद्ध है और आधुनिक नाटक अच्छे प्रस्तुत करना रहना है। अभी धानमें पल्ल वहाँ जा आबौलका 'आडेल' देखकर आया है।

इसके अगले वय मरी हा पत्नी है। थकपियरका ग्राम।

[२]

प्रिय—

दोपहरका बमिगहम बगल अट्टेपर पहुँचकर लगभग दो बजे वहाँसे प्रस्थान किया। आठ बजे बगल साढ़ ती बजे एम्बलमाइड और माण दम बजे ग्राममपर पहुँच गया। बगलम ही थाणाका प्रदो आरम्भ हो जाता है और एम्बलमाइड सबका पाथामे बर् स्थलमे शालाका मुन्दर धारियाँ भिन्न जाती हैं। लेकिन इन दाना जगह बस बल कर ग्राममपर आ रहनेका कारण यह है कि यहाँका छोटा शाल, पामकी दूगरा पील राइशाल और आगपामक पहाड़ी ताण विजेप छान बल स्वयंसे सम्बद्ध है।

वह स्वयं मरा विनोद प्रिय अग्रजी कवि रंग हा एमा तो नही ह लकिन इम प्रदेशका कल्पना-परिचय उमीकी कविनाआवे द्वारा हुआ और अप्रेजा पढनवाते अय भारतीयकी तरह मर लिए भा इच्छा आकषण पहले किनावा ह ।

ग्राममयर झीरके उपरके छोरपर (मरतीताल ।) रोय नगीक किनार एक होटलम आ टिका हू । यह होटल गाकाहारी ह—और गाका हारी होनके साथ-साथ कुछ सहरका भी जान पता ह लेकिन स्वच्छ और सुन्दर ह और झीलसे कुछ दूर होनपर भी नदाके किनारके अपन बगीचक कारण बहुत सुन्दर । सचायिका न केवल गाकाहारका समयन करती ह वरन त्रिन्ने गाकाहार सघकी उपाध्यगा ह और गाकाहारी पाक विद्या पर उनकी पस्तक प्रसिद्ध ह । कई पाक प्रतियोगिनाआम वर पुरस्कार पा चुकी ह । यहाँका भोजन अच्छा और स्वाच्छि भी होता ह और पर्याप्त विविधता लिय हुए भी । नहीं तो अग्रजी खाना या भी अनाकपक होना ह और गाककी तो उवाचनके अगवा य वरत कम कुछ करना जानत है । मर लिए यह भी आचयकी बात था कि हालके त्रिमुक्त समयस मात तान घण्टे देरम पचनपर भी मुझ अपन छि भोजन रगा हुआ मिला और वह भी गम और खानके कमरमें स्वयं सचायिका द्वारा प्रस्तुत किया गया । (पराना मूचनाक अनुगार मर तीमर पहर पढचनकी बात था किन्तु म रातको देरम पचा ।) अत्र एमा स्थितिमें खानका कुछ मित्रना भा तो टण्टा कुछ और अपन कमरम । रात्रमें एमा सत्वार पहा वार मिला । गाकाहारक गन्त साय आनिध्यका खन भी सचायिकाका ह ।

स्विक्रि जगै तक शात्र प्रदेशक मौन्यका सवाउ ह अपन भीतर पाँचना ता पाता है कि पहा प्रतिक्रिया निरागात्री ह । य ता टीक हा ह कि बान्यक गन्नि म्म दूमर हात ह और स्थूल प्रकृतिक दूमर और कर्ना विनवा वास्तविक दष्टिम मित्रावर सुधारना हा पढता ह ।

किर वह स्वयं और दाना काट्गिज* और मर्दा जिय काट्क थे उम काट् में प्रकृति-वर्णनमें म्यू- रूप-वर्णनका मिट्ठात मानते नी नहीं घ वसा दावा करना ता दूरकी बात ह ।

हरियालीसे ऊब भी आ सकती ह यह नहा जानता था । अब भा निचमपूजक नहा कह सकता कि यहा हरियाणम ऊब आती ह या कि उसकी अति निरप्रित यवस्थाने । यह ठाक ह कि हरियाली एक-रूप नहा ह और उसमें अनक जाण्यं हैं—जमीनकी घासपर ही नहीं पत्तों पतियोंमें भी । हरपनका माना निरा सुन्दह भर लिय हुए मानियाम लकर भूगियास भा अधिक कर्गेन वाटे हर तक सभी तरहका हरा रग दावता ह । विन्दु पड ता बीच-बीचमें आत ह और घामका हरियाला सबध्यापी ह । पणामें कांपर शच नामका एक पेड ह जिसका ताम्र-रंगित रग अपनी अलग काति और रम्यता रखता ह । इसक नये गाँठक विसलयमलूनके हृषमनघ में वसा हा अस्पष्ट नीकुमाव ह जिनत काट्गिजमस बरदम कहलवाया था

किमिष हि मधुराणां मण्डन नाकृतीनाम् ।

और वयस्व हानपर उममें एक रागमिक भाव आ जाना ह जो किर उम उतना ही अगार स्थि रहता ह । कभी-कभी फूले हुए वनम भी दाव जात ह जिन्हें विलायता अमलतास कहा जा सकता ह—वही रग उमी तरहक पल्ले हुए लठे । भारतमें अग्रेज लोग अमन्त्रामको देगी वनम कहत भा थ ।

ऊबा-नीचा घासे ढकी पगटियां नीलगिरि शृंगगक उत्कमण्डक पामके प्रदगाकी अथवा गिबराय गिरि शृंगगक चक्काडका याट् गिगाता हैं—विगेपनया गिबराय गिबरेके आमपासक तर विहीन प्रदका । कुछ कुठ

* पिता सपुण्ड टलर कोलरिज पुत्र हाटने कानरिज ।

† राबट सदे जिनकी पत्नी और कोलरिजकी पत्नी बहने थीं ।

वन् स्त्रय मरा विनाय प्रिय अग्रजा कवि रत्न हा एमा ता नहा ह र्किन इस प्रदेशका कल्पना-परिचय उमीकी कविताआक द्वारा हआ और अग्रजा पत्नबाक अय भारतीयोमारी तरह मर लिए भा इगण्का आकषण पहले किनावा ह ।

प्रासमयद थोक्क उपरक छोरपर (मल्लेताल !) राय नगैक किनार एक होटलम आ टिका हू । यह होटल गावाहारी ह—और गावा हारी होनक साथ-साथ कुछ सहरका भी जान पता ह र्किन स्वच्छ और सुन्दर ह और शीलसे कुछ दूर हानपर भी नगैके किनारक अपन बगीचक कारण बन्त सुन्दर । सचालिका न केवल गावाहारका समयन करती ह वरन र्किनके गावाहार सघकी उपाध्यगा हैं और शाकाहारी पाक विद्या पर उनकी पस्तक प्रसिद्ध ह । कई पाक प्रतियोगिताआमें वन् परस्कार पा चुकी ह । यहाका भोजन अच्छा और स्वादिष्ट भा होता ह और पर्याप्त विविधता लिय हुए भी । नही तो अग्रजो खाना या भा अनाकषक होता ह और गाकको तो उवादनके अलावा व बन्त कम कुछ करना जानत ह । मर लिए यह भी आश्चर्यकी बात थी कि हाटलक नियुक्त समयम साठ तीन घण्ट देरमे पहुचनपर भी मुझ अपन लिए भोजन रखा हुआ मित्र जोर वह भी गम और खानके कमरम स्वय सचालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया । (परानी सूचनाके अनुसार मर तीसर पहर पहुचनकी बात थी किन्तु म रातकी देरम पहुचा ।) अयन एमा स्थितिमें खानको कुछ मिलना भी तो ठग्या कुछ और अपन कमरम । इगण्में एमा सत्कार पहला बार मिला । गावाहारक छतक साथ आतिथ्यका खान भी सचालिकाका ह ।

र्किन जै तक शील प्रदेशके सौन्दर्यका सवाक ह अपन भीतर झाकना हू ता पाना हू कि पहली प्रतिक्रिया निराशासी ह । यह ता ठीक ही ह कि काब्यक प्रकृति हप दूमर हान ह और स्थूल प्रकृतिके दूसर और कल्पना चित्रका वास्तविक दृष्टिस मिलाकर सुधारना हा पता ह ।

फिर वर स्वयं और दाना कालरिज* और सदां जिम कालक ये उम काल में प्रकृति-वर्णनमें स्यूठ रूप-वर्णनका सिद्धान्त मानत हा नही थे वसा दावा करना तो दूरकी बात ह ।

हरियालीसे ऊव भी आ सकती ह यह नही जानता था । अब भी निश्चयपूर्वक नहा कह सकता कि यहा हरियालास ऊन आता ह या कि उमकी अति नियंत्रित व्यवस्थासे । यह ठीक ह कि हरियाली एक रूप नही ह और उसमें अनेक छाड़ियाँ हैं—उमानकी घासपर ही नहा पडों पतियाँ भी । हरपनका मानो निरा सतह भर लिय हुए मोतियासे ढेकर मूंगियामे भी अधिक कलौम वाले हर तब सभी तरहका हरा रंग दीखता ह । किन्तु पेड ता बीच-बीचमें आत ह और घासकी हरियाली सबव्यापी ह । पेडाम कांपर बीच नामका एक पड ह जिसका ताम्र लाहित रंग अपनी अलग कांति और रम्यता रखता ह । इसक नये गाँठवे किसलपमलून के रूपमनघ में वसा हा अस्पष्ट मौकुमाय ह जिमन फालियासस वरगम कहलवाया था

किमिव हि मधुराणा मण्डन नावृतीनाम् †

और वयस्क होनपर उसमें एक राजमिव भाव आ जाता ह जो फिर उमे उतना ही अलगाव श्चि रहता ह । कभी-कभी फूले हुए लवनम भी दीख जात ह जिहे विलायती अमलनाम कहा जा सकता ह—वही रंग उसी तरहके झूठे हुए लुठे । भारतमें अंग्रज लोग अमलनामकी देशी लवनम कहत भी थ ।

ऊबो-नाबो घामसे ढकी पहाडिया नीलगिरि शृंगराके उत्कमण्डके पासो प्रभाकी अथवा गिवराय गिरि शृंगलाके धरसाडका याद शिलानी ह—विगापनया गिवराय गिवरये आमपामन तत् विहीन प्रदेशता । कुछ कुठ

* पिना समुपल टलर कोलरिज पुत्र हाटले कोलरिज ।

† रायट रावे जिनकी पत्नी और कोलरिजकी पत्नी बहने थीं ।

एमी ही धाम भरी अधिरत्यकाए गिल्लक निक्ट वनापानी अथवा माफगाडमें (जिस खमिया गन्का पुत्पत्यय ही धामका पना अथवा दूवाच ह) मिन्नी ह ।

ग्रासमयरके आम-यासका दा एव प्रसिद्ध सरें म कर आया । ऊचाई पर र्जडलका शाठ मुख्यतया अपनी निजनताक कारण मुत्तर ह लकिन एमा कुठ नहा ह कि उसके लिए भारतस दौं हुए जावें । ग्रासमयरकी शीठ और राइडालका पानी जिसे विनयवग ही चील कहा जा सक्ता ह वड स्वयकी ही मथारिक हा । हमारा काम मजमें इनके बिना चल सक्ता ह । बल्कि ग्रासमयरक आस पागका प्रदेश अधिक मुत्तर ह—पेडा और बगलाके कारण ।

इी बगलाभसे एक वड स्वयका ह—'डव काटज जो बसा ही मुर शित ह जसा कविके समयम था । डफोन्लिस और लूसी आदि प्रसिद्ध कविनाए यणी लिखी गयी थी । इसी बगलेसे राइडाडकी ओर कुछ दूरपर वह स्थान ह जा वड स्वयका प्रिय स्थान बनाया जाना ह और जहास राइडालके पानीका अठ्ठा रश्य गीखना ह । ठीक उसी स्थानस एक फोटो भी उ लिया ।

ग्रासमयरम ही वह गिरजाघर ह जो स्वय और जिसमे सउमन उद्यान और कन्नगाह व स्वयकी स्मतिक साथ अभिन्न रूपस बधा हुई ह । स्थापत्यकी दृष्टिमे यह गिरजाघर राचक ह क्याकि दा अग अलग-अलग कालाम बने थ और विस्तार करते समय पट्टे निर्माणके गह्वार बन रहन दिय गय । अनगड काठका यह स्थापत्य लक्षणीय ह । एसा ही एक छोटा गिरजाघर थलमयर शीलके किनारपर ह—विथवन गिरजाघर । अगर काठ का नगीना हो सक्ता ह तो यह गिरजाघर बसा नगीना ह—बहुन छोटा किन्तु बहूत मुत्तर और अपन स्थापत्यस भी उस भावनाका प्रतिबिम्बित करता हुआ जो वास्तवमें र्साई धम भावना ह । ग्रासमयरक गिरजाघरका ध्वनन व स्वयन अपनी लम्बी कविता एकमकान म किया ह । कन्नगाहम

सहके जो पेड हं उनमेंमे कई एक बडस्वयके लगाय हुए ह । इहीमें से एक की छायामें, नन्हेके किनारेपर बड स्वयकी अपनी समाधि ह । समाधि लेल चरम शान्त्यमके गाय केवल इतना कहता ह विलिपम बड स्वय १८५० । मेरो बड स्वय १८५९ । इसके पास ही बडस्वयकी लक्ष्मी डोरा और बहन डाराणीकी ब्रतें हं । कुछ हटकर हाटले कोलरिजकी ब्रत है जिन्हे लिए स्थान स्वयं ब्रस्वयने चुना था ।

×

×

×

ग्राह यह उल्लास, यह ध्यान

यह जान बहा है

सनसनाता पवन जिसकी लटोंसे छनकर ।

भाविर एक ऐसा स्थान भी मिला जिसे म मुन्दर कह सकू जो रोमांचित कर सके जो पानद्रिया और भावनाको एक साथ उत्तजित कर सके

म डबेंटवाटर नामकी बड़ी झीलके किनारेपर मयासीके टील (फायम प्रग) पर बटा है । मेरे पीछे वह अनगू चट्टान ह जा रस्किनका पत्थर' कहलाती है इसपर एक फुलम रस्किनका चेहरा उकेरा हुआ ह और उसके नीचे लिखा ह 'जीवनकी पहली घटना जिसकी स्मति मुझे ह— कि नग भुने संयामी टोत्र तव ले गयी ।'

मेरे ऊपर कर जातिने विशाल देवनारुआको छाँह ह और सामने झीलका गुला हुआ प्रसार जिसके ऊपरम बनी हुई सनसनाती तेज हवा मेरे कपडाका भेती हुई घनी जा रही ह । झील मुन्दर ह हवासे मपी जाकर बह और भी मुन्दर हो जाती ह । उसकी सफे झालरदार लहरें अनवरत मेरी ओर दौडनी आती ह और मेरे पराके नाचे क्षणमें

विखर जाती ह—अपन साथ उम पिपली हुई चाँगीको विखरती हुँ जो सामनका दोपहरका सूय झीलपर बरसा रहा ह ।

इससे मरा जान द कुछ कम ता नहा होता 'लेकिन कुछ विम्मय जहर हाता ह कि यहा आनवाल रगर लाग उसम साया बगाना नही चाहन । पिछठे आध घण्टम मर यहा बठ-बठ कोई वीम दल यहाँ तरु थाय ह— कभी तीन चारका परिवार लावन अधिकतर युगल जाड—स्त्री-पुरुष या नारिया और नारिया ह तो साधारणतया ढन्ती उम्र की और प्रत्यक्की ठीक एक-सी प्रतिक्रिया होती ह । बहुत हवा ह चलो चरें यहाँसे । कोई भी दस एक सकडसे अधिक यहा नही ठहरा ह व भी नही जिन्हान जात ही मय सम्बोधन करके कहा था कसा सुन्दर मौसम ह । अथवा यह तो बडा सुन्दर स्थल ह । (अग्रेज अजनबीस मौसमकी बातके अलावा और बात ही क्या कर सकता ह । या इन बातका अथ कुछ नही होना—केवल यही कि खुली धूपका स्वागत किया जा रहा ह ।)

सभी टोलियाँ ढाल परस उस ओर उतर गयी ह जिसे टीने कोहनी का मोन सा बना कर घर रक्ता ह और जो हवाक थपेणसे बचा हुआ ह । वही व धूपमें पसर रही हागी और बीच-बीचमें गलबहियाँ डाँनी हुई अपन-अपन सण्डविच खा रही हागी । सण्डविच और दुआरका यह योग मरा समयमें नही आता ह लेकिन अपन अपन मल्का रिवाज ह । (इस वाक्यका जिस चूटकुलेसे सम्बन्ध ह वह यहाँ लिखन अयक्त नही ह ।)

लेकिन सचमुच इग्लडमें और सार यूरोपम ही मध्य कयकी टूरिस्ट नारियाकी बगुलता आन्वयजनक ह । इतनी प्रीणाए इनन स्मन्नु गम्पिन स्त्री मुख इतनी ऊची और ककग आवाजें और क्रिमसक समय उपहारा से भर हुए जाँके बगैर माजाकी याद दिगानवाग इतनी थलयठ टाँगें—मूर्तिकार एफ्टाइन क्या कहना चाहता रहा होगा सहसा समयम आ जाता ह !

थोठ पार बरक लाडारका प्रसिद्ध प्रपात दब आया। वह प्रसिद्ध अधिक है, प्रपात कम। निजी जमादारीमें होनेके कारण प्रबन्ध नियन्त्रित है, यत्र बालिन फाटकमें सिक्का डालकर भातर जाते हैं। धनी छायादार गंगा और उसके दूसरे छापपर बहुत-सी चट्टानके बाध सोया हुआ थोड़ा सा पानी। गायन बहुत सी वर्षों बाद यहाँ आनस प्रपातका दृश्य अधिक आनन्दक हाता है। लेकिन जसा रि गाइ बुकमें लिखा था, कोई भी स्थल देखन उमे दफकर प्रसन्न होनेका दण निश्चय करके जाना चाहिए। किमी स्थानका किमी दूसरमें तुलना करना घातक होता है।' अच्छा माहव, नहा करते तुम्हारा, नहीं तो हम अभी जून महीनेके कम्पटा प्रपातकी यात्रा करने वाले थे। मान लेंत है कि हम प्रसन्न हैं कि गडोरका प्रपात सुन्दर है। कमसे कम प्रपातका जात चित्र चदनमें टेक सग्रहाल्पमें देना था वह तो सुन्दर था ही। हम नहीं कहत कि चित्रकार झूठ बोल रहा था। यह जरूर बहुत भारी वर्षाक बाद आया होगा और एस समय जब कि सूख अभी अभी वाष्प फाटकर निकला होता और सभा पत्तियाँ अभी गीली हाथी और बूद-बूद जल टपका रही हाथी।

यहाँसे दूसरी जगहमें झील पार की लंघित जिन बन्दे लगा था हम लिए वापिस बंजविक आकर बसमें भासमयद लौट आया। दूसरे दिन सुबह फिर बंजविक पनुच कर दूसरी जगहमें डबैटवाटरको झाल पार का और ऊपरा अडल हा पहुँचकर मनस्टोका सुरभित घोघान तथा ह्यू काल पाठका घर देखा। फिर कटवाम गिगरपर चढ़कर डबैटवाटर कीलका दृश्य देना और चित्र लिया यहाँसे चालना और पार बस्ती और पगानका दृश्य बना मनारम है। लौटकर एक बार फिर मयागा टोल और रस्किन गिगाका ओरमें होता हुआ बगके अडल तक पहुँच गया। यहाँमें आया रास्ता लौटकर घन्मयद झाने किनार बियबनक गिरजाघरके पास चतर

गया। यन्मदर सुरित शीत ह क्याकि इरुका पानी पौनके काम आता ह शील तक जाना हा नही बल्कि सत्क और थोटे बोचने वन प्रेगमें भी प्रवग निपिठ ह। एसलिए थोटा सौत्य कुछ ऊचाइ परम ही देवताको मिंग। शीत प्रदेशीय थोटेमें यह सबसे गहरी ह।

गिरजाघरक पाससे ही हवलिनि गिखरकी करी चलाई गए होती ह। म चपन लगा ता हवलिनि तक जानका विचार नहा था क्याकि दोगहर दो बजक वाट ही मन चपना आरम्भ किया था। यही विचार था कि कुछ ऊचाई परस थालके चित्र लूगा क्याकि सत्कके निकट ऊपर करके और चीटक ऊच ऊच पेड थ। (चीटक पड माचस्टर कार्पोरिंगनन शीलकी रक्षा लिए लगाय ह क्याकि माचस्टरके पीनका पानीका छोटा यहा ह। अग्रज लाग इससे बहुत नाराज ह कि य विदगी बक्ष यहाँ क्या लगाय गय जहाँका स्वाभाविक बस फर ह।) जा हा पेडाकी सीमासे ऊपर घासके प्रसार तक पहुच जानपर लगन लगा कि थोटा और जानपर पहाडकी दूमरी पीठ दीख जायगी और इसके मोहमें चपता ही गया। उगमग पांच बज थे जब कि उतरत हुए एक यात्रीन बनाया कि गिखर तक पचनक लिए घण्ट भर और कडी चलाई चपनी होगी और तभी दूसरी ओरका दस्य दीखगा। फिर एक वार उसन तीखी दष्टिसे मरी ओर देखकर पूछा डू यू डू मच क्याइम्बग? मन उत्तर लिया हाँ याता बहुत तो करता रहा ह और आगे बचन लगा।

अग्रज अतिरजना नही करता और संकोची भी ह उसकी बातम सबदा कहे हुंसे अधिक कुछ अभिप्राय होना ह। इत प्रश्नमें क्या अभिप्राय था थोटी दर वाट समझमें आया।

सहसा बट जोरका हवा चलन लगा। मैं ओवरकट पहन हुए था हवा से उससे विनाप रक्षा नही होनी थी बल्कि इतना तज हवाम वह गुब्बार मा भरकर मन ऊपर अपन साथ उडाने लगा। मन उसे उतारकर उसकी

पाटला पटोके साथ बसकर कमरमें बाँध ली और आग बग्न लगा । स्वाट की पक्ति याद आयी

झाड़ बनाइम्ब्रह द बाउ आफ द माइटी हेल्वेलिन
और उममे कुछ और उत्तेजना मिली ।

गिरखर तक पहुँचा तो । किन्तु मैं पहुँचा यह कहना कुछ गवोंवित्त-सी जान पड़ती है क्योंकि वास्तवमें हवासे ही मुझ वहाँ पहुँचाया । और हवान पहुँचाया इसलिए वहाँ टिकने भी नहीं लिया और थपथपी नई आगे ल चलती गयी । रास्ता—जो या भी धुवली-भी पगडणी था—छूट गया और आकाशक धिर जानस लिसा जान भी असम्भव हो गया । थोड़ी देर यों हा चलना हुआ या चलाया जाता हुआ, मैं पत्थरके एक छरस जा टक राया । ध्यानसे देखा—बहु देर नया था बल्कि मानव द्वारा बनाया हुआ ठेका चबुतरा था—गद्दाहामें स्मारकक रूपमें ऐसे चबुतरा या जान प्राय बनाये जात है । इसीसे कारण हवास कुछ रण्य भी मिली और मने दुयक कर कोट निर पहन लिया । चबुतराका ध्यानसे द्यत हुए पाया कि उसपर लेख भी है । उमका पत्कर मँभन्समलकर एक ओर बढ़कर मोच झाँका—उगक पार ही बहुत गहरी खण्डा नाच एक पहाडी ताल—लेखके अनुसार इसका नाम 'लाल ताल' (रड टान) जाना । जहाँ चबुतरा बनाया गया था वहाँसे जाडोंमें हवाक झोंकिस तालमें गिरकर एक व्यक्ति मर गया था उगकी काई निशानी भी न मिली यन्ति उसका बुत्ता उसी स्थानपर सीन महाने तक पहरा न देना रहता जब तक कि बफ्रन पिघलन पर स्वामोको अस्थियाँ न पायी जावें । बुत्तेकी स्वामि भक्तिका यह सूचवी पटना बड स्वयकी एक कविताका विषय है । यह कविता मैंने काई तीस बष पहल पनी था । 'बुत्ते और मानवकी मत्रा क स्मारक रूपमें यह चबुतरा सन् १८०० में बनाया गया था ।

मं प्राय दो घण्टे वहीं बठा निरुरता रहा । गर्मियामें यह अधरा दम बर तक होता है इसलिए चबुतरा अधिक चिंता नहीं थी—इतना ही था

कि एक बार पगण्णाकी लोक मिल जाय । लगभग आठ बज बहू सम्भव हुआ और फिर तो म गौडता हुआ नीच उतरना हा आया और गिरजाधरम बस पाकर रात पासमपर पहुच गया । यहाँ आकर फिर गाइड-बक दखी ह उसम सहमा उमटनेवाली आयी और घुघका उग्न ह और आरो नियाकी चतावना दी गयी ह कि इनक खतरकी कभा बनना न करें— घुघ तो कभी एसी जम सकती ह कि कई दिन तक स्वय अपन हाप पर भी न सूजें ।

होटलम अपन कमरमें बठकर ये सब आनककारी बानें पन्नम दुगना मजा आता ह ।

X

X

X

ग्रामसयरस एम्बलसाइड जो विंडरमयरके किनारपर ह । पदेगकी धीलामें यह सबसे बनी ह—लम्बार्डम प्राय साठ-दस मील । सौत्यके लिए गायन कुछ ज्यादा बना ह क्याकि पूरा शील एक साथ नही देखी जा सकती । उकिन इसके आम-पास कई मुत्तर स्थल ह और या प्राकृतिक दन्याके प्रेमियाक लिए अनक सराका यह केन्द्र भी ह । जिस होटलम ठहरा ह उसीमें ठहर हुए एक स्काटी दम्पतिके सौजयसे उनके साथ मोटरमें बठकर आसपासकी और दो-तीन शीलें भी देख आया हू—इस चक्करके अन्तमें हमलोग विन्टरमयरके पार बोनम घाट पहुँचे जहासे मोटर भी नावमें गत्कर शीलके पार लायी गयी ।

सबेर फिर धीलक पार र दुग और गिरजाधर देखन गय । रविवार या हसलिए हम थपक दूसर सब यात्री गिरजाधरक अन्दर चले गय मन दुगकी और धीलक किनारा और जगलकी सर करनका एकात्र सुयोग मिल गया । र दुग और उसका उद्यान भी बहुत सुन्दर हैं । यहाँस गिरजाधरका प्राथना समाप्त हो जानक बाद दूसर यात्रियाक साथ एम्बलसाइड लौटकर

भाजन किया और फिर एक लम्बी पदत्र सरकी ठानी । राइडाल तक जाकर पहाड़पर चढ़ना शुरू किया दो एक जगह पत्थरकी पुरानी खदानके शान्तिमे तक हुए गडगामें गिरत गिरत बचा दो एक जगह हरियालीक नीच छिपी हुई दलदलमें पिण्डलिया तक धस गया लेकिन लावरिंग ताल लोखरिंग गिखरके रास्ते होता हुआ कम्पस गेट तक पहुँचा वहासे एलम ब्राउ हाता हुआ वापिस एम्बलमाइड ।

शील प्रदाका मरा प्रवास पूरा होता ह । लेखा मिलान बहूँ ता सभ्मा नहा कह सकता कि बन्त अधिक मुनाफा करक जा रहा हू । कुछ साहित्यिक स्मनिया फिर हरी हो गयी ह कुछ कविताएँ दुबारा पढन की प्रवृत्ति हुई ह और यह भी हुआ ह कि उनको दुबारा पढूँगा तो नया अर्थ मिलेगा और अविन वस्तु भगन चित्र सामन आवेंग । लेकिन असल बात यह ह कि हालाने प्रेक्षाक सौदय शील या पवत या प्रदेशम ही उनना नही ह जितना कि उसमें घूम फिर कर उसे वात्मसात करनवालामें । शुद्ध प्राकृतिक रूपके स्थालसे कही सुदरतर स्थल म स्वदेशमें देख चुका हूँ । सभी दुग्म हा ऐसा भी नहा ह अनकामें मर-सपाटके लिए मम ही बहुमरूप राते और पगडणियाँ ह, जस यहाँपर । अन्तर इतना ही ह कि उनम घूमनेवाल लग नही ह या कि उनम घूमनवाले दूमर ह और कविताएँ गिननवाले दूमरे । इस प्रकार प्रकृतिका यह विखरा हुआ सौदय असचित्त ही रह जाता ह किसीके द्वारा स्वायत्त नही किया जाना । इसलिए कवि प्रतिभा उस नये प्रभामय रूपमें ढाल कर हम नयी देती बला पडा रहन देती ह । एक सौदय हाता ह जो पहाडों और शीलापर पना रहता ह एक मौन्य हाता ह जा इम रूपना और कवि-श्रष्टिकी रागश्रोके यागस उत्पन्न होता ह । यह दूसरा सौन्य ही वास्तवमें रम ह बरिक्त रसायन ह राज रसायन ह ।

मुनाफेन रूपमें यही उपगन्धि लेकर जा रना ह । इमके लिए यला आना आवश्यक नहीं था, लेकिन जा भी उमप जग भी हो जाय वनीका

होता ह । बोधि-वगवे लिए कोर् वना-वनाया स्यान नही होता पय-नटका
बाई भी वक्ष वह पद प्राप्त कर सकना ह अगर उसकी छायामें आँखें
खरें ।

थक्स दु द झूमन हाट बाई ह्विच धी लिव
थक्स दु इटस टेंडरनेस इटस जाएस, एड फोयस
दु मो द मोनस्ट पलावर दट लोस कन गिव
थाटस दट हू फ्राफन लाइ दू डीप फार टीयस *

[३]

प्रिय—

कायक्रमक अनुसार मुझ लानस आयरलण्ड और फिर उसक वा
स्काटलंड जाना था चाह आयरलंडम सीध चाह लान लौ कर । लेकिन
त्रिन्ममें कहां भी जानके लिए लानस जाना सुविधाजनक जान पत्ता ह
और इसलिए कभीसे कही और जानक लिए भी लान होत हुए जाना
सुविधाका माग ह । अलग-अलग स्थानामें अलग-अलग प्रकारक सामानकी
आवश्यकता होती ह और सब एक साथ गद फिरने की बजाय प्रत्यक
अभियानक लिए आवश्यक सामान लेकर बाकी सब लानमें छाड जा
सकना भी एक सुविधा ह इसलिए भी लान लौटना उपयोगा होता ह ।

इतिनस विमानस लान लौटा । महास रलसे एन्निवरा जाना था
लेकिन बीचमें तान निका अवकाश था । दानिणो इगड अभा तक नही
दखा था—लानस डावर घाटकी याथाकी बात छोड दू तो !—इसलिए
उत्तरमें एन्निवराका रास्ता दानिण-पश्चिमक डबनगायरका ओरस पाना
कुछ ब-टीक गहा लगा ।

* बड स्वथ ग्रीड धान द इग्निंगस फ्राफ इग्माटेंतिटी

बाप, जसा कि नामस ही स्पष्ट ह स्नानापचारका प्रसिद्ध स्थान ह । मुरासमें ता एस अनेक स्थान हं जहाँ लोग इलाज या विश्रामके लिए जाते हं जमनी और फामक एस स्थल बहुत प्रसिद्ध ह । यद्यपि एस स्थलाका समयकालीन समाजमें वह महत्त्व नहीं रहा ह जो दो घातला पहले था, जब कि व न केवळ स्वास्थ्यके बल्कि धर्मिक पानके भी और अभिजात वर्गके दय धनिक-वर्गके आत्म प्रदशन तथा चारा और चतुराके अपने हुनर दिखानेके केन्द्र थे । इतना ही नहीं बड खानदानक तरीब और निकम्मे युवक घनवती बहूकी सजायमें यहा आने थे, रुपसो कयाआके लामो या महत्वाकांशी माता पिता उपयुक्त बर बूढ़नकी आशामें । स्पष्ट ही एसी परिस्थितिमें वहाँका जीवन अत्यंत कृत्रिम भडकीला दिखावणे और दम्भपूण रहा होगा । ठीक ऐसे ही जीवनका चित्र काप्रीव और वाइचर्लीके नाटकामें हम मिलता ह । स्वयं बापक उल्लख अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी तक माहिमम बहुत मित्रिंग स्माउट पार्किंग रिकेंस गाडस्मिथ जन आम्टन आदिकी रचनाआमें । मिथ्यापर छिपा लाल्पना और प्रत्यक्ष निरीत्यापर खटी भी गयी इस घालकी टट्टाक गिर जानका दुय कित होगा । इतिहासपर उसका जा छाप ह उतना काफ़ी ह—बहु दूरा इस सारी लक्षलीलाको मनारजक बना देती ह ।

लेकिन बापका उल्लख म जा मिट गया या नष्ट हो गया उनके लिए नहीं, जो बचा या बना रह गया उसके लिए करना चाहता हूँ । या ता यहाँक समासम मिथिन गम यानाकी इतिहासिक प्रसिद्धि उभा समयमें ह जबकि रामनाम त्रिनेत्रपर आक्रमण करने उस परास्त करना शुरू किया । रामिक आक्रमण ईसाकी पहली शताब्दी ही आरम्भ हो गया था और तभास बापके गम जल्द गालसिं उनका परिवर्ष रहा । लगभग चार सौ बरक रामिक उपनिवृत्त-कालमें यह स्थान आकषणका केंद्र बना रहा । बापके रामिक स्नानागार अब भा इगका प्रमाण ह । अत्र स्नानागाराक ऊपर पाछकी बनाया हुई इमारतें ह लेकिन तलपराने रोमिक स्नानागार और

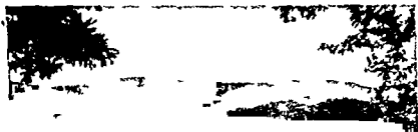
उनकी जल प्रणालियाँ वी ह जो प्राय दा हजार वष पहल था । उम समयके बन हुए सीसक नल अब भी काम दन ह । गोनापाराके कून्के लिए घाटवा पत्थर अब भी ह । उसक घिस हुए सिर रोमिक स्नानादियाने परोकी छापकी साक्षी दे रहे ह ।

नय स्नानागार जीर नल घर अठारहवी गतीक आरम्भके ह । सन १७०५में पहले निर्माणके बाद उसम समय समयपर कई परिवान हुए किन्तु स्नानागाराक और बायके अधिकागके स्थापत्यम जो एकस्पता ह वह अठारहवा गतीकी ही ह और उसी समयक जीवनकी साथी देती ह । और म उल्लेख करना चाहता ह तो रोमिक कालके अवगपाका नहा बल्कि इस दूमरी विगपताका ही । रोमिक अवगप न जान कब उपेतिन हाकर खो गय थ और अठारहवा गतीम जब नय स्नानागाराका निर्माण हुआ तब उनका कोई पता नही था । उनका पता उन्नीसवी गतीके उत्तराद्ध में उगा और सन १८७९-८० म उन्हें खो कर उनका उद्धार किया गया । सन १९२३ म और खदाई हुई और कुछ नय अवगप पाय गय । रोमिक खण्णका पूरा ढाँचा बायके सग्रहाण्यमें रखा हुआ ह । कुछ और अमय अवगप भी ह—मिनर्वा देवीका काँसेका एक मस्तक कुछ मन्त्रिकाए और उनक जडाऊ रत्न इत्यादि मिले ह । एक मनोरजक उपलिधि रोमिक कालका पासा ह जिसको विगपता यह ह कि वह कबल जुआ खलनके लिए नही बल्कि जएम धोखा दनके लिए बनाया गया ह । एक पाब भारी कर दिया गया ह जिसम यह उग्य पन् ही नगी सकता । इम प्रकार यह स्नानागारास सम्बद्ध रोमिक विगमित्तके एक विगप युगका प्रतीक बन जाना ह और इमी हीन परम्पराका मानो पनर्जागरण आरम्भिक अठारहवा गतीम हाना ह ।

रोमिक इमारतों वी खो गया फिर उनके अवगप दुबारा खोज निकाले गय । लेकिन अठारहवी गतीका बाय खोया या मिटा नही । जिस समाजन उभे जम और रूप लिया था उमक मिट जानपर नगर-सभान



घड् स्नर्थका घर 'डव काटेज'



राइडाल याटर



[हवेलीवाटरक तिन
सयामीगेल — प्राण
ब्रगपर रस्किन म्मारक
गिला]

रस्किन शिला

वायवे वास्तु-रूपको बनाये रखनेका निश्चय किया और आज हम उसका सफा और इमारतका जो रूप देखते हैं वह वही है जो अठारहवीं शतीमें था। मर निकट हम समय बाय इमीजिए उल्लेख्य है कि उसमें हम अठारहवीं शतीके नगर स्थानको अशुष्क देख सकते हैं। उसकी सडना और उसके मुहल्ला या चौकाकी तुलना तत्कालीन चित्रा और वर्णनास का जा सकती है और प्रत्यक्ष चवूतर सम्भे लिखकी और छत्रकी पहचाना जा सकता है। कई पुराने मकान जर्णोद्धार या पुनर्निर्माणके समय भातरस उनमें रहने वालाकी सुविधाके अनुसार बन्दे गये हैं, लेकिन बहिष्कर्ममें कोई परिवर्तन करनेकी अनुमति नहीं मिली है और इमीलिए नगरके विभिन्न खण्ड देगनमें ज्याके-रिया बने हुए हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं सबके सभी नगरोंमें एसा करनका समयन कर रहा हूँ नि सादेह बन्दगी हुई दुनियाके साथ बहुत कुछ न बबन अनिवापत बन्देगा बन्कि स्वच्छता बन्देगा होगा। लेकिन कुछ ऐतिहासिक शहराके ऐतिहासिक रूपका और अनब नगराके कुछ ऐतिहासिक शरणकी, रसा हो सकती है और हानी चाहिए—यह दगके जीवनको सम्पूर्णतर बनानी है और उसकी साम्प्रतिक महाराइ बनानी है। विनोप रूपसे ऐसे नगर जा न केवल ऐतिहासिक महत्व रखत है बन्कि बिगी विनोप स्थापत्य गलीको उगाहृत करते हैं जकर मुरदिन रहन चाहिए। और यह आवश्यक नहीं है कि हम तरहके ऐतिहासिक सरणका काम केवल बन्द्रीय शासन या प्रादेशिक शासन हो कर। नागरिक शासन स्वयं इनका प्रबन्ध कर सकता है, और करणा तो सरकारसे सहयोग भी पा सकता है। जिन नगरके नागरिक अगन नगरकी विनोपनापर गब करना नहीं जानत बपाकि उम विनोपताकी पहचानन ही नही उसक लिए दूर बगे हुई सरकारों क्या करेगी? बनारसका अग्निाय गगानर और उगब ऐतिहासिक धाराकी बिना सबके पहू बनारसियोंको होनी चाहिए राय या बन्दकी सगपना बाकी वान है। और यह बन्द सयाग है कि

रायक मस्य मन्त्रीका बनारसम सम्बन्ध ह—इतना पतली डारक सहार इतिहास नहीं टांगा जा सकता—बनारसका भी नहा जो बहुधा तरगमें रहता ह और कभा उड भी सकता ह ।

बायकी एक सस्या भा उल्लेखनाय ह—कोम काटकी बाय एक डमी आफ आट जिममें चित्र और मूर्ति-कलाका विभिन्न शाखाआक अलावा रगमच और समीतकी शिक्षाकी पूरी व्यवस्था ह । कोम काट एक समय सकमन राजवतकी जागीर था । उसस गगा हुआ बनोद्यान दसवा गतीका ह । अब वह जिस परिवारकी सम्पत्ति ह कता-सग्रह उसका परतनी व्यसन रहा और यह उसकी उतारता ह कि बायकी कला एकडमाकी बहा स्थान लिया गया ह । ऐतिहासिक अथवा स्थापत्य-कलाका दृष्टि महत्व पण भवन—स विषयक अध्ययनके लिए जो गावस समिति बनी थी उमन अपनी रिपोर्टम सौल्य कला और प्रवृत्तिक संगम का उल्लेख किया था जा बहुधा गतिवाक परिणमका परिणाम होना ह सम्पनाक इतिहासम जिस दूसर उताहरण कम ही मिलग और जिमकी क्षति कभी पूरी न का जा सकगी । बायकी पम्परागत सम्पत्तिकी र तापर जार दन दृग समितिन कोम कोटकी कला एक-मोका उल्लेख किया था लगन हा और अनुकूल परिस्थितिया मिठ जावें तो यह उद्यय कितन सुन्दर दगस पूरा हा सकता ह ।

इम समय एकडमीक अन्तगन का मस्याए ह दय-कलाआका विद्या लय और साधारण पाठशाखाक कला गितकाका प्रशिक्षण महाविद्या लय । रगमच आर सगातक विभाग दूमरी मस्थाक जग ह । दय-कलाआक अन्तगन चित्र-कला मूर्ति-कला रगान छपाक भाक निमाण कपकी कला कवाई रगाक छपाक और मिगाक मिखाय जात ह । रगमचकी शिक्षाम नरय नाटय अभिनय और रगमचम सम्बद्ध सभी गित्याकी शिक्षा

दा जाता है। कठपतली मञ्चकी शिक्षा भा दी जाती है। शिक्षा-क्रम साधारणतया चार वर्षका होता है कला शिक्षाके लिए कम समयके शिक्षा-क्रम भी होते हैं।

हम संस्थाके वृत्तित्वके उदाहरण कागम काममें देखकर तो प्रभावित हुआ ही था। डाटिंगटन पहुँचकर उनके चित्राका प्रदर्शनी देखी तो और भी प्रभावित हुआ। इन चित्रामें कुछ बिकाऊ भा ये विक्रीस होनवाली आयका तबीयत एक-दुमोका देनाउन छात्रवृत्तिके लिए दिया जाता है। एक-दुमोका सभी छात्र विभिन्न संप्रदायों या कला-केंद्रोंको देखन ले जायें और भज जात है। ग्रीष्मावकाममें अनेक यूरोपके विभिन्न कला-केंद्रोंकी सूर करत हैं। विशेष प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थियोंको छात्रवृत्ति मिलती है।

डाटिंगटनमें और भी वस्तु कुछ देगा कि उमकी चचा करनसे पहले यह बताना होगा कि डाटिंगटन है क्या और वहाँ पहुँचा कैसे।

वाय जानक लिए लानसे सीधा त्रिस्तल गया था। यद्यपि वहाँ जानक लिए वाय सारतम पहना है। अब वायसे पहुँच साध दण्डिण और फिर दण्डिण-दण्डिम मुहन एए त्रिस्तलके दण्डिणी सागर-तटतक पहुँच गया। बीच बीचमें सटक सुन्दर दृश्य और तरत या जलकाडा करत हुए अनेक प्रसन्न परिवारोंको देखता हुआ टोटनम पहुँचा—जैन नदीके मुहानसे रणकी पटरा फिर सागर-तटमें हट गया थी। टोटनसेसे प्रायः चार मील टक्कीस जाना होता है।

डाटिंगटन हालके बल्लडका गान्तिनिबतन कहा जा सकता है। गान्तिनिबतनका नाम मैं जान-बूझकर ल रहा हूँ। यद्यपि उमके मस्यापक एम्प्लेट सम्पत्तिस कोई बन्दि नहीं है। ऐओनाड एल्महस्त स्वयं उत्तरी इन्डिया है और उनकी पत्नी डारापी 'यूयाक' एक धनिक परिवारकी। दोनोंकी परम्पराएँ उन्हें तीव्र व्यवहार-शक्ति देती है किन्तु

दोनाका जीवन विवाहम पहले भी सांख्यिक और परिवर्तनमय रहा और यावहारिकताके साथ प्रयोग करनेकी प्रवृत्ति दोनोंमें है। अमेरिकामें लिआनाडन कृषि विज्ञानकी शिक्षाके साथ साथ कृषिके प्रयोगकी प्रवृत्ति भी पायी थी। शिक्षा पूरी करके वह भारत आय और संयोगन रवीन्द्रनाथ ठाकुरसे उनका परिचय हुआ। कृषि और दानी समाजके पन मगठनका और रुचिके कारण एल्महस्टन गतिनिवेदनसे सम्बद्ध एक और प्रयोग करनेका उत्तरदायित्व स्वीकार किया और इस प्रकार श्रोनिक तनका सूत्रपात हुआ। सन १९२४ में एल्महस्ट सारा काम अपने भारतीय सहयोगियोंके सौंपकर इंग्लैंड लौट गया जहाँ उन्होंने विवाह किया और फिर दक्षिणी इंग्लैंडमें डबलगायरम जमीन खरीदकर अपना नयी सस्याका निर्माण आरम्भ किया।

डाटिंग्टनमें उनके उद्योगका पहला ध्येय पननिर्माण और पुनर्वसन ही था। अपनी योजनाके उद्देश्य दो भागमें बाटा था—आर्थिक और अनार्थिक—इस दूसरे शीर्षकके अंतर्गत ऐसे सभी काम थे जिनका आधार यावसायिक नहीं था। लेकिन वास्तवमें इन दोनों भागोंके अलग करना कभी सम्भव नहीं हुआ। पर यह भद और उसकी असम्भावना ही डाटिंग्टनके इतिहासका रहस्य है।

आर्थिक योजनाके अधीन भूमिक उत्पादनकी वृद्धि और उसका सम चित प्रयोग था। खेती और वनभूमिके उपयोगके लिए क्रमशः गोपन और मुगियाके पालन पलाकी खेती और रस निबालनके यंत्र चिराईकी मशीन जोर कर्ताई बनाईके विभाग जाड दिये गए। यह मान लिया गया कि ये सभी कर्ताई एक समय लाभकर देहाता उद्योग रहे इसलिए उन्हें फिर बसा बनाया जा सकता है।

योजनाका दूसरा भाग कही अधिक जटिल था। उसमें मुख्यतया चार कार्यश्रम थे। पहला तो गांधका था जिसमें कृषि और वनस्पतिसे सम्बद्ध रसनवाले सभी तरहके प्रयोग शामिल थे और जिसके लिए एक प्रयोगशाला

भा बनाया गया। दूसरा शिक्षण जिसमें सह-शिक्षणका विद्यालय प्रशिक्षण केन्द्र और अथ सस्याएँ था। तीसरा कला गिन्या जिसके अंतर्गत गद्य, नाट्य मंगल चित्र और मूर्तिकलाका अध्याय था। चौथा स्थानीय मध्य कालीन इमारत का एक ढगस पुनर्निर्माण करना कि व संस्थाकी आवश्यकतायाकी पूर्ति भी कर सके।

सस्याके समस्त जो विभिन्न समस्याएँ आयी और उनका सामना करनेके लिए जा जा सगठन किय गये, उन सबका उल्लेख यहाँ अनावश्यक है। सक्षपमें पबसाय पदा डाटिंगटन हाल रिमिटेड नामक संस्थाकी सौंप लिया गया और सांस्कृतिक पुनर्निर्माणका कार्य डाटिंगटन हाउस ट्रस्टकी। किंतु इन दो नामोंमें यह न समझना चाहिए कि सगठनकी मूल एकता नष्ट हो गयी या कि एम्प्लस्ट दम्पतिन समूह जीवनकी एक ही भित्तिपर आधारित करनेकी अपना आगा और अपना प्रयास छोड़ दिया।

डाटिंगटन हाउस पढ़नेपर मुझे एक परिवारके साथ टहराया गया गम्बामा डाटिंगटनकी पत्राचारकी बिक्री करनेवाले सगठनसे सम्बद्ध थे और गृह-स्वामिनी प्राथमिक विद्यार्थस। रानको कला-क्षेत्रमें अमेरिकी संगीत का कार्य था—कला-क्षेत्र वरिष्ठ विभिन्न क्षेत्रोंमें तरह तरहके आयाजन करना करना है और कुछ ही दिन पहले श्रीमती गाता रात्र भरतनाट्य और मन्त्रिनी अभिज्ञा प्रस्तान बना करके गयी थी अग अक्षर लोका गरीब ध्यान भी यहाँ ही चुका था। विभिन्न संस्थाओंकी ओरगनैक्युपियर व मा दूसरे नाटकके अभिनय आधार, चित्रनि प्रस्तान इत्यादि भा हाल करने हैं। अन्तर केका कला-क्षेत्रकी गिन्याम भट्ट हूँ दूसरे दिन प्राप्त बात ही उनके घर गया और उनकी व्यवस्था भी दगी जिसमें नाना प्रकारके लोक-आवाजे निर्माण और मरम्मतकी व्यवस्था था। कुछ रिखाज किया हुआ लोक-नृत्य गगीन भी मुना। गोरहुरकी कला-क्षेत्र मंचालक श्री

पीटर कावमस दुबारा भेंट हुई और उस वक्त मध्याह्निक लोक-सम्पर्क अधि-कारीने साथ डाटिंगटनके वन प्रयोग और विभिन्न उद्यानके बेडरूम विद्यालय भी दत्त । फिर दोपहरमें हा सगीतरी एक रिहम्टमें बठनकी अनुमति मिल गयी—प्रसिद्ध जमन कव्कर हमन गेसोन कला-केन्द्र सम्बद्ध है और उनके मध्याह्निक कला केन्द्र निरन्तर यूरोपीय श्रद्धात्मिक सगीतक कार्यक्रम प्रस्तुत करता रहता है—बट्टिया एमा सगीत भी जो सावजनिक रूपमें श्रद्धाके पहली बार डाटिंगटन हालमें ही प्रस्तुत किया गया है ।

अनन्तर कला-केन्द्रके गायकवक्त्रके कुछ सम्प्राप्त साथ भाजन करके फिमी सगीत लिखनवाक्यकी भी एक रिहसल देखी । फिमी अथवा पष्ट भूमि सगीतकी शिक्षा भी यहा दी जाती है और विद्यार्थी-गण फिमाने छान छोट टुकड़ देकर उसके लिए अलग अलग सगीतकी रचना करत है जा रिहमलाम सुनाया जाता है और परस्पर आगेचना और अध्यापक द्वारा निर्देशनका आधार बनाता है । फिमी सगीतसे कवल फिमी गाना नही समझ लेना चाहिए बल्कि दृश्यके प्रभावको जोर गहरा बनानेवाला सभी सगीत उसमें आ जाता है ।

अभी थोड़ा दूरमें फिर टोटनसक लिए रवाना होना है वहाँस यूटन एक्टम गाडी बालकर रातको लन्दन पहुँच जाऊगा जहाँस तुरत दूर जकान जाकर एडिनबराका गाने पकली हागी ।

बीस हजार राष्ट्रकवि

निधन किंतु सुनहरी धूप और सुनहरे खनामे सम्पन्न सुन्दर प्रदेश ।
पहाड़ियोंस लहरान हुए मागर-नेट तथा क्रम-ग उतरती सल-रियाँ जिनके
पके गहूँके कुत्तनमें जहा-नहा अप्रत्यागित दगसे पास्तके फूल-ए लान नगीन
ज-ए ह । अप्रत्याग मित्र-ए और स्वर-योजनावाली संगीतमयी बोरी
जिमका विनोप प्रकारकी मात्रे उमक बोलनवालोंकी अग्रेजीमें भा उतर
आती ह । मिलनसार परन्तु आनु-त्राधा गम्भीर पर सहानुभूति-सम्पन्न
पहल पर उगार अभिमानी किन्तु पर दु ख-वानर लोग ।

धीरे भारतीय अपन मनमें इच्छा और अग्रेजीका भा भी चित्र
केर आया हो बल्सकी भीमामें प्रवृत्त करत ही वह बलने गता ह
और कुछ मित्रकर वह परिवर्तन प्रीतिकर ही जाता ह । लम्बी अवधि तक
रह उनके बाद तो यह भी जान पन्न लगता ह कि जिम जानि-मपू-को
हम अज्ञान अथवा सुविधा-का अग्रेज जाति बन्त है उसमें सम्मिलित
हूमगी मभी जातियाँ वास्तविक अग्रेज जानिसे अधिक आवश्यक ह । तब
अग्रेजकी प्रभुतापर आश्चय भा हान लगता ह और धार धीरे मतक
नीचे व दुराव सिचाय भी समझमें आने लगने ह जा समय-ममपर
फूलकर बादर निकल पडत है । अग्रेज और आयरिशका विराध तो
आपरी स्वान-ए आन्दोलन हमार सामन एा रखा, बलि आयरी
विनाह भावनास एक समयके भारतीय क्रान्तिकारीकी बने प्रेरणा भी
मिलती रही । लकिन इम राजनीतिक दृष्टके पीछे धार्मिक परम्पराओंका
(एलिकन और क्यालिक सम्प्रदायका) जो दृढ था और उसस भा
बढ़कर ज्ञानिगत सवन्ना और आशोंका जा भे-ए था वह यहाँ

भारतमें रहत हुए उतना स्पष्ट नहीं जाता। मज याह ह जिन जिना म सेनाम था उन जिना अपन साथी एक ब्रिटिश अफसरको अप्रजाकी बरवाई करते पा कर (द इंग्लिश आर बरी मीन — अग्रज बहुत कमान होते ह) मन जत्र अचकचाकर कहा था कि आप भी ता अग्रज है ता उसन तिलमिगकर उत्तर दिया था नहा म बला ह। अग्रज जीर आयरिशके विरोधके बावजूत ब्रिटिश सेनाम आयरिश सनिकाकी बन्सरुभा को तो म आयरी स्वभावक अन्तविरोधका एक चिह्न मानकर स्वाकार कर बुका था किन इंग्लिश और बंगका यह विरोध मरे लिए नयी बात थी। इसकी वास्तविक गतिन यूरोप और इंग्लैंडकी यात्राके बाद ही ठीक ठीक समझ सका। इंग्लिश और बला आयरिश और स्वाग एंग्लो नेक्मन और केस्टिक अथवा गलिक इनके जातिगत सस्कार कितन गहर और कितन भिन्न ह इसका अनुमान भी उन लोगोंके लिए कठिन ह जो कि सार यूरोपका ही नहा सार पश्चिमको एक मान लेत ह। (या यह अधिक विस्मयकी बात तो नहीं ह क्योंकि यूरोपके लोग भी सारे पव अथवा ओरिएट की एक मान लेत ह और अनुभवके बाज ही अलग-अलग देशाकी अलग अलग प्रवृत्तियाँ पहचान पात ह। फिर इससे आग बन्कर पहाडी और देमवाठ या पजाबी और बंगाली या हिन्दुस्तानी और द्रविड या द्रविडक अन्तगत तमिळ और मय्यालीके स्वभाव सवन्ना रागात्मक प्रवृत्ति और जीवन-दृष्टिक अन्तरको पहचानना तो दूरकी बात ह।)

इसलिये भी और भी अधिक रहनस अग्रजकी प्रभनापर आचय नहीं रहता क्याकि धीर धीर उसके कारण भी समसम आन ग्यन ह। अग्रजके अपन गुण ह जो उसे आकषक भेने ही न बनावें समय अवश्य बनात ह। किन्तु जाति-तत्त्वके विवचनम मझ नहा पडना ह। एक बार बसकी सीमामें प्रविष्ट हो जानवर अपनको उस प्रदेशके सौन्दर्य प्रति समर्पित कर देना ही शयस्कर ह। फिर जन्मी भी ह—आग बन्कर हमें बसके बाम हजार राष्ट्र-विविधाके दान भी तो करन ह।

हम वंग प्रदेश पार करते हुए उत्तरा वंसका एक मुख्य वस्ती पुष्पाकी धार जा रहे हैं जहाँपर इस वषका राष्ट्रीय उत्सव आम्सतद्द हो रहा है ।

वसमें बड़ गहर नहा है शहर ही अभी हा तक नहा ये ग्राम थपवा लाक-सुम्यनाका बड़ उत्तम उगाहरण था । थप कायकी खानाके कारण कृठ गहर बन गय है और गाँवोंमें सागर-भ्नानक अभिलाषी मन्निषोंके वापिक आक्रमणके कारण तदवर्ती कम्बे ता बहुतस हो गये हैं फिर भा वन्सकी परम्पराए सब ग्राम-जीवनका परम्पराए हैं और उसक सामाजिक जीवनमें वसी ही सुगठित एकता है । औद्योगिक क्रान्तिक प्रवृत्तक रिन्में इतना ही वसका विगिष्ट स्थान दता पर उसकी विगिष्ट सांस्कृतिक परम्पराए ता उस और भी उल्लेख्य बना दती है । मार यूरोपमें वन्सचित वंग प्रदेश ऐसा है जहाँ काव्य-गायनकी परम्परा अशुण्य बनी है जहाँ किसान-बमकर स्वय वणवत्तामें कविता करते और वाद्योंके साथ गाकर सुनाते हैं जहाँ गाँव-गाँव और जिले जिलेका अपना कायोमक और काव्य प्रतिपादना हानी है और राष्ट्रीय काव्यात्मकमें सुकडा प्रतिपोगा भाग लत है और हजाग यकित मत्ताह भर तक कविता गान वादन वादि भुनते और प्रतियोगिताके निणयमें विजयी रगन है । बहुत है कि मसृत्तिका एक पहचान यह है कि लाग थपन पुरातन समयका क्या उपमाग करत है दूसरा यह कि उनर गामूँक मनोरंजन क्या रूप लत है इन दाना कसोटियोंपर वसकी मसृत्ति बहुत उचा स्थान पाती है और एक बार फिर हमें यह बात माननी पन्ती है किनका एक उगाहरण हमारा अपना दग भा है—कि सागरता ही मसृत्ति नहा है कि नगरमें बमकर हर गनिवारका रम खन्ना या रविवारका सुबक गामे मिनमा दगनका अनिवायतया उस गामवासा निरास्य अपिक मन्वृत नहीं है जा आल्टा और चौपाई गाता है किहक ईगलमें जाता है या भाँग गारा की गया समकागन सामाजिक और

रामनतिव प्रवृत्तियाकी व्यग्य आलोचनाम रस लेता ह । भौगोलिक विस्तार की अममानता बाधक न हो तो भारत और वामके जीवनकी कई स्तरपर तुलना हो सकती ह ।

पट्टेलीम म एक वस परिवारके साथ ठहरा । गण-स्वामी कृषि विभागके अधिकारी थे और निरन्तर दौरपर रत थ पहाडक ऊार अपन छाट से बगलम दूसर-तीमर नि गामकी आन और बर सबर ही फिर निकल जात । घरम गह स्वामिना दग बपका लका मार्टिन और उनका कुत्ता ही रहत थ । बगलकी छाटी सी बगीचीस नाच हा सागर-तटकी रती और उनके पास ही सलानियाकी नयी बस्तीसे लगा हुआ आइस्पिटलका पण्टाल दीख पता था । इस कायोत्सवम जानके लिए तो म आया ही था लेकिन पण्णाम जानसे पहले घर ही पर जो हुआ वह भी उल्लेखनीय जान पता ह । जिस बगलमें म ठहरा था उसके सामन ही एक अवकाश प्राप्त प्रोफेसर रहत थ जो भारतमें भी रह चुके थ—एक कालमें इतिहासके अध्यापकके रूपमें—उनमे भेंट कर आया फिर दाहिनी आरके बगलके पण्णिसियासे भेंट हुई । इनकी क्याए माग्निकी सृष्टियाँ थी और गानी थी । उनसे कुछ बगल-आन और एक प्रायना गीत सुनकर मन उनकी मानाकी अनुमतिसे उन गीताका रका भर लिया और लडकियाका कौतूहल गान करनके लिए उन्हें सुना भी लिया । यह हाने न होन एक अत्यन्त बद्ध सज्जन थ । पंच गय और उन्हान भी रिका सुनकी इला प्रकट की । परिचय हुआ जान हुआ कि यह उन बाबिकाआके दादा ह । रका सुनकर उन्हान पूछा कि क्या म कोई कविता भा रकाड करना चाहूंगा ? मन बहा सम्भव हुआ तो अवश्य । उन्हान सहज भावसे कहा भरो कविता रिका कर लीजिए ।

मै न उन सज्जनक वारमें कुछ जाना था न वस भाषाकी कविता

समझ सकता था। पर सिर्फ़ चार-पाँच जव मैं उनका बचिना रकाड कर चुका तब उन्होंने उममा अथ भी मुझ समझाया और फिर आप्रहृषुक एक पराना गेक गीत भी रकाड करा दिया। लोक-गीतकी घुन बच्छी थी पर उसकी लुची तानक लायक बल उनकी घुनी आवाजमें नहीं था। बन्कि गानक आयासम जव उनका चन्रा तमतमाकर टमान्द-ना लाल हा आया और स्वर भा लक्ष्मण गया तो मुझे चिन्ता भी हुई उनका उसाह ही मरी जवान न बन्त किय रहना ता म उन्हें राक देना। गाना पूरा करके दो चार मिनट साँम लकर जव वह चले गय, तब गृन्ध्वामिनीन बजाया कि ताम वष पन्चक राष्ट्रीय काव्यामवमें उहाका राष्ट्रकविता आसन दिया गया था। हम-न्यारह वषकी बालिकाआउि लकर पन्चासी वषके बड तक्षमें अपना भाषाक काव्यक प्रति समान उत्साह भर लिए स्फूर्तिप्रद अनुभव था पर अगल पाँच-छ टिनामें हम उत्साहकी यापकताक और भी प्रमाण मिने और स्फूर्तिता स्पान एक आचष मिश्रित श्रदाने ल दिया।

आइस्तद्वका कायक्रम छ टिका होना ह प्रतिनि सवर नौ बजस सायबाल सा-आउठक—बीचमें दो घण्टा अनघाल छानकर। हम अपिटन कायक्रमक अलावा रातकी तीन घण्टे और एच्छिक कायक्रम भी होना था—उपनि प्रतिघागिनामे बाहर जा लोग कविता-याठ काव्य-गान आदि करना चाहें उनका काय-क्रम। हम प्रकार कुन् लमअग पबन्तर घण्टे लगातार काव्य और गायन गुनन बन्स भरक गग एकत्र हाने हैं। पुयेलीक उखवमें श्रानाआकी सस्था मुख्य बडकामें बीस हजार थी। ध्यान रह कि समूचे वषकी कुन् जन-संख्या बीस लाख ह। अथान वन् भापी जनताका एक प्रतिगत हम उत्तमवमें आया था। यन्ि यह ध्यानमें रखें कि हम राष्ट्राय उखवकी तयारीमें अनेक प्रादेगिक और स्थानिक प्रति घागिनाए और उभव होन ह तब जाकर हममें भाग ननवागका निर्वा घन हा पाता ह ता समयमें आ जापगा कि इगका बन्तक जीवनमें क्या

स्थान ह प्रत्यक्ष सीमें अधिकस अधिक दस एम इन हाग जिन्टान किमी न किसो सोपानपर आइस्तेन्दम काय-गाठ न मुना हो । बग जानिका राष्ट्र कहाँतक बहा जा सकता ह यह विचारका विषय हा सकता ह पर यह उत्सव सच्च अथम जातीय उत्सव ह इसम कोई सदेह नहीं और इम दष्टिसे यह एक अन्तीय अनुष्ठान ह । और (अपन देगवे सम्भको स्मरण रखत हुए) कदाचिं यह भा कहना चाहिए कि इम उत्सवका काइ सरकारी सहयाग या संरक्षण या प्रोत्साहन नही मिलता न उसका सरकारा प्रचार मस्याआ द्वारा बिनापन होता ह और न उसीके द्वारा सरकारका अनुमोदन या अभ्यथन हुता ह । स्थानीय गणसनाधिकारी (अधीग ।) उसका स्वागत ममिंतिका अध्यक्ष नहा हाता, न मत्रा उसका उदघाटन करता ह न दानामत्त किसीकी पत्नी पुरस्कार वितरण करती ह । उत्सव वास्तवमें बल्लु जानिका उत्सव ह और सांस्कृतिक उत्सव ह । और उसकी प्रातिनिधिकताम प्रवासी बल्लु लोकाका कितना योग रहता ह यह उसक अंतगत बल्लु प्रवासियाक अभिनदन के समारोस प्रत्यक्ष हा जाना ह एक एक विन्गके बग प्रवासियाको जतूसम मचपर लाया जाता ह और स्वागतक उपरांत विंगिष्ट स्थानपर बिठा दिया जाता ह ।

आइस्तेन्दम कई भिन्न भिन्न प्रतियोगिताए सम्मिलित ह । दो काव्य रचनाकी—अर्थात् एक प्राचान रीतिकी कविता और एक मधन यद्यपि बल्लाम मुक्क का अर्थ ह बह कविता जिमम केवल छंद और तुक्का बघन ह प्राचीन पद्धतिमें तो इनक अनिरिक्त और कई प्रकारक नियमाका निर्वाह हाता ह । एक प्रतियागिता गद्यकी एक काय गायनकी दो-तीन समवत-गानकी जिसमें पहल बग और स्था-बुग अलग अलग गात है फिर विंगिष्ट बग वाद्यके वादनकी सगीन निर्गनकी नाटक रचना और अभिनयकी द्रयात्ति । इधर उत्सवम जो अधिक घापक रूप ल लिया ह उनमें नन सांस्कृतिक कार्यक आम-पाम और भी कई प्रतियागिताआका वक्त बन गया ह जिनमें विद्यार्थी-समगय भाग रणा है ।

उत्सवका सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है विजेता कवियाका अभिषेक प्राचीन पद्धतिके कविको आसन दिया जाता है और नयी अथवा 'मुक्त' गालके कविको मुकुट । निर्णायक समिति पिछले पुरस्कार विजेताआ और सम्मानित कवि समुदायमेंसे चुनी जाती है समितिका प्रमुख निणय सुनाता है जिसमें कविगकी विशद समीक्षा भी रहती है । जिस स्थान पर एकाग्रताके साथ पट्टेलोम बास हजार व्यक्ति इस समीक्षाको सुन रहे थे, और जिस मिलचस्पीके साथ वामें उहान स्वयं कविनाथाको विवचना की और निर्णायकके निणयपर टीका टिप्पणी की वह मेरे लिए अपूर्व अनुभव था और कभी कभी साहित्य विवचनमें वग निर्विशिष्ट जनका ऐसा एकोमुख ग्गाव मन नहीं देखा । वग निर्विशिष्ट मैं जान दूझकर कह रहा हूँ क्योंकि उस जमावमें खतिहर किसानसे लेकर विश्वविद्यालयके आचार्यों और कोयला खदानके कमकरसे लेकर उच्च सरकारी अधिकारीतक सभी तरह के और स्कूलक छात्र छात्रोंसे लेकर चौधपनका आधा पार कर चुकनवाक सभी उत्सुक लोग थे ।

आइस्तेन्दके इस रूपका ऐतिहासिक विकास बड़ा रोचक है । यह नहीं है कि उसमें गासन या अधिकारी वगका हस्तक्षेप कभी न रहा हो । बल्कि एक समय तो इसमें लगभग सरकारी परीक्षाका ही रूप ले लिया था गा-बजावर जीवन-वृत्ति पानका यत्न करनेवालामें पायाकी छांट करके उन्हें लाइसेंस देना ही इसका उद्देश्य ही चला था । यही गति रहती ता कवि एक प्रकारका सम्मानित लाइसेंसधारी मगना हो रहे जाता— सम्मानित इस अर्थमें कि यह बड़े आत्मियाम बड़ी रकमकी माँग करनेका प्रमाण युक्त अधिकारी होता ।

आइस्तेन्दका भात इतिहास हजार वषस अधिक लम्बा है प्रमुख कवि को कुर्सी देनकी प्रथा तबने चली आनी है । यद्यपि तब कुर्सी देन का अर्थ था दरबारमें एक विशिष्ट आसन देना, और अब कवि विशिष्ट कुर्सीको अपन साथ घर ले जाता है और बीचमें कुर्सी कत्र एक चाँदाका

छोटा-सा प्रतीक हाती थी जिसे वह घर में आता—और मकुट भी एसा ही प्रतीक मकुट हाता था। बारहवीं गतीमें पहल-पहल गायककी ओरसे एक बपकी पूव घोषणाक बाद काय प्रतियोगिताका प्रमाण मिलता ह— और यह पूव घोषणा अब अनिवाय ह। आइस्तम नामका प्रथम उत्सव पत्रवा गतीम हुआ यह भी स्थानिक गायक द्वारा आयोजित था और इसम प्रमुख कवि प्रमुख वादक तथा प्रमुख गायककी अलग अलग परस्कार दिय गय। काय छन्दके विषयमें नय नियम भी इस समय बनाय गय। सोलहवीं गतीम दो मध्य आइस्तमका एतिहासिक उल्लेख ह। इनमें विजयी कविके एक प्रतीक रूप कुसी हाप नामक तार-वाद्यके वादककी चादीका छाटा सा हाप क्रय नामक गजसे बजाय जानवाये तार-वाद्यक वादकका बसा ही चादाका क्रय जोर सवथष्ट गायककी एक चादीकी जिह्वा भेंट की गया थी। य चादीका हाप अभी तक सुरक्षित ह।

सरकारी हस्तक्षेपका प्रमाण इनमसे दूसर आइस्तमम मिता ह। रानी एलिजाबथन उत्तर बल्मसे बीस अभिजात यकिनयाकी रायादण दिया कि गायक अथवा कवि यण प्रार्थी सभी यकिनयाकी परीक्षा कर उह गजसेस दें जोर जनधिकारा यकिनयाका जहा-तही जाना बद कर दें। इस प्रकारके गजसेसका कोई नमूना कही नही मिता ह पर इससे कुछ पहल लिया गया एक गजसेस अभी सुरक्षित ह जिसेस पता चता ह कि उस पानवालकी कवि-कर्मकी परीक्षाम उत्तीण और अभिजात समाज तथा जन साधारणसे पुरस्कार चाहत और पानका अधिकारी प्रमाणित किया गया था। इस प्रमाण पत्रपर दो अभिजात यकिनयाक और एक कविक हस्ताक्षर ह।

जठारवा गताक एम समाराहाका उल्लेख तन्कालिन पचागाम मिलना ह। वहीसे यह भी पता चता ह कि इनम पठिन कायका स्तर सवदा बहुत उचा नटा हाता था। एवम ता यही तक लिखा ह कि पिछले बप हमन जिसे कवि-सम्मेलनकी सूचना दा था उसम केवल एक योग्य कवि

आया था। एसा काइ बचिना नही पनी गयी जा तख्तिकर या गम्भीर या मनोरञ्जक भा हा। फिर भी जिनामु बंग लागाका सूचनाके लिए जो भी कचरा काय वहाँ पना गया उसके नमून हम यहाँ दे रहे ह।

एक जाताय अनुष्ठानका गौरव आइस्तेन्दकी उधरीसत्रा गतीक उत्त राइस ही मिना जवम उसका सचालन करनवाली एक ध्वतत्र राष्ट्रीय समिति बनी। इम राष्ट्रीय समितिकी समबर्नी उहलान्य संस्था ह गोमंद अथवा कवि परिषद्। परिषद् द्वारा घोषणाक बिना काई राणाय समाराह नहीं हा सकता और प्रतिवप य परिषद् आगामी वषके उत्सवक स्थान और निममाका घोषणा करती ह। इम कवि-सम्प्रदायकी सविस्तार चर्चा यहाँ नना हो सकता, पर यहाँ स्वस्ति वचनके रूपमें इमके मंगलकरणका ही अनुवाक लिया जा सकता ह

प्रभु हमे अपना सरक्षण दे
 और सरक्षणम शक्ति,
 और गतिम सहानुभूति,
 और सहानुभूतिमे विवेक,
 और विवेकम सतुका विवेक
 और सतुके विवेकम सतुका प्रेम
 और सतुके प्रेमम समूचे जावनका प्रेम
 और जीवनम प्रभुका प्रेम—
 प्रभुका और निधताका।

प्रतिनाक प्रति बंग-जनका यह लगाव इतना आश्चर्यजनक इमलिए ह कि साधारण गमकालान प्रवृत्तिम यह इतना भिन्न ह। काव्य प्रेम और सगत प्रेम बंग अथवा कविक जातिकी स्वभावगत विशेषता ह। उनकी भाषाही नात्मयता भी इतक सचया अनुकूल ह। भारतमें ब्रज भाषाक

सहज भाषयक वारम जगी किवन्तियाँ प्रचलिन ह कुठ वमा हा बात बल्ग भापाकी सहज गगीनमयताक वारमें कही जा सकना ह । और समानका यह सस्कार बल्ग भापाका इतना गहरा अग ह कि समकी गहरी छाप बग आगा द्वारा वाली और लिखी गयी अग्रेजीपर भी पडना ह । पिछली गतामें जरा ड मनगी हार्पकिस्की कविताका जा प्रभाव अग्रजी काय रचना और छदपर पडा उसका श्रेय वास्तवम बग भापाको ही मिलना चाहिए—हार्पकिस्का बल्ग सस्कार ही उसकी अग्रेजी कवितामें प्रबल हुआ और उसीन हार्पकिस्की छन्द सम्बन्धी एक नयी दृष्टि दी । हमारा पीताक डायलन टाममका प्रभाव भी उतना हा स्यायी होगा या नहा अभी यह कहना भविष्य-गिताका दावा करना होगा किन्तु इसमें काई सन्देह नही कि वह प्रभाव गहरा और व्यापक हुआ ह । अपन समकालीन दूसर कवियासे टॉमसकी कविता सुननमें कितनी भिन्न ह यह अनुभवस ही जाना जा सकता ह नही तो इमका अनमान भी कठिन ह कि एक ही भापाके प्रकार सुननम एक-दूसरस इतन भिन्न हो सकत है ।

किन्तु बन्सकी यह काय चतना बाम्बवमें एक व्यापकतर चननाका अग ह । उसे राष्ट्रीय कहा जा सकता यदि एक ओर यह प्रश्न न उठना कि क्या बल्सको राष्ट्र कहना सगा ह ? जोर दूसरी ओर यह भी कठिनान न होती कि राष्ट्र कहनस एक राजनतिक इकार् हा सामन आती ह जबकि हम एक सांस्कृतिक इकार्की बात सोच रह ह—इतना ही नही एक एसी सांस्कृतिक इकार्की जिसकी मूठ गक्ति उसके नागर रूपमें नही बकि उसक लोक रूपमें वास करती ह और जो इम बातको जाननी भी ह । बम्बक विभिन्न खण्डोंमें गक-संस्कृतिकी परम्पराआकी रखाक जा प्रयत्न हुए ह—निस्सन्देह सरकारी सहायतास—व उल्लेखनीय है । काल्पिका गक-संस्कृति मप्रहाउय अपन ढगका एक ही ह । स्कन्निवियाक यवा दग भा जिनको साम्कृतिक परम्पराए उतना लम्बा नही है और जिनकी नागर सम्पनाए बग तदास लाक संस्कृतिका अपनमें मिलाय ले



पुथ्नली (वेल्स) का विहगम दृश्य



सहज माधुर्यके वारमें जमी क्विचित्तरियां प्रचलित ह कुठ वमी हा बात बल्ग भाषाकी सहज सगीतमयताक वारम कही जा सकी ह । और सगीतका यह सस्कार बल्ग भाषाका इतना गहरा अग ह कि उसकी गहरी छाप बंग लोका द्वारा वाग्ने और लिखी गयो अग्रजोपर भी पडना ह । पिछली गतीमें जराल्ड मनत्री हाँपकिमकी कविताका जो प्रभाव अग्रजा काय रचना और छत्पर पडा उसका थय वास्तवम बंग भाषाको हा मिलना चाहिए—हाँपकिमका बंग सस्कार ही उसकी अग्रजी कवितामें प्रकट हुआ और उसीन हाँपकिमको छन्द-सम्बन्धी एक नयो दष्टि दी । हमारी पीढाके डायलन टॉमसका प्रभाव भी उतना हा स्थायी होगा या नही अभी यह कहना भविष्य-शक्तिताका दावा करना होगा किन्तु इसमें कोई सन्देह नही कि वह प्रभाव गहरा और व्यापक हुआ ह । अपन समकालीन दूसर कवियासे टॉमसकी कविता सुननमें कितनी भिन्न ह यह अनुभवस ही जाना जा सकता ह नही तो इसका अनमान भी कठिन ह कि एक ही भाषाके प्रकार सुननम एक-दूसरस इन भिन्न हो सकत ह ।

किन्तु बल्सकी य काय चतना वास्तवमें एक व्यापकतर चतनाका अग ह । उसे राष्ट्रीय कहा जा सकता यत्ति एक ओर यह प्रश्न न उठता कि क्या बल्सको राष्ट्र कहना सगत ह ? और दूसरी ओर यह भी कठिनाई न होनी कि राष्ट्र कहनसे एक राजनतिक इकाई हो सामन आती ह जबकि हम एक सांस्कृतिक इकाईकी बात सोच रह ह—इतना ही नही एक एसी सांस्कृतिक इकाईकी जिसकी मूल शक्ति उसके नागर रूपमें नही बल्कि उसके लोक रूपमें वास करती ह और जो इम बातका जानती भी ह । बल्सक विभिन्न खण्डोंमें लोक-सांस्कृतिकी परम्पराआकी रक्षाक जा प्रयत्न हुए ह—निस्मदेह सरकारी महायतास—व उल्लेखनीय है । कात्पिका लोक-सांस्कृति सप्रहाउय अपन ढगरा एक ही ह । स्कन्दविद्याके युवा दंग भा जिनकी सांस्कृतिक परम्पराए उनना लम्बी नही हैं और जिनकी नागर सम्प्रदाए बंग तज्जास लोक सांस्कृतिकी अपनम मिलाय ले



पुश्नली (वेल्स) का विहगम दृश्य



सेट-पेगस उद्यानमें सासेका हॉल



आयरलैंडका सागरन्ट

रही हैं लाक-जीवनको यथामन्भव संरक्षण देनेका प्रयत्न करती ह और उनक लोक-संग्रहालय भी दानवीय होते ह लेकिन काठिण्डका संग्रहालय और संग्रहोद्यान विनाय उल्लभ्य ह । हम लोग पाँच छ हज़ार वष पहलेकी संस्कृतिकी चर्चा करते ह और उपयामामें तत्कालीन जीवनका कल्पित चणन करते ह और निस्मादेह इतनी लम्बा सांस्कृतिक परम्परा गौरवका विषय ह । लेकिन दो-तीन सौ वष पहलेका किमान ठाक किम ढगक क्षाप्तमें किस ढगसे रहता था आजक गहरा भारतवासीका इसका चाक्षुष उदाहरण पानमें कठिनाई हो सकती ह—इसके कावजूद कि हमार देहातामें परिवर्तन बहान कम और धीमी गनिस हुआ ह । और विभिन्न कालाके स्यापत्य गिल्पमें क्या परिवर्तन होते रहे इसकी तरफ तो मानो हमारा ध्यान ही नहीं गया ह—मदिरा, महलों और दुर्गोंकी बात म नहो कह रहा हूँ, सिर्फ मध्य वित्त या अल्प वित्त गृहस्थक घरकी बात कह रहा हूँ । काठिण्डक संग्रहालयके उद्यानमें अलग अलग गनियोंके खनी घर दक्षकर बडा मत्वाप हुआ । ये खनी घर माँडल या प्रतिद्वय नहीं थ बल्कि भीतरी प्रदग्गसे उठाकर लाय गय वास्तविक पुराने घर थे । घराका ठीक ज्याका त्या नय परिवर्गामें प्रतिष्ठित करक, उनक भीतर उसी समयक चौकी ग्राट बनन भाँड और औज़ार रस पय थ । हालडमें आनहमके उद्यान-संग्रहालय में भी ऐमा ही प्रयत्न देखा, अयत्र इम पमानपर ता नह ।

नागर-जीवनकी ओर लौटना न वाछित ह न मन्भव । लोक जावनकी संग्रहालयकी वस्तु मान लेना या उसक संरक्षणका दम्भ भरना उसका जीवननायिना क्षतिकका अपमान करना ह । इन संग्रहालयापर बल इनका आगय मही ह कि इए मूल-भोवस नागर-सभ्यताका सम्बध नही टूटना था। हए । नागर-सभ्यता सब आत्म-चतन अथवा प्रबुद्ध हाती ह लोक संस्कृतिमें एमा आत्म-च्येनना या आत्म-बाध नही होना । यह अपन आपमें दोष नहीं ह ठाक वस ही जसे कि सुन्नीका अपन रूपका बाध न होना दाप नहीं ह । आवश्यकता इगो बातकी ह कि लाक जनको ग्रन्थ ढगका

बाप देनकी प्रयत्न न किया जाय उसे गहरका नकलघी या नकला गहरी हानकी ओर प्रवृत्त न किया जाय वन्कि इसकी सुविधा दी जाय कि वह भीतरी प्ररणासे ही सहज विकास कर सक । रूपमी रूप-गर्विता न हो इसमें कुछ भी ब-टाक नही ह लेकिन वह व्यथ ही कृत्रिम प्रसाधनोंके आकर्षणमें न खा जाय या उनकी अनुपस्थितिमें अपनका अधूरा या हीन न समचन लगे इसके अनकूल परिवर्ग उस दनकी ओर उन्हें प्रवृत्त होता खान्िए जिनकी सम्यनान उसे उस कृत्रिमतास इतना परिवृत्त करा दिया ह कि अब वह उसस उबर नहा सकती । लेकिन उसस किसी जोखममें भी नही पडती ।

ब-सही भापा ता म नही जानता और उसकी भापाकी कविता भी नही समझता लेकिन वहीके बीम हगार राष्ट्र-कवियाके स-देगका यही अभिप्राय मुझ उपलख हुआ ।

नीलमका सागरं, पन्नेका द्वीप

शट रिग्नेक मयुकन राग्यवे तीसर देग, और दूसर मुख्य द्वीप आयरलडक विषयमें कौतूहल वचनस ही था। वहाँको लाक-क्याए पहलेसे पढ़ रगो थी और अग्रजी कायम परिचयके साथ साथ आपरा कायस जा परिचय हुआ था उसकी विरोपताओंकी अलग छाप मनपर था। यन्मका प्रभाव अलग था डलामयरका अलग यह बात अकारण नहीं जान पडती था कि अग्रजी' कवियामें जा दो सबसे अधिक कवि थ दाना आयरा थ।

व्रात्तिकारी-जीवनमें आयरी विनाहियाकी जो जीवनिचा पढी थी व भी अपनी छाप छाड गयी थी। स्वयं मर ऊपर उनका प्रभाव उतना गहरा नहीं मर जितना मर कुछ साधियापर और म इन ग्रीनकी आत्मकथाकी बवल एक राचक वृत्तान्त मानता था एक प्ररणा सान नही। लेकिन मर सापमामें भा कुछ एस थे जो उम पुस्तकको वाइबलका समकथ प्रमाण प्रथ मानत थे, और यह तो म जानता ही था कि हमस पन्नेक पड् यत्रकारियामें—भगतासिह और उनके साधियामें—उगका स्थान और भा ऊचा था। स्वय मय रूसा आतवाणियाके वृत्तान्त अधिक उगादय जा पडते थे और उनको अनुप्राणित करनवाली नतिक भावनाए अधिक मूल्मवान्। इतना स्वीकार कर सकता हू और जहाँ तक मुझे स्मरण ह उम समय भी अनुभव परता था, कि रुसा निहिलिस्ट सम्प्रदायमें हास्यकी बहुत कमी थी और उनके जीवन प्रमका बौद्धिक अनिणयता ही उस मानो अमानुषिक बना दता थी। दूसरी ओर आयरी स्वभावका सहज हास्य प्रवृत्ति और विनोत्पीलता आयरी व्रात्तिकारी आन्तेलनमें भा प्रति

बिम्बित थी और उसमें भाग लेने वालाके जावन प्रेममें एक आन्वयिक सहज साहसिकता दीखती थी ।

यूरोप गया तो आयरलैंड अवश्य जाऊगा यह तो भारतमें भी जानता था । किन्तु फ्रिटन पहुँचकर वहाँकी राष्ट्रीयताके भीतर विभिन्न जातीयताका अन्तर्भव करके आयरलैंडके विषयमें कौतूहल और भी बढ़ गया । पुद्दलेलाके राष्ट्रीयताका आसक्ति बाद क्लससे ही आयरलैंड जानका निश्चय किया । बगोरसे लिबरपूल जाकर वहाँके घाटसे रातका स्टीमर पकटा और दूसरे दिन सबर बल्फास्ट पहुँच गया ।

या तो सबर बल्फास्टकी बन्दरगाहमें प्रवेश करनेके बाद ही आयरलैंड पहुँचा लेकिन वास्तवमें उसकी पकटमें तभी आ गया जहाँ लिबरपूलसे आया छटा । डकपर जाकर दूर हटती हुई लिबरपूलकी बन्दरगाहको देखनेके लिए खड़ा ही हुआ था कि एक सज्जन पास आकर खड़ा हो गया और बातें करने लगा । मैं बातें बोलने 'मूड में नया था, लेकिन उन्हें टालना बटिना था । और यह भी नहीं कह सकता कि मैं बँवठ सहसा हो रहा उन सज्जनकी बातचीत राबक भा था और उत्तजक भी और थोड़ी ही दूरमें समन बहमका रूप ल लिया । फिर हम लोग रात एक बजे तक विभिन्न विषयका लेकर जूझते रहे साहित्यिक राजनीतिक धार्मिक सामाजिक और कला-सम्बन्धी अनेक क्षेत्रोंको हमने सरका और प्रत्यक्षमें अलग-अलग तरहके पत्र करते रहे । बीच-बाचमें वह सज्जन कहते हम आयरलैंड का बन्तनी होते हैं हम आयरलैंडके लिए तो बान् विवादा हो वह वायुमण्डल है जिसमें हम साँस लेते हैं आप सोचते हाग कि मैं आयरलैंडका नमना पग कर रहा हूँ लेकिन असली नमूना तो आपका

* लानों एक आयरलैंड का और उसके भीतर स्थित एक गिला जिसमें सुमनसे व्यक्ति बानूना हो जाता है । ऐसे व्यक्तियोंके लला पत्तो भरी बानोंको भी लानों कहते हैं ।

इन्निमें मित्रेण ! इम प्रकार माना वानुनावनकं लिए ममा-याचनाका उनका वक्तव्य पूरा हो जाता और वह फिर और बार्ते करने लगत । जा हा उनक कारण यात्रा भी अच्छा बट गया और कुछ गिया भी मिगी ।

उत्तरी आयरलैंडका आयरलैंड न मानना कठिन ह । पर अन्स्टर और आयरलैंड स्वतंत्र राज्यको एक ही आयरलैंड मानना और भा कठिन ह ! वास्तवमें उत्तरके प्रास्टेंट संस्कार उम स्वतंत्र राज्यस वही इनन गहरमें अग्य कर देने ह कि त्रिनिम उत्तरी आयरलैंडकी दूरी गौण जान पडन लगती ह । बस उत्तरी आयरलैंड प्राकृति और आर्थिक दाना दृष्टियाम सम्पन्नतर ह और उमकी समस्याए इतना विकट नहा ह जितनी स्वतंत्र राज्यकी फिर (चाह इम सम्पन्नताके कारण ही) इन्डसे उमका सम्पन्न अधिक रहा ह । उत्तरी आयरलैंडक लोग अपनी वर्तमान स्थितिम सतुष्ट हैं इम सम्बन्धम कोई द्विधा उन्हें नहा ह कि एक छोटस द्वीपका अग होकर थ उम द्वीपक स्वतंत्र राज्यमे सम्बद्ध न हाकर दूर त्रिनेनक पार्लामेंटक अधीन हैं । वास्तवमें यह अधीनता एसी ह भो नहा उत्तरी आयरलैंड अथवा अन्स्टरका अपना अग्य पार्लामेंट ह और अन्स्टर-वासी दो पार्लामेंट हानिमें असमजमका कोई कारण नही देखता । वह एमा नया मानना कि इमके कारण उसकी अधीनता कुछ अधिक हा जाती ह बल्कि, जसा कि विदगी यात्रियोंको पार्लामेंट निखानवाए एक गाइडन मर सामन हो लन्डन और माचस्टरम आप हूए कार्पोरानके समस्याके दलम कहा था आप लोग यह न समझें कि हम आपम किमी बानमें पीछे ह या कि हमार अधिकार किमी तरह कम ह । बल्कि एक मामलमें हम आगम आग हैं—हम दा घरवारापर अपना गुस्सा निकाल सकत ह !

अन्स्टरके लोगक मगन्न पी० २० एन० क कुछ सम्म्याम विधानमें भेंट हा चुकी था उनके आम-जगर उनका समितिक समस्याके साथ भाजन किया स्थानीय पत्रक प्रनिनिधिम में की और पार्लामेंट भवनका चक्कर लगा गया इसके बाद मैन अदनका मुक्त समयका कि अन्स्टरके

खले प्रदग्की सर कम् और आयरलडके परम्परागत नाम मरकत
 द्वाप की सायकताकी पन्ता कट । बबठ हरियाली ही इसका कारण
 नही हो सकता क्याकि हरियाली ता त्रिन्ने द्वीप-समूहम सबत ह ।

केविन यहा गायद उम आयरी 'वारह माम का उलेख आवश्यक ह
 जो भारत छोडनमे पहुँचे एक आयरी मित्रन इम प्रश्नके उत्तरमें मुनाया था
 कि कौनस मौसमम आयरलड जाना ठीक होगा । पूरा यौरा तो मुन
 यात् नहा ह पर सात्रके ग्यारह महीन उहान इसलिण अनुभवुक्त ठहरा
 यि थ कि उनम वर्षा बहुत होती ह—कभी निरी वर्षा कभी ओलेके
 साथ वर्षा कभी आधीक साथ वर्षा कभी बर्फके साथ वर्षा कभी पिघली
 हुई बर्फर आले और आघाके साथ वर्षा और कभी घन कोहरक साथ
 थाली-थाली वर्षा जिसके कारण कुठ दीस ही नही सकता । इम प्रकार
 अगस्तका महाना बच गया था—कि उमका भी एक पखवाडा फिर
 अन्तम उन सज्जनन हमकर कहा था कि अगस्तम जानपर भी वर्षासे
 विस्मय नही हाता चाणिए कवल यह आगा करनी चाहिए कि दो एक
 दिनमें कभी न कभी घूप निकलगी ह ।

इसके लिए विाप आयोजन नही करना पडा था किन्तु आयरलड
 पहचकर मन यह स्मरण अवश्य किया कि म ठाक उसी पन्त्रात्तम वहाँ
 पन्चा हू जा कि आयरलडक लिए सर्वोत्तम बनाया गया था । इसलिण मरी
 जल्ममे जल्म अधिकसे अधिक देखतकी उत्सुकता स्वाभाविक ही थी ।
 उत्तरी आयरलडकी सात् तरह लाख प्रजाका तीसरा हिम्सा बल्फास्त् गहर
 में रहता ह और बाकी दो तिहाई सार दाम बिलरा हुआ ह यह देहातका
 मर लिए अत्रिक आकषक बना रहा था ।

गामका सरकारी वक्क अडपर जाकर मन अन्क सम्भाय यात्राआ
 क विवरण पत्र क्वट्टु किय और रातको उनका अपयन करक अगळे
 त्रिका वायत्रम निश्चिन कर िया । बन्फास्टस मबर ही निकलकर
 नगरक कुठ मध्य स्थगका दक्कर भीतरा पन्त्रका वीरें और नर्ियाँ

दमन हुए उत्तरी सागर-तटक जाकर, सागरके किनारे किनार लौटनकी याजना थी । इस सागर-तटकी सरके बाएँ मने आयरलैंडका नाम मरकन द्वीप न मवल स्वोकार कर लिया वल्कि अपनी ओरस उममें इतना और जाड लिया कि वह पना नीलमके एक बड यालमें जडा हुआ ह, क्याकि आयरलैंडके उत्तरी और उत्तर-पूर्वी सागर-तटका सौ दय अतिथीय ह और उत्तरी प्रदगोंका विगिष्ट प्रकाग उस और भी रहस्मय बना दता ह ।*

यद् उत्तर-पूर्वी तट प्रदश अघाल एट्रिमका जिला अपने सौन्दयक लिए जितना महत्त्वपूण ह उनना ही अपने पौराणिक सन्भव कारण और प्राग्मानवीय अक्नोपाने कारण । आयरी और स्वाटी गेक-साहित्यमें उसका उल्लेख बार-बार आता ह अनेक करण क्याएँ उमस सम्बद्ध हैं । और इसी प्रदेगके सर्वोच्च गिलर टोस्टानकी छायामें पौराणिक आयरस (गन्वि) कविश्रेष्ठ आसियनकी ब्रह्म ह

उत्तरी सागर-तटका स्पग पाट स्टुअटपर किया और वहाँसि पाट रग जाकर हका । य दोना स्थान मुख्यतया स्नान करनेवालाके आकषणके ह । पोड स्टुअट आयरी हास्य-लेखक चाल्स लोवरका स्थान रहा । कुछ आगे

* 'आयरलैंडके समुद्र-तटपर' शीषक कविनामे 'बच्चन ने लिखा है

सि-युका द्विदला द्विदला तीर
अकम्पित नील मुकुर-सा नीर
यहाँ सगता है काई छोड
गया है उरकी गहरी पीर ।

सागरका 'नील मुकुर' मने देखा सासी ह । तीर अधिकतर चट्टाना है वहीं-वहीं बालुका मय, द्विदला' तो सागर वहीं-वहींपर है । यों अपने उरकी गहरी पीरको एकाएक द्विदले तीरपर छोड जानेवालके हस्त साधवका बापल हूँ । पीर नीली भी चरु होनी होगी, तभी छायावादी कविको सारा आकाग उससे भरा दोलना था— 'यूय' होनेके बावजूद !

बन्द कर व्हाइट राकम नामक स्थान आता ह जनास तऱ पयरीग और चट्टानी हा जाता ह और कई भीतक एमा ही रहता ह । थोणे देर बाद चट्टानपर बन हुए डनऱूस दुगपर पहुच गय । इस दुगके अब खडहर ही रह गय ह लेकिन व भा एक दूसर युगमें ठे जानके लिए पर्याप्त ह । सागरके किनार किनार पूवका धार बन्द हुए कुछ माल जाकर हम गोग उत्तर-पूव मुऱ । जायटस काजव नामका स्थान सनारके बन्द अवरजोमसे एक ह । किमी सुदूर प्रागतिहासिक यगम ज्वालामुखीके तापस पिघला हुआ पत्थर फिर जमा तो स्फटिक मणिवत् नियमित आकारामें और एसे ही नियमित रूप और आकार प्रकारक हजारों प्राकृतिक षट्कोण स्तम्भ यहा देखनम आते ह । जान पडता ह मानो किसी प्राचीन कालमें अतिमानवी आकारकी किसी जातिके प्रमिकान यहासे सागरक सेतबन्धुका आयोजन आरम्भ किया हो लेकिन काम अधूरा छाऱकर चल गय हा तभीसे ये असह्य खम्भे यहाँ पर रह गय हा ।

जायटस काजवके पास ही डनसेवरिक नामक स्थान ह जहाँके दुगका उल्लेख मिन्यक यात्री प्लात्नीके ईमवी दूसरी गतीम किया था ।

चट्टाना तटस टकरात हुए महासागरका एक आकषण था । किन्तु यहापर तऱका अपना आकषण भी अद्भुत था और दगक सोच नग पाना था कि सागरकी ओर दख अथवा तटकी ओर ।

कई घण्ट यग बिताकर आग बऱ । टाऱ्ट पाककी छाऱने मी मुऱऱ खाऱं जा कि सौऱ्यक कारण राय्ट द्वारा सुरक्षित ह करिक-आ रीऱ जहाँ एक छाऱ से गपतक यऱना पल डाग गया ह और दूर हटकर रायलिन गीप—जहा स्वाऱऱऱके रावऱ बूमको निर्वासित किया गया था— (मकऱका जाऱ बुनत दगकर नया उल्माह पानका काव्य प्रसिद्ध घटना यग यग निवागनमें घटा थी)—और कुछ आग बऱकर वागीरासऱका छाग कम्बऱ । यऱसे रायलिन द्वाप ता दीखना ही था लेकिन सुदूर पिनिजपर स्वाऱऱऱक तऱका धुधगी-सी रखा भी गखनी था । बाली

वासलमे फिर पहाड़ी प्रदंग आरम्भ होना था। महातक पहाड दाहिनेका थ और सागर बायेंको, लेकिन यहास बन्दर दाहिनेको भी पहाड आ गये और सागर उनकी ओट हो गया। लुप्त हा जानवाली थोड के पासस गजरत हुए कभीनडलमे हम लोग फिर सागर तटपर आ गये और यहामे धूमती बल्खाती हुई क्रमग दक्षिण पूवका बन्ती हुई सडक बराबर सागर तटके साथ ही चलती रही। यहाँस लेकर अंततक जहा आइलडमाजी प्रायद्वीपकी नोक तकती सडक और खुल सागरक बीच आ जाती ह प्राय तीस मीलकी यह सडक केवल सुंदर ही नहीं ह बल्कि आयरलडक जीवनमें ऐतिहासिक महत्व भी रखती ह। प्राय सवा सौ बष पहले ब्रिक्त दुर्मि क कालमें सहायता वायके रूपमें इस सडकका निर्माण आरम्भ किया गया था। राडिया पत्थरका यह सागर तट कई स्थलापर अद्भुत रूप ल गता ह और कहीं कहीं छान छाने द्वीप भी बना देता ह।

रानस हाइटलड तक सडक माजा प्रायद्वीपकी ओट रहती ह और हाइटलडम निकलकर दक्षिण-पश्चिमको मुड जाती ह क्योंकि यहीसे बट तम खाडो आरम्भ हा जाती ह जिस ब-फास्ट शील कहा जाना ह। हाइटलड पहुचत-पहुचत रान हो गयी थी लेकिन उसस हम दगाकी विगेष धति नही हुई क्योंकि इसके वाट तिनक प्रवाशमें दखनको बम रह गया था बल्कि रातका प्रवाग ही अधिक दगनीय था। बल्फास्ट क्षात्रमें सब सक्डा छान-छोटे जहाजा और खाडीके दाना किनाराक प्रवाग अनक ज्योति बिन्दु और रगण बनात धलमला रह थ। तिनके पश्य प्रकाशमें ब दरगाहके दृश्य बहुत भद्दे दालत ह सध्याका रगान आकाग ही उहें सुन्दर बनाता ह क्योंकि वह भित्ति रगाके नीचरी कुरूपताआको रन्स्यमय पुष्पकमें डुवा देता ह और ऊपर आकागका चित्रमय बर देता ह। फिर रातमें जब भित्ति रगाके ऊपरका चित्र भा धुपग पड जाना ह तब ऊपर सारक-नशत्रके और नीच विगुनक नानाविध प्रकाग पुज एक नया चित्र आक देने हैं। इसी क्षण-क्षण परिवर्तित चित्रको देखते हुए गत दस

बज्र हम लोग बल्फास्टके अड्डपर पहुँच यहासे सभी घरके बुद्धू अपन अपन घरको गये और मैं अपन रन बसेरम जा टिका ।

लौटकर अल्स्टरके विषयम तरह-तरहकी सूचनाआका संग्रह करता रहा । गिकायतके लिए दो सरकाराकी सुविधाका उल्लेख तो बार ही चुका हूँ—गिकायत करनकी आजागी लोकतन्त्रकी बुनियादी आजागियामसे एक ह । लेकिन यह भी मात्रम हुआ कि पश्चिमा लोकतन्त्रवात्के विकासमें अल्स्टरका और भी महत्वपूर्ण योग रहा ह । अमरिकाको उसन तरफ राष्ट्रपति श्रिय । राष्ट्रपतियाके अलावा एस भा बहुतमे व्यक्ति जिनके नामका उल्लेख इतिहासामें नही होता लेकिन जो जीवनको प्रभावित करत ह अमरिका प्रवासी अल्स्टरवासी ही ह । अमरिकाका पहला दैनिक समाचार-पत्र जात इनल्पन निकाला था जो सन १७६६ में स्लावनके कस्बे में अपना छाटा सा प्रेम छाडकर अमरिका चला गया था । उसका मुष्ण पत्र जब भी स्लावनके प्रेसम सुरक्षित ह । अमरिकाकी स्वाधीनताकी घोषणा भी जान अनल्पन ही छापी थी ।

आयरलैंडकी देनका प्रतिष्ठान अमरिका अपन ढंगसे करता रहा ह । अपन ढंगसे हमलिए कि वह अल्स्टरका नही मित्ता ह बल्कि आयरोय स्वतन्त्र रायकी प्रेरणाआका मूल रहा ह । आयरी क्रांतिकारी बन्धा अमरिकामें गिष्ठा पाये हुए व्यक्ति रह मा अमरिकाकी आदर्शासे प्रेरित रह । डा व्हेरापर भा अमरिकाकी प्रभाव बहुत गहरा रहा और चुनाव आगालनाक समय विराधी दलक गेग बहुधा उन्हें प्रथामी अमरिकाकी कर्तृ दत्त थ ।

दूसरे दिन सबेर एयरप्रांत्त एकप्रसस चक्कर बल्फास्टमें डलिन पहुँच गये । परिवर्तन कम ही गहराक अतिक्रम प्रयोग इतने कुरूप और गन्द हा सकत ह जितना डलिनका अतिक्रम जा स्थान पहुँचनसे दो-तीन मील

पहलेसे आरम्भ हो जाता है। हावडा जात हुए जसी बस्ती देखनेका मिलती है वह किसी हद तक तुलनीय हो सकती है। स्टेशनसे होटल जाकर सामान से छुट्टी पाकर मैं तत्काल बाहर निकल पड़ा। पहल ही दिन होटलक आस पास कुछ रास्त चुनकर प्रत्येकको दो दो मील पार चलकर देय जाना—परिमस ही नगर परिचयका यह माग मन धपनाया है और बराबर पता रहा है कि यह सर्वोत्तम तरीका है। या परिमसका हावा कुछ जटिल है इन्लिनका पन्द्र नदीक किनार ही बसा है और नदी तथा उसके पुल उसकी मुख्य धामा है। 'गोभाको देखना चाहिए नूपना नहीं चाहिए' इन्लिन की नयी लिफ्टीको धायरी लाग स्निफी ठिषा कहकर मानो उसकी तीव्र गंधसे तन्म्य हो जात है—न उसस बष्ट पास है न उसक लिफ्ट अपनकी उत्तरदायी मानत है—रविन प्रवामी अजनबी इस नामपर हैमकर भी बसा नहा कर मक्ता। या यत्र गंध मय गदगाकी ही ही ऐमा भी नहीं है। इसक किनार गिन्नेसका जा सरायका कारखाना है कुछ उसका भी दन है। रविन दुग्ध तो दुग्ध है।

बाजार धूमकर दो-एक बहवापराम सानिकर ओर एकमें सन्धिपत भाजन करके पस्तकाकी कुछ दुकानासी पडनाल करके क्रमश राष्ट्रीय मण्डलालयमें पहुच गया। डाइरेक्टर टाम मकधारी इतिहासविद् तो है ही, आयरलैंडक बोर्डिकोमें उनका गिनती होता है और उनक नाम एक बच्चे का परिधम-पन भा था। उनसे मिला तो बातचीत कला या माहिम तक ही सीमित नपा रही। नरक परिवारम भी उनका परिचय रहा है। नरक और डी बलराक सम्बन्धम चर्चा हुई तो जहान बहा नरक और डी बलरा दाना एक-दूसरेका पमद करत है। बन्कि जानारा स्वभाव एक दुग्धमें मिलता है। फिर धोला हमकर उजान जोड लिया, 'रविन ही बनेरामें धीरज कुछ अधिक है न ?

मण्डलालपके 'राष्ट्रीय चित्र देतकर बाहर चला आया—य राष्ट्रीय चित्र आयरलैंडक राष्ट्रीय आन्दोलनक ऐतिहासिक चरित्रा और ऐतिहासिक

घटनाओंके चित्र हूँ या दूसरे नामोंसे रातका चित्रमय इतिहास हूँ। फिर चित्र गंगा किनारे किनारे और गहरा बड़ी मड़क आर्जानल रोम परिसर से नदीके किनारे भी कुछ-कुछ एस ही हूँ। रेडिओ डिलिग वातावरणम कुछ अधिक आत्मीयता और हास्यिता हूँ।

जिन टिपत हाटलका लौंग ता एक आश्चर्य मरा पतीशा कर रहा था। कनक किशोराय जो युद्ध-काण्डके सनिक जावनमें भर कनक थ और जबकाग उनक बाद अब आयरलडम अपनी छोटी मो उमादारा देखन ये वहाँ मरा प्रताग कर रह थ। मन उन्हें अपन डिलिग पहुचनकी सूचना दत हुए सिखा था कि उनक गाव भी जाऊगा लेकिन वह डिलिग यह निश्चय करक आय थ कि मन रात वहाँ नहा रहना हूँ आर उनक साथ ही माटरम उनके गाव ओल्डकासठ जाना होगा। हाटलके मनजरसे मन बात कर ली हूँ और तुम्हें रात ठहरनके पमे नहीं देन पवेंग। इनक बात मज और कुछ कहनकी गी था। उनकी यवहार-बुद्धिस म भारतसे ही परिचित था।

पचास मीलस कुछ अधिककी यात्रा कोई डूँ घण्टा समाप्त करके हमलाग रातको उनक घर पहुच गये। अंधकारमें रास्तक जास पासका दृश्य बहुत अधिक नहा दास्तता था यद्यपि ऊचा नीची हरी भूमिका घघला आभाम मिश्रित रहा और कही कही दूरपर पानी भी चमक गया। किंतु दूसरे दिन सबर उठकर पाया कि आयरलडका रूप कुछ बग़र गया हूँ— अबस परिदृश्य न। यदि उसमें धमनवाठ यकिन ही प्रधान हो गय हूँ। अगठ तान जिनामें यद्यपि आस पास घूमा काफी तथापि यन् घूमना किसी न किसीस मिलन जानका हा आनुपगित था और प्रत्यक यात्राका परिणाम कुछ लक्ष्याका नहीं बल्कि कुछ यकिन चित्राका हा सप्रह हाता था। अपना डायरामें उन जिनाकी भावम आज स्मनिके सम्मय किसा स्थल अथवा प्रदग्द नर नही आत वचि एव छाटी मी पोस्ट गलरी हा आनी हूँ

किलरायकी जमीनारी बड़ी नहीं है बल्कि इनको छोटी है कि उन्हें जमीनार न बहकर किसान ही कहना चाहिए। मकई आलू और कुछ सिद्धियोंकी खेतीके अलावा गोगाला मुर्गीघर ही आयक मुख्य साधन है। गोगाला अत्यन्त साफ सुथरी और बनानिक ढंगसे बनी हुई है और उस 'ग' ग्रह का लाइमेंस प्राप्त है। किलरायक माय उनको जमीनें देवना हुआ उनको बमचागिया और खतिहर मजदूरसे मिलता।

जॉन चारके गट्टे गावीमें लागू रहा था। परिवर्षक समय मेरे साथ हाथ मिलानक बाद वह धीरेसे किलरायसे बोला— आप ठीक जानते हैं कि आपका सम्मान मानल बुल्गानिन नडा है? (यह मकैत धरी दातीकी तरफ था।)

निक गावीकी दलभाउ करना है। जॉन जहाँ मानल बुल्गानिनकी छवि पञ्चानता था वहाँ निक अपना डाकके टिकटगर छोड़े हुए एपर (आयरी स्वतंत्र राज्य) के नक्शा तबना नती पहचानता था—उमक लिए किमा नक्शाका कोई अर्थ नहीं था, भूमि वही वास्तविक है जिसे छुआ जा सके, मशीन भरकर उठाया और सूँघा जा सके और परामे रौंग या पाकसे चीरा जा सके

बुद्धक बालके दांत नडा थे लेकिन उमके सुली हमीकी कोई बाधा नहीं पहुँचनी थी। वह खल जोतता था और मसली पकता था। कान्तिकारी आंदोलनामें वह भाग ले चुका था और बोस्नेकाके दलने साथ जुड बाट चुका था। इन्हरी पर मुगलिन देह सीधा तनकर मडा होनपर भा वह नाटा दीरता था क्योंकि उमकी ऊँचाई पाँच फुटसे दो-एक इंच है अधिक हागी। हाथ मिलानक बाद किलरायके बाद 'आपके बंधुसे मिलकर मुन बडा गव है। मैं नहीं जानता था कि हिन्दुस्तानमें एस बाँव डाल डीलर लागू होत है। (यह मरा गरीर-सम्पत्तिवा सीधी नहीं बल्कि बुद्धक बाँवके भारत जानका परिवर्ष है।) बालका पास अपनी भी घाटी-सा

भूमि है किन्तु उसपर काम इतना अधिक नहीं रहता इसलिए वह किलरायकी जमीनाकी चौकीदारी करता है।

आयरियाकी बाचालताकी बात तो बहुत सुन रखी थी लेकिन उनकी चतुराई या व्यवहार कुगलताकी बातें इतनी नहीं सुनी थी। परिचितमें केवल बनल किलरायमें ही मोलतोल करनम वसो व्यवहारिक पटुता देखी थी जो किसान चरित्रम पायी जाती है। कल्कत्तम एक बार एक अग्रणी प्रेमसे छपाईका वार्षिक टका पक्का करत समय प्रचलित भारतीय दरके अपन ज्ञानके आधारपर ठेकेकी रकमको काफी कम कर चका था तब किलरायन जा प्रेस या छापाईके बारेमें लगभग कुछ नहीं जानते थे कहा था इससे आगे म बात करता है—प्रेसकी ओरसे बात करनवाले डाइरेक्टर उत्तरी श्लडके थे जहाक लोग सींग करनम उतन ही पटु माने जात है जिनम आयरलन्डके किसान। किलरायने जब आयरी डगसे बड़ी-बड़ी बातें आरम्भ की तब प्रेसका डाइरेक्टर उन्हें यह कहकर चिन्तन लगा आप यह आयरी ग्रान्नी मर ऊपर आइमाना चाहत है लेकिन म भी नातर है। किलराय रट कुछ और कम करना चाहत थे पर घटानके लिए कोई समुचित युक्ति तो दे नहीं सकत थे। सहसा उन्होंने बने फुर्सेसि अपन हाथपर यूककर डाइरेक्टरका हाथ पकडकर हिंमत हुए कहा यह तो अब तो सींग पक्का हो गया और मर भी लग गया और एक रकम बना दो जो डाइरेक्टरका बताया हुई दरसे काफी कम था। आगे डाइरेक्टरको कुछ बालनका उत्पन्न मौका ही नहीं मिया। यूकसे प्रतिनापर मोहर ज्ञानकी प्रया पश्चिमक कई प्रत्याक किसान समाजाम प्रचलित है—यूक जबानका प्रतीक बन जाता है और इस प्रकार यह क्रिया जबान दन का पर्याय हो जाती है।

डाइरेक्टर अचक्का कर किलरायकी आर दखता रहा जोर बढ़ जल्दी म यह कहकर बाहर निकल आय कि वस रट तो पक्का हो गया बाकी बान मर यह सहकारी आपस कर लेंगे।

मरे लिए भी यह घटना कुछ कम विस्मयकारी नहीं थी मैं चुपचाप छाप बाहर चला गया। बाहर आकर किल्लारायण हंसकर कहा 'क्यों कसी रहो। मर छापाईके वारमें कुछ न जाननस फ़ायदा हुआ न ?

तो स्वयं किल्लारायणकी किसान बुद्धिसे तो म परिचिन था। लेकिन नहीं जानता था यह बुद्धि कवल किमानका नहा, आपरो प्रतिभाकी देन ह। आपरो प्रतिभाकी विगपना में एक विगप प्रकारका मनारजक गावनादन ही जाता था जिनक कारण आपरो आँखें मूँदकर नीगव सामन छह हारकर यह दखना चाहना ह कि वह नींदमें कसा दीखता होगा या रातको चौककर त्रियामलाई जलाकर दखना ह कि उसन सानस पहूठे बत्ती बुझा दा थी या नही।

लेकिन मर चित्र मग्रहक आपरो विल्लूल दूमर प्रकारक ह।

क न गाय चरानक लिए एक खेत किरायेपर त्रिया ह। यह तय हुआ ह कि प्रति गाय वह पाँच शिलिंग प्रति मास दगा। क ठाक एक-सो दा काली गायें सरीरकर लाना ह। एक्को वह उम खतमें त्रिनमें चराना ह दूमरोको रातमें त्रिन खतक मात्रिकका वह कवल एक गायकी चराई दना ह बशकि त्रिनमें भी और रातमें भी एक ही काली गाय तो वहाँ चरती देगी जाती ह।

स ने दो खत लिये एक एक गाँवमें और दूमरा आठ मोठ दूर दूमर गाँवमें। अपना भडाके छाप्स मुप्पका वह एक दिन एक खतस हाँककर दूमर में तब ल जागा और दूसर त्रिन वापिस आता। रात्ममें कभी काई टाकना ता वह उत्तर दना वह जा मरो दूमरो जमान ह न, वहीं अपनी नहें चरान ले जा रहा हूँ। लेकिन वास्तवमें आठ मोठका यात्रामें भएँ जनाँ-सहाँ दूमराकी बाडामें मह मारती हुई जानी और इमी प्रकार लौटती। भडाका पत्र इन लून्-पाटस भरना दाना धार खनाका अच्छा खान मुक्तमें मिल जानी। इम प्रकार आरम्भ करक अपनी बचतस ख न अभा हाल २५० एकल जमान मरा ली ह।

श्रीमती हे विधवा ह । अत्र डलिनम रहती ह । केकिन पहले देहात में उनकी जमींदारी थी तब उसीके बीच एक बगममें वह रहती थी । दश और अशांतिके समय एक बार रातको उनके घरमें डाकू आय और पिस्तौलें खिंचाकर उनस एक कागजपर हस्ताक्षर करवा ले गय जिसके अनुमार उहान जमीनपर अपना सब अधिकार छी दिया था । वह डलिन जाकर रहन लगीं जहा उनका कोस्टलोसे परिचय हुआ जो अनन्तर राष्ट्रीय नया और प्रधान मंत्री भी हुए । डलिनम प्रतिष्ठा और धाक जम जानक बान् श्रीमती ह न एक दिन अपनी जमीनकी खबर लेनका निश्चय किया । देहाती मेलका दिन था बन् तबके दो टकभर सिपाही उनकी जमीनपर पहुच और जो पगु धन उह उनकी जमीनपर कही भी मिला—गायें बछन् घां आंि—मवको लांकर सिपाही अपन साथ मलम ले गय जहा उन्हें नीलगम कर लिया गया । नीलामसे हानवाली आय डलिनम माल किनके नाम जमा करा दी गयी । अनन्तर भूमि भी आस-पासके अच्छ समय और दबग किसानांम बाट दी गयी । बूढ़क बान्को भी वसी प्रकार जमीन मिली थी ।

शेख गीरुन नामकी छोनी क्षीन्के किनार मजर ई का मुन्तर बगला ह । पाटकम प्रवेश करत ही उनक बागवानीक गीरुके प्रमाण मिलन लगत हैं । मजर साब भि जमीनार अर्थात किसान ह । फौजम अवकाग के चुक ह और अपने पत्नीमियाकी तरह कुछ सनकी ह । यद्यपि बड मिलनसार और हममुख । उनके माता पिता दोनों जल काट चक थ । उनके जन् जानका कारण रोचक ह और सूचित करता ह कि मजर साबका सनकी स्वभाव बग-परम्परागत ह ।

पिता आपरी स्वातन्त्र्यक समर्थक थे और उनके आंदोलनामें भाग लन थ । उमक लिए जा उत्तक प्रन्तन होत थ उहाक प्रन्तन होत लन्तनमें हाउम आफ कामकी दायक गलरास भाषण देना आरम्भ कर लिया था और राक जानकर भा बान्न हा रह थ और न्य प्रकार

गिरफ्तार हा गये थे । अन्तुत सयोग था कि उन्हें गिरफ्तार करनेवाला पुलिसमन उनका भूतपूव सहपाठी था ।

माता स्त्रियाके मनाधिकार आन्दोलनमें भाग लती थी । श्रीमती पक्कटके फेमिनिस्ट आन्दोलनकी वह कायकर्त्री थी । पतिके साथ हाउस आफ कामसमें वह भी मीजूस थीं । पतिके भाषणका उद्देश्य तो एक सन सनीयर प्रशान करना था हा यह तो जानी हुई बात थी कि वह गिरफ्तार हा जावेंग । उनके गिरफ्तार हानका कोई गुस्सा पत्नीका नहीं था । लेकिन सहमा यह पहचानकर कि गिरफ्तार करनेवाला स्वयं आयरी ह और पति का स्कूलका सहपाठी रहा उन्हें बहुत क्रोध आया और उन्होंने पुलिसमनको घण्ट मार लिया । इन प्रकार दम्पति जितने प्रशानके लिए गये थे उससे अधिक सनसनीदार प्रशान करके हाउससे निकले ।

पहाडियाके पार चाँदीने कारण रहस्य मण्डन प्रयोगको देखते हुए मिस्टर एम के घर पहुच । उनमे गामको मिलनकी बात थी । घर पहुचन पर मालूम हुआ कि वह घरमें नहीं ह अपनी जमींदारीके दूसर हिस्सेम जानवरोंको खेहन गये हैं । हम भी गाड़ी मोडकर वही पहुच गये—घरपर ही प्रतीगा करनेकी अनिगय औपचारिकता अनावश्यक समझी गयी । मिस्टर एम मिल तो बड तपाकस लेकिन स्पष्ट ही कुछ उद्विग्न भी थे । मेर साथीके पूछनपर मालूम हुआ कि उद्विग्नताका कारण यह ह कि उन्होंने अपन पामके पचास मूअर बचे ह और रातमें माल गाहकको देना हागा ।

पगु धनकी बिक्री साधारणतया दिनमें हाती ह । और रात तो अनि वापनया तिनमें लिया लिया जाता ह बयाकि सममें बड तरहका धोखा हा सकता ह और पगु धनका व्यापार करनेवागमें एस धोखकी धोखा नहीं केवल चतुराई समझा जाता ह । यह प्रवृत्ति तो सारी दुनियामें ह और आयरलैंडकी परम्परा साधारण किसान-परम्पराम अलग नहीं हाती बल्कि उगका निषाड हाती ह । हम लोगाने इन बातपर आश्चय प्रकट किया कि गहन माल इन रातकी आ रहा ह । एम धानासा सनुचाय । फिर एक

झपतीश्री मुसकराहटके साथ बोले तुम तो पत्नीसी हो—तुमसे क्या छिराना । डॉलरके अमुकको जानते हो न ? वही सौंग करन आया था । उसक साथ एक और आत्मी भी था मर टयालमें असल गाहक वही था । दोनान जानवर दख लिय और दाम पूछ मन बता दिय । उन्हाने मोठ तोठ नही किया बोले ठाक ह हम इससे द्यौला दाम देंग लेकिन मालकी डलिवरी रातको दो बज लेंग । अब मत्सीकी तयारीमें हू—रातको डड दा बज उनके तक आवेंग ।

मर साथीन रहस्यमय ढगसे हसकर कहा तब तो अच्छा सौंग ह और मात्क स्थायी हा जाय तब तो क्या कहना ह ।

हम लोग एम की जमीनें और पंगु शालाए दखत हुए इधर-उधरकी बातें करत रह और रातमें लौट आय । लौटते हुए इस अदभुत व्यापारका भद मझ बताया गया । डॉलरके अमुक एक टासपोट कम्पनीक मालिक ह उनके ठेले दंगभरमें चलत ह । टाकके अलावा या भी उनकी बहुत चलती ह क्याकि राजनातिकाम उनके बड-बन् दास्त ह । और पलिसक तथा दूसर अधिकारियोंमें भी उनकी धाक ह । स्पष्ट ही इस आधी रातक सौदेका मतलब यह था कि माल राता रात आयरी स्वतंत्र रायकी उत्तरी सीमाक पार पहुचाया जायगा और उत्तरी आयररूडमें उसकी खपन होगी । कृषिकी पदावार और पंगु वनके निर्यातपर आयरी स्वतंत्र राय और उत्तरी आयररूड दोनामी ओरसे रोक ह । इसलिए एमा व्यापार बहुत लाभदायक हो सकता ह क्याकि आयरी स्वतंत्र रायमें पंगु वन सन्त मित्र सकत ह । मुय बात आया कि अक्स्टरमें एम सीमा प्रदतीय चोर बाजाराकी और उसपर कड़ी निगरानीकी बधा सुनी था । अब समस्याके प्रति एना सरकाराक रवयमें भू स्पष्ट हो गया । आयरी स्वतंत्र रायमें कानूना स्थिति और वास्तविक स्थितिका यह अंतर कबठ सीमा प्रदतीय आगत नियान तक ही सामित नहा ह बल्कि बटूतसे क्षत्रामें देखा जाता ह । कानून कुछ और ह व्यवहार कुछ और इसक लिए कोई विगप

चिन्तित नहीं जान पड़ता कि इस दूरीका मिटाया जाय या नियन्त्रित किया जाय । वास्तवमें प्रजाकी साधारण रानभौतिक चेतना इस दूरीको न कबल सहनको तथा ह वल्कि सहज भावसे स्वीकार करती ह उस साधारण लाक-व्यवहार या दम्बूरका अग मानती ह । बल्कि कह सकते हैं कि उसने इसकी भी कुछ भयागए बना रखी हैं कि सिद्धान्त और व्यवहारमें किनना और कसा अन्तर हाना ह और हाना चाहिए । शायद इसके न हानेपर ही उनकी स्थिति कुछ असामजस्य भरी जान पड़ेगी । सकार मुना ह इस बल्लनका उखट प्रयन कर रहा ह पर म्पष्ट ह कि जनताकी उासीनता—बन्धि प्रतिकूलता—के रहते वह अधिक सफल नहीं हा सकती ।

तब विहीन किन्तु हरा पहानियाँ मागें तब पहाडियोंका उचा-नाचा प्रदग, जिसमें मानव नहा दीखता जीव जन्तु भा नहीं दीखते और प्राय रातका प्रवाग भा नहा दीखता ेकिन बहुधा हवाकी आवाजें मुनाइ दना ह कभा बनबतिया जसी दबो दूइ और काम कभा चालारों-साताखी या कपडिे स्वर मुनाइ स्ते हैं—ऊपर मेघाका गजन और नाच कभा पानीपर पानाकी चोट तो कभी घास-फूाकी पस्रुटियोंके छूकर सट्टमा चुप-सा हा जानवाला बौछारका स्वर यहा प्रश वास्तवमें आयरैडका वह प्रदग ह जिसमें वहाँका दभरी लाक-कपाए जम लती हैं, उसका गह-सगत अपनी कण्ठा भरी तानें आविष्टन करता ह और जिसमें धायरी लाक जावनक गगर अच विवाम पनपन है । कयाकि हीं नित्रनामें प्रेतनिर्वा राती हुई धूम खकती हैं परियाँ अमावधान अन्त चात्रोपर जादू कर खकती ह वनदवियाँ भड धरानवाल् युवक-युवतियाका भटका सकता है वास्तवमें इन प्रदगामें पहाडियापर छाया दूइ हरियाण भी सच्चा हरियाण न हाकर एक छना ह । एक तो वह निरन्तर रग बदनती रहता ह दूसर वह वास्तवमें घासकी हरियाण भा नहीं ह । एक न्निमें भा

भोर जिन दोपहर और शामके प्रकाशके साथ उसका रंग बदलता है और ऋतुआके साथ भी उसमें आश्चर्यजनक परिवर्तन हाव है। गहर और हके हरसे लेकर पीठे भूर सफेद नील काली ऊँ बगनी प्याजी गुलाबी तरबूजी लाल और उनाबी तक सभा तरहके रंग बहती है इही रंगाकी कभी स्पष्ट और कभी धुधली कभी ठोस और कभी पारदर्शी झाड़िया और रंगों वह लिखाती है उसकी हरियाली घामकी हरियाली नहीं है कही घास है तो कही काहा कही सूख पत्थराके ऊपर छापी हुई हटर नामकी पत्थिन बाग तो कही काहीक नाच टिपा हुई सडन और दलाल इमी हरियालम कहा कोर ठोकर खाकर गिर सकता है तो कही सहमा धसकर असहाय हो सकता है कहा सुन्दर गंध पण्य पा सकता है तो कही भीतर-ही भातर जीण होकर कोयला हा गये वनस्पति-तत्व जिनके टुकड काट-काटकर इधनकी तरह जलाय जा सकत है। हम जानत है कि खनिज कायला वास्तवमें प्राचान कालकी वनस्पतिया है जो धरतीके नीचे दबकर जीण होना रही है और फिर गिलित हा गयी है किन्तु इन पहाटाका हरियाली बिना दब ही जीण हाणी रहती है और उससे जगन लायक तत्व पानके लिए गहर खाना जहरी नहीं है उसीके टुकड काटकर जलाय जा सकत है।* कोयला भई न राख वाली बाग मनुष्याके अन्तस्त्राके बारम कही जाती है किन्तु यहा उसका स्थूत्र रूप देखा जा सकता है।

म अपनका अध विवासी नगी मानता है। घरकी याद किसी भी प्रनामाको सता सकता है फिर वह घर गहरम हो या देहातम पहाणीपर हो या तट्टामें नगाके किनार हा या जगलके छोरपर। किन्तु इस विगप प्रकारके प्रगका यात्र जिहें सतानी है व फिर उससे निस्तार नहा पा सकत उनके लिए या तो यहा लोट आना आवश्यक हाता है या फिर

* दलाल प्रयोगके इस कायल को पाट कहत है।

व भीतर-ही भीतर घुलते ही जाते ह जसे यहाकी हरियाली भातर ही भीतर जल जाती ह । मन इम प्रकार अकारण और अविरोध घुलत जानवाले लोकाको देखा ह । लौटनक मिवा दूसरा इनाज इस रोगका म नहीं जानता जिनके लिए लौटनका रास्ता खुला नहीं ह उनका रोग असाध्य ही मानता ह । जो रोग अकारण होकर भी असाध्य ह उस राग कहना वचानिक या वद्धि सगन ह और जादू कहना निरा अथ विश्वास यह दावा कस किया जाय ? हम अगर तकके लिए ऐसा कहते भी ह ता गायन भीतर ही भीतर कही स्वय इस बातकी पूरी तरह नहीं मानने । इसीलिए आयरलैंडकी लोक-कथाए इतन गहर और हृदय द्रावक प्रभाव रमती ह । *

आल्डकासलसे तीसर पहर चलकर इनमनी पट्टा जो प्लेटे परि वारकी परम्परागत जागीर ह । सुप्रसिद्ध वद्ध लखक और नाटककार लाड इनमनी यहींके ह कि यह जागीर उन्नीकी ह । किन्तु इधर अति-वृद्ध हो जानके कारण उहान जागीर अपने पुत्रका सौंप दा ह और लग्नम रहन ह । उनक कुछ काव्यमय नाटक तो काठेज जीवनम ही पठ थ लेख और आत्मकथा पीछ पण । उनके पुत्र रडल जो अब उत्तराधिकारी हैं सेनामें भर साथ थे—घुडसवार सेनास टैंक कोरमें आकर वह उत्तरी अफ्रिकामें रहे थे और वहाँस बदलकर अमममें आय थे जहाँ उनम भरा परिचय हुआ था । गामको उनके साथ उनकी जागारकी भर की रातको भाजन किया और देर रातमें डिन लौट आया । दूसर दिन स्वतंत्र रायकी

* ऐसा ही अकारण घुलना दूसरे देशोंमें भी देखा जाता है जहाँ ऐसे प्रदेश होते हैं भारतके घुमन्तू गूजरों और अथ पहाडी जातियोंम इसके उदाहरण मिलेंगे, और उनकी लोक-कथाओंमें इसके अनेक कारण उद्वेस भी ।

हवाई सर्विम एयर लिमिटेडके विमानमे लान पहुच गया । आकाश
 एक बार फिर नीमके सागरसे घिर हुए इस बन्द बन्द पन्नका एक छार
 दखा और उमके नामका अनुमान किया फिर बलात ध्यान उधरसे
 हटाकर आगकी आर मोल लिया जहा अभी और यात्रा ह और देग है
 दूसर लोक जीवन और सगीत ह और दूसर पवन दूमरी शीलें दूसरा
 निजन सनाटा

धर्म-विश्वासोकी गोधूलि

रामलोटनको जब दिन छिपेके बाद भुतह पीपलके तलेसे जान हुए डर लगता ह और सुटपुमें भयावना छायाकृनिमाँ दोखतो ह तो वह लोहका छूता ह और निभय हो जाता ह । यह कहना कठिन ह कि उसका डर अधिक निमूल ह या कि डर काटनका उपाय । लेकिन इसमें सन्दह नही कि लोह और भूत प्रेत या परिभाषा वर, मानव जातिक बहुत पुरान और बहुत फले हुए विश्वासामें-स एक ह । इस अथ विश्वासका मूल उद्भव एक ही रहा, या कि समूको मानव-जाति किसी एक प्राक्कालीन बनौकस यूपस ही उत्पन्न हाकर ससार भरमें फल गयी एसी कोई अटकल प्रस्तुत करना मेरा काम नही ह । बुद्धिवाणी यह भी कह सरत ह कि जब स मानवने लोहेके अस्त्र बनाता सीखा और उसक सहार बन-जन्तुआसे सुरक्षा प्राप्त की तभीसे लोहकी शक्तियाम यह विश्वास भी रह हो गया । किन्तु लोहस पहल तौबक अस्त्र भी कई जगह हुए, उससे पहले पत्थरके दम्त्र और अस्त्र काम आत रह—किन्तु ताने या पत्थरकी घमत्कारी शक्तिमें एमा विश्वास कहीं नही पाया जाता ।

जो हा । आयरि उपक्याआमें परियावे जादस वचनके लिए लोहे का उपयोग लोक विश्वासका एक अभिन्न अंग ह । परियाँ द्वारा उगाकर किमी मानवतर लोकमें ल जाया जाता परियाकी कानियाका एक माघा रण अंग हाता ह । मूरोकके अथ दगाका परियाकी भाँति आयरि परियाँ भी भूतलस नाचे किसी पानाल-लोककी गुफाआमें बसती हैं, और जिन्हें ले जाती ह वगैरे ले जाती हैं । यहाँ प्रचलित कहानियामें अन्नर एसे चतुर कपानायकाका वणन मिलता ह जिन्हें जब परी-लोकमें ल जाया गया तब

उहान परी महलके सिंहद्वारक नाच कही लोहकी एक कील या आलपिन गाँ दी जिसके प्रभावसे सिंहद्वार बन्द नहीं हो सका और लौंगनका रास्ता खुला रह गया ।

घरके द्वारपर घाँकी नाल टागनका कारण उमका नाल होना हा नहा ह बल्कि गहकी होना भी ह । घरके भीतर गभजती स्त्रिया सिरान लहकी छरी या अय वस्तु रखती ह और माना जाता ह कि इनसे माता और शिशु दीना सुरक्षित रहत ह ।

प्राचीन अथ विश्वासाम, जिहें घम विश्वासाकी गोधूली-बलाकी अद्विनिहृषित श्रद्धाके प्रारम्भिक सकेत माना जा सकता ह किमी भी चमत्कारी तत्वके दो पहलू होत ह । जिससे सुरक्षा मिलती ह उसीसे डरना भा होना ह जो वाछित हाता ह उसीको दूर भी रखना होता ह जिसका आकर्षण जितना ही सहज हीना ह उसका उतना हा कल निषेध किया जाता ह । दवता ही परम अशुभ और अस्पृश्य हाते ह । वास्तवम विश्वासकी यह उभयमुखता प्राचीन मानवकी भोगी होत हुए भी स्वस्थ दृष्टिका लक्षण ह । चमत्कारका आधार शक्ति ह शक्ति ननिक भावनासे पर ह अर्थात् अच्छ काममें भी लग सकी ह और बुरम भी । इसलिए उमके सभा पन्नाको निर्मात्रित रखना हा शयस्कर ह । आचार और अभिचारकी सीमा रखा बहुत सूक्ष्म ह । अभिचारी कव स्वय अपन तत्रका शिकार हो जाय कव उसकी भजो हुई हृत्या स्वय उसीका प्रसन न लौट आय क्या टिकाना ।

लाहकी शक्ति विषयमें भी यह उभयमुखी विश्वास सबत्र पाया जाता ह । बाबुलक प्राचीन जाम जब मूमाको आदेश मिता ह कि यदि तू मर गिए पर्यरकी बनी बनाता ह तो तू उसे पर्यर काटकर नहीं बनायगा क्याकि जिस पर्यरकी तून शीजारसे छत्रा बट भ्रष्ट हा गया ह तब गहका निषेध हा गित ह—यद्यपि ग्रन्थमें लाहका नाम नहा

नही जाता था वल्कि (काठ के) करघेपर ही बुना जाता था । इसमें एक ओर यह भाव भी है कि राज वस्त्रकर्तारसे छिन्न अथवा सूचीसे भिन्न नही होना चाहिए क्याकि अम्बण्डित वस्त्र ही राजाकी अखण्डित शक्तिके अनुरूप हो मन्ता है दूसरी ओर यह भी कारण था कि लोहके स्पर्शसे ही वस्त्र दूषित हो जाता है । विकलाग व्यक्ति राजा नहीं हो सकता था, इसका भी ऐसा ही दोहरा कारण था । लाहकी शक्तिका (या छूतका) एक रूप यह भी था कि किसीको लोहकी बनी हुई कोई चीज द दनपर पानेवालेको दातापर कोई जादुई अधिकार मिल जाता था ।* आयरलडकी परियाकी कहानियामें बहुधा ऐसा उल्लेख मिलता है कि परिया या टोना करनेवाली स्त्रियाँ, अपन शिवारस लाहकी कोई चीज उधार माँगती हैं—जस हाडी या चिमटा इत्यादि ।

आयरलडकी कोई भी जिला ऐसा न होगा जिसका परियास सम्बद्ध एक साहित्यका अपना भंडार न हो । चट्टानी सागर-तट और क्षुपविहीन हरी पहाड़ियोंके प्रदेश विशेष रूपस परियाकी लीला भूमि रहे हैं । सागर तटकी कदराएँ सभी उनस आवासित हैं और उनके पास आना-जाना जोखिमस खाली नहीं है । और हरी पहाड़ियामें तूफानी रातमें परियाके अभागे बन्धियाकी चीखन-कराहत किसन न सुना होगा ।

एस बन्धिया या बन्दिनी स्त्रियाकी अनेक कहानियामें स्थानीय अलकरणमें बहुत अंतर पाया जाता है । किंतु अलकृतियाकी अलग करके एक सामान्य रूप अथवा अभिप्रायकी खोज करें तो वह रूप कुछ इस प्रकार होता है । कोई युवती सागर-तटपर घूमती हुई अथवा पहाडा पगडणीसे जानी हुई अचानक लापता हो गयी । लम्बे अरस तक वही उसका कोई चिह्न नहीं मिला । फिर एक बार उतना ही अकस्मात उसके पति अथवा

* धन धाय पवित्र हैं और हलसे जोती हुई भूमिका धर्म व्रतमें प्राण नहीं है इस धारणाका सम्बन्ध भी क्या सोहेकी छूतसे नहीं है ?

प्रेमीन उस एक चरमटके पाम अवेग बठ हुए देला । पूछनपर स्त्रीन बताया कि वह टानसे बधी ह और परियाकी छात्रक न । जा सकती किन्तु मुक्तिका एक उपाय ह । उसे माडूम हुआ ह कि एक रातम—जा प्राय अगली पणिमाकी रात होती ह—परियाँ उम लकर वही अयत्र जान वाली ह । जिस मागसे परियाका लकर जायगा वह उस माडूम हो गया ह । यदि उसका पति (अथवा प्रेमी) ठीक समयपर निश्चि स्थान पर खण रह और उसके जात समय एक विनोप वणकी छनीमे उसक घोट का छू द ता टाना बट जायगा और वह मुक्त हो जायगी । (परियाके छात्रका ताल तही होती यह बताना तो अनावश्यक ह । कहानीके जिन रूपमें परियाका पिंकार स्त्री न हाकर पुरुष होता ह उनम प्राय एसा भी सकत मिलता ह कि वह बिना नात्रे घोटपर सवार होकर परियाके प्रदेगसे जा रहा था और इमीलिए उनका जाडू उसपर चठ गया ।)

पति निश्चि स्थान और समयपर पहुचता ह किन्तु लकरको देखकर घबरा जाता ह और छनी उसक हायस छूट जाती ह । लकर बदिनीको केकर आग बट जाता ह । अनतर रातमें उसका चीत्कार सुनाई पडता ह । दूसर तिन खतम जहाँ-तण रकने छात्र या एम पूनार चिह्न देख जात ह जिनस अनुमान हा जाता ह कि परियान अपन बनीक प्राण ल लिय । और कभी चिह्न काँ नही मिलता । बिन चाँदनी राताम (या जसा भी वह रात था वमी रातामें) चात्र प्राय सुनाई पन्ती ह ।

यह विवास कहाँस आया ? कोई कट्ट ह यह उस समयका अव गप ह जब एक बलिष्ठ आक्रमणकारा जाति दूमरा जातिका स्त्रियाका हरण करके ल जानी थी । कोई यत्र भी अटकत गगत ह कि आक्रमणकारी जातिमें स्त्रियाकी सख्या बन्त कम होनक कारण स्त्री अपहरण उनत्र लिए अस्मिन्वहा प्रान धन गया था ।

वह हागा । चाराम गरात्र एान और ल जानवाल लगाकी जा अति रिक्त मस्याम त्रिभ भून और परियाँ दाखनी था उसका कारण भी बद्धि

सगत हो सक्ता ह—कि व गगनकी दुलाई केवल लादकर न करत रह हा । एम चोर-ध्यापारियाकी छत्रानक लिए जो घुडसवार जिन्न उनका पोछा किया करत थे व हें भी चोराकी मय-रफीत कल्पनाकी मद्धि मान लिया जा मक्ता ह । जिन्न गग रातको विमानके घोड चुरा ले जात थे और उन्हें रात भर सरपट दौडानक वाट घना-हारो और मुहस झाग गिरती हुई अवस्थामें वापस रख जाते थ । अबम्मा नहा कि ये जिन्न भी वास्तवमें चार-ध्यापारी रहे हा जिहानि इस अघ विद्रवासका चहुत सुविधा जनक पाया हो ।

किन्तु उस गककी तबोयनके विमानकी कहानीका हम क्या करें, जिसन रातकी नजलेमें ताला ढाल कर पहरपर कुत्ते रिठा लिय थे ! क्याकि रातकी पित्तवाके नीच गोर मुनकर वह जागा ना नोचे खडे जिन्न सरलारन उमम कहा 'तुमने हमारी चौगाया घबारीपर रोक लगा दी ह तो हम दम्भता खात ह कि दुपापा सवारीस काम चल सक्ता ह या नही ?

यह कहकर उसन गककी विमानका पाछपर काठो कम ली और उन हीकता हुआ रागनर त्रिले भरमें दौडाता रहा और सरर उसीका देहरोपर छा गभा । बदि-बाणियासे पूछित गायद इसका निक्कपय पद निकालेंगे कि अगर जिन्न आपक घाड मरक लिए लेजाना चाहें तो उन्हें ले जान दीजिए ।

नियाय झीलने मछुआमें एक और कहानी भी प्रचलित ह । झीलके किनारक नरसलामें परियाँ विहार कर रडो थीं, और नरसलाने अक्षुए तोड कर उनस छाट-छाट घाड बना रही था । एक मछुएन उन्हें देख लिया, और लणकारकर कहा "एक घोडा मेरे लिए भी बना दो । परियाकी अगजाने उस बताया कि घाड ता और नही है किन्तु एक साँ ह जिमका वह चाह तो सकारो कर सक्ता ह । मछुएन मान गया और साँडपर सवार होकर परियाके साथ हो गया ।

परियोंकी अगुजाने उस चनावनी दो कि वह चाह जा कुछ देय मुन आना मुह न छोले ।

रात भर घुंसवार परिया और साड-सवार मटुआ थीलके किनारापर बिचरत रह । भोरमे पहुँचे काफिरा बालिनडरा नतीक किनार पहुँचा तो परियाक घोड अबाबीलाके चण्डकी तरह नदीके पार फाँट गये । मटुएन भी साडको एड दी साड भी पार कूद गया । तब मटुएसे न रहा गया और साडका गला थपकन हुए उसन कहा गावाग । साडकी एसी कूट कभी नही देखी थी ।

उसका यह कहना था कि परियाँ घोर और साँड सब लापता हो गय कवल मटुए राम नदी पार कीचमें आँध मह पड रह गय । नतीका यह भाग अब भी साड-कूट कहलाता ह ।

क्या यह भी मडककी कूदको देखकर पगहा तुडाकर भाग निकलन वाली कल्पनाकी सृष्टि ह ? अग्रजोम नर मँचकको बुल प्राग —साड मडक कहत भी ह ।

उत्सव सम्बन्धी आधार अथ विश्वास अपना अलग स्थान रखत ह । अध विश्वासाकी परम्पराका अनुसन्धान करन हम नही निकल ह कवल आयरी लोक परम्पराम उनके अद्यतन स्थानके कुछ नमून भर दे रह ह । नहा तो त्रिनीती द्वीप समूहके विश्वासाकी तुलना ही लम्ब अनुसन्धानका विषय हा सकती ह ।

ईसाई बरा दिन क्रिस्मस ईसाइयतमे कही पराना ह । (होली भी पौराणिक हिन्दू धर्मसे कहीं अधिक परानी ह ।) रोमिक आक्रमणसे पहले ब्रिटेनमें जा मूर्योपामक डूल्ड बमत थ उनके अयनात्सवका ही ईसाई ह्य क्रिस्मस हुआ । एम रुपान्तरमें डूल्ड उत्सवके साथ रोमिक जातियाका अयनात्सव (गनि-उत्मव) भी मिश्र चका था जब उसपर ईसाई मतन यागक जन्मकी कथाका आराध कर लिया । आधारलम्ब क्रिस्मसके ईसाई उत्सवका महत्त्व बरन पुराना नग ह । उसका परम्परागत अनुष्ठान कमान नामक एक सन्म हाना था जिम गंगा डण्डका एक रूप माना जा सकता ह । एम चक्रवार डण्डका नाम ही कमान था—न मालूम

धर्म की व्युत्पत्ति कहिये ह और फारसी गल वमान स इमका को सम्बन्ध ह या नही ।

वमान व क्षत्रमें प्रतियागा दलामे कितन खिलाडा हा इमकी बाद सामा नही थी न यही आवश्यक था कि दाना दल लगभग समान हा ।

धर्मो गीतकालीन श्रुतु उत्सव अथवा अयनोन्मवका दूमरा अग और भी गचक था । दूसर तिन लाग टोली बाधकर रन पगीके शिकारको निवृत्त थ । रन खजनस मिलना जुलता छोटा-सा पशु होता ह और यहाका किंवन्ताक अनुसार वह 'भगवान्की मुर्गी' होता ह । शिकार करनवाली टोलियामे कुछ लोग विदूषककी पोशाके पहनत थ कुछ पुआर और वकल और कुछ स्त्री-वग धारण करत थ । अत्रिकतर लोगके हाथमे लक्षशशा तलवारें हती थीं । पूरी टालाका रूप कुछ कुछ वमा हा अनुमान किया जा सकता ह जसा कि उत्तर भारतक दहाठोंमे हालक अब सरपर दया जानवाली टालियोंका हाता ह । और कदाचिन दोनाका मूल विन्वाम भा मिलता-जुलता हा रहा । क्याकि इसमें सन्देह नहा कि टालिया में पुरख और स्त्री वग धारी लगाका भाग रना काठकी तलवारा या छडियाका प्रयाग, और भगवानकी मुर्गी व शिकारका प्रतीक, सभा उव रता-मम्बधी आत्मि विख्यामाके प्रतिगिम्ब ह—उवरता भूमिका भा और भूमि-मुता नारीकी भा ।

एसा माननना कारण ह कि सभा धार्मिक पव भूत रूपमे श्रुतुत्तर रह—प्राकृतिक शक्तिया और परिवतना, अथवा कृषि-जावनन कम और उपकर्मोंका शोक और उन्लास उनमें प्रतिविम्बिन हाता रहा । जहाँ प्रकृति का विलास मानवन अनुकूल रहा वहाँ वमन आनन्द मनाया, जहाँ वसा भ रहा वहाँ उमन अपनका सात्वना दा, या प्राकृतिक-वत्साका अपन अनुकूल बनानक गिण उपचार या अभिचार किया—तत्र मात्र और जादू-टान का धारण किया ।

आयरलैंडमें विनाप रूपसे एसा हुआ हो यह बात नहीं। श्रद्धाके विकासका सबन यही क्रम रहा व्वाकि यही संस्कृतिके विकासका क्रम ह। इतना ही ह कि वहाँ अब भी एस अवस्था मिलत ह जिनके सहार विकासकी यह क्रिया देखी और समझी जा सक जसे कि भारतके बहुतसे प्रदेशोंमें भी एस अवस्था मिलत ह। प्रजातन्त्रके साथ समाजका ही नहीं विनासो और श्रद्धाआका भी जो समानाकरण हो रहा ह उसके कारण गोघ्न ही एसी परिस्थिति आ जायगा कि अध्ययनके लिए एसी सामग्री दुर्लभ हो जाव या उसपर ऐतिहासिक पुनर्ग्रहणका आरोप हो जाव। इसका भा एक उदाहरण आयरलैंडस दिया जा सकता ह। वहाँका परम्परागत नव-वप पहली नवम्बरकी हाता था। कटनीके बाद हृषपूर्वक नय वृषि क्रमका उपक्रम किया जाव यह स्वाभाविक ह। इसीलिए वृषि-वपका आरम्भ उत्तर आस्ट्रेलिया हाना सगत ह—क्रमसे क्रम उत्तरी देशोंमें— और व्वाकि यह हर्षोत्सव कटनीके बादका ह इसलिए इसके साथ पुआलके अलावका सम्बन्ध भी स्वाभाविक ह। भारतमें वृषि-वपका आरम्भ हालि कात्सवसे और वही दीपात्सवसे होता ह। वस ही आयरलैंडमें सौएन अथवा पन्डो नवम्बरका नव वर्षोत्सव पहाडियापर अलाव जला कर मनाया जाता ह। किन्तु कथोत्रिक मतावम्बी आयरलैंडसे लडकासे यह प्रान्त पूठनपर कि अन्वय क्या जगय जात ह इस उत्तरपर आन्वय नहीं करना चाहिए कि प्रोटस्टेंट धर्म भ्रष्टाकी ही या जलाई जा रही ह। यह प्राचीन अन्वय विनासपर नय ऐतिहासिक पुनर्ग्रहणका आरोप ह।

हमन धर्म विनासकी गोधूनीकी बात कही थी—आग्नि के सन्तर्भमें जब गोए शहरसे दूर विजलास जगमग डरियामें दुग्नी जाती ह और आँगनमें गायका बन्धाय मोटर रमाती ह तब गोपूजाका कोई जय नहीं गिना जाता ह। फिर भी जैसे आग्नि विनास नय पुनर्ग्रहण हो लत ह वस हा पराना संस्कार भी नय अभिप्राय ओढ़ता चरनी ह।

बीसवीं शताब्दी का गोलोक

वर्ष में मुग़ प्रायः आठ सौ मोर की यात्रा करना है। विजलीके इन्जिनस चालित रग्गाणीक लिए ३७ मोर प्रति घंटेकी औसत रफ़्तार वर्य अधिक नहीं है किन्तु इन आँकड़ोंका उल्लेख यही बतानेके लिए कर रहा है कि आरामसे रल्गाठाम बठ जानके वाक़ इतना लम्बी यात्राकी बात मोचकर समय काटनेके उपायके बारेमें साचना स्वाभाविक हो जाता है। यह तो ठीक है कि नया देश है—मैं बहुत-सा समय बिडकीस बाहर झाँकनेमें बिताऊंगा ही—ओर यहाँ सब रलें विजलीसे चलती है इसलिए घुणकी भाँ चिंता नहीं है। लकिन ब्राईस घंटे बाहर ताकने रहना तो अलम्भय है। इस यात्रामें प्रायः बार्सो घंटे दिनका प्रकाश रहेगा, फिर भी! मैं स्टाकहामसे उत्तर ध्रुवप्रदेशकी ओर दौड़ा ना रहा हूँ मध्य जूनका मौसम है जब ध्रुव मण्डलमें चौबीसा घण्टिन रहता है। स्टाकहाममें प्रायः दो घण्टेकी रात रहती है। लकिन वहाँमें पाँच बजे बकर रात होत न हात ता मैं उम सामाक और निकट पहुँच जाऊंगा जहाँ रात हानी ही नहीं।

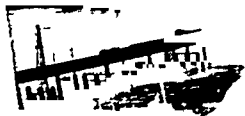
अपन साथ स्वीडनक सम्बन्धमें जा परिचय-मुस्तकें रख ली था उन्हें रगाकर उरुन-गलटन लगा। आरम्भमें हाँ जो आँकड़ न्ये गये थे उनसे जान हुआ कि स्वाडनकी कुल भूमिफा आयस अधिक (५४५ प्रतिगत) बन भूमि है और प्रायः १२ प्रतिगत गाकर भूमि या चरागाठ। देशकी आबाजावा घनत्व प्रति वर्गमाल ४३ जा है। दूध और मक्कनका खपत प्रति व्यक्ति क्रमग २१० सेर और ११ सेर बार्पिक है अथवा औमतसे प्रत्यक व्यक्ति प्रतिदिन ९ छर्ताक दूध और ३ छर्ताक मक्कनका खवन करता है। बीम और पनोर आदि इससे अलग हैं।

स्वाभाविक था कि इन आकड़ों के आधार पर मैं एक आधुनिक गानेकी कल्पना करने लग जिसमें अमस्य काम धनए मुक्ति भावसे बन प्रदत्ता और हरियाणियों विचरण करती फिरती ह और जहाँ-जहाँ उनक पर पड़त ह वहाँ समझिया पनप उठनी ह । मुना था कि सात जावांगके पार जो गालोक ह उसमें कभी अचरा नही हाना । इस उत्तरी स्वीडनमें भी उत्तरायणके त्तिना गानेकी कल्पना करना और भा स्वाभाविक था ।

म कभी पस्तकके पष्ठ उलटता हुआ और कभी बाहरके बल्लत हुए दस्य देवता हुआ अगठ त्तिन तीसर पहर अपन लक्ष्यपर पहुच गया । आविस्कारना टूरिस्ट केन्द्र यद्यपि था यथानाम ही तथापि उमकी सब व्यवस्था विद्यार्थियों हाथमें थी जा उन त्तिना ग्रीष्मावकाशके कारण इधर उधर घूम रह थ और अपन भरण-पापणके लिए ऐसे स्थानकी व्यवस्थामें आवश्यकतानुसार परिश्रमका दान दत थ । बट डार्निंग रूममें जिनमें बटर नहा थ और स्वयं सेवाका ही विधान था जहाँ-तहाँ दूध जोर दीके भर हुए जग रख थ । हाटम रहनेवाले इन्तानुसार पाना दूध अथवा दही पी सकत थ—जत्र जितनी बार जितना चाह ।

आधुनिक गानेकी कल्पना इससे और पुष्ट हो आयी । अकिन जगमें दूध कात्र समय महमा ध्यान आया कि कतनी लम्बा यात्राम त्रिमका कमसे कम आरम्भिक अंग हरियाणके प्रत्यमसे गुजरा था मन क्ये भी गाय या बट नहा देवा । यह कमा गात्रक ह जिनमें गाय अश्य रहनी ह ?

आविस्कारमें ता नों पर बलम स्टाकहाम लौट जानक बात दित्ती स्वातन्त्री यात्रामें मन हम विषयमें जिनामा प्रकट वा थी । यह विषय कसु हमलिए कि गावर प्रत्य मुख्यतया दित्तो स्वीतन्त्र ही ह । जिज्ञासा शान्त करन गयक उत्तर ता वहाँ भा नग भिग । उल्ट मझम हा भारत



ग्याकहाममें सूर्यास्त

[मालार झालक पार नय नगर भवन क्षेत्र दुगान ग्याकहाम [ग्याकहाम] मातारे दाग एहा ह]



मध्यरात्रिका सूर्य, आबिस्की



की परिस्थितिके विषयमें अप्रत्याशित प्रश्न पूछे गए। एकन पूछा 'सुना है आपने देशके गहरामें साँड छूटे फिरत है। मुझे एक मित्रने बताया था कि बनारसमें शहरके एक चौकमें उहाने साँडाकी लडाईं देखी थी। तो क्या यह सच है? मुझे याद आया कि स्वीडनमें ता नही, इन्डमें कही कहीं मैन देखा था कि जहाँ साँड रखा जाता है वहाँ आस पाम लम्बी चौकी चरागाह छोड़कर उसके बाहर मजबूत दीवार या बाड लगा दी जाती है और जहाँ-तहाँ चेतावनीके नोटिस टाँग दिये जाते हैं। एक दूसरे व्यक्तिने पूछा आपके यहाँ सुना है, गाँव गहरामें बल्कि लोकाके घरामें रहती है और चरानेके लिए सड़कोंपर छोड दी जाती है—बल्कि खूद-खूदकर कचरा खाती हैं। क्या यह बात ठीक है? और एक दूसरेने इस प्रश्नके साथ जोड दिया 'लेकिन यह कैसे हो सकता है—भारतमें तो गाय पूज्य मानी जाती है। है न?

जिनासाका उत्तर इन प्रश्नाने नही मिला लेकिन उत्तर कहाँस मित्रगा हमना कुछ सकेत तो मिल ही गया। देशकी १२ प्रतिशत भूमि गोबर भूमि है और वह गहरासे अलग ही रखी जाती है। वहाँ गाँव स्वच्छता और स्वच्छतासे रहती है और वहाँ दुग्धा जाकर दूध गहराम पहुँचता है। यह तभी सम्भव हो सकता है जब कि वितरणका संगठन बहुत अच्छा हो वितरण संस्थाने मुख्य कार्यालयमें और दो एक संग्रह और वितरण केन्द्रोंमें जाकर समझ लिया कि वह संगठन वास्तवमें बहुत विस्तृत और कुशल है। अन्य प्रकारके सहकार-संगठनाकी बात अनन्तर कम्पा लेकिन दूधकी सहकारी संस्थाका उल्लेख यहाँ कर देना अप्रामाणिक न होगा। पूर्वोक्त मध्य स्वीडनकी जिम दुग्ध सहकार संस्थाका केंद्र स्टॉकहोममें है उसका ३०,००० गोशालक शक्त है। इसकी विभिन्न ढरियाँ प्रतिदिन २० लाख लिट्रोंपर दूधका संग्रह करती है। इन्हा ढरियामें दूध-नाशनके बाद दूध योनलामें अथवा मोम-रंगे कागजके पात्रोंमें बाँध करके विक्रीके लिए भजा जाता है अथवा क्रॉम और पनीर निकालनेके लिए प्रयुक्त होता है। इन

डरियासे प्रतिवप १ करोड २० लाख किलाग्राम (प्राय सवा तीन लाख मन) मवगन और १ करोड किणोग्राम पनीर तयाग होता ह ।

वहाँपर अपा देगकी गाधन सम्बन्धी चर्चा कुछ प्रीतिकर नही थी । गाधन सम्बन्धी सुधार और उन्नतिका उल्लेख भी कुछ विगेष अथ न रखता जबकि उस उन्नतिके बादकी स्थिति भी स्वोन्नको दृष्टिस गोचनीय होती । मन ही मन सोचता रहा कि इन प्रानामें कितना अचिन्तित और अज्ञात ध्यम्य ह आपके देगमें साड छट्टे फिरत ह ? आपके देगमें गायकचरा खाती ह ? किंतु आपके यहाँ तो गाय पूज्य मानी जाती ह ।

ठीक ही तो ह । जहाँ मनुष्य गायको नही खाता वहाँ गाय मनुष्यको खाती ह—और मनुष्य अच्छा भाजन नहीं ह इसलिए उसकी खाकर भी भूखी रह जाती ह । गाय क्याकि पूज्य ह इसलिए उसको पालनबाला निधन यकिन उसका भी भूखा मारता ह और उसके साथ स्वय भी भूखा मरता ह और अपनको यही सोचकर सार्वना दे गेता ह कि गायको भूखा रखनके कारण वह पाप भागी नही ह क्याकि वह स्वय भी ता भखा ह । वास्तवत जब तक हमारी गो सम्बन्धी भावनाम परिवर्तन नही होता तब तक स्थितिमें काई सुधार भी नही हो सकता और उस लिंगाम किया जानवाला सब प्रयत्न बाटूकी दीवार ह । गाधनका सबद्धन तो तभी हो सकता ह जब हम उस धन मानें अर्थात भावनाको एक ओर रखकर उन आर्थिक नियमान् अधीन मान लें । वृद्धि धनकी हो सकती ह सुधार सम्पत्ति अथवा पूत्रीना हा सकता ह । मानाजाकी वृद्धि नहा की जाती न सुधार होना ह और मानाजाकी नष्टक कारण कुछ काना तो निरा त्रुविनय ह ।

स्वास् म अत्यन्त माङ्ग-मुयरा गहर ह । इनना साफ कि उसकी मङ्ग आँखामें चम । किन्तु यह कहनमें मङ्ग योग्य सकोच होता ह कि

स्थापत्यकी दृष्टिसे वह सुन्दर भी है। वास्तवमें स्टाकहोमका स्थापत्य नवीन प्रवृत्तियोंके अध्ययनके लिए उपयोगी भले हा हा कुछ-एक विशिष्ट इमारतोंको छोड़कर मुँर प्राय नहीं है। आरामदेह वह ही सकता है क्योंकि वह जिस सिद्धान्तपर आधारित है वह सुविधा प्रधान ही है सौंदर्य प्रधान नहीं। बल्कि वह सौंदर्यका सुविधाकी उपज मानता है। जो वस्तु या उपकरण जिस कामके लिए हो उस कामके अधिकसे अधिक अनुष्ण होना ही उसका मूल्य है — उपकरणवाद (फंक्शनलिज्म) का यह सिद्धान्त सन १९३० के लगभग जमना और फ्रांसिस स्वाडन आया और फिर यहाँ स्वतंत्र रूपसे विकसित होना रहा। नगर निर्माण और स्थापत्यमें इस सिद्धान्तका सङ्गन ता बढित है लेकिन अपनी ओरसे यह स्वीकार करनेमें मुझ काई सकोच नहीं कि अपनी सबन्धन-पद्धतिको अभी तक उसके अनुरूप नहीं ढाल सका हूँ। उपकरणको सुविधाजनक उपकरण अवश्य होना चाहिए लेकिन उपकरण हीन मात्रसे वह मुँर ही जाता है यह अभी तक नहीं मान पाया हूँ और समझता हूँ कि लोक गिल्फे इतिहाससे जो उग्र हरण उपकरणवादी दंत है वे उनकी युक्तियाँका पूरा समर्थन नहीं करते। कोई भी उपकरण और सुन्दर बनाया जा सकता है बिना उसकी उप योगिता कम किये हुए। किसी भी उपकरणको अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है बिना उसकी सुन्दरता बनाये हुए। मैं नहीं जानता कि उप योगिताकी दृष्टिसे स्टाकहोमका पुराना नगर अपने समयकी आवश्यकताओं की पूर्ति अधिक अच्छी तरह करता था लेकिन फिर भी मानता हूँ कि वह नये नगरसे कदा अधिक सुन्दर है। मैं ही नहीं स्वयं स्वीडो लोग भी इस मानते हैं और विदेशीको सगव वह लिखात है। नवीननाक पापक भी, जो नये नगर भवनपर गव करत हैं कमसे कम उनना ही गव पुगानी नगरीपर भी करत हैं।

स्थापत्यके विषय मुँर न हानपर भी स्टाकहोमके अनेक भाग बहुत मुँर है जिसका मुख्य कारण मालार क्षाल है। यह सजिल और धुमाव

दार नील नगरक विभिन्न खण्डाम विभिन्न आकार लनी ह—कही नहर सो सकरी कहा सरावर सो गो और कहा उमसागर-सी पत्रो हुई । बीच बीचम चट्टाना टीठ अथवा वन खण्ड उसके सौंदर्यका और बना देत ह । बन्दरगाहसे एक ओरका तटवर्ती प्रदेश ता सुरक्षित राष्ट्रीय उद्यान बना दिया गया ह और इसम सड़कके आस पास हरियालियाम विश्वर हुए कहवाघर और भोजनालय बहुत ही आकर्षक ह । प्रवासके पहले तिन अपन आतिथयक साथ इस प्रदेशम धूमकर एमे ही एक रस्तरामें भोजन किया था । आतिथयका अपनी नयी जमन गाडी खिलानका भी चाव था लेकिन म सो उसा तमय भावसे बाहरके दृश्य देख रहा था जिसक लिए अग्रजी मुहावरा खरकी गन्ध घुमाना बत ही उपयुक्त ह । रस्तराका नाम लिग्गाउन (नीबुका वाग) ता साथक था ही बरामतके बाहर और अनक माल्चापर सज हुए विद्यामती फूलाका रूप और सौरभ भी रमणीय था । पत्ती और नस्तमम कान्गन और हाइजेजिया—य फल भारतम भी हान ह लेकिन यहा उनका रंग रूप और आकार सभी जोर थ—हाजेजियाक गच्छ तो फूल-गाभिवास भी बत । जोर आस पास पंगर और लोकाकके पे फूठ रह थ—लीलाकके फूठ कुछ-कुछ महानिम्ब (बनायन) के फूलस मित्त ह लेकिन उसस अधिक् सुगन्धित होत ह और उदके अलावा गुलाबा और सफ रंगक भी हान ह ।

अन आतिथयका उल्लेख कर ही किया ह तो दो एक बातें उनके विषयमें और कहूँ । आतिथयक लिए वह तबस्त तो थ ही मन उनके लिए एक समस्या और उपस्थित कर दी थी जिस उहान बड आनन्दक सहज भावस स्वाकार कर लिया । स्वीडिश स्पीयूट नामक सस्याके एक मन्त्री हानके नाम विद्यामि आनवान्त सभी प्रकारके अध्ययनके स्वागत और उनक लिए आवश्यक प्रवर्तका काम वह करत रहत थ । यूनस्कोसे सम्बद्ध हानक कारण मर स्वीडन प्रवासका प्रवर्ध भा उनकी मस्याको सौपा गया था । एमा मस्याके लिए प्रवर्तका एर स्वयं चालित रति सी बन जानी

ह । लेकिन मर बाग्य कठिनाई यह थी कि म उस सस्थाका पहला लेखक-
 अनिधि था । मुझसे पहले जो अध्येता आते रहे, उन सबका र्वि दूसरा
 गिनाआमे थी कोई इस्थानका कारखाना देखना चाहता था तो कोई
 जनविद्युतकी उद्यम्या कोई पूर्वनिमित्त (प्रा उत्रिकटेड) घराका अध्ययन
 करन आया था तो कोई समाज-वल्याणक डानूनाका कोई बागज बनानक
 कारखान देगना चाहता था तो कोई सङ्कार सभका केंद्राय कार्यालय ।
 लेकिन म—म रखवासे मिग्ना चाह रहा था । और वह जभा तक साच
 नहा पाय थ कि मर लिए क्या व्यवस्था उन्हें करनी चाहिए । क्वउ इतना
 उहात किया था (स्वय-चालित शक्ति प्रताप) कि मर समयवस्व
 कुछ लेखकामे भेङकी व्यवस्था कर ग थी । मन उन्हें बताया कि मूनस्को
 क वेग परिसमें भी ऐना ही समम्या उठी थी और इमलिए मुझ कर्न
 १५ दिन अधिक रवा पडा था कि उनक विरोधनामे पूङ्कर अपना काय
 क्रम स्वय निश्चिन कर सकू । उस सूचनामे उह बग मात्पना मिग्ना और
 उनका बोप प्रत्यग हा कुछ हला हाता जान पग । देव स्वग्ग मन यह
 भा मुझा गिया कि मिलनक गिए समान वपका ध्यान रखना उतना
 आवश्यक नहीं ह जितना समान रचि अथवा जिनासाआवा—समानगील
 यसनपु सस्यम । पहले ही दिन यह स्पष्टीकरण हा जानस अनन्तर बहुत
 लाभ हुआ, क्योंकि इम प्रकार म यवेत्र लेखकामे भा मिग्ना सका । बन्कि
 कई दृष्टियामे उनस मिग्ना अधिक गिनाप्रद हुआ ।

पहल दिन मे विद्यापियके एक होलमें ठहरा था—एक छायावागमे
 जा कि प्रोम्पावकासमें विद्यापिया द्वारा हाङ्क कामें बलाया जा रहा
 था । निन्दु दूगर दिन मर लिए दूगरा गह व्यवस्था कर दी गयी । यह
 दूगरा होटल प्राङ्क हाङ्क था—कुठ आठ कमर—और पगडोकी बाग
 पर बनी हुई पाँच मजिलाकी इमारतमें पाँचवीं मजिलपर था । (निचली

मजिदामें एक क्लब और एक रस्तरा भी था।) यह होटल 'लेगकाका' होटल प्रसिद्ध था। कुछ ऐसी परम्परा थी कि स्टाकहोम आनमाले बिनेगी लखरु यही ठहरत या ठहराय जात थ। होटलका खाता दमनपर अनक प्रसिद्ध नाम भुय भिन्ने यह भी जात हुआ कि स्विट्जरग भी कभी व। रह थे।

होटलस स्टाकहोमका और माजार शीलक विभिन्न जगगयाका विह गम दस्य दासता ह। बल्कि अपन छजमे ही में सूर्योत्थस सूर्यास्त तकवा पूरा जाकाग देख सकता था। क्योंकि यह छात्रा इमारतक कोनपर बना हुआ था। परिव्रमकी और माजारके एक पलके आग नगर भवन साध्य भाकागकी पट्टिकाने कारण बन्त अच्छा लगता था।

हाटल पहाडकी ढालपर था पांच मजिदों उतर करके समतल भूमि पर नहीं पहुचत थे बल्कि वहासे और बहुत नीच उतरकर सडक अथवा ट्रामकी लाइन मिलती थी। पटरीस उतरनम इमम प्राय दस मिनटका समय लगता और आती बार करी चलाई चली पत्ती। इसलिये नगरके इस खण्डमें आनन लिए बाहर एक सावजनिक लिफ्ट लगा हुआ था जिससे प्राय २० फट सीध चले उतर सकत थ। यह लिफ्ट उपयोगी ता था ही नगरक लिये एक विगप आकषण इगलिये भी था कि ऊपरी खण्डसे पत्ती तक बना हुआ पत्त स्टाकहोमका विहगम दस्य दमनने लिये उत्तम स्थान था। सूर्योत्थ और सूर्यास्त नया और पुराना नगर बर्रगाल और आन-जानवाज जहाज नाच दौलता और बने खाती हुई टाम और माटरें समा मनीस दला जा सकती थी। म आत जात स व इस पलका मन्ड पर जक लगे लागाका दम्बा करता था। इतना ही नया आन जानवाला की सुविधाक लिये पत्तर हा एक कटवापर था जा वहा खन्खन् या छोटी कुर्नीपर बिगारर चाय-काफ़ा और उसागर द मवता था।

एन पत्त और एग लिफ्टकी एक और भी उपयोगिता थी जिमका

पना लिफ्टकी एक चालिकाम ठगा । (अधिकतर स्त्रियाँ ही लिफ्ट चलाती
या बबल रातक तोमर पहरकी ड्यूटी पुरुष करते थ ।)

चालिकाए लिफ्टपर आन-जानवाल प्रत्येक ब्यक्तिका चहरा बडे ध्यानसे
देखा करती था यह म लक्ष्य कर चका था । स्वीडन जसे विनमगाल दग
में एमे देख जाना कुछ अममजमकर भो था । एक दिन साँनका लिफ्टके
ऊपर जानपर पाया कि लिफ्टका तत्काल प्रयोग चाहनवाले ब्यक्ति वहा
नहीं ह, ता चालिकास छोटी दर बानबोन करना रहा । यह पहले भी सुना
था कि आत्महत्या करना चाहनेवाले प्राय वहाँ धात हैं—२०० फुकी
यह बूद आत्महत्याका अमाध उपाय ह । चालिकान बनाया कि वह हर
चहरको इमीलिए ध्यानमे देखनी ह—कि को यह आत्म जिधामुक्ता चहरा
ता नगी ह ? कभी कभी यह भा सोचता हूँ कि अगर कोई आत्महत्या
करना ही चाहगा तो अब क्या उस म रोक्वु गो ?

इस अर' पर मरा ध्यान टिक गया । मन पूछा ' क्या पहल भी
आपन कभा किसाको रोका ह ?

चालिकान बताया कि एक बार एक ब्यक्ति उसके सामने ही, बदनक
लिए मुडरपर चढ रहा था तो उमने पीछमे उमकी कमर पक' ली किन्तु
भर-साक बाधा देनपर भी वह उस कूतनसे राक न सकी—अकड छुटाकर
वह गिर हो गया । बाधाका केर' इतना ही असर हुआ कि जहाँ कूतनसे
वह लिफ्टस दूर कुछ ध्यानम गिरता वहाँ कूतनका बजाय गिरनके कारण
व' अधबाव बिजलीके तारके एव जागपर गिरा, और फिर तारके टूट
जानम नाचे—किन्तु कम वेगम । फरन वह तत्काल मरा नही—उस
अस्यनाक से जाया गया, जहाँ टूटी हुई हडिया और बिजलीमे जल जानेके
धावाके कारण आठ दिन मरानिक कष्टने बा' उसनी मरतु हुई ।

"तबस म हर चहरको बड ध्यानमे देखती हूँ । इसलिए नहा कि जान
लू कि यह आत्मी मरना चाहता ह या नहीं कब' इगलिष भा कि मैं ममस
छू कि इमक मरना चाहनपर मुसे बापा दनी चाहिए या नहा ।'

थोड़ी देर हम दोनों चुप रहे। फिर उमने माना स्वगत बड़ा 'काई कसे जान सकता ह कि दूसरका दुःख कितना गहरा ह ? और जानकर कसे उसमें दखल दे सकता ह ?

लिफटका प्रयोग तो म इसक बाद भी बहुत दिना तक करता रहा। लेकिन चाणिकाकी वही अन्तिम बात मर मनमें बार-बार उठ्ठि होती रही—विशेषकर उसका उत्तराद्ध— और जानकर कसे उसमें दखल दे सकता ह ?

क्याकि यह दखल न देना स्वीडो जीवन दगनमें एक महत्वका स्थान रखता ह—उनके स्वातन्त्र्य-भूजनका एक अंग ह। दखल न देनेका दगन परिसमें भी पाया जाता ह। अणवाद रूपी किसी किसी व्यक्तिम वह मानवीय सहानुभूतिका रूप भी हो सकता ह और म जानता ह कि परिसमाम भी लोग ह जो बिना एक-दूसरके जीवनमें दखल न्थि एक दूसरकी सहायता करत ह। लेकिन परिसका दखल न देनेका दगन मुख्यत समस्यनाकी अनुपस्थितिका दगन ह—मानवके प्रति मानवकी उपासीनताका। स्वीडनम यह दोनोंसे अलग आधारपर खड़ा ह—मानवन प्रति मानवके सम्मानपर व्यक्तिकी अलग सावभौम सत्तापर। इस विषय दृष्टिकोणक अन्तक उपाहरण सुन भी और देख भी। लेकिन इन सम्बन्धक अपन कुछ अनुभवका वर्णन अठगसे करना ही अच्छा होगा।

एक छान कस्बक बाहरी महलके एक सड़क सड़कके किनार दीवार पर टगा हुआ लटरबक्स। सहसा आँसु लटरबक्सपर नहीं उसके नीचे कुट्टिम भूमिपर टिक जाता ह। वहाँ एक चिट्ठी और उसके ऊपर कुछ पत्र रखे हैं। यिन्ति समयमें आ जातो ह बिना चिट्ठीकी चिट्ठी और पत्रे कम विचारक साथ रख गये ह कि छानिया स्वयं टिक लगाकर चिट्ठी उठावगा।

राजधानीकी टामगाड़ी । पिछल द्वारसे सवारियाँ चरती ह अगले दो गारासे उतरती ह । क्रमग आग बरती हुई व वाचम बठ कडक्टरसे टिकट ली जाती ह । भीड बहुत ह प्रगति धार हो रही ह कुछ लोगाको तरदी उतर जाना ह—व टिकट कसे लेंग ? अचानक दीखता ह उतरनके द्वाराक पाम छोटी छाटी पटियाँ लगी हुई ह—लग उतरत हुए उनमें पस डालते जात ह । पटियापर लिखा ह— आपको टिकट लेनकी सुविधा न हुई हो तो किराया यहाँ डालते जाइय ।

एक मामली स्थान । आप गाढास उतर ह । मध्यवित्ती भारतवासी ह हमलिए प्राय आवश्यकतासे अधिक असवाय रकर यात्रा करनके आदी ह यद्यपि हमना सीख गय ह कि बिस्तर ले जाना आवश्यक नही ह । कुलो कही दीखत नही । आप बगमें एक बडल और दोना हायामें एक एक मून्नेम तोलत ह कि एक मपर स्वर कहता ह— एक मुझ दीजिए— और आपक कुछ कहनसे पहल एक मुरुप सुवग व्यक्ति आपक हायसे एक मूटकेस ले लेता ह— बस तक जावेंग ? बसपर पहुचकर बह आपको धयका दनका अवसर न देकर कहता ह— हमार दगमें आपका प्रवास सुवग हा यह मरी हार्तिक कामना ह —और चल देता ह ।

एक और स्टेशन । रातके ग्यारह बजका समय थोडी देर बाद आपकी गाढा आनवाली ह । आप सून प्लेटफ्रामपर टहल रहे ह कि अचानक देखते है जिम होटलमें आप दो तिन टहर थ उसीमें टिके हुए आठ-दस स्वीडा व्यक्ति आपकी ओर आ रह ह । क्या य भी उसी गाढास जानवाले है या किसीका लन आय ह ? नही य सब आपको विना करन आय ह । आप बाहरस आय हुए हमार अतिथि ह पराय दगमें जाकर यह अनुभव करना कि हम अजनबी या पराय ह अच्छा नही लगता । हम चाहत ह कि आप इग दगको अपना घर समझें और आपका गाढापर पहुचान आय ह— इग कामनाक साथ कि आपका हमार मध्यमें आना फिर हा । रातक ग्यारह बज थीर बिना किसी सस्याकी प्ररणाक निजा सौजयका यह

गिष्टाचार । अतिथि-सत्कारकी उर्वर परम्पराएँ कई देशों में हैं और अतिथि की अतिरिक्त परिभाषाएँ भी कई जगह मिलती हैं । सम्पत्तियों की अनक परिभाषाएँ हैं और सस्कृतिकी तो और भी अधिक । किन्तु सम्पत्तियाँ यदि यकीनकी स्वतन्त्रताका निर्वाह करती हों एक सुगठित और सुयवस्थित समाजके रूपमें रहनेकी कलाका नाम हैं तो जिन देशों में ये छाट-छाट किन्तु स्मरणीय अनुभव मध्य हुए वह सत्कारका कर्तव्य सत्त अधिक सम्पन्न देश हैं । और अगर मानवका वह गौण सत्कार जिनसे वह सहज और निरायाम भावसे वसा आचरण करता है जो दूसरे मानवके लिए सुखकर प्रोत्साहन या कल्याणकर है और इस दूसरेपर आज्ञा भी नहीं बनने देता—अगर ऐसा गौण सत्कार सस्कृतिमें कुछ भाँ महत्त्व रखता है तो निस्सन्देह स्वीडन एक अत्यन्त पुष्ट सस्कृति सम्पन्न देश है ।

य घटनाएँ या असाधारण नहीं हैं किन्तु उनका किमी देशके साधारण दैनिक जीवनका अंग हाना ही उन्हें असाधारण बनाता है । नहीं तो इन्के दुक्के नातिवान या गौरीन यकीन किस देशमें नहीं मिलते ? स्वीडन में और भी भाँकेका बात यह है कि नतिक मध्यका निर्वाह आधुनिकतम वैज्ञानिक प्रगतिसे साथ साथ होता है । औद्योगिक उन्नति आर्थिक सम्पत्ति विस्तृत व्यापार व्यापक शिक्षा—अन्य साथ साथ विनयका विकास होता है और समाजके हर स्तरपर होता है । या स्तर वही इतना नहीं है जितना भारतमें या दूसरे अनक पूर्वोक्त अथवा मध्यपूर्वो देशों में क्योंकि स्वीडन साथ ही सत्त अतिक समाजवादी देश भी है । यहाँ बाँपर उनका मध्य आग्रह मध्य ही न है व्यवहार परा है । यहाँ अत्यन्त विकसित व्यक्ति-स्वातन्त्र्य और उनसे साथ-साथ सत्त व्यापक सामाजिक सहयोग—यही स्वीडनका अचरित है और यहाँ मानव जातिके भविष्यके लिए आशाका सत्त ।

किन्तु देश अथवा समस्त देश साधारण अथवा जातिगत चरित्रको उनकी भौतिक नियतिसे परिणाम मान लेना एक प्रकारके नियतिवादका जन्म

दना है। एसा भौगोलिक नियमिवाद मुझे अमाय है। किंतु स्वीडो चरित्र को विशपनाश्राको उसकी शैगल स्थितियाये सम्भमें अवगम देखा जा सका है। विग्न आवागीवाले एम प्रेशमें, जहाँ बनी मरावरा और पवठाका बाहुम है जहाँ गर्मी जाणमें तिन और रातका अंतर इतना अधिक हाता है कि कुछ महीन तिन का नही बटता और कुछ महीने रात माना अन्तहीन ही जाती है जिसमें बहुधा गाँव या अकेल घर महानो तक बफस घिर बयना दक्कर बाकी ससारस अग हा जाते है बसने वाले लोगका एसा स्वभाव पाना कुछ अद्भुत नही है। अलग अकेले रहनका अम्यासी अगर चितनगील, अल्पभापी या मनुभापी एकांतप्रेमी और दूरमरक काममें हस्तक्षप न करनवाग हो जाता है तो क्या आश्चय है ? स्वीडनमें एक ही झीलक एक ही घाटपर सैलानिया द्वारा मछलके गिकार के लिए या दो एक तिनकी छुग बितानके लिए कोई मालिक भकान दो चार बगने बनवाता है तो इसका ध्यान रखता है कि वे एक-दूसरेको न दोरें एक-दूसरेके परित्यम एकान्तमें अथवा मनोवाछित ढगस समय यापनम बाधक न बनें। यह नही है कि (लारेंमक गणम) सम्य मानवको मानवकी वू असह्य हो गयी है। बल्कि यह इस बातका प्रमाण है कि एसा नही हुआ है और न साधारण स्वीडो चाहता है कि कभा हा। इन्हमें एक बार दना था गमियोंमें अपने अलग ढगसे और हाटअके यातावरणमें मनन रहकर छुट्टियाके कुछ तिन निजा पारिभारिक वातावरण में बितानके लिए लाग अपनो-अपनी घाटराके पीछ बादवाँ ठके जातकर निकसे, तो एक ही छापर-सपर एक हा विगाल करावान-भाक म ६००० टके पक्तिर्या बांधकर खड हो गये। पाकमें मोटर और टा खड करनकी जग थी प्रत्येक तिन रिजलीका बनवान मित्र सकता था और पानी आन्विकी ध्यस्तथा थी। अपन अन्वितय ढगम निर्वाय रूपसे छुट्टी बितानके लिए एक ही मगनमें जुटे हुए ६००० पक्तिवद्ध परिवार। मानी छुट्टी बितानके युद्धके लिए महाप्राणमें सेनाए जुटी हा।

यह कहना इंग्लडके गाय दाहरा अयाय होगा कि प्राणमें जन् हुए सब लाग वास्तवमें एसा अवकाश संग्राम चाहत ह । इंग्लडकी आवाजी कही घनी ह, और वहा वमे एकान्त विश्रामके लिए स्थान भी नही ह जसा स्वीडनमें सम्भव ह । किंतु जो कुछ सम्भव ह उसका परा उपयोग वहा नही होता जब कि स्वीडनमें जा यकिन अवकाश या विश्रामके लिए दौडाया ह वन् कवल अपन कायस्थान या परिचित परिवेशसे दूर नही जाता बल्कि जन मानस दर जाता ह ।

शिक्षित और सम्पन्न देशमें एसा एकान्त प्रेमसे विनियतया जब उस सम्पन्नताके साथ साथ स्वतंत्र वनानिक चिंतन कई विन्यासाका दुबल कर देता ह इसकी सम्भावना रहती ह कि यकित एक आध्यात्मिक नूयका अनभय कर । इसक दुष्परिणाम स्वीडनमें देख जा सकत ह । एकान्तमें और जति मात्राम मद्य सवन वहाकी एक सामाजिक समस्या ह । मद्यके कारण ही नही अन्य कारणासे भी एकान्तसे धिर हुए कुछ यकितत्व वहा विकृत हो जात ह । यह गायद भौतिक समष्टिका अनिवाय दण्ड ह । किंतु इन विकृत परिणामाको छोड भी दें तो भा उभित होता ह कि स्वीडी लोगांम कही गहरम एक उत्सा अथवा चिंतनशील निराश्रयका भाव होना ह । कदाचित इमी अति गम्भीरता अथवा अतरोमय उत्साहीके कारण दक्षिणी जातियाके योग उन्हें मनहूस या बद्ध मानने ह । उत्साहरणत प्राममें प्राय ही स्वीडियामें विनोदकी कमाकी चर्चा होता ह । फ्रांसका साहित्यकार जहाँ बात बातमें सत्य दूसरका चमत्कृत करन प्रभाव टाटन वाचिक और आंगिक अभिनय द्वारा मध और अभिभूत करनमें यत्नशील रहता ह स्वीडनका उत्सव वहा ग्रहण करन चुपचाप बठकर या सागर-तट अथवा वन-वृष्णमें घूमन एण चिंतन करनका अभ्यासी ह । फ्रांसीसी कलाकार एक कुण्ड नन् ह अविश्रान अपन कराय दिलाता ह और आपका आराम प्रणमा चाहता ह । वन् सतत ह कि आप उसने अभिनय-बीजक कायन्त । उमक लिए यन् माना वन् पराजय होगी

कि वह जा पाट अंग कर रहा ह उसे आप उसका सच्चा रूप समझ लें ।
 यह दूसरी बात है कि जा अमितता माते जागत क्या भी रगमच छाडता
 हा नये उसका सच्चा रूप आप क्या माते । किन्तु यही तो फासीसो
 बगवार आपको बनाना चाहता है वह आपके सामने बटकर अपना रूप
 —अपने अनेक रूप देखता है आपको सम्बोधन करके अपनी बात—अपनी
 अनेक बातें सुनाता है । अंगक विद्वद् स्वीछा अंगक कम बागता है अपने
 गम्भारतम किन्नामा और भावताआका चर्चा प्राय नये करता किन्तु
 जद करता है ता गिगदन निगल भावस । आपके सामने आकर वह आपका
 बात सुनाता है सुनाता है यदि सहमत नया हाता ता आपका बात गाठ
 बाँध कर रख लेता है कि फिर एकान्तमें किमी सील-धरनके किनारे बठ
 कर साचगा ।

और भठकी बात यह है कि फासका बौद्धिक यक्ति ही उत्तरक
 साहित्यकारको बुद्ध और फनदूस समपता ही है उत्तरी साहित्यकार भा
 सहज ही इस मूल्यांकनको स्वीकार लेता है । मुझसे एकाधिक बार स्वीछी
 लेखकान एसा कहा । फामका एखक प्रतिभागाली है हम लोगमें ती
 काई प्रतिभा नहीं है । वो थार नाट विलिएट लाक द फेंच वो थार
 डल पीण्ड ।

किन्तु आम्बन्तर विवचनको छात्रक सतहका ही देखें । स्वीडनमें
 गिगाका प्रसार आचयजनक है । गिगा सभा स्तरापर निगुत्व मा लग
 भग निगक है । कई गिगामें प्रारम्भिक और उच्च विद्यालयोंमें भी
 विद्यापिपासो दोपहरका भोजन स्कूनी थारसे बिना मूय गिया जाता
 है—बिना इसका विचार किय कि किय विद्यार्थीका आधिन म्यिति कसी
 है । गन १९५५ में सात लाख विद्यापिपाका एसा बिना मूख्य भाजन
 पिण्डा रला । (स्वाडनका कुछ जन-मुख्या सात कराड है)

विश्वविद्यालयों में शिक्षा राज्य की आरस निगुल्क दा जाती ह किन्तु राज्य विश्वविद्यालयों का नियंत्रण नहीं करता और व अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के कारण अत्यन्त सतक ह। बल्कि विश्वविद्यालयों की स्वतंत्रता अध्ययन स्वातंत्र्य और विचार स्वातंत्र्य के आन्दोलन का ही एक पहलू ह। स्वाइनक प्राचीन विश्वविद्यालय सत्रहवीं शती में स्थापित हुए और उस समय घम शिक्षा उनक पाठ्य क्रम का अग था ही। अनंतर घम विश्वास सम्बन्धी आन्दोलन के साथ-साथ अध्ययन और अनुशीलन की स्वतंत्रता का प्रश्न जड गया। विश्वविद्यालयों की स्वतंत्रता का आन्दोलन इसका एक पहलू था। आचार्यों की नियमित सभ में राज्य और विश्वविद्यालयों का एक ऐतिहासिक संधि भी हुआ जिसमें बानिज्य अनुशीलन की स्वतंत्रता का सिद्धान्त जयो हुआ। स्वीडा समाचार-पत्रों की स्वतंत्रता भी यहाँ कानून द्वारा सुरक्षित ह। स्वीडिया का दावा ह कि इस स्वतंत्रता को सुरक्षित रखन का सबसे प्राचीन विधान स्वीडन का ह। वर्तमान कानून में भी किसी प्रकारक नियंत्रण का निषेध ह और युद्ध-काल में भी समाचार-पत्रों पर सेंसर नहीं नियुक्त किया जा सकना।

विश्वविद्यालयों में शिक्षा निगुल्क होनी ह इसका अर्थ यही ह कि विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग से कुछ नहीं लेने। किन्तु प्रत्येक विद्यार्थी के लिए किसी विद्यार्थी संगठन का सदस्य होना आवश्यक होना ह और य संगठन चलाए लत ह। एस संगठन के नाम अधिस्तर प्राणिक हात ह और व राष्ट्र कहलत है। विद्यार्थी-जावनक अनक पहलू इन संधि अथवा राष्ट्र का सहकारा अनुशासन में रहत ह। संध ही छात्रावास चलाए लत ह और विद्यालयों के रहन की व्यवस्था करत है। शिकारी आधार पर विद्यालयों के काम का चाठ का दुकारें चलाए लत ह। विद्यालयों के लिए चिकित्सालय चलाए लत ह, नौकरा शिल्पक के लिए उद्योग करत है और यहाँ तक कि सन्स्थापक कर रहन पर उहे वतियाँ मा दन ह अथवा बारा धामा की व्यवस्था करत ह। और य छात्र-संगठन स्वयंसेवा और स्वायत्त हात ह। विश्व

विद्यालय उनमें कोई हस्तक्षेप नहीं करता केवल भांगे जानेपर परामा
दनकी व्यवस्था कर दे सकता है। उगाहरणतया सहकारी सम्याकी चलाने
के लिए किसी अथ गास्त्रज्ञता आवश्यकता होनेपर विन्विद्यालयसे इस
सम्बन्धमें सहाय्य मागा जा सकता है।

विन्विद्यालय सभी प्राप्तावकागके लिए बन्द थे कब उपसालाने
प्राधान विन्विद्यालयमें जाना हुआ—वह भी इसलिए कि कुछ लेखकासे
मिलना था जो स्थायी रूपमें बनी रहत थे।

किन्तु सिगनुनाका लोक-संस्कृत महाविद्यालय खुला था। बन्कि
प्राप्तावकागमें ता वहाँ विद्यार्थी इच्छल हाती है क्वाकि अवकागमें बाहरके
लाग भी बन्कि अनिधिगागमें जाकर रहत हैं। उपमाकास्य म सिगनुना
जाकर उमी अनिधिगालमें ठहरा। मह सस्था लोक-संस्कृतिक अध्ययनके
लिए और शक-नग तथा गक गिल्पकी रीतियाके पापण और प्रचारके
लिए काय करता है। यहाँकी मायक मण्णलीसे मैने अनक स्वीडी गकगीत
मुन और कुछ प्रीतपर रका करके साथ ग आय्या। उन त्तिना अय
नोनव (मिट-नमर फुस्तिवल्) भी था इमलिए स्वीडी लोक-नय
भी देखनको मिल जिसमें न केवल विद्यालयके छात्र और छात्राले
सम्भिलि हुना थीं बन्कि आगगागकी बस्तिपाके अनक कृपक और नाग
रिक् भी। प्रतिग्नि विधियन इट्ट-ध्वज (म-नोड) की प्रतिष्ठा हाती थी
और उमके आगदास सिग्गोबद्ध नाम होता था। त्त्याके विभिन्न प्रकार
थे। मण्णलाकार नय हागर भा कुछका नटन (बास) कहा जाना था
और कुछका यन (धाक)। सार यूरोपमें एके अनेक लोक-नय प्रचरित
हैं तिनको किक कहा जाना है—वहें विगिण करवक लिए उनक साथ
विदेगाका नाम जुडा हुना हा सकता है। मरा अनुमान है कि भारतमें मा
एसा ही परम्परागत अकर एा— गट अयश अट धानुगे बने एए
विभिन्न नाम क्वाविन् इम नका शूविन करत है कि कुछ नृत्य अभिनय
प्रधान थ और बाकिर तथा आणिक अभिनयक द्वारा किमी पका ध्याख्या

विषयविद्यालयों में शिक्षा राष्ट्रीय आरम्भ निश्चित करता है किन्तु
 राज्य विषयविद्यालयों का निश्चित नहीं करता और वे अन्तः स्वतंत्रता
 तथाकथित चारों ओर अत्यन्त मुक्त हैं। यदि विषयविद्यालयों का स्वतंत्रता
 अत्यन्त-स्वातन्त्र्य और विचार स्वातन्त्र्य अत्यन्तता ही एक है।
 स्वातन्त्र्य प्रदान विषयविद्यालयों में स्थापित हुए और उस
 समय घम शिक्षा उत्तम पाठ्य-क्रम का अंग था। अनन्तर घम विषय
 सुव्यवस्था अत्यन्तक माध्यम-माध्य अत्यन्त और अनुशासन का स्वतंत्रता का
 प्रदान करता था। विषयविद्यालयों का स्वतंत्रता अत्यन्त एक ही एक
 पक्ष था। आचार्योका निश्चित रूप से राज्य और विषयविद्यालयों का एक
 एतिसामिक मध्य भा हुआ जिसमें वित्तिक अनुशासन का स्वतंत्रता का
 सिद्धान्त जया हुआ। स्वातन्त्र्य समाचार-पत्रों का स्वतंत्रता भा यही कानून
 का मुद्रित है। स्वातन्त्र्य का दावा कि स्वतंत्रता का मुद्रित
 रखन का सबसे प्राचीन विधान अत्यन्तता है। वर्तमान कानून में भा किसी
 प्रकारक नियन्त्रण का नियम है और मुद्रित-कार्य में भा समाचार-पत्रों पर
 संशय नया निश्चित किया जा सकता।

विषयविद्यालयों में शिक्षा निश्चित करता है किन्तु अर्थ यह है कि
 विषयविद्यालय विद्यालयों में कुछ नहीं है। किन्तु प्रत्येक विषयों में शिक्षा
 विद्या विद्यार्थी सुशिक्षितता सम्पन्न होना आवश्यक होता है और य सुशिक्षित
 चला है। एतु सुशिक्षित नाम अतिन्तर प्राप्ति का है और व
 राज्य करता है। विद्यार्थी जीवनक अनेक पक्ष में मध्य अथवा राष्ट्रीय
 सरकार अनुशासन में रहते हैं। मध्य या छात्रवास चला है और विद्या
 यों में रहन का व्यवस्था करते हैं सरकार आचार्य विद्यालयों के काम
 का चला के चुकने चला है विद्यालयों में शिक्षा विद्यालय चला है
 नौकर शिक्षक शिक्षा उद्योग करते हैं और यही ता कि सम्पत्ति
 बका रहन पर उन्हें वित्तियां भा दत्त है अथवा प्रकाश समाज का व्यवस्था
 करते हैं। और य छात्र-सुशिक्षित सम्पत्ति और स्वातन्त्र्य हात है। विषय

विद्यालय जामें कोई हस्तक्षेप नहीं करता केवल मांगे जानेपर परामर्श देनकी व्यवस्था कर दे सकता है। अन्तर्गततया सहकारो सस्थाको चत्रान के लिए किमी अय शास्त्रनकी आवश्यकता होनपर विश्वविद्यालयसे इस सम्बन्धमें सहयोग मागा जा सकता है।

विश्वविद्यालय मभी प्रीष्मावकाशके लिए बन्द थे केवल उपसालाके प्राचीन विश्वविद्यालयमें जाना हुआ—व भी इसलिए कि कुछ लेखकासे मित्रना था जो श्यायो रूपम बहो रहते थे।

किन्तु सिगनुनाका लोक-मस्वृत महाविद्यालय खुला था। बकि प्रीष्मावकाशमें तो यहाँ विशेष हलचल होती है क्यकि अन्तर्गततया बाहरक लोग भी वहाँकी अतिविशालामें आकर रहते हैं। उपसालास म सिगनुना जाकर उमी अतिविशालामें ठहरा। यह मस्या लोक संस्कृतिके अध्ययनके लिए और लोक-कला तथा लोक शिश्यकी रीतियाके पोषण और प्रचारके लिए बाय करती है। यहाँको गायक मण्डलीमें मने अनेक स्वीडी लोकगान गुन और कुछ फीतपर रकाड करने साथ ले आया। उन मिना अय नोल्मब (मिह समर फम्बिल) भी था इसलिए स्वीडी लोक-नृत्य भी देखनको मिले जिसमें न केवल विद्यालयके छात्र और छात्राए सम्मिलित होती थीं बल्कि आसपासकी बस्तिमान अनेक बुधक और नाग रिक भी। प्रतिदिन विधिवत इन्द्र ध्वज (मे पोल) की प्रतिष्ठा होती थी और उसके आसपास पिण्णोबद्ध नृत्य होता था। नृत्याके विभिन्न प्रकार थे। मण्डलाकार नृत्य होनपर भा बुछवा नटन (डाम) कहा जाता था और बुछको अटन (बॉक)। सारे यूरोपमें एष अनेक लोक-नृत्य प्रचलित हैं जिनको बकि कहा जाता है—उहें विशिष्ट धरनक लिए उनक साथ विदेगका नाम जुडा हुआ है। मरा अनुमान है कि भारतमें भा एगा ही परम्परागत आनर रहा—नट अपरा अट धातुग बन हुए विभिन्न नाम बन्नाकिन् इम भेक्का सूचित करते हैं कि कुछ नृत्य अभिनय प्रपात थे और वादिक तथा आंगिक अभिनयके गरा किमी पदवी व्याख्या

करते थे जयकि कुछ दूर नये गीतन साथ जानकर भा सहज जानना भिन्नानिचे नृत्य होत थे। म नया जानना कि या अनुमान कर्ता तह तव्य संगत ह न यही कि भाषा-तत्त्वक विगात इतर बारम क्या बहेग किंतु इतना अत्रय ह कि एग प्रकारका भेग एक-ननकर मनमें भा रहा और नास्त्रीय परिभाषा करनशाले नाट्य-शास्त्र विगारणाक मनम भी।

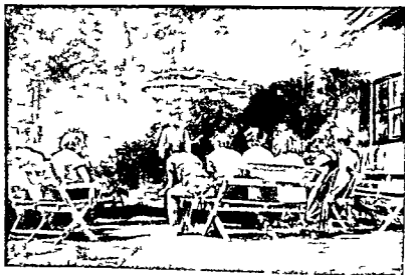
दूर देशीय अतिथि हानक नाते मुग सस्या दतनको पूरी मुविषा ता दी ही गयी प्रतिदिन भोजनके समय अध्यक्षका मजका याज्ञा करनका सम्मान भी मिला। पश्चिममें भोजनका समय ही वातालापका उत्तम समय माना जाता ह इमलिए यह अवसर मर लिए विगप उपयोगी हुआ क्याकि प्रतिवार अध्यक्षके साथ दो एक और लेगक-अतिथियासे भी बात चीत हो जाती और पश्चिमकी साहित्यिक और सास्कृतिपरम्परा अथवा उनकी विगप समस्याआपर कुछ नया प्रकाग मिलना या किमी नय दष्टिकोणसे परिचय होता। मध्य-कालमें धम और कडाका जो सम्यथ विच्छा हुआ ईसाई चचन कलाकारका जा वाग्धार कर लिया उसके परिणामापर बहुत चर्चा होती रही। अत्रय म्त्त्यका द् विवास था कि कलाकारको अविश्वास्य मानकर कडाक प्रति उगसान हो जानम चचन जो भूल की थी उसके कुप्रभाव दोनापर पड और अब धम-सस्याआको फिरसे यह उद्योग करना चाहिए कि उनम और कलाकारामें सामीप्य हो— धम-सस्याआको रचनागीलताका याग मिने और कृतिकार फिरसे श्रद्धासे अनुप्राणित हो। निरो श्रद्धाहीनताको म भी कोई रचनात्मक गविन नहीं मानता हूँ यद्यपि बज्ञानिक जिगामु-बद्धिका कायल हूँ। फिर भी अध्यक्ष महोत्त्यको भावनाका सम्मान करत हुए भी म उनकी याजनाको व्यावहारिक नहीं मानता था—भारत से देगमें भा नहीं स्वीज्ज नसे देगका ती बात ही क्या। किंतु एसे वातालापका उद्-य सहमति नहीं होना विचारात्तजन ही होता ह।





स्टाकहोममें एक काव्य-गाड़ी

[फरसत हुए नीयें फिर कमरा देखक जन लख्खडाड पाल गनस्टट और लाम फोर्गेट]



प्रीधम-कालीन विद्यालयमें

[मार्तिन आल्वड गारा सचाष्टिन विद्यालयम भारतक विषयम लखकका माह्यात]

लेखक, चिन्तक, अध्यापक, सभी ता प्रीष्मावकाशके गिण गृहमे या अपन मातृगण निवासोसि दूर भाग हुए ये—बाइ तदन्तमे बाइ सागरक किनार बोई मछेरके पोपडामे ता बो गहरियोके काठ-बैंगामे । चार निनाका चाँना मे हा पूक आवपगस सुव राग एम म्पानोंको चल् गर थ जहाँ तिन मर (और कितना ग्वा तिन !) बछ्छ् ददवा मान्मच्छत्रा तरह धूममे पन्-पन् तिन का जा सुके । क्योंकि फिर लन्नी अथग रातमे समीको अपन-अपन गृहर लोत्वर काममे ग्य जाना हाग । यादना घनावर किमोस मिलना सम्भव नहीं था क्याकि किमात्रा पता पाना भी कठिन था । बाइ अचानक हा मित्र जाय ता मित्र जाय । एम हा केन्द्रामे जाना उपयाग हा सकता था जहाँ उस समयमे लागोके हानका हा सम्भावना हो । सिगतुनाव बा दक्षिण स्वाहनव मुन्व नामक स्थानमे हाकिनमान (गण्ड-नामा) को सुस्थामे जा पडुवा जहाँ मर पुरान परिचित मारिन आन्वुड समान विज्ञानके एक साध-कद्रवा सचात्रन करत है और एक प्रीष्म-बालीन विद्यालय भा चरात है । मारिनस मरा परिचय प्राय बीस वर्ष पहलस था जे वह भारत आय थ और कच्छतमे मेर साय रह थ । वह मुन्व उत्तरा इन्डिक निवासी थ किन्तु उनर पिता यनी अथेञ्जा गिराक हाकर आय थे और यनी वस गय थ । इसी कच्छमे उनकी नाबेयी परनी श्रीमती इगा आन्वुडस परिवार हुआ थार प्रवासो चना लखक और गिराक हाङ्ग लु-यू तथा उनकी जमन पनीस भा—और अतर इसमय विद्यार्थी युवकों और युवतियांसि भा और एक गवषा अतीपन्वारिक गिरा पदनास भी । मारिन तथा विद्यार्थियोंके अनुरोधपर विद्यालयमे दो-एक मापण भा लिये और कहानियाँ भा मुतायीं फिर मारिनके अध्ययन कक्षमे बन्कर उनर भारतक तथा अपन स्वान्तर अनुभवोता विलिख्य करता रहा ।

लोटार फिर स्टारकोमक अपन परिचित हात्तमे स्थान पाया । लिप्टस अब भी उठा प्रकार राग आठ जात थ और लिप्टकी चान्दिका

अब भी उतन ही ध्यानसे उतने करते दगा करती थी। किन्तु होटलमें टिक जानक बाप एक नया अनुभव हुआ।

गमर मातवे बाप परिचारिकान पूछा क्या आपको कुछ कष्ट दे सकता हूँ ?

मन क्या— क्याइय ?

आप मरी हस्ताक्षर पस्तकमें हस्ताक्षर कर देंग ?

मन हसकर कहा सहप।

और साथ कुछ लिख भी देंग ?

मन कहा अच्छी बात ह आप काफी मुझ दे दीजिए मैं लिख रखूगा।

वह काफी ल आयी। काफी नहा थी मरी अम्पल छोटी-बगी आटाप्राफ बुक भी नहीं थी। एक बडा-सा एलबम था। उस हाटलमें इस परिचारिका रहते जो जो देगा विदेगा साहित्यकार वहाँ टिक थ (और यह म कह चुका हूँ कि यह होटल साहित्यकाराका अड्डा था)— उन सभीके उसम न केवल हस्ताक्षर और सन्देश थ बल्कि स्टाकहोममें रहत हुए उनके भाषणा या भटके जो भी सवाप समाचार-पत्राम छपत रहे उनके कटिंग भी। पन्त उलटते हुए मझ आचय हुआ जब मन देखा कि मुल्स्वके समाचार पत्रामें मर वहा जानक सम्बन्धमें जो सवाद और (निश्चय ही मार्टिनका लिया हुआ) जीवन-वत्त छपा था उमके भी कटिंग उस एलबममें लग हुए थ। मैन यथास्थान कुछ लिखकर हस्ताक्षर तो कर ही दिया तीसर पहर काफी लौटाते समय चिन्तते हुए स्वरमें पूछा लेकिन मरा फोटा ता समाचार-पत्रामें नहीं छपा उसका आप क्या करेंगी ?

उसन हसकर कहा अभी तो आप स्टाकहोममें हैं। अर्थात् अभी तो इसकी सम्भावना ह कि आपका फोटा अक्षरारमें छप जाय। या समाचार-पत्रामें एर-मर अनकान फाटा छपत रहत ह और मरा फोटा छप जाना भी निराश असम्भव तो नहीं था लेकिन स्वीडनकी विनयशीलता

का आभारी हूँ कि यहाँ क्या नहीं हुआ। स्टाकहोमस विना होनेसे पहले मन स्वयं ही अपना एक पाटा एलबमके लिए उस दे दिया। भविष्यमें जो भारतीय लेखक वहाँ जावें और उम होटलमें ठहरें व चाहें तो इस सकेतसे लाम उठा सकते हैं।

मन ऊपर कहा कि स्वीडन ससारका सभसे अधिक समाजवादी देश है— कि समाजवादीके आन्दोलनका व्यवहारिक रूप वहाँ सबसे अधिक देखा जाता है। निस्सन्देह एक समाजवादी व्यवहारके लिए देशका समृद्ध होना आवश्यक है और वहाँकी वन-सम्पत्ति, खनिज सम्पत्ति और जल विद्युत् शक्तिकी दृढ भित्ति कारण स्वीडनकी समृद्धि बनती ही जाती है किन्तु वास्तवमें समाजवादी व्यवस्थाका विकास वहके सहकारिता-आन्दोलनके कारण ही होता रहा है। सहकारिता सिद्धान्तपर अमर वहाँ उन्नतकी धारा ही होता रहा पर सन १९३० से यह आन्दोलन देश-व्यापी ही गया और अब तो इसके विभिन्न पहलुआके आँकड़ें चित्र बनने लगे हैं। डरो सभ की सम्पत्ति संख्या बढ़ाई जातेसे अधिक है। मास विक्रय सभकी प्रायः तीन लाख और कृषि सभकी प्रायः षड् लाख। कृषि सभ क्रय और विक्रय दाताका काम सम्भालता है। खनीजो पदार्थों बचता है और कृषकन लिए बीज खाद पारा औषधि आदि प्राप्त करता है। इतना ही नहीं सदस्या की शिक्षा प्रशिक्षण भी वह याग देता है। सूचना-पत्रिकाएँ और साहित्य भी प्रकाशित करता है—यहाँ तक कि कुछ भारतीय कृषि-साहित्य भी उसने प्रकाशित किया है। (यदि वह भारतका उत्तम साहित्य नहीं है तो इसका उत्तरदायित्व उस परामर्श देनेवाले भारतीयोंपर ही है। उमने तो सुन्दर प्रकाशन किया है)

यह सहकार सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें भी लागू होता है। स्वडिन विचार पारा देश आपसमें एता सहयोग करते हैं। एक देशके सभके

सन्त्यको दूगर देगारे मंघ भी वनी मुत्रिषा दत है जा स्वन्नाय मंघ देना इसक बलावा अन्नाय क्रय विप्रय भी डार द्वारा हाता ह । यह आगनी सट्योग देगारे सहजावनना उत्तम और प्ररणाप्र उगाहरण ह । स्वच्छा पूवक सहयागपर आधारित यह समाजगानी समाज कमे इतनी व्यवस्था पूवक चन्ता ह । लाकतत्रमूल्य यह रय बस बिना चरमराहक सहज गतिसे वन्ता जाता ह । वही रगड या अटक उसमें क्या नहा पन्ता हाती । सकी पडताल करन चलें तो लौटकर फिर एक जानी हुई बानपर आ जाना पन्ता । कि समता उसी समाजमें हाता ह जा स्वतन्त्र हा और समाज वही स्वतन्त्र होता ह जिसका अग यकिन स्वतन्त्र हो और अपन स्वातन्त्र्यके उपभोगके लिए ही सामाजिकताका वरण करता हा । सब सामाजिक सम्पर्क और सम्बन्धकी मूल प्रेरणा ह यकिनकी आध्यात्मिक स्वतन्त्रताकी खोज ।

किन्तु आधुनिक मोलोकमें गो-दान ? हाँ गोशक्ती यात्राका मरा वत्तात अधूरा ही रह जायगा यदि अन्तम यह न कह कि वहाँसे लौटनघ पहच गायें मन देला—बली हरियालीमें खरी बसा बाल्य भरि आँला बाली गायें जिहान गोपद-परिक्रमा द्वारा पथी प्रदत्तियाका कल पानकी कल्पनाका जन्म दिया होगा—जसी गायक लिए कालियमन पयाघरी भूतचतु ममुग गोपघरा इवावी की उप्रक्षा की थी । अगर मन्स किमा गायन यह नही कहा कि

न केवलाना पयसा प्रसूतिमयेहि मा कामदुघा प्रसन्नाम्

और न यह अनुग्रह ही प्रकट किया कि

प्रोतास्मि ते पुत्र ! वर वृणीष्व

तो इसका कारण यह भी हा सनता ह कि बीसवी गतीकी सुरभी अथवा नदिनी मानव भाषा नही बाउनी और यह भी कि म ही गुह गो भक्ति

विहान हानक कारण अपात्र समया गया । जो हा, इस गालोक-यात्रासे लौटकर यह मान लेनका तयार हू कि कालिकासन अगर ताम्र-लोहिता प्रभा पतंगस्य को पल्लववणा मुनेश्च धेनु क समकथ ही ठहराया ता कोई अनय नहीं किया

‘सञ्चारपूतानि दिगतराणि कृत्वा दिनाते निलयाय गतुम् ।
प्रचक्रमे पल्लवरागताम्ना प्रभा पतङ्गस्य मुनेश्च धेनु ॥’

एक अनमना कवि

यह लख या निरर्थक नही है सम्मरण कम कहा जा सकता है । किन्तु यदि सम्मरण नाटकीय भी हो सकता है अथवा नाटकम घटनाका हो सकता है और उसी नाटकीयताको लक्षित करनेवाला इस प्रकार एक तटस्थ दृष्टि भी हो सकता है तो मैं इस एक नाटकीय शक्ति कहना ही अधिक उपयुक्त समझता ।

नाटकीय मंचका स्थितिसे लिए सबसे पहले दृष्टि-काल निर्देश होना चाहिए । इस शक्तिका दृष्टि है स्वाइनका राजनगर स्टाकहोम और बाल है कुछ वर्ष पहलेका प्रीटम । प्रधान पात्र है स्वीडी कवि एरिक रिन्ग्रेन । वही चरित-नायक अनमना कवि है । या उस प्रधान पात्र कहनेका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि दूसरे पात्रका महत्त्व कम किया जाय क्योंकि वास्तविक दूसरे पात्रका बिना न केवल प्रधान पात्र तक पहुँचना न होता बल्कि पूरी घटना ही घटित न हो पाती ।

रिन्ग्रेन प्रबल व्यक्तित्वके प्रतिभाशाली पुरुष है । उनका स्वभाव जसा कि नाटकके घटनाचक्रके प्रवर्तनमें प्रकट होगा तजस्वी और दूसरा पर हावा होनेवाला है—जसा जिस पश्चिमके महावरम डायनमिक पसनलिटी कहते हैं और भारतीय परिभाषामें गायत्री राजसिक वृत्ति कहा जा सकता है । आय लगभग पतालीस यद्दकालान कवियाना पानीके अत्यन्त नता (यद्यपि यद्दमें स्वीडन तटस्थ है या) समकालीनामें भी और युवतर कवियामें भी सम्मानित ।

अय पात्र है वाउरम आमली पास अभिजातवर्गका कवियित्रा श्रीमती जन कुडालाड गैतिरा यान गनस्टट कवि लारलो हामोरी कवि और

लेखक रागनार आडस्वग सम्पादक और सञ्चाली आदोलनक मना गस फार्मल लेखक, और श्रीमती फार्मल बट नीयें ललक और समीक्षक तथा दो एक अन्य साहित्य प्रमी ।

मन्वण नाटकका आरम्भ हानेस पहल कुछ निश्च होना चाहिए । यही कठिनाई ह । क्याकि निर्देशक नामपर जा कुछ मूवता ह वह वास्तवमें एक स्वाकारोक्ति हा ह और स्वाकारोक्ति भी एमी जिससे कि नाटकका यथावाचक—क्याकि यह नाटककार अपनको कसे बहे ?—इच्छा न रहत भा उमका सूत्रधार बन जाना ह ।

किन्तु जब सूत्रकारतास निम्नार नही ह तब इस उत्तरदायित्वको स्वीकार ही करना हागा । आत्म रक्षाके लिए और कथाको सही दक परम्परा दलक लिए यह स्पष्ट कर दना हागा कि यह सूत्रधार कवल कथा-सूत्रको धारण करनेवाला ह नाटक-सूत्रको नही ।

तो अब स्वीकारोक्तिसे आरम्भ किया जाय । समझ लीजिए कि नाटकका आरम्भ सूत्रधारके हृदयिया वयानस आरम्भ हाता ह ।

यूरोप जान समय एक लेखककी हृदयितसे जो प्रश्न मर मनमें थ, यह नहीं ह कि उनकी तीव्रता कुछ कम हा गयी ह या कि उनका उत्तर पाता अब मने उनका आवश्यक नहीं जान पडना । किन्तु एता अवश्य ह कि जब गया था तब मनमें यह विचारस था कि इन प्रश्नाका उत्तर उत्तर बनुरस यूरोपीय लक्षकाके पास हागा इना ही नहा पूछनेपर व उत्तर बता भी सकेंग । अब इन मात्र विचारसग लट्टी पा गया ह । जानता ह कि उन प्रश्नाके कोई बन-बनाय उत्तर नहीं ह । वा बन-बनाय उत्तर इन ह व प्र बोन्ते ह—कुछ जात-बूत और कुछ अनजान । यह जानता ह कि पूर उत्तर तो क्या उत्तरका पाहा-बहुत धुपल-या गवेन भी बहा घोट लीगाक पाग ह पश्चिमम भी उत्तर ही घोर लीगाके पाग

जिननासे पब्रम—भारतमें अयरा अय गणियार् देनामें । बन्कि इममे भी कुठ अधिन जानता हूँ वह यह कि इन प्रान्ता उतर चान्दराके लागानी सह्या भी बन्त कम ह—यूरापमें भी उनना हा कम जिननी कि भारतमें—क्याकि एमे प्रान ही बन्त कम लागाने मामें उरते हैं । इन प्रान्ताके बिना भी काम मजमें चरगा ह वकि इनन न उठनमे ही काम मजमें चलता ह प्रान उठनके बान तो उनको मार भीतर भी चन नहीं लेन देती और बाहरसे भी गालियाँ लिवाती ह ।

यूरोपक गग क्याग व्यावहारिक ह । या या कह लीजिए कि यूरापके आदवावानियान अधिक मार सायो ह जब कि भारतमें लेखकके लिए अभी इस लाचाराका श्रीगणग ही हुमा ह कि वह निमम वास्तविकतास टक्कर ले । इसलिए यूरापके अधिसह्य लेखकोन यह स्वीकार कर लिया ह कि जहा एक ओर एसे प्रान्ताके अस्तित्व या उनकी सम्भावनाका सण्डन न किया जाय वहा दूसरी ओर खाहमखाह उन्हें आमन्त्रित भान किया जाय—जब तक बन उन्हें दूर-दूर मन्त्रान लिया जाय । छुट्ट साड दूर चौक चौराहम हुडकत रह तो रहें आ बल मुच मार कट्ट हुए लाल रमाल दिखाकर उन्हें भडकानकी कोई जरूरत नहा ह ।

यह सब अब जानता हू । पन्चिमका दष्टिकोण अपनाया अब भी नही ह केकिन उसे समझन लगा हू । किन्तु तब नही समझता था । समझता होता तो यह नाटक न हा पाता । प्रधान पात्रकी पात्रता इसामें ह कि उसके सहार म क्रमग यह समय सका और इसी समय सदनकी क्रियाका सूत्रपात इस नाटकाम झाकीकी घटना-वस्तु ह ।

जसे प्रान भर मनम उठते थ और जिनके उतर पानकी नही तो जिनपर विचार विनिमय करनकी आशा म करता था उनमसे कुछ य है

ईंवर ह या नहा इम प्रानका एक तरफ रखकर यह बताइय कि कौनम सत्या या तत्त्वाको आप धुव मानत ह ? आपके जीवन दगन या

जीवन-सम्बन्धी विज्ञान का आधार क्या है ? मूल्य का आपका क्या क्या है ?
उत्पत्ति होता है—मूल प्रतिमान या प्रमाण क्या है ?

' इसके प्रतिकूल आपका मूल चिन्ता या विचार क्या है—नानव
जातिक सम्बन्धमें जीवनके सम्बन्धमें ज्ञान सम्बन्धमें अज्ञान-भाव
सम्बन्धमें कौन-सा सुनियोज्य प्रश्न आपका व्यक्त करता है

मनुष्य नतिक है या अनतिक या अनितिक—नितिकता क्या है ?
विज्ञान क्या कहता है ?

' समार भरमें मानव-भावमें क्या हुआ मनुष्यिक तन्त्र किमु बन
बा सकेत है ?

' आप कहाँ तक अपनेका उत्तरगामी मानते हैं—क्या आप
उसके लिए, आपका दान जा करता है जन्म के लिए मनुष्यी नानव उत्पत्ति
जो करती है उसके लिए ?

निस्सन्देह ये प्रश्न बहुत बड़-बड़ हैं और उनका पूरा पूरा जवाब
गना है—और नहीं तो इमाजिए कि इतना बड़ा-बड़ा सार्थकता क्या
करना भी दम्भ समझा जा सकता है (और ही ना सकता है) । निम्न-दृष्ट
दार्मों भी भर परिचितार्मों दो-चारस अधिक नहीं हैं जिनमें एका उवाच
साहस कर सकता है । और यह तो बराबर जानता था कि पश्चिमक
सामाजिक वातावरणके नियम एम मामलोंमें कुछ अति मुकाबल ही सम्भव
पताते हैं ।

फिर भी इन प्रश्न पूछनेकी बात में नाचना था ता यह निरा मूल्यता
नहीं थी । प्रायः या इन्द्रक अनुभवोंन ता बाद प्रान्तात्न नहीं किया था,
एकिन स्वादनमें उहाँ-नहीं जा पचाए न्द थीं उनस यह विज्ञान ज्ञान था
कि यहाँपर एम गम्भीर विषयोंकी पचा हो सकती है—मनारजक या प्रभाव
छाली सामाजिक वातावरणके या वाच्य शास्त्र विना' क स्तरपर नहीं
यकि मन्चा विज्ञानाति स्तरपर । एम विज्ञानाति सम्बन्धमें कृप गम्भीर
पचाए हा पचा थीं सम्पूर्ण जीवन और सबसे अधिक समाजवादी राय

में लोगानी मानसिक स्थितिही भी बचा हुई था। एंगमान बार-बार यह मत प्रकट किया था कि सबग अधिक समझानी और आर्थिक दृष्टि में निश्चित ज्ञानपर भा स्वी। जन-माधारणता मन् भाव आनन् अयना सतोपका नहीं था। दुखी उन्ने नग बग जा सकता उन्म अयवा निर्वेद अधवा हताग भा नहा कहा जा सकता कि भा बत्रि और लेखक जब गम्भीर स्तरपर चर्चा करत तो यन् न कवल स्वीकार करते बल्कि आप्रहृषूक कहन कि रोगाका स्याया भाव निरानन् अयना अमुखका ह। लाग अमुखी ह और विश्वक प्रति उनका भाव अनावम्न ह।

क्या ? यह अमुखी भाव क्या ह ? भविष्यन् प्रति कमी आगका ह ? इसका सही सही निरूपण नहा हुआ था। किन्तु कुठ सकेत अवय मित्रे थ—भले ही कभी-कभी व परस्पर विरोधी भी रह हों। एक तो स्पष्ट सकेत था ही जहाँ ईश्वरम या किमी पारलौकिक सत्ताम विन्वासका सहारा नहीं ह वहा भविष्यका क्या आवासन हा सकता ह ? निरा एहिक सम्पत्ति या समृद्धिस क्या होता ह ? यह ठीक ह कि उससे अमुख नहीं होता—पर क्या सुख उससे होता ह ? और जो बलेग निघनतास हाता ह वह दूर किया जा सकता ह—पर उससे आग ? जहा कोई विन्वाम नहीं ह और कोई बलेग भी नहीं ह वहा मानवका मन किस चीजपर टिक सकता ह ?

इसकी भी चचा होती रही थी कि उत्तर मध्य कालमें जब साहित्य कार और चचका नाता टग गया—जब चचन साहित्यकारको अविन्वास्य मानकर लपेक्षणीय घोषित कर दिया तबसे न केवल साहित्यकी कल्याणकारी गतिका ह्रास हुआ बल्कि चचकी भी कल्याणकारी गति क्षाणतर हा गयी। क्योंकि घम और कला दोनोंकी शक्ति इनकी परम्परास पुष्ट होती ह और उनके एक-दूसरसे अलग हो जानपर क्षीण। कन्ग विहीन अथवा सौन्दर्य-बाव विहीन घम नीरस हो जाना ह और नद्धा विहीन कन्ग निष्पाण।

एसा चर्चाआक कारण भी घोर घोर साहस बन्ता गया था और
क्रमण गम्भीरतर मौलिक प्रश्नाका चर्चा कर सकना सम्भव मानन
लगा था ।

मूत्रघारका यह बयान उसकी अपना मन स्थितिको तो स्पष्ट करता ही
है स्वादनक लपवाकी मन स्थितिका भी कुछ संकेत देता है । समझ लीजिए
कि नाटकक म्यायी भावका भवत क्यामें है ।

एक कवि-गोष्ठी

यान गानस्ट्रक घरपर एक छाटो-ना कवि-गोष्ठी हुई जिसमें सभीन
अपनी-अपनी भाषाम अपनी-अपनी कविताएँ पढ़ा और सक्षपमें उनका
भाषाय भी बनाया । कविताका अनुवाद नहीं हो सकता यः एक सामान्य
बात है । इस गोष्ठीमें भाग लेनवाले कवि अधिकतर नयी पीढ़ीके कवि
होनके कारण इस बारेमें और भी सहमत थे क्योंकि नयी पीढ़ीकी कविता
अपेक्षा अधिक उन सत्वापर निर्भर करती है जिनका अनुवाद नहीं हो
सकता । फिर भी अलग अलग भाषाकी लय और ध्वनियाके बारेमें सभी
का कौतूहल था और सभी बः मनोयोगस एक-दूसरेकी रचनाएँ न समझत
हुए भी मुनन रहे ।

मन स्वोःनमें ही लिखा गया दा-एक कविताएँ सुनायीं । एक बहीकी
एक शाब्द विचार लिखी गयी थी । स्थानका उल्लेख करनेपर नीचेन
बनाया कि उगी क्षीलपर एक स्वीडा कविका कविता भी है जिनकी लय
और ध्वनि मरी हिन्दी कवितास मिल्लुल मिश्र है । मझ कौतूहल हुआ,
नीचेन वह कविता सुनायी और फिर दोनों कविताओके अर्थ और मूलपर
विचार होना रहा । नोयें कविता अन्त पते थे इसलिए उनस और भी
कविताएँ सुनायीं । समझ बाः साहित्य-जन्म-नी और क्रमण दूसरे गम्भीर
तर विषयाकी चर्चा हान लगी ।

गमराःनेन हिन्दी समीगमें प्रवृत्तियाकी चर्चामें भी इसके लक्षण प्रकट

में लोगानो मानसिक स्थितिमा भा चर्चा हुई थी। लगभग बार-बार यह मन प्रकृत किया था कि गवग अधिक गमदगानी और आधिक प्रतिम निश्चित ज्ञानपर भा स्थीन जन-मापारणका मन् भाव आनि अयमा सत्तोपका नही था। दुती उहें नही कया जा सकना, उगाम अथवा विवेद अयमा हताम भी नया कहा जा सकना कि भा बकि और स्वेक जब गम्भीर स्तरपर चर्चा करत तो यन् न केवल स्वाकार करत बल्कि आग्रहपूर्वक कहत कि ओगाका स्याया भाव निरानन् अथवा अमुपका ह। गग अमुपती ह और विन्वक प्रति उनका भाव अनावस्त ह।

क्या ? यह अमुपती भाव क्या ह ? भविष्यके प्रति कमी आगका ह ? इसका सही सही निरूपण नहा हुआ था। विन्तु कुछ सक्त अयम मिले थ—भले ही कमा-कभी व परस्पर विरोधी भी रहे हों। एक तो स्पष्ट सकेत था ही जहा ईश्वरमें या किमी पारलौकिक सत्तामें विन्वासका सत्तरा नहा ह वहाँ भविष्यका क्या आवासन हो सकता ह ? निरा एहिन सम्पत्ति या सम्पद्धिसे क्या होता ह ? यह ठीक ह कि उसस अमुप नही होता—पर क्या सुख उससे हाता ह ? और जो कयेग विभनतास हाता ह बट दूर किया जा सकता ह—पर उससे आग ? जहा कोर् विन्वाम नही ह और कोइ कयेग भी नही ह कर्ग मानकका मन किस चीउपर टिक सकता ह ?

इसकी भी चर्चा होनी रहा थी कि उत्तर मध्य कालमें जब साहित्य बार और चचका नाता टूट गया—जब चचन साहित्यकारको अविन्वास्य मानकर उपेक्षणीय घोषित कर लिया तसस न केवल साहित्यकी कयाण कारा गकिनका ह्रास हुआ बकि चचकी भी कयाणकारी गकिन क्षीणतर हा गयी। कयाकि धम और कया दोनारी गकिन वनकी परम्परास पष्ट होनी ह और उनके एक-दूसरस अलग हो जानपर क्षीण। कला विहीन अथवा सौन्दर्य-वान विहान धम नीरम हो जाता ह और थदा विहीन कया निष्प्राण।

एसी चर्चाओंके कारण भी धीरे धीरे साहम यत्ता गया था और
ब्रमण गम्भीरतर मौलिक प्रश्नोंका चर्चा कर सकना सम्भव मानन
गया था ।

सूत्रधारका यह बयान उसकी अपनी मन स्थितिको तो स्पष्ट करता ही
ह स्वोऽनके लेखकाकी मन स्थितिका भी कुछ संकेत देता ह । समझ लीजिए
कि नाटकके स्थायी भावका सत्रेन इसीमें ह ।

एक कवि-गोष्ठी

मान गनस्टक घरपर एक छोटी सा कवि गोष्ठी हुई जिसमें समीन
अपनी-अपनी भाषामें अपनी-अपना कविताए पढ़ीं और सुश्लेषमें उनका
भावाय भी बनाया । कविताका अनुवाद नहीं हो सकता, यह एक सामान्य
बाल ह । इस गोष्ठीमें भाग लेनेवाले कवि अधिकतर नयी पीढ़ीके कवि
होनेके कारण इस धारमें और भी सम्मत थे क्योंकि नयी पीढ़ीकी कविता
अपेक्षया अधिक उन तत्त्वोंपर निर्भर करती ह जिनका अनुवाद नहीं हो
सकता । फिर भी अलग अलग भाषाका लय और ध्वनियाके धारमें सभी
का कौतूहल था और सभी का मनोयोगस एक-दूसरकी रचनाएं न समझत
हुए भा मुना रह ।

मन स्वीडनमें ही लिखी गयी १ एक कविताएं सुनायीं । एक बहाकी
एक साठव किनारे लिखी गयी थी । स्थानका उल्लेख करनेपर नीयेंन
बनाया कि उसी सीलपर एक स्वीडी कविका कविता भी ह जिसकी लय
और ध्वनि भरी हिंदी कवितास विन्मुल भिन्न ह । मुझ कौतूहल हुआ
नीयेंन यह कविता सुनायी और फिर दोनों कविताओंके अर्थ और मूलपर
विचार होता रहा । नीयें कविता अक्षरा पत्रन थ, इसलिए उनमें और भी
कविताएं सुना गया । उनका बा साहित्य-गम्य-थी और ब्रमण दूसर गम्भीर
तर विषयाकी चर्चा शान लगी ।

गमरा १ हिन्दी समीनामें प्रगतिवाकी कविमें भी इसन गमण प्रकट

होन लगे ह । अति यूरोपमें गाधारणतया और स्वाइनमें विनाप न्यम साहित्यिक प्रगतिको एर एक दगाकक यगा में बाँट दिया जाता ह । तीसरी के कवि चालीसीर कवि पचासीर कवि—एग प्रकार कवि-बर्गीसी चर्चा हाती ह । इम गाष्टीमें उपस्थित स्वाडी कवि प्राय सभी मज्जम एव या दो युग छां थ । कदाकि कुछ चालीसा दगाकक थ और कुछ पचासी दगाकक—अथान कुछ उत्तर यद्ध-कालम प्रकारामें आय थ और कुछ सन ५० के वाट । उनकी परिभाषासे में तीसरीका लरक था । एगो बग विभाजन और प्रत्यन दगाककी विविष्ट प्रवृत्तियाकी बचकि प्रसगमें एरिफ लिङ्गनका नाम सामन आया ।

सभी एकमत थ कि चातीसी पातीके सबसे अधिन प्रभावगाल और विचारात्तजक कवि वही ह और सभीका राय थी कि मग उनस मिलना चाहिए । मनहा कह साता कि उन गोगाका वास्तवमें यह विचार था कि जमे प्रानाकी चचा म करना चाहता था बस प्रानाका उनकी दष्टिमें सही उत्तर लिङ्गने दे सकेंग । सम्भव ह कि उहान कवल यही सोचा हो कि लिङ्गनेसे मग भिडा दन से कुछ उत्साक और कौतूहलप्रान प्रानाकी चर्चा हागी । यह भा था ही कि लिङ्गने लगभग मर समवयस्क हागे और इसलिए चचा कुछ बराबरीके स्तरपर होगी—स्वाइनम अजनबियास मिलनकी बात हाती ह तो सम्भाव यरितीयोके चुनावका एव आसान तरीका यह समझा जाता ह कि दोना पक्ष लगभग एक ही वयक हा । बड-छाटकी भेंटमें यह कानेगा रहता ह कि वह निरा इण्टरव्यू न बन गाम अथान उसमें एक पक्ष केवल जिनासु या गहाता ही और दूसरा पक्ष उत्तर देनवाला । जहा तक यूरोप क लल्लवाका आपममें मिलनका सवाल ह यह कसौटी किछी ह तक ठीक भी हो सक्ती ह कदाकि एक पीतीके तेलकाका अनुभव लगभग सामान आधारपर होनके कारण उनकी जिनासाअके वचारिक और रागात्मक सदम गगनग एक-स हाते ह और इसलिए आदान प्रान अधिक सहज और परस्पर स्फूर्तिप्र हो सकता ह । भारत और स्वीडनक जीवनकी

भूमिका एक-दूसरसे इतनी मित्र ह कि ऐसा अनुभव-साम्य हीनकी सम्भावना कम ह । बल्कि एक ही पीढ़ाके लगामें तो और भा कम अलग-अलग पीढ़ाके लगामें तो कुछ सम्भावना हा भा सकती ह ।

सर समीची सम्मति या कि हमें मित्रना चाहिए । अनिश्चय गनस्टेट और उनके मित्र फॉर्गेन इसके लिए उसाह दियाया कि व मिलनका प्रवच कर दें । मैं ता इस उसाह मित्रना चाहता ही था जिनस विचारों को उन्नतना मिल और प्रश्नोंका कुछ समाधान हो ।

रात बारह बजक लगभग गोष्ठी समाप्त हुई । अथवा बारह ता बन ही गय यद्यपि उस रात नहा बना जा सकता यपाकि उस समय उत्तरी प्रदेशके प्रोमका सपिनातीन पाकी रोगना अभी थी ।

एक आपानक

स्वास्थ्यकी पूर्वी बन्धगाहमे कुछ हटकर एक पानगृहका कमरा । दो और व्यक्तियोंको साथ लिय कवि लिट्टरेनक सामन में बटा हू और सोच रहा हूँ कि क्या इस वातावरणमें कुछ बातचीत हो सकती ? या तो यूरोप में साधारणतया पानगृहमें हानस वात-आनमें काइ बाधा नहीं आ जाती । बल्कि बहुत-सा वाते ता वहीं सुलकर जाना है—धरक मयत वातावरणमें या ता हा ही नहीं पाता या एम्ब परिचयकी भूमिका मांगती ह । पर औपचारिकताक बंधनस मुक्त हा सकता एक वात हू और एकाग्र गम्भा रता हमरी वात । क्या एसा नया हो सकता कि उपचारस मुक्त हाकर शक्तिता स्थापित करनेका काम ता बन्धारामें ही जाय और उसक बाद दिवार विनिमयक लिए क्षयत चर शिया जाय ? मैं लिट्टरेनका स्वर अपन गतरने प्रिय हाणक कमरमें जानका सम्भावनापर विचार कर हा रहा था कि लस फॉल था पर्वक । वाते ' यही हूय हाण साथे मर पर चरेंग । मरा पनी हाण सबस में करना चाहती ह । लिट्टरेन

हान एगे ह एति यूरोपमें माधारणया जीर स्वीडनम विगय म्पमे साहित्यिक प्रगतिको एत एक दगावक यगा में बाँट गिया जाना ह । तीगी के कवि चालीगीर कवि पचामीर कवि—एग प्रकार कवि-यगीरी चर्चा होती ह । इम गाष्ठीमें उपस्थित एराडी कवि प्राय सभा मज्जम एक या दो युग छाट थ । क्याकि कुछ चालीसा दगावक थ और कुछ पचासी दगावक—अर्घान कुछ उत्तर पद-कागम प्रकारमें आप थ और कुछ सन ५० के वाट । उनकी परिभाषास में तीसीका उत्तर था । एसी बग विभाजन और प्रत्यक दगावकी विगिष्ट प्रवृत्तियाकी चर्चाक प्रसंगमें एरिक लिडग्रेनका नाम सामन आया ।

सभी एकमत थ कि चालीसा पीलीके सबसे अधिक प्रभावगात्री और विचारोत्तजक कवि वही ह और सभीकी राय थी कि मज्ज उनमे मिलना चाहिए । मनहा कह सकता कि उन गारागा वास्तवमें यह विचार था कि जम प्रगनाकी चर्चा म करना चाहता था वस प्रगनाका उनकी दष्टिमें सही उत्तर लिडग्रेन के सकेंग । सम्भव ह कि उहान केवल यही सोचा हा कि लिडग्रेनस मय भिडा दन से कुछ उत्तजक और कौनूहलप्र प्रगनाकी चर्चा हागी । यह भा था हा कि लिडग्रेन लगभग मर समवयम्क हागे और इमलिए चर्चा कुछ बराबरीक स्तरपर होगी—स्वाग्म अजनदियासे मिलनकी वाग होनी ह तो सम्भाय यकिनयाके चुनावका एक आसान तरीका यह समझा जाता ह कि दोना पक्ष लगभग एक ही वयके हा । बड छोटकी नैटमें यह अन्गा रहता ह कि वह निरा इण्टरव्य न बन जाय अयात उसमें एक पक्ष केवल जिज्ञानु या गहीना हो और दूसरा पक्ष उत्तर देनवाला । उहाँ तक यरोप के गवनाका आपसमें मिलनका सवाल ह यह कसौटी किछो हू तक ठीक भी हो सकती ह क्याकि एक पीलीके नेतकाका अनभव लगभग सामान जाधारपर हानक कारण उनकी जिनासाआन वचारिक और रागात्मक साग्म ग्यमग एक-स हात ह और इसलिए आपान प्रगान अधिक सहज और परम्पर स्फूर्तिप्र हो सकता ह । भारत और स्वीडनक जीवनकी

के हाथों गिरागकी ओर इगारा करके उठान जाटा 'यह बापनम भी जागे रहगा और बात-चीत भा हागी ।

धात्री दरमें हमलाग फोर्गेल घर पहुँच गय । लखनान पर साधारण तथा इत बर नही हुआ करत—म्यान्में भा नही—लेकिन फाँल भाग्यगाली है । ऊारी मजिलका उनका खण्ड या तो मकानक पावमें और पिठवाडकी ह लेकिन पीछ क्याकि आँगन और छाटा-गा बगाचा है इसलिए पिठवाडकी ओर हाना उसका गुण ही ह । वहाँ गान्ति भा ह नीर खुली हवा भी और विडकीसे बाहर शकिनसे नीच हरियाली भी तित जाती ह ।

नाटकीय शक्तीके अय पात्र यहाँ पहन्ने ही ह । श्रीमती फोर्गेल से परिचय हा जानके बाद सभी लोग पास-पास दो टक्कियामें बटकर बठ जात ह जिनमें वान चीत अलग अलग भा चलना ह और कभा-कभी आर पार भी—कभी मरो टुकडीमस लिडप्रेन पकारकर दूसरी आरके लगासे कुछ कहते ह और कभी दूसरी जोरस नीर्ये जिनस इस बीच कर् बार मिलना हुआ था और एक समानगाल-ब्यसन भावकी स्थापना हा गयी थी हमारी टक्कीके लिए मुझ कुछ कह दते ह । श्रीमती फोर्गेल विभिन्न प्रकारके पेय पदार्थोंके प्रबन्धम यस्त ह ।

थोडी देरमें टकडियाक सदस्यामें कुछ अल्ला बरती हो जाती ह । या निष्ठ वान-चीतका यह क्रम भी ह कि थोडी थोटी देर मभीस आलाप होता रह पर यह म यहा मौप रहा ह कि फोर्गेल और नीर्ये जो मर पास आ गय हैं बट इसलिए कि बात-चीतका स्तर बदलनक लिए व योजना नुसार आग बर रह ह ।

वान चीत धार धार गम्भीरतर हाती गया ह और बीच-बीचमें नीर्ये अथवा मरी ओरसे कुछ ऐसे प्रश्न भी वान चीतमें शाक न्यि गय ह जिनसे गीध ही उसमें उवाल आन लग । लिडप्रेन बर उत्साहस बहसको आग बर रह है, एसा तो नही लगता लेकिन उसमें भाग ता वह रुचिसे ही

एक प्रश्नना कवि

ले रहे ह। इसमें साहस पाकर और परिस्थितिको अनुकूल समझकर फोड़ते ह हमारे भारतीय बच्चे आपस दो एक विरोध प्रश्न पूछना चाह रहे थे—हम 'गेगामें इम तरहकी चचाए होती रही है और इस विचार विनिमयमें हम समीचा दिलचस्पी ह।'

लिट्टेने अनुमति-सूचक भावसे मरी ओर देखते ह।
 ऐसा प्रश्न करत मुझे सक्ताच तो होना लेकिन आप मानेंगे कि सच मच ऐसी जिनासाएँ मर मनमें रहीं और मैं चाहता रहा हूँ कि अपने यूरोप प्रवासका उपयोग उनका उत्तर पानेक लिए करूँ। एक ता म यह पूछना चाहता हूँ कि एक लखक या कविके नाते वह कौन-सा प्रश्न ह जो आपनो सबसे अधिच चिन्तित या ब्याकुल करता ह? प्रश्न पूछकर म उत्तुक भावसे लिट्टेनेके चेहरकी ओर दखता हूँ।

कोई आवश्यक नहीं ह कि प्रश्नका उत्तर मुझे मिले ही। उस हसकर भा टा दिया जा सकता ह या उसके उत्तरमें वाचचातुयका कोई पतरा लिखाया जा सकता ह। या यह प्रतिप्रश्न किया जा सकता ह कि आप अपनी ओरस उगहरण देकर प्रश्नको को स्पष्ट कीजिए। एमा कोई भी उत्तर या पंतरा मर लिए विस्मयका कारण न होना कयाकि सभी तरह की प्रतिक्रियाएँ मैं पहल देव चुका हूँ।

किन्तु लिट्टेनेकी प्रतिक्रिया मेर लिए सबया अप्रत्यागित ह। यह थोडो देर अपने गिलासने पासमें अपलक आँखासे मरी ओर दगन रहत ह। फिर महमा गिलासका मेजरपर पटकते हुए आगकी झुक आने है उनका चेहरा भी गिनामके तरल पनाय-सा समनमा उठता ह और रागाविष्ट स्वरमें यह पछने है आप कौन होत ह एमा प्रश्न पूछने पाले? अगर मैं ही आपन एग सया पूछ तो क्या आप जवाब देनका माहम करेंगे? अगर मैं ही पूछूँ कि आप मत्युसे डरत ह कि नहीं तो आप नहीं-सदा उत्तर देंग?

यह आवग अप्रत्यागित है। तो भी बुरा क्या ह? सरी-सरी बात

यात करने गत ह । टालियाँ फिर अलग-अलग हा जात ह—कभी दो कभी तात कभी साते तोत—ओर लोग स्याता-नरित हात रतने ह ।

घाडी देर बाद फिर एसा सथाग होता ह कि फोर्गेल दम्पति ओर म अपनकी अथ व्यक्तिगतमे कुछ अलग सत हुए पात ह । फोर्गेल धामे स्वरस क्षमा-भाचनाक भावम कहत ह मन एसा नहा सोचा था—आप बरा न मानेंगे—उनका आगम आपका अपमान करनेका नही ह—वास्तवमें उनका स्वभाव ऐसा शायनमिक ह कि—

श्रीमती फोर्गेल तत्परतास कहती ह दर हो रही ह मैं रसोईमें जाकर कुछ खानकी चीजवा प्रबन्ध करू । मैं दानाको आ-त्रासन दत हुए कहता ह नहा-नहीं बुरा माननेकी कौन-सो बात ह । कोई जरूरी तो नही ह कि प्रश्नाका उत्तर दिया ही जाय । बल्कि मैं तो सोचता हूँ कि उनकी यह अतिरजित प्रतिक्रिया भी अथ रखती ह—मर लिए तो सारी बात चीत अत्यंत रोचक ह । फिर कुछ ओर हसकर स्वीडो गराव घराकं गान भुझ नहीं आते नहीं तो म जरूर उनका साथ दता ।

ये तीना एक तरफ सडे घीम घीम क्या बातें कर रह ह ? जरूर कुछ गम्भीर बात होगी जो कि नही होने देनी ह ! लिडग्रन तज्जस उठकर हम लोगके पास आत ह और श्रीमती फोर्गेलसे पूछत ह तुम नहीं गानमें साथ दोगी ? और फोर्गेलका हाथ पकटकर घूम घूम कर गान लगते ह ।

श्रीमती फोर्गेल कुछ खानका प्रबन्ध करन रसोईकी ओर चल देती ह । हम तीना फिर अद्वर सग्तमें मिल जात ह ।

थोड़ी देर बाद फिर न जान कसे एसा होता ह कि म और नीयें औरामे अलग हो जात ह और बातें करन लगत ह । लिडग्रनकी पीठ हमारी ओर ह और वह खिचकीसे बाहर पाकत हुए गा रह ह और हस रह ह । फोर्गेल भुन कुछ कहत हुए रसोईके गन्धियारकी ओर बन्त चले जात ह जिसका अभिप्राय समझकर म भी भाइ बग घोर पाडन ?

कहता हुआ उनके साथ बच बचना हूँ और नीयें भी पीछे पीछे चले जाते हैं।

हम लोग बचपन पान और बात चीतक लिए आमंत्रित थे भाजनके लिए नहीं। लेकिन बात चीत लम्बी और विघ्नान्त होती चली गयी हूँ और विघ्न न खुल उठनेवाले हूँ न और विमाको जाने देनेवाला हूँ। इसलिए श्रीमती फार्गोका कुछ ध्यानका सामान तुलानके लिए व्यस्त होना स्वामाविक ही हूँ। यूरोपीय घरोंमें ऐसा कम हाता हूँ कि चार-छ व्यक्तिवके ग्यान लायक सामान पर ही मैंने निकल आवूँ। सामान जमा रखनेकी आवश्यकता भी कभी नहीं पड़ती और मैं मेहमान ही कभी एसा सबट उत्पन्न करते हूँ। दो-एक दिवसे सालकर आमती फार्गो विजलीके धूलूपर जल्दी जल्दी सासज और धालू तल रही हूँ—इनके साथ रोटी और मक्खनसे कुछ-न-कुछ काम तो चलैगा ही। इस बीच थोड़ी-बहुत और व्यवस्था हो जायगी।

फार्गो रसोईकी दहलीज पास खर राटी भी काट रहे हूँ और हम गेमासे बात चीत नी करत जा रहे हूँ। हम लोग मरु मयके प्रान्तके आस पास ही मडरा रह हूँ। महायुद्धमें स्वाइन तटस्थ रहा। तटस्थताको राज-नतिक दृष्टि उसन उचित माना और अब भी उचित मानता हूँ। किन्तु अपन जानि भाइयापर जो अत्याचार होत उसन दख उससे उस तटस्थताको एकर एक अपराधी भाव भी कहीं उसके अवचेतनमें आ गया हूँ। नातिस्था का आक्रमण और उत्पीडन टनमावन रहा नातेने सहा—अमानुषी अत्याचार साक्षर भी दोनों हाट नहीं टूट नहीं। और उनक निकटतम सम्बन्धी उतर जाति भाई उनके सगे स्वादी यह सब देखते रह और छतरय मन रह ! क्या यह तटस्थताका या अहिंसाका आत्मा ही था, या कि स्वाधका आदका ओट मिल गयी थी ? तटस्थता आत्मा भी रही हो सकती हूँ किन्तु किना सुविपाजनन या बह आत्मा ! क्या उम सुविधाकी आटमें कहीं मरु मय भी छिपा हुआ नहीं था ? स्वीडी प्रवृद्ध वगमें ये

प्रश्न सन्देशाम नही पूछ जात किन्तु उमषा चतनामें बनी गन्तरम य बन हुए ह । विनाप रूपस उस वगवे उन प्रबुद्ध ब्यक्तियामें जिहान युद्धारम्भसे कुछ ही पूव वयस्वता पायो या जो उत्तर युद्ध-कालमें साहित्यिक-अगतमें प्रमुक्त स्यानापर रह अर्थात् चाणोमी वाली पीठीमें ही यह भाव तीव्रतम होना चाहिए बयावि व हो लोग युद्धसे विच्छन्न वर्णोंमें सावजनिक जीवनमें सामन आय य उहीके भीतर यह नतिक सघष हो सकना था कि साव जनिक जीवनमें प्रतिष्ठित स्यात पावें या कि उसे छोडकर अपन सग ढनिया और नार्वेजियाके लिए कुठ करें—उन सगाके लिए जो कि गुप्त रूपसे नात्सियाके प्रतिकारक सगठन कर रह थे और अनिश्चित जोधम उठा रह थे ।

हम लोकाकी बात बात धीर धीर हा रही थी । लेकिन उसकी पूछ भूमिमें अमुत्तर स्तरपर म अपन-आपसे भी बात चीत करता जा रहा था कि क्या लिडग्रनके मनमें भी भीतर बही एसा सघष न होगा—आत्म ग्लानिका यह भाव न होगा ? अगर उनकी पीठीके लेखकामें अधिकतरमें उसके विह्वल हैं तो वह स्वयं तो उस पीठीके प्रमुख ब्यक्तियामें रहे तजस्वी स्वभावके रह डायनमिक चरित्रके रहे—अर्थात् उनका वचारिक जीवन उनकी रागवृत्तियाके अधिक दबावमें रहा क्या उनका गम्भार बात चीतस इनकार करना ही एक गम्भीरतर आलापकी भूमिका नही ह ?

उस समय म विचार इतन स्पष्ट रूपसे मरे सामन नहीं आ रह थे केवल उनका धुंधला आभास था । स्पष्ट तो व क्रमग होत गय ज्यो-ज्या एस नाटकीय वार्तालापमें एक-एक बनी जुडती गयी । या फिर अनन्तर जब जब नीयें अथवा फोर्गेलन उसकी चर्चा करके चिन्तित भावसे यह भागा प्रकट की कि मैं लिडग्रनके व्यवहारकी मनमें न लाऊगा ।

किन्तु यहाँ तो अभी और बाधाए होनकी थी । गलियारमें भारी पन् चाप मुनकर हम मन् तो लिडग्रनका स्वर आया यहाँ रसोईम क्या साजिग हा रही ह ? जा कुठ ह हम तो यही सायेंग ।

मे व्यक्तिगतो साथ लिये हुए वर रसोईमें प्रविष्ट हा रहे थ । छाटेसे रसोई घरमें हृत्संगवा-ना वातावरण हो गया था । हम जग फिर बैठककी ओर लीन गय और थोनी देरमें श्रीमती प्रोर्गेल अपने पति और हायनमिक अतिथिको साथ लिये हुए भाजन-सामग्रा ले आयीं ।

रातके अर्थात् भारत अर्थात् मध्य रात्रिक धुपले तिनक दो बजे जब गोप्टी समाप्त हुई तब भी लिग्नेनक गानोंका भण्णर अभी चुका नहीं था । म ट्रामस भी अपन होटल जा सकता था, किन्तु नीयें टकसीमें मुझे पञ्चाने आय क्पाकि उन्हें रातमें एक बार फिर समा माँगनी थी । दूसरो ओर मैं कुछ इम्तिह किन्तित था कि दूसर-तीसर तिन जब लिग्नेन स्वय पूरी गाष्टीके वारमें विचार करेग तब उन्हें क्या गेगा ? उस समयका अन मनानन ओर बेसूत्री क्या अनतर उन्हें और भी अनमना न बनायगी ?

नाटकीय झाँकी यहाँ समाप्त हाती ह । भरत-वाक्यकी आवश्यकता नहीं ह । यह सूत्रधार नाटकका नहीं था बवल कथाका था, और उसका भरत-वाक्य तो नीरवता ही हो सकती ह । या वह इतना कह सकता ह कि इस झाँकीकी स्मृति उसे अब भी स्फूर्ति देती है वही स्फूर्ति इनसे पाठक को भी हो ।

लोकोत्तर

अन्योन्य वन प्रदेश और अन्तर्गत तिन अन्तर्गत उन्मुख आकाशम प्रकाशकी लम्बाकी अतहीन वया मानव अन पण रहा रहा ह और उसक सान प्रागन और कम करतवा समय प्रकाश और अपकार मूर्धन्य और मूर्धस्तक प्राकृतिक अनक्रमम मक्त हा गया ह लकिन फिर भी हमार जान अनजात भी तिन और रात हमार नमर्गिन गक्तिपाकी एक ताउ उदमें वाव रहत ह । यहा स्वीनने ग्रीष्मकालम मर लिए उम ताउ छदमें कुछ यतिक्रम हो गया ह और उमकी लय अनिश्चिन हो गयी ह । कभी बीम चौबीस-तीस घण्टा तक नहा सोता हू कयाकि सईस हा नही हाता तो रातका बोध कहासे होगा ! फिर कभी अचानक पाता हू कि ना सहसा जाखाकी ही नही अग प्रत्यगकी विवग किय दे रही ह जब कि घडी दखनपर पाता हू कि दोपहरके वारह बज ह या अपराह्न पाच-छ बजका समय ह । तिन और रातके बोधसे वचित कसे भी अनिममित अन्तरालके बाद जब भी साया हू—सो सका हू—तो कमरकी खिडकियाँ बंद करके और दुहर तिहर पन्ने साचकर । अब समझम आ गया ह कि कया यहाँ सबन खिन्कियाम सजावटी पन्नेके बाद एक और बहुत माटा काला पर्दा भी रहता ह जसा परान ढगके फोटोग्राफर कमरपर डालनेके लिय रखत थ। इस महीना लम्ब तिनमें त्रिना एसे उपायास कृत्रिम रात कर लिय बिना ता साना ही सम्भव न होगा । एक बार मच किमासे म्यारह बज मिलना था (तिनके ग्यारह बज) किन्तु नीन्स जागकर मन देखा कि दोपहरक दा बज ह—या यह आन्चयरी वात नहा थी कयाकि त्रिम समय सोया था उस समय भारके चार बज थ—भार जम्पासवश कृता हू यह नगी कि उमसे पहले रात हुई थी ।

स्नाकहाममें फिर भी जिन और रातका कुछ अन्तर पहचाना जाता था। प्रकाश तीखा और फीका होता रहता था। किन्तु उत्तरकी ओर बढ़ते हुए यह अन्तर कम्बसे कम्बतर होता गया ह और अब अन्तहीन वन प्रदेशपर बरसती हुई अन्तहीन धूप ही रह गयी ह।

स्टेशनका नाम ही ध्रुव वत्त ह गाड़ी वहाँमें आगे बढ़ती ह और खडियासे विन्वी हुई एक लम्बी रेखा पार कर जाती ह। यही ध्रुव प्रदेश की मखला ह। जस देशोंके सीमान्त मर्यादा-स्तम्भा और खडियाकी लीकति चिह्नित किये जाते ह वसे ही यह मेखला अंकित कर दी गया ह। सीमाके पार, गोलोकम हम माना लोकोत्तर प्रदेशमें आ गये ह— वन-खण्डका अभी अन्त नहा ह किन्तु खड़ीके बीच-बीच जहाँ-उहाँ बीहड़ खुले प्रदेश आ जाते ह कभी छोटी-बड़ी खोलें कभी सघन मलिन वफकी बीच।

और इस प्रकार किरुनाके बसर प्रदेशको, जहाँ लाट्टेकी खानें ह और जहाँ चित्रकार मानगोपने आरम्भिक अज्ञात जीवनके कुछ वर्ष बीते थे, पार करते हुए लापोनिया (लापलैंड) के भीतर आबिस्कोका छोटा स्थान। लाप जातिके वनोंमें छिपे हुए गाँव भी अधिकतर पीछे रह गये ह पाल्मू और जंगली मत्त (एक प्रकारका बलिष्ठ बारहसिंधा जिसे लाप लोग खाते भी ह और गादियामें जोतत भी ह) भी अब स्वच्छ विचरण करता हुआ नहीं दीसता। आबिस्का, तानें नामक एक विशाल शीतले बिनारे पर बना हुआ है। शीत प्राय मत्त मोल लम्बा ह और मन्तियासे लिए दगने आकषणके अन्त कारण ह। एक ता आग-बामने गिराके आरोहण अथवा धरतीनी तरायापर स्वोकी दौलत लिए यह बहुत अच्छा बेट ह। दूरे जिन किनेगियावा लापोनियाके लाक-जायनमें किनेग लिचस्पी ह व

यन्सि शीलने पारकी लाप घस्तियामे जा सकत ह—ये बस्तियाँ सम्य जीवनके आवागमन और हलचलम अयोग्या अधिक दूर और सुरगित ह और वहाँके लोक-जीवनको परिपाटी गहरी रीनियामे कम प्रभावित ह । तीसर—और क्वाचिन यही आकषण सप्त अथिक् सक्ष्यामें यात्रिया को खीचता ह—यहाँसे शालने पार मध्य रात्रिका मूय बहुत मुत्तर दीखता ह ।

मध्य रात्रिका मूय क्या और कसे होना ह इम गणितम और रखा चित्रासे समझाया जा सकता ह । उसका सिद्धात विणेप कठिन नहीं ह । किन्तु वह कसा होता ह किसी भी वणनसे यह अवगन कराना कठिन ह । धीर धीर क्षीणतज हाता हुआ वह क्षितिजके निकट आता जाता ह किन्तु कुछ ऊपर ही रहकर मानो अपना विचार बल लेता ह फिर और डूवता नही बल्कि लगभग क्षितिजके समान्तर उत्तरकी ओर बन्ता चलता ह । फिर धीरे धीर उत्तरसे पूवकी ओर जाता हुआ वह धीर धीरे ऊपर उठन लगता ह । इस प्रकार सूर्योत्थ और सूर्यास्त नही होता केवल रातके ग्यारह बजके लगभग मूय पश्चिमोत्तर दिगामें क्षितिजक निकट आ जाग ह और भोरके तीन बजके लगभग पूर्वोत्तर दिगास फिर ऊपर उठना प्रारम्भ करता ह । यह स्थिति आबिस्कोकी ह जो ध्रुवमण्डलके भीतर तो ह पर फिर भी ध्रुवसे कुछ दूर ता ह ही । ठीक ध्रुवपर तो स्थिति और भी अद्भुत होनी होगी क्याकि वहाँका पूव और पश्चिम तो मिट ही जात होग और उत्तर दक्षिण भी एक कल्पना भर रह जात हाग—मूय केवल एक सम रखामें उठता और उतरता रहता होगा ।

आबिस्कोके टरिस्ट होटलसे तीने त्रास्कके पार जिस दिशाम आधी रातका यह मूय दीखता ह वहाँ अस्ताचल पदाकाशी कोर् पवत भी नही ह । वहाँसे बायें अर्थात् दक्षिणम ऊच गिम्बर हैं और दाहिने अर्थात् उत्तरकी एक लम्बी पवत शृङ्खला ह किन्तु क्षितिजका ठीक वह अश खला ह । इसस मूय और भी स्पष्ट दीखता ह और जब उत्तरकी ओर

सरबता हुआ योग योग उगता जाता है तब मानो गिरि शृङ्खलाकी रोड पर लुप्तता हुआ जाता है—यद्यपि ऊपरसे नोचेको नहीं नीचेसे ऊपर की ओर ।

तीन दिन तक प्रति दिन ब्यालूके बान्—घड़ी या मूत्र ही भोजनवा समय बनाती थी ।—झीलके किनार या अपनी खिडकामें बठकर घण्टा मूत्रको दखना रहा । शीष्मकालीन मूत्र होनेपर भी ध्रुवमण्डल होनेके कारण उसकी चौंध अधिक नहीं होती थी और रातमें तो उस बिना बप्टके देखा जा सकता था । मं क्याकि ठीक उत्तरायणके समय नहीं गया था बल्कि उसके कुछ दिन बान् ही इमलिष् मुझे कुछ और भा सुविधा थी क्याकि ठीक मध्य रात्रिके समय मूत्रक न डूबनपर भी गितिजपर कुछ सध्या कालीन पीली अथवा रात रगत धा जाती थी और दो-तीन घण्टके लिए सारे परिदश्यपर और विनेय रूपमें झीलपर जादू छा जाता था । फिर दो-तीन घण्टेकी नीचेके बान् प्रातरागवा समय हो जाना था और उसके बान् भूमन किमी गिअरपर घन्त, या नगे-नालेके स्रोतका अनुसंधान करन, या मोटर-बोटमें झीलकी सर करनका मोहू बहा ल जाता था । वास्तविक नाद दोपहरके भोजनके बान् ही हो पाती थी जिसके बान् फिर गामकी सर और रातका मूत्र-दान । यहाँ भी बाँचकी दोपहरी खिडकियाँ और उनके भीतर दोहरे पर्ने थे । दोहरे खिडकियाँ गर्मियामें छोरकी ओर जाटामें छण्टकी रोकनका काम देती हैं ।

छाने-रने देहा—यहाँ इतना अधिक हिम-पात होता है कि धडे पेड बध ही नहीं रहते—और घटानके बाँचमें हगतो और किनोले करती आती हुई पेनोउपल गणे । घोड़ी आगे ही यह शीतमें विन्धन हो गयी है किन्तु यहाँपर इमका प्रवाह बना दुर्नात और उत्प्लास भरा जान पटता है । ऊपर कुछ ही मील दूरसे यह भायी है—इसी पासक पवतनी ओटमें

तो आदिस्कोधारका वह जिम-गारावर ह जिमक गलनम आदिगायोक्त नयेका उद्भव होता ह । बरही एत एतम् उद्भव बरही दूसरा युत्तर क्षीणमें विन्यन—(ताने प्रास्व अभी जमी हुई नहा ह कवन तरत हुए हिमस्रणासे भरी ह किन्तु शीघ्र ही फिर जम जावगा)—गिलिज अनमिन्वा के बीच बगा उद्दाम गतिमय जीमनान्त । धरापर युका हुई जिम घट्टान पर बठकर म षग फहराना हुई उग्रगी पनचाङ्को दग रहा ह । उमक ऊपर और मर आसपास मर पीठ वन प्रणैममें त्रिलीवा पकार और मण्डराकी गजार हो रही ह । ध्रुव प्रणैम मण्डर ।—लकिन नाता प्रकार के क्रीट पतगा (और तिनग्या) का लघु जीवन भा मध्य रात्रिक मूय वाल कुठ सप्ताहाका ही तो जावन ह । बफका सन्नाटा स्टनपर अचानक उसका उदय होता ह और फिर उतना हा अचानक वह लिक्कर मौन हा जाता ह और फिर नयी बरका सन्नाटा उग्रका अतिम चिह्न भी मिग देता ह ।

भिस्लीका अविरत उद्लास
देता है सकेत कहीं क्या उसे
मरुतु है कितनी पास ?

सबेर आदिस्कोधार तक हो आया हूँ । बल्कि शानरागक लिए वही अपन साथ कुछ उे गया था । बफक नाचसे निकलत हुए पानीकी दखना हुआ दर तक बटा रहा फिर नीचकी ओर लौटत हुए आध रास्तेम एक काठके पल्पपर खडा होकर नगाका प्रवाह दखा और फिर पन्ने पारकी वन-बाधासे बन्कर पन्ने तनाक अम्भन आकारापर विम्वय करता रहा । पानी और बफके वार लचकाल काठका कमे कम अम्भन रूप द देत ह— या या वहूँ कि प्रतिबूष प्रवृत्तिन सब बाघात सहना हुआ प्राकृत जीवन कस अपनी रगाक नयस-नय और अदभनस-अम्भत माग निवालता रहना

ह इन रूपाको हम विकृत भी कह सकते ह लेकिन जो अन्म्य जिजीविषा इतन आन्वयजनक रूपमें प्रकट होता ह उस हम विकृत कैसे कहें ? बकि उन्हा गौठा और मरोडा और कुण्डलाकी रग विरगी काहिर्पा और निम्न कोटिके उद्भिज और भी विचित्र रूपमें सजा देत ह ।

आबिस्कोयोक्क किनार किनारे होटल तक गोट आया ह किंतु विनाम करनका मन नही ह । कुठ भी मन नही ह एक अगान्ति ह जो गिखराके एक बर्फी एकांतकी ओर घुला रही ह । म जानता हूँ कि अपना एकांत ही एक अद्व-बोन समस्याके रूपमें मेरे सामने ह और मेरी अगान्तिका कारण ह लेकिन माना यह भी जानता हूँ कि उस एकान्तम भागकर उस अगान्तिसे बचना सम्भव नही ह बल्कि उसका साक्षात् करक ही । अकेला भी अन्ततागत्वा किन्ना अकेला ह ? दो हिमजडित अवस्थाआ क बीच नगीका यह उलाम ही क्या उनके एकांतका साथी नही ह ? क्या जीवनका निर्वेयकिनक आनन्द ही यकिनका सर्वोत्तम सगो नहीं ह ?

इन अम्पष्ट निरूपित जिनासाबाका उत्तर होटलमें नहीं ह, सलानी समाजमें नही है । मन दोपहरके लिए भी कुछ खानकी साथ लिया और नुआया गिलरकी घडाई चढ़न लगा ।

पहल वन प्रदेश । अपनी ही ग्रिययति उल्य हुए वक्ष और छोटे और कुण्टित होने हुए धार धीर रुज हो जात हैं और उनका स्यात धयवती झाडियाँ लनी ह । फिर और ऊपर—वाडिया भी चुक जानी ह और घाम ही घास रह जाती ह । बीच-बीचमें सन्मा पर उसम घस जान है नीच पोती मिट्टी और पानी ह—यफकी गले अधिक समय नगी हुआ ह । और ऊपर—घामकी हरियालामें बीच-बीचमें कीचक छोटे-छाट गग—चट्टानाकी आत्में उन स्थलापर बटुन बक जमी रहनी ह और गायन इन कीचक मूलत-न-भूगने इयपर दुबारा नयी बक पड जायगी । और ऊपर घाम भी बच्चा ह । गयो ह और चट्टानाका ओटमें या बडी-बना गारामें अभी बक जमा हुई ह और धारे धार गिम रही ह ।

म गाय पयस भटक गया है । लेकिन गिखरकी चगाईमें पय क्या और भटकना क्या । ऊपर गिखर ह—ऊपर आकाशकी ओर हा ता ह । नीच बस्ती ह नीच ही तो ह और अभा ता दाग भी सक्ती ह—कस भी, किघरसे भी उतर जान हीस ता बर्न पहुचा जा सग्गा ।

और ऊपर । अब बन्ती भी नहा दोखती । चढाई कुछ कम हो गया ह । और यह गिखर तो नही जान पत्ता । लेकिन कम ढालकी भूमि आ गयी ह आकाशको छांकर सब कुछ इसी ढालकी चट्टानाकी आट हा गया ह । म और आकाश और दुगम चगाई । और अर्नात किन्तु मनमें दन्तापूर्वक धारण किया गया एक गिखर जा मेरा लक्ष्य ह

एक दिन जब
 सिवा अपनी ध्ययाके कुछ
 याद करनको नहीं होगा—
 क्योंकि कृतिप्रा दूसरोके याद करतके लिए हैं
 एक दिन जब
 दे न पाया जो उसीकी नोक
 बबस सालती रह जायगी—
 क्योंकि दे पाया अगर कुछ याद उसको आज
 में करता नहीं हू और
 जीवन ! शक्ति दो
 उस दिन न चाह याद करना

एक दिन
 उस दिन
 जिसे अपनी पराजय भी
 दे सकूंगा समुद, नि सकोच
 उसीको
 आज

अपना गीत देता हू ।

गिखर नहीं था पठार था। बार्दी नाकीली ऊँचाई उसपर नहीं था
वेवल हवा द्वारा बर्फ़ी घूलस मेंजी हुई एक समतल भूमि। लेकिन एकान्त
में आनाग विचुम्बित समतल भूमि।

म भटक गया था पर छाया नहीं। लौट आया। राहमें उतरत हुए
एक प्राय जगह घुटना तक बर्फ़में घँस गया फिर वहीं बठकर बर्फ़ गोले
बनाकर अपन-आपसे खता रहा। फिर अन्तमें लौट आया।

आविस्को ध्रुव-भण्डलक भीतर और स्वीडनकी उत्तरी सीमाके निकट
तो ह ही उसके पास ही तीन देगाकी सीमाण मिटनी हूँ यह भी उसके
आकषणका एक कारण हूँ। तोने आस्वके किनार किनारे और नुओल्या
गिखरके पार्वत आगे बतत हुए अगला स्टेगन रिक्मप्रासन हूँ जो स्वीडन
का अन्तिम पटार हूँ। इसके बाद लाइन वास्तविक सीमात पार करके
नार्वेके प्रन्तमें प्रवण करती हूँ और नाविक नामक बन्दरगाह तक जाती
हूँ। एक ही स्नि आगे जाकर लौट आनेवालाके लिए सीमातकी पुलिस
पासपोर्ट और वीसाकी विणय चिन्ता नहीं करती और आविस्को अपवा
रिक्मप्रासनसे चलानी बहुधा नार्वेका वीसा न रहनेपर भी नाविक तककी
गर कर आत हूँ। नार्वेका वीसा मैंन भी नहीं लिया था और यह भी
जानता था कि नाविकमें कमस कम रात भर न रहना हो तो वहाँ जाना
एगमग व्यय हूँ फिर भी सीमा पार करके अपन दख हुए दशोंमें एक और
नाम जोड लेनका बचकाना आकषण मुझ भी था और मैं रिक्मप्रासनसे
तीन स्टेगन आग जाकर वापिस लौट आया। एक ओर देग हूँ आनेके
दावके अतिरिक्त हम यात्रामें कोई उल्लेखनीय बात नहीं थी। दशका
गिरन्तर परिवर्तन होन रहनपर भी परिस्थय वही था। एक बार पहाडका
पाय और घटानें बीच-बीचमें बल खाती रलरी पत्रापर सुरंगाने द्वार
पिपलजी बर्फ़ नाळे नीच बनी छा-छाट गल ताल और कभी जमी

मैं गायन पथस भटक गया हूँ । किन्तु गिखरकी चढ़ाईमें पय क्या और भटवना क्या । ऊपर गिखर ह—ऊपर आकाशकी ओर हा ता ह । नीच बस्ती ह नीच ही तो ह और अभी तो दीप्त भी मरती ह—कस भी, किघरसे भी उतर जान हीस तो वहाँ पहुँचा जा सकगा ।

और ऊपर । अब बस्ती भी नहा दाखती । चढ़ाई कुछ कम हो गया ह । और यह गिखर तो नही जान पता किन्तु कम ढालका भूमि आ गयी ह आकाशकी छाटकर सब कुछ इसी ढालकी चढ़ानाकी आट हा गया ह । म और आकाश और दुगम चढ़ाई । और अर्न्त किन्तु मनमें दग्नापूर्वक धारण किया गया एक गिखर जो मेरा लक्ष्य ह

एक दिन जब
 सिवा अपनी व्यथाके कुछ
 याद करनकी नहीं होगा—
 क्योंकि कृतियाँ दूसरोंके याद करनके लिए हैं
 एक दिन जब
 दे न पाया जो उसीकी नोक
 बबस सालती रह जायगी—
 क्योंकि दे पाया अगर कुछ याद उसको आज
 मैं करता नहीं हूँ और
 जीवन ! शक्ति दो
 उस दिन न चाहूँ याद करना

एक दिन
 उस दिन
 जिस अपनी पराजय भी
 दे सकूँगा समुद, नि सकीच
 उसीको
 आज

अपना गीत देता हूँ ।

गिखर नहीं था, पठार था। कोई नोकिली ऊँचाई उसपर नहीं था
केवल हवा द्वारा बर्फकी धूलसे मजी हुई एक समतल भूमि। लेकिन एकान्त
में आनाग विचुम्बिन समतल भूमि।

म भटक गया था, पर खोया नहीं। लौट आया। राहमें उतरत हुए
एक प्राय जगह घुटना। तब बक्रमें घस गया फिर वही बठकर बफ्रक गोले
बनाकर अपन-आपस खलता रहा। फिर अन्तमें लौट आया।

आविस्को घुब-भगडलके भीतर और स्वीडनकी उत्तरी सीमाके निकट
तो ह ही उसने पास ही तीन देशकी सीमाए मिलती ह यह भी उसके
आकषणका एक कारण ह। तोने प्रास्वक किनार विनारे और नुआया
गिखरक पावस आगे बत हुए अगला स्पान रिक्मग्रासेन ह जो स्वीडन
का अन्तिम पलाय ह। इतक वा लान् वास्तविक सीमान्त पार करक
नावेके प्रदामें प्रवेश करतो ह और नाविक नामक बन्दरगाह तक जाती
है। एक ही दिन आगे जाकर लौट आनावालाक लिए सीमान्तकी पुलिस
पासपोर्ट और बीसाकी विगप चिन्ता नहीं करती और आविस्को अथवा
रिक्मग्रासेनसे चलानी बन्धा नावेका बीसा न रहनेपर भी नाविक एककी
सर कर आत ह। नावेका वासा मैने भी नहीं लिया था और यह भी
जानता था कि नाविकमें कमसे कम रात भर न रहना हा तो बहाँ जाना
लगभग अर्थ्य ह फिर भी मामा पार करके अपन दखे हुए दगोंमें एक और
नाम जोड लनका बबबाना आकषण मुझे भी था और मै रिक्मग्रासेनसे
तीन स्पान आगे जाकर बापिंग लौट आया। एक और दग छु आनके
दावके अतिरिक्त इस मायामें कोई उल्लसनाय बात नहीं थी। दग्क
निरन्तर परिवर्तन हात रहनपर भी परिवर्तय बहा था। एक ओर पगढवा
पाव और घट्टने बाघ-बाघमें बल खती रहनी पणपर मुरगोके हात,
पिपलना बजक नदरे नीध बमी छान-छान गले तात और कभी बमा

हुई झीं । रिवसप्रासन लौकर रगम उतर गया । स्थानके पाग ही छाटी सा बस्ती ह जिमका मस्य सहारा सगनी ह । लाइनक दूसरी पार लीय बान (रस्ताका माग) का निचग पनाव ह जहांमे मिजगी द्वारा चाग्नि हिडालेमें बठकर पडावपर चत्त ह । यह हिडालगानी सलानियाके लिए आकपक भी ह और उपयाग भा । भर लिए नो स्वय इसकी सर और उपरल छारक बर्णोले खनाकी सर अथवा वहांस दोवन वाला हिम सरोवराका दस्य रोचक था लकिन सलानियाके लिए इसकी उपयोगिता यह ह कि ऊपरी छोर कई हिम मार्गोंका सगम ह और वहांस फई ग्गिआमाम स्कीकी दौड करत हुए जाया जा सकता ह । यह हिम पादुका अथवा उन्न-खण्ड पहनकर लोग इस स्थानस गपानियाक पवतीय मार्गोंका अन्वपण आरम्भ करत ह कुछ लौटकर महा बान ह ता कुछ दूसरी ओर आविस्कोसे नीच जा उतरत ह और कुछ नावैयो पवन श्रणियामें जा निकलत ह । भर पाम न इसके लिए समय था न मुझ स्कीका अम्यास ह भर लिए शिखरसे दूर तक दोखनवाग दस्य ही महत्वका था । हिडाल-गाडीक ऊपरी ठियक और ठियसे नीचके परिदस्यक मने कई चित्र लिय और फिर वही चट्टानपर बठकर दूरतक हिम-सरोवराके दस्य देखता रहा । तानें प्रास्क झीलकी सतह तो पिपठ चुकी थी और उसमें तरत हुए हिम-खण्ड क्रमग छाटे होत जा रहे थ किन्तु महासे दूसरी झील भी दोखनी थी जो अभी जमी हुई थी । मन कुछ रगान चित्र भी गिय लेकिन रग वास्तवमें महापर था ही नहीं—उजला और कात्रा और उसक ऊपर एक हन्की घुघनी नीलिमा या कहीं-कहीं चट्टानापर हल्की-सी धूसर रगत—रगके नामपर इतना ही था । बाका खत्रा विस्तार और प्रकृतिकी निबिकल्प सत्तामयता ।

बफ गिरत और गलत मन दखा ह । हिम-नदियाका आरम्भिक रिसना और पवताय गजन मन मुना ह । जम हुए नग्ने-तल और ताठ भी देख ह और उनपर चत्रा भी ह जमी हुई पपडी टूट जानसे ठण्डे पानीमें गोत

भी छा चुका हूँ। किन्तु पानावा किसी बहुत बड़े सनहका पिघलने हुए टूटना अभीतक आँखा नही दखा। उमक बिन्न और ध्वनि बिन्न दखे-सुन है—ध्रुव प्रेन्गीय बड़ी-बड़ी झीलाकी सतहवे भी और ध्रुवमागरक भी। कल्पनास अवश्य उनके अनुभवमें प्रवण कर सकना हूँ जिन्हान उद्यम करके अथवा समागवसा इनका अनुभव प्राप्त किया हूँ किन्तु उसे प्रत्यक्ष अथवा इन्धियाचार करनकी लालमा अभी बनी ह।

हिडालेपर बटे-बठ गूयमें सूत्र हूँ और सिखरकी बकमें टहता हुआ म इसी दायकी कल्पना करता रहा हूँ। कसा हा अगर अमा मरे दसत दसते हा हिम सरोवरके गिलिन तलके ऊपर और नीचक तापमानका वह सूत्र सपि-स्पत्र या जाय जब कि बफ़ चटचटाकर टूट जाती ह और असह्य हिम-खण्ड सहसा नीली हा गयी सतहपर तरन लगत ह—जस कभी जाहाकी बाली फटकर तीतरपंखी रूप ले लेती ह और उसके बीचमेंसे आवागकी नीलिमा झाकिन लगती ह तोनें प्रास्वमें ता यह हो चुका था इन ऊपरी सरोवरोमें किसी दिन भी उमकी सम्भावना हो सकती था। या कि पसा भी हो सकता है कि कोई सरोवर जमा ही रह जाय और उसके पिपयनसे पहले ही नया हिमपात हान लगे ? ऐसा भी तो होना ह कि इसी प्रकार स्थायी हिम-तलपर और हिम-पात होते होते निचला स्तर गिलित हो जाय। क्या उत्तरी ध्रुवक टोस खण्डके बहुत-स अंशने इसी प्रकार गिलित होकर भू-भाग षट्पानेकी पात्रता नहा पायी है ?

कहाँ नव-मन्त्रके प्रस्फुटनसे, मजरोस और विकरवस वगन्तागम जाना जाना ह। किन्तु यहाँ न पगी ह न उदिमज स्तरसे ऊपरके धन स्पति यहाँ वगन्तागमवे कोई मूत लक्षण हा नगी हैं, केवत्र बन्ना हुआ प्रवाग और बमतो हुई टण्क एव-मान लक्षण होगा हिमनन्त्रा च चटाकर टूटना—तोमार दुनिवार परणेर अलगित चला इस विजय गाके होनक वगन्तका आता अलगिन ही हाता रहेगा—उसकी प ध्वनि किसीकी पहचानी हुई नहीं होगी कशकि किसीकी गुनी हुई हा न होगी।

घट घट-घट कर सहसा तड़क गये हिम राण्ड
जमे सरसीके तलपर
सुड़क-पुड़ककर स्थिर
बस-तका आना
—यद्यपि पहले नहीं किसीन जाना—
होता रहा अलानित ।

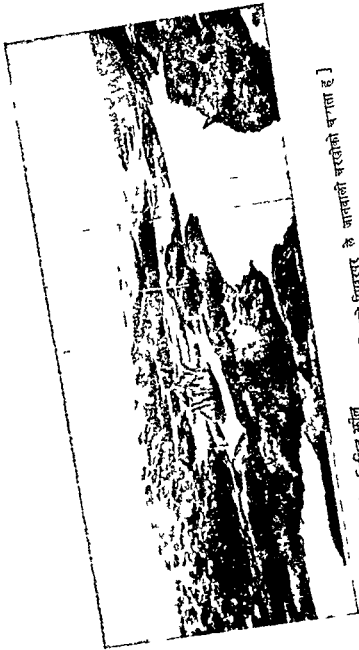
नयी किरणने छुए शृंग हो गये सुनहले
बहते सारे हिम-झीप ।

ये हेम मुकुट हैं केवल
दूर सूयके लीला स्मितसे गोभन
कौतुक-पुतले ।

इही कौतुक-पुतलाकी कल्पना करता हुआ और अमरुप पत्त निगपाकी
गूज सुनता हुआ मैं लौट आया । हिम-सरावर पिघला नहीं नीचकी हिम
गिलाकी तो बात ही दूर ।

नीचेकी हिम गिला पिघलकर जिस दिन
स्वयं मिलेगी सरसी-जलमे
मव बस-तको उस दिन
मेरा गीत भूनेगा ।

क्योंकि तपस्या
घमक नहीं है
बह है गलना



हिमानी और हिम शिलित मील
[चित्रम जो यत्र दीप्तता ह वह घूग-गाडीये यामियावो सिवलयर ले जाववाली चरखोको बगता ह]

घट घट चट कर ससा तडक गय हिम राण्ड
जमे सरसीके तल्पपर
सुदृष पुदृककर स्थिर
धसतका घना
—यद्यपि पहले नहीं किसीन जाना—
होता रहा अलक्षित ।

नयो किरणन छुए भृग हा गये सुनहले
बहते सारे हिम-डोप ।

ये हेम मुकुट हैं केवल
दूर सूर्यके लीला स्मितमे गोभन
कौतुक-पुतले ।

इही कौतुक-पतलाका कल्पना करता हुआ और असह्य पन् निर्गेषाकी
गूज सुनता हुआ म लोट आया । हिम-सरोवर पिघला नहीं नीचेकी हिम
शिखाकी तो बात ही दूर ।

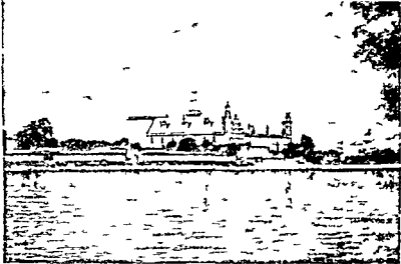
नीचेकी हिम गिला पिघलकर जिस दिन
स्वय मिलेगी सरसी-जलमे
नव धसतको उस दिन
मेरा गीत भूकेगा ।

क्योंकि तपस्या
चमक नहीं है
बह है गलना

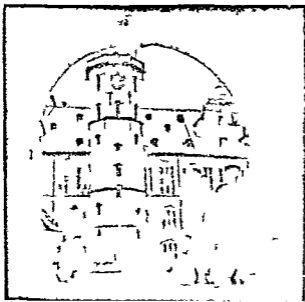


हिमानी और हिम शिलित भूतल

[चित्रम जो यत्र दीयता है षड् मूल-नाडीसे माथियाको दिक्पर ले जानवली बरखीको चलाता ह]



हेमलेटका दुर्ग—एलिसनोर



कहा जा सक । वास्तवमें वहाँ परम्परागत और आधुनिक का हा शिथिल हो सकता है उससे पहलेकी सीटियाँ वहाँ नहा मिलेंगी । कदाचित् यही कारण है कि यूरोपक कुछ नये दंगारा भाँति स्वडिनवियाक दंग भो लाक सस्कृतिके अवगपकि सरक्षणके लिए इतन अधिक मत्नील रहत ह ।

इस प्रकार लोकोत्तर प्रदेशस फिर साधारण भूमिपर आ गया । किन्तु लोकोत्तरकी गन्तरी छाप बनी रही । प्राय पच्छीम थप पहल जल् जीवनम जिस एक प्रानका लेकर बन्त सोचा करता था और किमी कृतिमें निरूपित करनेके अनक प्रयत्न करता रहता था—कवितामें उपयासमें नाटकमें भी !—वह एक नये रूपमें उभर आया था । स्टाकहोममें लिफ्टसे कूत्कर आत्महत्या करनेवालाकी चर्चा जीवन और मरणके प्रश्नपर एक स्वीडी कविस इच्छा विरुद्ध और उत्तजित बहमन मर चिन्तनको फिर उसी प्रानपर केन्द्रित कर दिया था—एकान्तम मृत्युसे साक्षात् होनपर क्या लगना है ? अत्यन्त सूक्ष्म-काल्म तो एमी स्थितिमें केवल दुर्गत जीवन प्रम (या कह लीजिए जीवन माह) उभरगा अस्तित्वकादी इमी सूक्ष्म क्षणका विच्छेदन करत है क्वाकि मृत्यु-साक्षातका क्षण ही चरम जीवन बाधका क्षण है । किन्तु क्षणकी बात न सोचकर उस अवस्थाकी बात सोचू तब ? मृत्युके साक्षातके क्षणको नहा काल-व्यापी परिस्थितिको अय सब परिस्थितियासि अग्र करके एकान्त भावसे कस देखा और नियाया जाय यह म बराबर साचता रहा था और एसी परिस्थितिमें उल्लूक हुए पात्राको और सब प्रभावसे अलग करनेक लिए मन निजम द्वीपमें लेकर बन्त हा गयो सुरग तक अनक परिस्थिनियाकी कल्पना की थी । लापोनियाके हिम गिलित एकान्तान इस प्रानको फिर उभारा । और अन्तम जब एक स्वीडी ऐतिहासिक दुःख और मानना सम्बन्धी एक प्रसंगपर बात चोतक सिलसिलमें अपना एक अनभव सुनाया तो सहसा मक्ष लगा कि अपनी समस्याके ह्क लिए

एक पौकी सी किरण मुझ दीखन लगी ह । यह लेखिका कसरत एक दुःसाध्य रोगाके साथ लापोनियाके एक पहाड़ी थापमें जाडा भरक लिए बन्दी हो गयी थी—अनपेक्षित हिमपातके कारण उस थापडक आन जानक सब माग बन्द हो गये थे । मल्युकी प्रतीक्षा करता हुआ एक व्यक्ति और उसे देखता हुआ एक दूसरा व्यक्ति जो उस मयुका निवारण भी चाहता था और उसकी कामना भी करता था—मेरी समस्याका घरम रूप जिसमें वह समस्या सब ओरसे काटकर गायमें रत दी गयी थी सामने था ।

किंतु यह अनुभव भी लाकोत्तर ह, और इन समस्याके काठगत परिणाम भले ही दूसराके सम्मुख प्रस्तुत किय जा सकत हा, इस समस्याके साथ कृतिकारकी यात्रा भी एक लाकोत्तर और वणनातीत यात्रा ह । युधिष्ठिरकी अन्तिम हिमालय-यात्राका वणन व्यामन किया ह उनके लिए यह बताना सम्भव था कि बस पत्नी और भाई एत एक करक परिग्रह-संशरते गये । किंतु अगर युधिष्ठिर हमका काव्य लिखन बटत तो वह दूसरा हाता । न केवल दूसरा हाता, बल्कि वह यात्रान्तका ही काव्य होता यात्राका न ।

और म अभी यात्रापर हूँ ।

सागर-कन्या और खग-शातक

अवनाम्नाय ठाकुरन भारतमाताका कल्पना गरिव-वमना तपस्विनाक वगम की ह नहा ता भारतप्रागिदाके मनमें ना देग मानाका रूप सिग् वाग्नी दुगाका हा एक प्रक्षेपण होता ह । त्रि नका देग माना त्रितानिया भी सिह्वात्तिना ह । जमानियाक वाहन रीठ ह । स्ता प्रकार अधिकतर देग देग मानाका रूप-वपना गतिन अथवा तजस्विनाक किनी प्रताकक साथ करत ह ।

किंतु इनमाककी प्रतीक कया सागरके किनार एक चट्टानपर बठा हुई स्वप्न दपनवात्री किगोरिका सागर-कन्या अथवा जल परा ह ।

हम आग्नि-कवि वाल्मीकिपर गव करत ह यूनानक लोग आग्नि-कवि हामरपर दानान एक एक महायद्धकी गाया गिता ह । त्रिन्त गवसुपियर पर गव करत ह जा राज सघपोंका नाटककार ह ।

इनमाककी गव ह अपन परियाका कथा लिखनवाके हास एडसनपर जिम बात अभी १५० वष नही हुए लेकिन जिमकी कहानियाका चालीस स अधिक दगाके बच्च जानत ह ।

राष्ट्रके साहित्यकार और राष्ट्रकी प्रतीक मूर्तिम परस्पर सम्बन्ध ह । कापनहागनकी जल परी एडसनकी एक कहानाकी नायिका ह * और उसी कहानान उम इनमाककी चनामें स्तना गहर तक बसा दिया ह ।

*कहानीम वत्तलक बच्चोम मित्रा हुआ कुरूप गावक सबक व्यग्य सहाता हुआ सुंदर राज हसीमे विकसित होता है यह हसी फिर परम सुंदरा जल कन्या बन जाती है ।

स आघारपर देके बारमें बनक मिद्वान प्रतिपुत्ति किय जा सकते ह । यह भा सम्भव ह कि उनमें कुछ मार हा और हेतो चरिषका कानना गालना समवा प्रधान नहीं ता एक महत्वपूण गुण अवाम हा । एकिन ऐसा कान् मिद्वान्त प्रतिपुत्ति करनका आवामकना महा ह जा अतिप्रसिद्धि दीपस दूषित हा । इतना कहना पर्याप्त ह कि इनमाकव लाग खुग-तवीयत, मनच और मित्रनसार हैं और उनका विनो-प्रियताका चचा पाम-पटाम क देगामें भा हाती ह । उदाहरणक लिए उनक निकटतम पत्तसी और जाति भाई स्थोडा पत्तामिथाको स्वाभाविक ईष्यकि बावजू निरन्तर उनक दम गुाकी प्रयोगा करत रहत ह ।

पु पशियाके जावनमें तिचत्पी घुरापक दूमर गामें भा पाया जावगी किन इनमाक हा एक एमा दग ह जहाँ देगक बचाका हा नगी विलगी बयस्क यात्रियाकी भी उमाहृपूवक नगरस ५०-६० मात् दूर ल जाया जावगा—बगुनका घामग देसन ।

या घालका घामग ह जर एक अनुवा । बगुन ऋतुप्रवामी जीव ह, नियतसमयपर उनका डारें उत्तर और दक्षिणका डार उतनी दगा जाती ह । हेनमायस उनक गुञ्जरनका गमम एमा ह कि वही उहे ना रचनक लिए स्थान दगनकी आवश्यकता होना ह । कभी बहुत बन्ने मरगामें उनका डारें तन्वर्नी मोहपरम जाता थी और बन्ने बपन घामग बनाना था अब बहुत याद घामग देस जात ह । एक परिवार एक हा स्थानपर घामग बनाता है और प्रतिक्रम वही लौकर आता ह । एक बपका गावक अग बपन घामग बगुन हो जाता ह और डारक माय उठ जाता ह ।

बिन्दु दुग्ध हाता हा पामलका अजुरा नहा बना दगा । विषयस यह ह कि य घात जगलमें शागामें रगामें या चट्टानका दरारमें नहा हात परामें हात है और परामें भा गामामें नगी बकि टाक घिमनास ठपर । पामला बपन बगुन हाता ह इमति उम एमी जगलका आवामकना भी हाती ह । बगुन घामगक लिए परकी घिमनीका चुना जाना महत्पतिक लिए

बड़े गवकी यान हाथी ह बच्चि उमे अगला सीमाग्यमूचक भी मान सकते ह क्यकि घोमनेको देगनव गिए बडो दूर-दूरस यात्री आत ह और सीन्से उपर जाकर घामला दग मवन या फाटा के मवनकी मुविधाके लिए पारितोषिक भी मन्प देते ह । इमलिए गहपति अपन पगपर अतिथि को सब तरहकी मुविधा देता ह गज भर चासक घासलेक लिए उमी मापकी झाली चिमनीके ऊपर लगा देता ह । और हमका ध्यान रगता ह कि अतिथि-यगल और उमके गावकको कार् कष्ट या जोखम न ह ।

किंतु हम जल-परीके पात्रमें बसे हुए कोपनहागन तक पहुचनमे पडल हा बक-पातीके पीछ हा लिय इम पाठक बहक जाना नहीं ता भयक जाना ही समयगा ।

[२]

कोपनहागन भी यूरोपके उन नगरामेंमे ह जिनकी सुन्दरताका आधार मुख्यतया उनकी सफाईमें ह । इनी जाति प्राचीन जानियामेंसे एक ह और साहस-बर्मा सागरिकाकी यूरोपीय परम्परामें इनियाका योग कुछ कम नहीं रग—अनक नौ-यद्धोंमें व जयो हाते रह और प्रदेशका अधिष्ठत करते रह*। इमलिए पुरान दुग प्रासाद और उद्यान भी डेनमाकमें अनक ह और कोपनहागन भी उनसे रहित नहीं ह । फिर भी गहरका रूप प्रधानतया नय स्थापत्यपर आश्रित ह । पुरान घर बदरमाहकी नहराके किनारापर ह केकिन घराका स्थापत्य अभी तक नगर स्थापत्यका मुख्य जग नहीं माना जाना क्यकि दगाकी दष्टि पहले राजकीय अथवा सावजनिक भवना को आर ही आकृष्ट होता ह ।

* भारतके पूर्वी सागर तटपर तरगम्बाडि (अग्रजी बत्तनीके प्रताप से 'टाकुवार !) गाँवकी पुरानी इनी बस्ती और गिरजाघर भी इनी साहित्यको स्मारक हैं ।

नगर भवन पार्सिमंट भवन कुठ प्रासाद, गिरजाघर मूर्ति-मण्डलालय आदि गिना देनक बाद फिर नगरके दो चार बर चौक उद्यान और बंदर गार्हकी गोशियाकी चर्चापर उतर बाना पड़ता ह । या फिर उन मया बस्तियायी आर ध्यान जाना ह जिनके छोटे-छोट बगल इनमाकक आधुनिक सहवार और जन-बल्याणके आयोजनाका उदाहरण ह । इसक बाद विदगी यात्री अनिवायत नहरके बाहरकी ओर देखता और दौड़ता ह । बापनहगान सुखद और प्रगसनाय और स्वच्छ ह । लकिन दानीय तो सीलडका सागर तट है राजकीय मृग-वन ह, उद्यानका 'लोक-जीवन सभ्रहालय ह फेड रिक्सबग और क्रोनबग दुग ह । नगरमें जहाँ-तहाँ स्थापित मरियाँ और फव्वार भी दानीय और उल्लेखनीय है किन्तु वे तो नगर-दानकी यात्राम बनायात ही दीख जाते ह ।

क्रोनबग दुग पड़ लिये भारतीय पाठकसे अपरिचित नहीं है । क्याकि वह हम्पेटना दुग है जिस राक्सपियरन (और, हा हन्ड ! विगोर साहून) साहित्यमें प्रतिष्ठित कर लिया ह । 'एन्सिनोर का मह दुग डिभाजित ब्यक्तिबाल अभागे राजकुमार हम्पेटका स्मरण तो दिलाता ही ह इनी राष्ट्रापतास और गहरा सम्बन्ध भी रखता ह । क्याकि इसक एक तल घरमें पौराणिक इनी महारपी होलगर इन साता ह जो इनमाकक संकटक समय जागगा और उसरी रक्षा करगा ।

सागर-नटके उल्लेखता जो चित्र अस्ताक सामने आता ह इनमाकका अधिकांश तल बसा नहा ह, बल्कि एक चयली स्वच्छ झीलका मू ही जान पड़ता ह । इसीलिये सागरका इम भुजाकी सागर बहा भी नही जाता, सावंड अथवा सूड बहन ह जिसे झीलका पर्याय हा मानना चाहिए । पूर्वी बगलमें जा 'हाओर पाये जाते ह— हाआर' सागरका हा अग्रग ह— बसा हा जल प्रमार मह भी ह—अन्तर इतना ही ह कि इनकी स्वच्छ पार दगीं नोलिया हयें तलवी घटानें भी देख लेन देनी ह ।

बास्तवमें उत्तरी इनमाककी स्वीडनस पदक बरनवाला सागर चयला

भी ह और तग भी । स्वामी सागर-नगम ता कोपन-गगन भी दीग जाता ह । योग उत्तरो सी-र-रुध दनिक घराद-गरीक लिए भा नावम बटकर स्वीडन चले जात ह या स्वीडनम इनमाक आ जात ह । कुछ चीजें इपर सस्ती हैं कुछ उधर इमलिए मर मरहनी यापार और आवागमन आसानीस समया ना सकना । दोना दगाका परस्पर सीहा भी एमा ह कि सीमाप्रातरी साधारण बाघाए वहाँ नहा होना ।

जितना उचला यह सागर ह उनना ही कम ऊचा सालडका भू भाग ह । मोस सी-र-रुध आविभावका पौराणिक कथाका आरम्भ हुआ हागा । उनमाकका दवा गोफियनका वर मिया कि स्वीडनका जितनी भा भूमिपर वह दिन भरमें हल चला लगी उतनी भूमि उस मिल जायगा । अपन चारा पत्राका बलामें परिवर्तित करक गोफियनन हल चलात शुरू किया और रस प्रकार सालड उनमाकका अग बन गया ।

सी-र-रुध तन्की सर अत्यन्त सुख और प्रोतिकर ह । टरिस्टाके लिए उस आकषक बनानक प्रयाजनस उसका और भी विकास किया गया ह और उसकी सडके काँच-सी चिकनी और चमकदार ह । सन्कच निनारक चायघर और आमोद भवा भी मुदर और रगिन ह और उनक नाम भी वस ही आकषक । जिसम मग जानका सुयोग मिला उनका नाम था किस्टस पल —सागर-तटका मोती । चायघर मोती-सा था या नहा रसपर विना अनावश्यक ह किन्तु उसक बाहर सागरस उठली हुई डाल्फिन मछलीकी जा कसिरी प्रतिमा स्थापित था उसका नाम मग अब भा हो जाता ह ।

मैं कोपन-गगनमें जयवा इनमाकम अधिक नही रहा । सच बात य ह कि मरी उनमाक यात्राका मरी दष्टिस दग यावा गिनना ही नहा चाहिए । स्वानस हांड जात हुए चार-पाच निनक लिए रास्तम

रूढ़ गया बस इतनी भर भेगे यात्रा था । लेकिन जो लोग एक महीने में
 संसार भ्रमण करते हैं, या तीन दिन में भारत देखते हैं उनका तुलना में तो
 मैं कुछ समय के लिए उनमात्र में बस ही गया था । क्योंकि मैं विशा टूरिस्ट
 हाटल में नहीं ठहरा जहाँ रहा वह एक कालजका छात्रावास था जिस
 प्रीम्पावना में विद्यार्थी ही होटलको तरह चलते थे । विद्यार्थी मनारस
 बंधु भाय स्थापित हो गया । विद्यार्थी टलीफान आपरटर एक घंटा रख
 था जिसकी कहानी प्रतियोगिता में पुस्तक होकर कई दंगाम छप चकी थी
 और मन भारतसे एक पत्र में पढ़ी थी । उसकी पत्नी रानी रडिया और
 टलीवाजन में वाचिका थी । दोनोंके साथ कापनहागनका बन्नागाहकी सर
 का थीर भन्नाहाके भाजनायामें—जिन्हें धारिका हेनी पदाय मानना
 चाहिए—भजन किया । मर प्रवासन चार दिनमें एक रविवार था उस
 दिन हम दम्पतिक साथ एक मुनिकार बंधसे उसके दाना घर में निगन
 गया । दिन भर वहाँ दिताया आनियेयके साथ भोजन बनाया थोड़ी-बहुत
 चित्रकारी और छापागिरा का और एक सहज आत्मोपनाका भाव लेकर
 लौट आया । क्या यह आत्माय भाव ही मरा इस उन्नी हुई सरको (पत्नी
 हम बिजिन, जो कि बमानिक हानसे कारण सचमुच यथा नाम था ।) यह
 दिनकी बगार् में परिवर्तित नहीं कर रना ? जो फोटो वहाँ लिय था उनका
 उत्पन्न नहीं करणा क्याकि पाया ता व लोग विगप स्वयं लत है जिनके
 लिए दान-यात्रा में दान नहा कम प्रधान है (दू.ग' इडिया !) । किन्तु
 चलन समय मूर्तिरार क्योन अपना एक टपका चित्र मझ नैट किया
 था वह धमा मर पाग है और इनमात्रम मरा मन्वय बनाय हुए है ।
 राना ही नहीं, छात्रावास में जिन कमरम में रहता था उस कमरमें उसकी
 स्थायी निशातीकी आरम आगलुक विन्नीक लिए जा सादग किया रखा
 था वह नी मुस स्मरण है । वह विद्यार्थी कमरा छाकर गया था ता उस
 गापी नहीं कर गया था बकि अपने सामान सजाकर रण गया था
 इन्हीलिए आन समय मझ यही उचित जान पदा कि हम मजावमें भारतीय

सजावा भी कुछ योग अपनी आरसे कर दूँ और साथ ही उस अपरिचित विद्यार्थीके लिए एक सदेग भी त्रिग्वर रख दूँ—अपन प्रातिवर प्रयासके लिए कृतज्ञता नापन कर दूँ। कमरकी एक दीवारपर इनमाककी राजपरम्पराका अत्यन्त विनोत्पण चित्र लगा हुआ था—इना अपन राज-कुलमे स्नह करत ह इसलिये उनको चर्चा आनकपूर्वक नही बल्कि विनोत् भरी आत्मीयताके साथ करत ह। इसी चित्रक एक कोनसे अपना सन्देश अटका कर म चला आया। म आगा करना चाहता हूँ कि लौटकर वह विद्यार्थी जब भी अपन राजाआके वग-वशकी आर दसकर ममकराना हागा तब उसका प्रीति भाव क्षणभरके लिए भारतकी आर भी म आना हागा।

इनी लग अपन राजाआका जो विनोत्पूण प्रचार करत रहते हैं उसमें कुछ यह बाध भी ह कि राज-कुल टूरिस्ट-यवसायके लिए लाभकारी होन ह। जिस घबल-वेग आदि पुरुषमे उनकी राज-परम्परा आरम्भ होनी ह उसे व सहज आत्मीयतासे बुढऊ आम कहत ह किन्तु यह सहजना अतिपरिचयात्बना वाली नही ह। दंगक जीवनमें राज-कुलकी दनका इतिहास जाननपर समझम आता ह कि क्या इनी लोग उनपर इतना गव करत ह। पिछले महायुद्धमें जब इनमाकपर नासियाका कब्जा हो गया था तब राजाका अखण्डित धम सार देगके साहस और सात्वना देता रहा था। इतना ही नही राज परिवारके लोग अपनकी इस पूणताके साथ जन-जीवनम मिगा देत ह कि अचरज हाता ह। राजा सगीत प्रमी हो यह ता साधारण बात ह किन्तु ऐसा गुणो कलावत हो कि नियमित रूपसे सगीन भवनामें जन साधारणके लिए वायक्रम प्रस्तुत किया कर यह और कठौ सुना गया ह ? या जन साधारणस एकामता स्कडनवियाक सभी दगा की परम्परा रनी ह और स्कडनधी देगके राज-कुल एक दूसरमे निक्कट सम्बद्ध ह भा—बकि नावैका वतमान राजा तो इनमाक द्वारा भेंट दिया गया था। एक राजाकी निस्तान मत्यु हो जानपर जब प्रश्न उठा कि उत्तराधिकारी कौन हो तब निक्कटतम सम्बन्धी स्वीडी राजकुमारको

इसलिए नहीं आमंत्रित किया गया कि नावेंको बड़ देग स्वीडनसे थोड़ा डर भी था । नावेंने इनमाकमे एक राजकुमार मांगा और इनमाककी भेंट उस स्वीकार हुई । किन्तु नावेंकी राजा हाकानन अत्यन्त निष्ठापूर्वक अपने नये देगका सेवा का और इस प्रकार स्वडिनवा देग-परिवारका आर भी धनिए आत्मापनाक कचनमें बांध लिया ।

क्या उस आत्मीयताक वक्तकी इतना और विकसित नहीं किया जा सकता कि भारत और स्वीडिनेकियामें परस्पर अनुकूलता बढ़ायी जा सक ? भ नहीं जानता । केकिन सागरमें एक बूँद जल क्षरा देनवागी घामकी पत्ती की तरह मझमे जा बन पहा में कर आया ।

राइनके साथ-साथ

विधिवत स्वीकृत कार्यक्रम अनुसार जितना भ्रमण करनी अनुमति मिला है उससे अधिक भ्रमण कर रहा है। दूसरे गंगामें य जा यात्राए कर रहा है इनका यात्रा-व्यय यात्रा वृत्ति देनेवाली संयुक्तराष्ट्र संस्थास नही मांग सकता है—वह अपने दैनिक भ्रमणसे ही जस-तस निवाल्ना हागा। या यह इतना कठिन नहीं है क्याकि हाटलमें न रहकर छानावामम रहने और नाजन रस्टराम न कर किमी कटीन या नुक्कड चौराहके ढावमें कर नसे हा न्तनी बचत हा जाती है कि थोना-बहुत घूमन फिरनका व्यय निकल आवे। सामानकी बिनाप आवश्यकता नहीं पडती कचपर टांग त्रिया जानवाला झोला भर सामान पर्याप्त है और फालतू सामान तो जहाँ कहा भा निश्चित भावसे छोडा जा सकता है। (जा मुन जानत है व ता जहाँ तहा बहुत सा सामान जटाकर उस वहाँ छोडकर जाग चल देने की मरा आदतसे भला भीति परिचित ही हाग।)

वाजुमें उत्तरके लिए छूटनवांगी एक पसेंजर गागाके तीसर दर्जेके तिन्त्रमें रातम अकेला बठा हुआ ठिठुर रहा है इसका यहा रहस्य है। यहा दर्जेके हिसाबसे तो किराया घटता बन्ता ही है गानीकी रफ्तारके अनुपातम भी एक ही दर्जेके किरायके कई स्तर हात है। संयुक्तराष्ट्र संस्थाका वृथासे अधिकतर यात्राए विमानसे करता रहा है जटरी कामके लिए उडन फिरना आवश्यक ही सकता है लेकिन वास्तवमें दंग देखना हो ता कुठ घामा गतिम और स्थल मार्गसे हा जाना चाहिए।

सूना अधरा रात। ठिठुरन। तिन्त्रके वोनम सिमन्त हुए अकडे व्यक्ति को मूनपनन माना और भी घर लिया है। और गलियारम (गानीक सब

हिन्दे एक-दूसरेसे मित्र हुए ह और गलियारसे होत हुए एक सिरेसे दूसरे
 तिर तक जाया जा सकता ह) भारी पल्टनिया बूटाकी चाप उस स्तूपन
 की और भी घना कर रही ह । बाजलमे देर रातको चलना हुआ था अब
 रातक अन्तिम पहरमें गाढा सोमात पाए करके जमनीम प्रवण कर रही ह
 और हम सामान्तर स्टेशनपर कस्टमवाले पन्नाल करत हुए घूम रहे ह ।

कुछ ऐसा हा सूना और मनहूस वातावरण दो पोली पहल्लेकी हिन्दु
 स्नानी रत्नगालियाके तासर दजेक डिब्बामें मिल जाया करता था । य उम
 जमानकी बात ह जब रत्नगालियामें भी नहीं होती थी—जो हा कजुगळे
 बावजू ऐसा जमाना हमन अपना भाषीं देखा था ।—और बहुधा बड
 शिबरमें भा रात भर अनल-कुले बटनका सवाग हो जाता था । किन्तु
 यूरोपी रत्नगालियामें जब मनहूसिपत छाता ह तो कुछ ज्यान्त मनहूस जान
 पडती ह । हा सक्ता ह कि मुझ अजनबा हानक नात ऐसा जान पन्ना हा,
 पर मरा सवात ह कि यूरोपक अजनबी हिन्दुस्तानक अजनबियाकी अपेक्षा
 एक दूसरेम ज्यान्त अतिरिचित होते ह । गिछल महापुद्गक बाद विशेष
 रूपम जमनीमें यह अजनबीपन और अधिक हो गया ह । जम कठआ
 बातरक थाधानमे डरकर अपन अवयव भीतर निको लता ह वस ही
 गाधारण जमन नागरिक जीवनको भीतर ही भातर ममेटकर जीनका ज्यान्त
 हो गया ह ।

मग सामान भी चक किया जा रहा ह । हागा ज्येकर कस्टमका
 गिनाता पडता ह स तू ? —तना ही वम / यह जमन ह और यह
 जानता ह कि मैं किन्ती ह, शायद इमीलिए मान जाता ह कि मुास
 प्रायोसीम बान करना चाहिए ! म उतर देता ह बाका ता मरे कागजात
 ह ।" मर हायवा बग जिममें पाग-माटक अन्वावा तरह-तरहक प्रमाण-पत्र
 और अधिकार-पत्र ह, म उगकी आर वण देता ह ।

यह मुनकरसता ह लेकिन उतकी मगाराहट जसे वहाँ नहीं ह । हायव
 शायत मुग सट्टा देता हुआ बड बाग बण जाता ह । सूनापन फिर उसी

राइनके साथ-साथ

विधिवत स्वीकृत कार्यक्रमक अनगार जितना भ्रमण करनी अनमति मुच ह उससे अधिक भ्रमण कर रहा ह । दूसर गन्गामें य जा यात्राए कर रहा हू । इनका यात्रा-व्यय यात्रा वृत्ति देनवाली समुक्तराष्ट्र मन्ध्यास नहा माग सभता हू—वह अपन दैनिक भत्तमसे ही जस-तस निकालना होगा । या यह इतना कठिन नही ह क्याकि हाटलमें न रहकर छात्रावासमें रत्न और भोजन रस्टराम न कर किसी कटीन या नुक्कट चौराहक ढावमें कर ऐनस हा इतना बचन हो जाती ह कि थोटा-बहुत घूमन फिरनका यय निबन्ध आव । सामानकी विगप आवश्यकता नहा पडनी कंधपर टांग लिया जानवाला थोला भर सामान पर्याप्त ह और फालतू सामान ता जहा कहा भा निश्चित भावस छोडा जा सकता ह । (जा मन जानत ह व ता जहा-तहा बन्त सा सामान जटाकर उस बही छोडकर जाग चल इन की मरा आत्तसे भली भाति परिचित ही हाग ।)

वाज्जामे उत्तरके लिए छूटनवाली एक पसंजर गाणीके तीमर दर्जेके शिबम रातमें अक्ला बठा हुआ ठिठुर रहा हू । इसका यहा रहस्य ह । यहा दर्जेके शिमाबस तो किरायी घटना-वटना ही ह गाडारी रफ्तारक अनपानमें भी एक ही दर्जेक किरायके कई स्तर हात ह । समक्तराष्ट्र सस्याका वृषास अधिकतर यात्राए विमानस करता रहा हू । जसरी कामके लिए उन्नत फिरना आवश्यक हो सभता ह किन वास्तवमें देग दखना हा ता कुठ घीमा गनिस जोर स्वयं मार्गसे ही जाना चाहिए ।

सूना जवरा रात । ठिठुरन । शिबक वानम सिमट हुए अक्के यक्ति का मूनपनन मानो और भी धर लिया ह । नीर गन्गियारम (गाणीक सय

जिब एक-दूसरसे मित्र हुए हैं और गन्धियारस हात हुए एक सिरम दूसरे मित्र तक जाया जा सकता ह) भारी पट्टिया बूटाकी चाप उस मूनपन की और भी घना कर रही ह । बाजुस दर रातका चम्भा हुआ था अब रातरे अन्तिम पहरमें गाडी सीमात पार करके जमनीम प्रवण कर रही ह और इन सामान्तर स्नानपर कस्टमवाल पन्ना करन हुए घूम रह ह ।

कुछ एसा ही मूला और मनहूस वातावरण ने पानी पहलेकी हिट्टे स्तानी रन्गाडियाके तीसर दर्जेके डिब्बाम मित्र जाया करता था । यह उम जमानकी बात ह जब रन्गाडियामें भीड नही होती थी—जो हौं कजुपक बाबजू ऐसा जमाना हमन अपना थागा दसा था ।—और बटुधा बन्धिमें भी रात भर अरल-बल बटनका मयाग हा जाता था । किंतु यूरोपकी रन्गाडियाम जब मनहूसिमत छाती ह तो कुछ क्याण मनहूम जान पटता ह । हां सक्ता ह कि पन्थ अजनम हानक नात एसा जान पता हा पर मरा सयाल ह कि यूरोपक अजनबी हिन्दुस्तानक अजनबियाकी अपना एव-दूसरेक क्याण अपरिचित हावे ह । गिठर महापदक बाद विगप रूपस जमनामें यह अजनबीपन और अधिक हा गया ह । जस कछया बाहक आधानसे ढरकर अपन अपपक भातर सिकोण ऐता ह वस ही साधारण जमन नागरिक जाननका भीतर-ही भीतर समेटकर जीवनका आण हो गया ह ।

मरा सामता भी चर तिया गा रण ह । छाण दमकर कस्मात तियाणी पूछता ह स तू ? —दना ही बस ? क जमन ह और पद चानता ह कि में कित्नी हँ शायद दगाणि मान रता ह कि मुक्तक प्रांगीमीम बात करनी चाणि । म उत्तर दता ह, बाडा ठा मर बागडात ह । मर शायरा बग विगमें पाग-पाग अलावा तन्तरदक प्रमाणक और अधिकार पन ह, म उगवा आर बग रता ह ।

क मुमकरता ह क्विउ उनकी मसाराण जत घनी रता ह । कदर दगारग मुग एटा दता हुआ बदे आग बड़ जाता ह । मूनपन हिन्दु

तरह घर नेता ह । कोटका वालर उठाकर म गण्डेको खाना तक ढक नेता ह आर जूतमेंसे पर खीचरर अपन नीच दगा एना हूँ । घाड़ी दर बाद घडघटाकर गाड़ी चर पन्ती ह ।

किताब बताती ह कि इसस आगेका प्रदेश घहन मुन्दर ह । बाजलसे ही हम लोग राइन नदीके साथ-साथ चले ह । बाजलका नदी-तट भी बडा मुन्दर ह किन्तु अब हम ग्याम-वन के मुदर प्रदेशस मजर रह ह जो कि भौगोलिक दष्टिमें भी उनना ही महत्वपण ह जितना कि एतिहासिक दष्टिमें । किन्तु सूनी अधरी रातमें उन सौन्दर्यको देखनका कोई उपाय नहा ह । अधिकारमें सब सौन्दर्य एकस होत ह—बल्कि मुन्दर और अमुन्दर भी एकसे ही हात ह !*

किन्तु बीच-बीचमें खिडकीसे बाहर झाँकता हुआ म सोचना ह कि स्वय अधिकार सब एकसे मुदर नहीं होते । घरकी माद मय सताय एसा मरा स्वभाव नहीं ह क्याकि जहा रहता ह अपनको इतना यस्त रखता हूँ कि इसनी गुजाइश ही नहीं रहती । पर यहाँ खिडकीसे झाँकत हुए सहमा भारतकी स्मति उमडकर आतो ह और आप्लावित करती हुई चली जाती ह । यूरोपके अधिकारकी अपगाम जितना अनिवचनीय मुन्दर होता ह भारतकी रातका अधिकार । हमारा आकाश यूरोपक आकाशस मुन्दरतर होना ह यह पहले भी ग्य किया ह यहाँ रात तारा भरी कभी नहीं हाती, कक-दुकक तार ही दीखत ह और चाँद भा कभी-कभी दीखता ह तो प्राय ख़ाया हुआ-सा । समझमें आता ह कि क्या भारतका चन्मा रजनो रूपी नायिकाका नायक ह निगानाय ह राजापति ह । पर मैं

* अनन्तर इस प्रदेशस दिनमें भी घूमा नदी-यात्रा भी की । किताब की बातका घाला देखा सचूत पा लिया !

आकाशकी रातके भी आकाशकी बात नहा कर रहा था, अघकारकी ही बात कर रहा था। यन्की अघकार रखा और टोस हाता ह भारतका अघकार म्निग्घ और कुछ न दीखनपर भी माना पारदर्शी। यूरोपका अघकार माना वाला दफनीकी दीवार हाता ह हमारा अघकार वाली मत्तमका पर्दा।

उस मत्तमका मानसिक मत्पगस आप्पापित होता हुआ न जाने कब म ऊप जाता है। सूनापन मनूसियन, छिुरन और अजडन सब एक धानारहीन नीलिमामें विलय हा जान है

जब जागकर एक लम्बी अगडाईस वन्जन जोड खोना ह तब देखता है कि वन-प्रदग बबवा पीछ छू गया ह—राइनका रख कुछ पश्चिमकी हो गया ह और हम सीध उत्तरकी आर बहे जा रह ह। एक छांस धनोदानक पासछ हाकर गाडा मुडता ह हम एक नती पार करत ह— यह माइन नती ह जिसके किनार प्राकपन बसा ह।

मरी मजिउ यह नहीं ह पर यहाँ कुछ परिचित ह जिनम मिलना ह। कुछ परिचित और कुछ परिचिनाके परिचित जिनक नाम पत्र लेकर आया है—पुरान ब्रान्तिकारी जिनक नाम इतिहासमें गित लिय गये ह, जिनकी ब्रान्तिर्मा अत्र सामद अमहीन हा गयी है लकिन जिनक अपने प्रयन बमा अयहोन नहीं हाग—जिनके अनुभव उनक अपन जावनका सम्पत्ति तो ह हा, उन सभीके जावनको सम्पत्तर बना मवने ह जिहें उनक निकट सम्पकवर सोभाग्य मिले।

[२]

फाउन्स रेलकी पटरी राइनक साय-साय कुछ और पश्चिमका मह जानी ह और नगास और मिचोनी खन्ती हुई कार्लेजक स्पोमर घाटक निकम्म जाती हुई बोन पहुँचा दना ह। राइन नगाका पाट इधर आकर कुछ चौडा हा जाता ह और पहाडियाँ भा कुछ विरल हा जाती ह फिर

भी प्रवेशका रूप बहुत अधिक नहीं बरतता। गिररागर टम हल मीनारारार छात्र उड दुग और उनकी चकी हई लाए छन आकागरी नीलिमा बन तहआकी सममठना और ननाक जहरमाट्टरा रगन बोच अपना अलग धान रखती ह। नतीपर चलनवाए स्टासराकी सवागत सफेसमें जा चक हलवापन ह वह सार दयसी भयनाका कम नहीं कर पाता क्याकि य दुग गर बीरताके इतिहासक दोसमे उस श्वाय रहन ह। दुग-भक्ति गिररा के बीचमस बरवाना हई नया माना बरतस पाणि प्रार्थी मूरमाआके वाचमस बचकर निकल जानवाला स्वपत्रा हा। घूरापकी नरियाँ ममा अपना अलग अलग प्रभाव रखता ह। परिसकी सन नतीका तो गहरा अग ही देमा गो कि नहर-मा बवा हुआ ह और जिमका सौम्य प्रकृतिवा नती स्थापत्यका ह। रामन टवरा नका वणन अयथ कर चुका ह। विपनाक निकट डानाउ अथवा डयूव नको देखकर पहला बार लगा कि वास्तवम नहर नहीं नती देग रहा ह। उसकी रग भा कुठ अधिक उज्वल था। उस गारी नया कहनका कारण जितना यह रग हागा कि विपना एक साम्राज्यी राजधानी रहा उतना ही उसकी नमगिक भयता भा। अगर रान स्वयवरा युवती ह ता डयूव निचय ही पयुठचारिणी राजमनिया। किंतु एमी उग्रनाआका कोई अंत नहा ह और कल्पनाका सस निगाम छूट द दो जाय ता नती देवनाआका एक नया पुराण बन सकता ह !*

* रान नदीका एक वणन

रोनके समान धावती लोघारके समान चौडी मघासकी भांति पवत-वेष्टित सोम-सी हरित और उवरा टाइजर-के समान ऐतिहासिक डेयूष सी गहाना नील-सी रहस्यमयो अमरिकाकी नरिया सी स्वण तारा जन्ति, दूरतम एगियाकी किसी नती सी प्राचीन काय गाया मयी ।



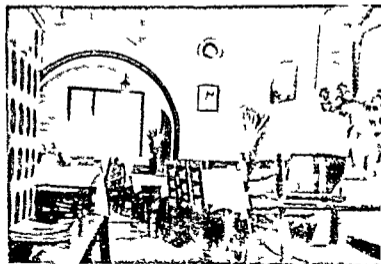
राइन प्रदेशमें विगेरनुक



फार्नरुह नगर-भषाका उद्यान



बाइ काएत्सनाव



दा० फाउस्टका घर. काएत्मनाव

बोन पश्चिम जमनाका राजधानी हु विल्लु यह गौरव उनन नया हा थाहा हु और उम दगकर अभा तव य नया गता कि य वास्तवमें गजागरा ह । दगक प्रधान नगरम जा गुण गान चाणि और राज्या जवनका बन् बिन्दु हुनका स्वय जा बाय हाता चाणि उमका ध्यानम रगत गत अउ भी बनि हा राजधाना जान पत्ता ह---बन् विभाजिन जमनाका हा नती यूरापका स्नाय-बन् ह ।

बोन गामन-बन् ह पर यह हाकर भा राजधाना अभा नती बन पाया ह । अगल्लुकर पर उसका प्रभाव भी राजधानीका-मा नया पत्ता हाक परम्परागत प्रादीन नगरका-मा हा पत्ता ह । गामन-बन् ग जानव बा अतव नय भवनाना निर्माण वहाँ हाहा हु और नयाक विनारना भा परम्परागत स्थापयना आम्वा न । नया कि भा गहरका मुख्य भाग मध्य-बा और उत्तर मध्य-बाका अन्तर्नि भरा ह । इनम मुख्य ह रन्ध स्थानस निरन्त हा गामन लखनवाग वरा गिरजाघर या मिस्र । गहरका तम और धुमाकार महके एक दूसर युगका अरण्य लिखा ह--- जब वहीसे चलकर बहा जा पहुँचनती त्वरा भून-मा शिरपर सवार नया थो और जा रह हात का मुख्य पहुँचन क मुख्य किशो तर क काम्य नहा था बनि-क कुछ अधिक ही हाता था क्याकि बन् दर तव रन्ता था ।

चून-म पुराने भवन गामनीय कायमें लगा णिय गय ह । कृष्ण गन्ध बन गय ह । त्रिग हाटलम म णिका हूँ वह कुछ ना इमलिण पुगत दगका ह नि म विज्ञान कर रहा ह पर कृष्ण उगता कारण य मा ह कि कम पगत मरानम नय गका हाटल हा हा । सकता । सधा ता आपुनिक हाटका ह पर कमरम स्नान पर तवका यात्रा हा बिनती तग मादिया और गन्धियाग बन्ता पत्ता ह उगाम आम्मा भन्क जाता ह । और नाजनन कमर तर पहुँचनत णि जिनता उदम चाणि बन् सायन जारती अन्त विना दार् भा बन्तकी तया न हाता ।

या उत कमर तव पहुँचनत हा रन्ता नया मिल् जाता क्याकि भावन

वन्तक लुफ्फे माय जाता ह । या ता जमन गिष्टाचारम तन्तुफ कुछ ह नी जविक पर बानक परम्परागन जायाना यन् भी एक ग्याग ह कि वन्त परान ग्गन गिष्टाचारसी परम्पराण थभा जोविन ह । चार आत्ना दटवर बायर पात ह तो प्रत्येक वार गिष्टाम उगकर परस्पर स्वाभ्य वामना करत ह तमम प्राप्त । बहुर पराग द दना ता पराप्ति नहा हाता बलि सन् भा होना पता ह । परामन लिण इतना उठक-बन्त करनी पन् ता कवायन् करना हा कथा बरा ह । कन्वत्ता विन्विद्यालयन उन जाचाय म्पादयन स्मरण हा आता ह जा घग्स विन्विद्यालय गानक लिण गियात्तम जा गमनी पन्रीकी गक पन्तन व ता बगवर एक मा गनिम गम गानक बीषावाय चलन जान थ—गमका घण्टियाका चाक्का चिन्गनकी दगाकी चिन्तित पकाराकी उह काइ परवाहन नानी था । गगान जब उह पान जाखाकी बान समयाकर किनाकी पराम चन्तना कन् तन् उनका उत्तर गविनका स्वभावगन मिनयेयिताका (निम गग गल्नीमे जात्स्यका गम द दते ह) कितना सुन्त उगाहरण था बी का मागाय एक बार आटा एक वार नामा—आभा पारी ना । सीधा सपाट गमका पन्गन सहार चला जाना ह किनार चक्कर बीन वार वार फट पायपर चन्ता उतरना रह । आचाय म्पेय बीयर ता न । हा पात व त्रितु जमनाम भा जम बीर पन् होन ता एमालिए न पान कि कौन वार गार गिष्टाम ग्गर उठक पन्क तरगा ।

हाल्डर भाजनात्तम मन एन् । वार भाजन क्रिया फिर क्रियायनक लिण वि विद्यालयकी आरका छोटा दुकानाम हा जाना रहा गहा वचन भा वा जोर तन्तुफम छ्काकी आगा भा । यहा ग्राहक प्राय सन् स मामज बीर तल न्ण सन्त या एमा प्रहारका दूनरा क्रियायना भाजन तन् थ त्रितु माय बायरका वन्त मग जक्य । मन जब पानाना गिष्टाम मागा तन् बन्तन चाक्कर मरी बीर दगा और फिर कुछ रक्कर कहा जाप वन् जाइए पानी म वन् पहुचा दूगा । थाली देर बान पानाका

गिनाम आ भी गया । यूरोपका साधारण बीजन मुय कम रचना था, इमन्टि म अधिक भाषामें हंग उच्छिषाके अन्वावा प्रत्यय भाजतय साथ दूध ना ग्या रग चटरम मन पूछा कि क्या एक गिनाम दूध भी मित्र सकेगा ? यह बिलकुल सत्य था गमय आधा मित्त तक मरी आर प्रतता रग गया । फिर थाडा मसकरावर उमन जमनमें जगै प्रती बुछ कहा जा म समय न सवा इतना हां समगा कि दूध नगी मित्र सकता । मन घयवा कानर उम विग करता चाहा पर वह जध मुये अपनी दान सम गाना आवदन समगना था—दूगरी मशम व एव यकितना दूग लाया जिसन मुय अप्रीम उमका दान समगर ली बटर घट कहना चाहता ह कि दगिए मटागय आपन वायरन यन्न पाना मीगा बह ता मन ला निया । अर इमास आप म गमय के कि यगै दूध भी मित्र जायगा ता य आपकी पयाना ह । मन हुसकर एनारा घयवाद निया गीर छुट्टी पाया । एट्टकी गलियाम घूमने हए यह तो दय ला निया था कि कानर डरी ह भाजा करन उवरम हात हए गोटनम काइ कनिाइ नहा थी ।

बौनका अपन संगीतका परम्परापर गय ह । या युगपक कगसिक गीतम जमन संगीत मष्टाआता दन गवस बडी ह—गिनाम संगीत मष्टाआका प्रनिभा आपराका गार अधिक युकी ह । सिन्दु नगरका संगीत-परम्परारा सम्बध जहाँ एव आर मष्टास ह वहाँ दूगरी आर गगाल भवन छे प्रकट हाता ह जिनमें नियमित मय गास्याम संगीतक कायत्रम प्रम्नुा निय गते ह । संगीतक गगालमि बौनका नाम जमित्त म्पद जडा हुआ ह क्माकि मूगगाय संगीतका कगसिकन सवज बडा नाम बौनग गम्भइ ह । बट्टायनका जम यगी हुआ और यगीका बट्टायन भवन और बट्टायन मष्टागाल्य न कव उम मगान कलाकारक, स्मति पो रगा किय हए ह कि इग दानका भी प्रमाण ह कि नगर उमम भवन गम्बधरर कितता गव करता ह । गव अपन आपमें बाँ बरी घात ग्या ह क्माकि कितो घाउक महत्त्वका समझ बिना नी उगार गव किया

जा सकता है किन्तु ममति भयन और मद्राज्य जिन लोग रग गय ह
 वर सिद्ध करना = कि वान निवासियोंका गौरव भावना वाग्मवम बन्धावन
 सगीतक प्रति प्रम जोर मगातवाग मच्च सम्मानका प्रतिबिम्ब = ।
 बन्धावन भयनका तामरी मज्जिपर जिन छान्म कमरम बन्धोवनका जम
 हुआ उसम कोई भा परिवतन नग हान दिया गया ह का सजा नग ह
 यों तक कि मरम्मतम भा उसका रूप नहा बन्धन दिया गया ह । वफ
 का बनाया = प्रमन प्रतिमा उस वाटरीका एक मात्र अङ्करण ह । किन्तु
 उसक आम-यागक कमर मूचवान एनिगसिख सामग्राम भर हुए हैं । एक
 कमरम उस वाद्यन पों भा रग ह जिनपर बन्धावनन बजाना मोगा था ।
 बन्धावनकी हाथका लिखा हूँ स्वर्ग निपियाक कई एवम भा वग ह ।
 तान सौक लगभग हस्तनिपियाका यह मद्रह मरापीय सगीतक इतिमम
 अपना विगिष्ट स्थान रखता ह । दमर कमरामें बन्धावनका पियाना जोर
 विभिन्न तार यन भी रग ह ।

[४]

कामरह । याम वन क छारपरका छाटा सा एतिहासिक नगर ।
 वानस चलकर फिर एक बार राइनका किनारा द्यत द्यत प्राक्फुन पार
 करता हुआ यटा आ गया ह । विधिवन कार्यक्रमक आधीन यटा जानका
 मरा कई काम नहीं ह मय म्यूनिए पहुँचना चाहिए जटिपर मयक्तरास
 मन्वद एजेंगी जोर जमन भारत मश्रा सध मर जिग कुछ कार्यक्रम बना
 रह ह ।

अनि विधिवन कार्यक्रम मरा हा हा क्या सकता ह ? एक हू
 जो बत्ति मय मिला ह एक हानक नात हा मिया ह और उसका क्या
 उपयोग म करगा इम प्रमनका यही उत्तर मन दिया ह कि अनुभव-मचयक
 जिग और यूरोपका आत्माक पहचाननक लिए भ्रमण करना चाहता ह । पह

मानका विधिवत् वायव्य वया २१ मकता ह ? अतमत्र-मचयका विधि क्या हा मकती ह मिवा अनुभव मचयक ?

और काल्पाह एक व्यक्तिका पता गान बाया ह । इम यकिनम भा मग काइ काम नहा ह अपर इतना हा पता ग जाव कि वह जोवित ह—बल्कि इतना ना नहा इतना भर पता ग जावे कि गम बाग्म कुठ भी जाननका—य भा जाननका कि मति वह जावित नहा ह ता वर और वहाँ उमरी मत्त ह—कोई उपाय ह ता वह भी यथष्ट हागा । गमा क्या ? व भा एक पुराना ज्ञानिकारा था—स्टिलरक उपाय पहल का उमक उम समयर कुछ सहर्मी मर घनिष्ट मिथ ह । स्टिलरक उपाय बाग्म हो वह बिना को निगान छा गायर हा गया था । गागा जमनाम इम प्रकार नामाग या ति गय हा जाना काइ अमापारण बात नी थी । अब उमर बारम कुछ भा समाचार एक गनिहामिक उप गिर हागो । बल्कि इतना जानना भा उभागा हागा कि अब ना एम गाना हा गय यकिनरा खोज हा मकता ह ।

जहाँ तक अनुभव-मचयकी बात ह क्या इम यात्रका उत्तर—कमा भा उपाय—मर अनभवकी वडि नहीं करगा ? म ता समथता ह कि एम छोटे-छा अन्वपण हा व्यक्तिका समकालीन इतिहास मजीव समकथ गान ह गिापन ऐम व्यक्तिका जा इतिहासकार नये माहिपकार ह जिम गनिहामिक घटनाक अम्बिपिजग्म नये उमक प्राणाक गानम प्रयाजन ।

(उम व्यक्तिकु म् न् न् । लकिन उमका पता ल्य गया । वह उम समय काल्पाहम नहा था लकिन जावित था और फिर नाम करन गगा था—ज्ञानि-कम न । क्यारी गमागा ? उमर पतरर विहा छा कर और अपन मित्राका उमकी सूचना दवर मल अग्री गान गमापन गमागा, विहाका उत्तर मुने प्राय २३ वरम बाग्म मिग ।)

[५]

होटलम गंगा द्वारा नगरमा उद्यान है। वे भारतम जाता ता कम्पना वाद्य कहलाना किन्तु यहाँपर वाउ (वन) कहलानर हा मनुष्य है। जाग छट्टीका गिा है मगिा तीमर पन्को गगलकागन धूममें विगार करनर लिए जागल-बद्ध बनित्त मभी तरलक गगरिर बनक भीतर मगिा तालर कितार गगी हरियालीम ज् है— हरियाग कुउ पाग पन् गगी है। किन्तु उमी भीम ग मित्तन उछरी नी है कगाकि पेगके वाचमम गता हुं थनक बन-बीथियामेंसे निमा एस्का पन् ग सकता न और मर अप्रत्यागिन सुटर स्थलमें पहुचा जा सकता है। पत्तियाँ भी गग और मुनगी हो गयी है। रातको उनम धध भर जाती है और मवर उसका नमी नीच गमा हुई पत्तियामें बस जाती है। छायावाणी कहत न कि गीण पत्रापर रात अपन आसुआकी छाप छा गयी है। किन्तु यन् नमा पगना पत्तियाम बह खमीर उटाती है जिसस ध पत्तियाँ पचिन हारर धरनाका नयी उवरा गकिनम परिणत हो जावेंगा—उनकी मत्य नय ज वनकी भमिका बन जावगी। जीवनकी इमा क्रियाकी एक अनिवचनीय गध न पत्तियाम उठरही है। यसातके सौरभ दूसर हात है किन्तु गरदकाकी वनगध अपना अलग प्रभाव और मग्माहन रखती है। वह गध एक अक्पनकी गध है जो कि वारान नही है एक स्निग्ध निचन्ताकी जो कि जन्ता नही है जिमका विमग्पतामें मग्मा तीका बाध है कि हम जाविन हैं कि हमारी इद्रिषा जागन है सचरण गील है और नयी मक्पनाक लिए उत्सुक है। कितना सायक है गित्याक गित धन्कि गा गल—वन भूमिमें उमकन गायाकी भाति हा म्मारी गित्या जीवन त्रम अनभव बानना हुं विचरण करती है।

गरदकनु। वायम हका मा मिन्नर है। धूप बन्त गग हा टग जाता है और उसकी गगाम पत्तियाकी गगी रखग जान पन् गगता है और फिर धीर धीर काला प् जानी है।

गरदक्रतु । घर लौटनेका समय आ गया ह ।

यायावरमें बा आत्मावमा नहीं ह । भीतर उम हूँ कण्ठ भावका अपन ही पर डालकर व काण्ठ्यरा अपव्यय नहीं करगा कवल एक मन्त्रा स्तम्भना अकण्ठपन जिममें सबन्तका अनिरिक्त सजाना ह किन्तु मन माना ज ह । दगना ह मुनना ह ध्राण ह म्ग ह—मभा कुठ ह किन्तु नहा ह चिन्न वहाँ कवल स्तम्भता ह । जान माना मन्त्र आ गया ह और मान कवल सभाटा ह ।

बनाधानम बाहर नगर भवनक सामन पन्नागपर प्रकाशका खन् गुन्ड ह दूफानाम काँचक पाछ सत्रा र्द वस्तुण मु र—या कमग-कम आकपक ह रगाना और नवानता लिय हुए ह । फूल चक्का ह ।

चौदमें आन जान बाग और बालियाके सें और तम्बाकजारा अनक गधे कक पन्नी और ताठी टवलरातीका गय प्यात और ममालाक बघारका गध तनी जाता मगजका गध दूमर पत्ताम अग्य चिनारर पत्ताका गय सरत हुए मूग पत्ताका गध और गन्त हुए गी पत्ताकी मवया भिन्न गध—बसा गय-मकुठ ह ।

द्रामगानियोंका ग उचा एडियाका दूत और बटा पटा पट चय और पुरानी तगवा दूताकी भारा चाप कटवा परासे दूध मिगानवाल यत्राता मात्कार और फेंनवा यत्राती गज अनक प्रसारक स्वचालित यत्राती गयगहाह तनरियाती साखना—बसा स्वर-मकुठ

ठड धातुका म्ग म्ग गरम पाइतका स्ग अगराक पत्ताकितना म्ग बन बगका बायका रामि मयमग स्ग (बनवा कको जमनमें बाय बिगो कहन ह) ठना काटका रामि म्ग स्ग होयल की चाबियाके गाय लग हुए प्लास्टिक तिकन्ना कगार और निर्व्यक्तिग स्ग शायमें त्रिय हुए बगर ग्द हयना उगानियाक कागनवाग बटा और अयन द्यकिगत स्ग—बसा स्ग म्कुठ

जोर इस बहुविध सङ्कुलम जात्रान तात्र मंत्रान्तर एक तात्रनर मन्त्राना जाराप गौतिका घर जानका समय आ गया

घर । कितना परिभाषाए हा मकता ह इस एक गणका—कितन रूपा और विम्बामें वह मूत होकर गामन आ मकता ह एक चित्रक जोर कठकी रखा जो धोर धार उभरतो जोर दरती ह जिमम काई गण नया फूटत क्याकि मानो बाणाको ग धार पार निगण लिया जा रहा ह ह्य वणाकी एर गण जिमम एक साथ ही घएकी ओर निमी बहून निम मूल एर फूटकी गध उठ रण ह पुष्प प्रवात्रोपहित यदि ह्यामुक्ताफल वा स्फुटिद्रुमस्यम् यात्र निजा हाता ह और उगक विम्ब भी निजाहान ह यग्लिए हर किमीम घरका यात्र जग्य गम उमन्ती ह । किन्तु निजापनका वह धन निजी ह इमात्रिए आत्र रन्ता चात्रिए

[६]

काल्महका बही बनादान । बही तीसर पहरकी धूप जो पेडाम परत हूण सानसो थात्र और सुनहटा कर देता ह । उमी सर्पिण सालकी एक भजा निमके तात्रपर गिरत ही झरती पत्तियाका कम्पन गात हो जाता ह और उसके बन्ध पानीना सनहपरसिहरनका एक बत्त बनता ह और फन्ता हुआ विन्नेत हो जाता ह । अपनी वापनी गति तात्रका सौपकर उमाके फन्त हण बत्तम पत्तियाँ टिक जाती ह ।

जोर मम गण्यको देवत गण मम महत्ता चननासो एक लहर आप्ला विन कर गती ह—कि म जीवित हू कि जात्रन मुत्र ह कि जीवित हान का अनमूति गौत्यका चरम अनुभूति ह कि म मरना नगी चाहता कि म मर जाऊगा ।

म मरना नही चाहता । और म अवश्य मरूगा ।

दाना ही बाताम कुछ भी नया नगी ह । नया पान मुझ कुछ नही

मिग = बेबग तथा चतना मिगी ह—गनों की वानें अलग-अलग एक
 नय उमपक हपमें भर भोतर मुग गया ह । माना अस्तित्व मात्रवा
 निचाड उहान मर सम्मुग रव त्रिया ह—अस्तित्व मानस मर सम्बधका
 मार-नेरव । कि जीना मुत्तर ह कि म जीवित ह और मरना नहा चाहता
 कि म मरैगा ।

यह वाप धूपकी तरह उजला और ममयगी ह । उमक साय का
 यथा नगी ह कोई क्षण या कुठा नहीं कोई पराजय नहा । कलावित
 एगिएकि वह वाप मर अपनपनवा नगी अपनम वर कुछका ह जावनका
 ह । मुत्तर जावित ह म नहा मरगा म जीवित नगा । जीवित हाना एक
 ममयध = मरना न चाहता उम ममयध प्रति एक राग भाव । मर मर
 जानपर उम राग भावना क्या हागा ? म नहो जानता उ उमरा का
 मरर ह । अगर वह भाव बना रता ह अत तक चतन रता ह और
 फिर एवागक वष जाता ह तब उमक चुक जानस भी क्या ? जय तक कि
 वह राग भाव मर उम भावक बाधम पल नो चुक जाता तब तक गावा
 किम बातकी ?

और उम सम्बधका क्या हागा ? क्या वह नहीं रहगा ? और क्या
 उमका न रहना उमके रह हान को निरधक नगा बना दता ? यह भा
 म नगा जानता हमम भी कोई अतर नहीं पता । जावन नगी चुकता
 अगर म हूँ जवनक म हूँ तब और तवनक म सम्बध भी हू—जमम्बड
 धरम्भाका म जान हा मगा सकता । इसलिए जहातक मरी बात ह यह
 सम्बध चिन्तन ह—म सम्बध हानरा ही जान सकता ह उमक न गन
 का जान ही नगा मरना ।

कामराम स्तुगाए और उमर राम हाना दुआ म म्युनिय चग
 गग । इस यात्रारा पला भाग उमा त्याम वनर प्रथम जाना था और
 मुत्तर था परयो भाग नारम लगा । म्युनियमें भी एगर नगीका किनारा
 और उमम लगा हुआ भक्तिमिन्डियन भवनक आम-पामका वनाछान मुत्तर

रमा—यहाँ भा गरत्कायका गत्या पहुँच चुका था। निम्नतम गत
 जीर उसका उद्यान भी दगनाय जीर स्मरणाय था। वरसा म्यूनियमें जा
 कुछ दस्ता वह स्मरण ती ह पर स्मरणाय उस नही क सतना उरस्य
 नाय भी वह तहा ह। जा थोडा गहन कहन योग्य ताना वह दसर प्रसगाभ
 प र या जाग कता गया ह।

मरा टायराम टीव ह कि काल्मरुहमे म्यूनियाका यात्राम गरत्काय
 का जा सौम्य दवा व मर जावनम अद्वितीय ह। यह शिष्या वरसा
 सौम्यपर भा हा मवती ह जीर मर गाननाभवनपर भा। कितना मन्त्र
 उम गिरा जाव य पाठकका रचि और उक्त विवरपर ह। मर एक
 मित ह जितान जभा तन पाठ न। दवा मन एन वर उर आर न।
 ता ह्यार छपिका संक हा हा जानका उकगाथा था पर उनका इम
 गनाम निम्नर ग गरा कि पगा तो इतना ऊचा गता ह कहा अघा
 तव ऊपर भा गिर ती

पतझरका एक पात

[चलिनकी डायरीसे एक पृष्ठ]

आज जम जग पल न दय हा एमा नही पर पत्तियां एम जगत
गगना इतना बग पुज—वह नी दया हमार यहा एक-दुक्क प
गगे दमनकी मिता तात ह बहत हमा ता जाठ-म पकी पांत । पर
हम बनगणामें मभी बग एमी भन्गाली अग-पीली मुनहला पागा
पता थ और नीच मिठ पतापर पत हए धूमन वत सोनक मुकु
चमन तात थ । हमार पराम रीं ते जाकर पत्तिया एक ताखी परनु हय
गप दे रही थी—और व मुने बचपनकी स्मनियाम डुबाये द रग थी ।

मग माधिनन जो जमन ह पर यनीं एक भारताय विशार्योरा
गगता ह जीर इमीग मगे परिचिा हई महमा बग मने बचपनकी
या आ रही ह—पिताके साप हम बनमें धूमन आया करती थी । वह
नी एग ही तुम्हारी तरह तज चगन थ—जग ता एग तज चगन
ही नही ।

म कहनका हुआ और उडकिनी कौन तज चगना ? ग्याकर
हमार दगमें ता— पर रुप रहा मुगकग गिया ।

गामन क परानी चाप गुनाई दा धाग दरमें पगण्डाक माध
गग न ग दीग । एक छाग मनिव गगन—नायक साप आठ मनिव
जिहे गाय माधना जग्गग कराया जा रग था । व आकर दूगरा आ
गिग गये हम आग बजत रग ।

पगचाद । पर मौनमें भा मुग रग कि कुग बग गया ह । माधिनन

पछा क्या बात है ? और उमरे क्या क्या स्वयं चार गया— मन
मिपाहियान आकर सब कुछ त्रिगान् किया ।

मन कहा क्या ता गय । पत्तियाँ तो जय भा बगी हा गान है और
धूप—

उमन आविष्ट स्वरस कहा क्या म और मतिव नगी दानता
चाहता । क्या सब जगह मतिव है ?

प्रसंग बहुत ही नाजुक था—हर जमनन लिए जाता पूर्वो वर्तनम
और भा जबिक क्याकि वहा गय मत्ता वही अबिक अन्य है और नाग
रिक् जावनपर उमका छाप क्या जविन गहरा । म उगम उमन यद
कागीत अनुभवाका बात पूछना चाहता—पर दूमरक जावनका कुम्भरा
जत्रिकार तथा मित्रता है जब पहल महानभूतिका सम्बन्ध स्पष्ट ता चका
हा—क्या क्या स्थिति मरा है ? मन कुछ पूछा नता—उम समय पर
कितन प्रान मर मनम थ—है

वनम एक छापी पीठ मिगी उसम निरत पत्ताका हम दवा क्रिय ।
जमन स्वभावकी कल्पनागीलता जागी उमन कहा य पत्तियाँ परियाका
टागियाँ है । जानामें य बपके नाच ठिप जावेंगी वसातमें फिर निर
लेंगा । अगले बप— पर अगठ बपके उलेखमें वह फिर उतास हा
गयी ।

×

×

×

चौकर त्रिगान् मनम पहलें मन उम भोजनपर जामित्रि किया और
इम गग एक रस्टरिका जार व । रास्तमें उमन कहा तुम मझ जमनाम
धान् व ।—या अपन देगम—दाई काम नता त्रिगान् सनत—ग घान्
वननक लिए भा तयार है ।

मन चौकर क्या क्या ? क्याकि मन मात्रम है वह एक दनिक
पत्रम राम करना है ।

उमन इधर उधर देखकर क्या 'क्याकि बर्जिन अब रहन लायक नग रह गया ह । म गानिक वातावरणम रहना चाहता हू ।

मन पूछा तो क्या पश्चिमा जमानम नगी जाया जा सकता ।

पर म काम उकर जाना चाहती हू—भागकर नहा । मर्न अमहा
—पर गणार्थी बन जाना भी ता—भविष्य गिन्वा रस दना ह ।

म यानी दर चुप रहा । फिर मन क्या व राजनीतिक गणार्थी
ता व आत्मा हात ह—नुम ता एक प्रिचारो उक्ता—

उमन उारम क्या नहा नगी नही । भागकर नहीं जाऊगा पर
णार्थी नगी बनूगा । यहाँ गुणमा ह पर गलाम प्रिणता ता व सकत ह
और अनन साथ गन ह । पर गणार्थी—गणार्थी सब अकल हात ह—
और उँक विगस ?

मान व ता हम पामपाट गिगानका कटा गया—पूर्वी बलिनम
विना मक माना नगी मिल सकता—क्याकि अगर पश्चिमा जमनीका हो
ता उम माना नला गिया जायगा । पहर चौका फिर मय स्थिति याद आ
गयी चपत्ताप पामपाट गिया गिया ।

अब रातमें पश्चिमा यानिक इस छाट गटलका तागगे मजिलम
बागका प्रवाग दगना हुआ मोच रग ह कौन-ना थजा ह—अपन
दगम दागपत रहना या दूमराके बीच जनायवन ?

यह क्या था गिगुमाना भागे गन ह टाक ही ह पर भागपन
माना गिगामन उठे बाध्य भा नहा किया । य उनका सीभाय रग
ह । व मुरापर जममकगका उ नहा निगन सरत पर सगानुभति ता द
गकन ह

यूरोपका स्नायु-केन्द्र : बर्लिन

नगरका एक बन्द बग चौक । जायुनिक नगरका जायुनिक चौक जिनका रंग राना रंग दक्षिण नगर राना रंग रंग निरन्तर बन्दबन्दका बाग बरगत राना रंग जायुनिक गमना जाता ह ।

याहारा मण्डल मभा जार काँचका बग-बग विचिकियाँ विनक भातर प्रकाश जगमगा रहा ह । मण्डलपर उनस छनकर आया हुँ रागनी मण्डलका वक्तियाका रागना रोगनी हुइ माटरानी रागना—धिर और पनग धारियाम बन्ना हुइ गानाविध दानियाके जाऊ । भातरा मण्डल जधकार का एक वक्त जिनम राना रंग जानाम कि बन्नापर टूटा हुँ महगने जीर गिर ह फिर महमा जीर भा गहर जधकारक एक कुएम निरला हुइ गिरजाधरकी एक टूटा मानार ।

बर्लिनक रागमाग कुफून्नाम (सरलाराका मण्डल) क मुख्य चौक म राना हुँना यदस ध्वस्त गिरजाधरका यह सहर ज्या-ना त्या रहन दिया गया ह और रमक आसपास सब कुछ फिरस बना और बसा दिया गया ह । गिरजाधर एक समय बर्लिनकी बहूमूय निधि समझा जाता था उमक सहर भी कम सुहर नही ह जीर चारा बार नव निमाणम धिर ए हानक कारण उमका सौज्य माना जीर समझ हा आया ह—उमका प्रतीक मण्डल मस्कारम पण होकर और साथ हा आम पामक जावतस आग्रहवक धमपन्न रानर और भी गक्तिगाग हा गया ह ।

म चाहता ता रमम धमकी दग-काणस ऊपर उर मकनरा गक्तिगाग हो प्रताक दगना इस जधिक कुठ नही । या नतिक प्रचारका जाग्रह कुछ अधिक हाता तो इस यदका ध्वसात्मकताका प्रताक मान नेता । या निरा

मोक्षवादा—यद्यपि कुछ विज्ञत प्रवृत्तिका ।—हाता तो मृत्यु या विनाश का सौंभ्य भी हमस दस सत्ता । या चाहता ता गिरजाधरका स्थितिका या भा दस सकता कि आम-यास मय कुलका पुनर्निर्माण करनर वाद िटोन मा गिरजाधरका छां दनमें बलिनसागन बत्र याग-मा विएटर प्रस्तुत किया ह—एस नाटकाय मिमयति गरा आणतुकपर अधिक प्रभाव दानका प्रय र मर किया ह ।

किंतु मन जो गगा उमक पाछ बटा यह मय भू हा रग हा वास्तवम हमस भिन्न पा । या सिमी भी चात्रमें किमा प्रताकापका उद्भावन जितना उम खोजवा दरता ह उनता हा अपन आपका प्रकट करना भी और का चाह ता यत्न कर सकता ह कि मुन गिरजाधरम जा दीया उममें मुनका ही दस । किंतु मन यही दता कि यह टूटा टूटा गिरजाधर माना ममसागन मुरापाय चरत ह—मुत्र गडिन जावन और विनाश क विरासा आरपणाय कारण भातर-ही भातर गिवा हुआ घम विवागम गिरजागानागविन और धम प्ररणाय आमनन भावन विगयी दसायम विमदिताया हुआ और बचन और रानम भा प्रवर जातरन एमा आला दिन कि उम जनदया न । किया जा सर ।

मुरापाय प्रवण करनर कुछ िन बाह हा मीन किम म बहा था कि भारतयाय चहर स्वच्छ और सात हीन ह किन्तु मुरापाय चहर अतिवापनया मघय विगत । किमा ा मापायण म्यापायी तरह हमस न सच और मर दीगता अग ह एकिन कुछ दिगकर अतत्रन यग भाव बना रहा और अब भी यग ह । और मय एमा रगा कि किम प्रकार मुरापाय मघय का चर बलिन रग और ह उमा तरह मुरापाय अमगा चरत मूत्र बलिनमा चरत ह ।

और गिरजाधरका आगाक मन्त्रि सात्र गिरर माना इम मघय बिट्ट चहरका प्रतीक बना गहा था ।

यत् कदाचित् इमा पञ्चान या क्विपत भावनाका प्रभात या कि
 वल्लिन प्रवामम जा कुठ म गचिन करर ७ या उमम ७ याकी स्मनियी
 प्रवान नया ह । वकि अतभनियाका या वानागपाका स्मनिया ७ उमर
 कर सामन जाती ह । यह नया कि वकी घमा कम या कि वया ७वनका
 कम था यहा कि दया ह ७ प्रयक वस्तुक साथ विसा मानव-व्यक्ति—या
 व्यक्ति ममह जाकिन या मन—का अतभनियो इम प्रकार गया हाता था
 कि आखाम ग्रहण की हुई लापका अपना वाना ७ारा ग्रहण ना गया छाप
 मन्व अधिक गन्री हाता थी । एक थाल देखत गया या थाल वन् मुन्
 था और पन्ल पतचरक ७गान उमक विदार जोर भा मुन्र वना थिय थ
 लकिन उस स्मरण करना हू ता जावाम सामन उनना स्पष्ट कुठ नहा
 जाना अपना माग-७िकाका कही हुई वाने हा वानाम अधिक स्पष्ट गूजना
 ७ । पानीम मूखन पत्ता और अवनमा डालियाका काँपता छायाण दखकर
 वह अदृ स्फट म्बरास जिम कपना-लाकका वान करता रती उसम जिम
 गहरा ७तागाका अवचनन भाव म ७ित कर सका था वहा मर सम्मव
 जाता ह । वन प्रदगम एक छान म क्वा घरमें बठकर काफी पा था
 ७किन स्मरणम केवठ उम चरका चरा सामन आता ह जिनन काफा
 लाकर मजपर रखा था । काँ कारण नहा था कि उस मर उपर सन्ह
 हा या मजस डर हो लकिन यह स्पष्ट था कि जिस दुनियाम वह रता
 था उममें जो प्रतिनि होना ह उमम मिन कुठ भी हाता (जम मय-स
 वि७गाका उपस्थिति) केवठ अनिष्ट ही हा मकता था जागा कगी नया
 था ७र ना उर था—यद्यपि ७उ-स्वीकर निरन्र वि७गत रहत थ कि
 कि जागावाता न जाना जावन ७गा गता ह । एक नाष्ट क्वा म गया
 या नाष्ट-क्वाका वानावरण औ ही हाता ह जोर मर लिए ता वह
 वन ७यका पन्ग जनभव था ७किन प्ठ या ७ आता ह यगा कि का
 मजम क रहा ह सार पूर्वो व७िनमें यो एक जग ह जगी गामनर
 वारम मजाक किया या मुना जा सकता ह ।

यूरोपका स्नायु-कन्द्र बर्लिन

निस्सन्देह में पूर्वी और पश्चिमा वर्तित्व अनुभवको मित्र गया है। निस्सन्देह दाना गण्डोके वातावरणमें आकाश पानाका अन्तर है और पूर्वी और पश्चिमा जमनाका जीवन शायद मन्त्र हम अन्तरका प्रविष्टिम्बित करता है—पूर्वी जमनाम मरा परिचय नया है वक्त्र उमका गजगाना पूर्वी वर्तित्व है। वर्तित्व पूर्व और पश्चिमक य भेद वाक्का वाते है और एक वर्तित्व वाक्करम रापी है वर्तित्वयि स्नायु वर्तित्व है। एक दूगगा आयाम भी है निम्में य अन्तर मन्त्र नया रचना वाक्कि यह स्वयं परिणाम है। वर्तित्वका या जमनाका या यूरोपका चर्रा अगर् दा विराया वर्तित्वका मधपस विवृत्त मित्रा वा चर्रा है ता इमाक्ति कि यूगगाय जावाका जिम आधार भूमिपर रच रच है वक्त्र विमाजित और अन्वि रायन फली हुई है। वर्तित्व यूरोपका स्नायु-कन्द्र है और जिस स्नायु का वा वक्त्र है वह रच है अन्वि-मन्त्रका और अमहिष्णु है उरा जराय आयातन मनजना उर्रा है और विद्याम कभा नहा कर पाना वर्तित्व निरन्तर और भा वान्त और भा अमहिष्णु और भा विवृत्त रक्त्तवाका हाता जाता है।

वर्तित्वकी वर्तमान स्थिति जा परिचित नया है उर उर टाक-टाक गमपानक र्ण अवरान वाक्कि। म रमें य कि जमना का भागाम वक्त्र है जो अग्य अग्य दग और राक् मान जात है। पश्चिमा जमनाका राजधाना बोन है पूर्वी जमनीका वर्तित्व। मन्त्रद्वय वा वर्तित्वपर चार मन्त्राक्षिपारा संयुक्त गनित गायन हाता या अन्तर विवृताना प्रागामी अमरिका गनित अधिवास्त्रियों गनित नियन्त्र स्नायु अरना रण्ड गगर् गायनका सौत्र र्णिया दूगगा अर र्णिया रक्त्तमें र्णयक गगर्णम पूर्वी जमनाका सरकार स्थापित है और पूर्वी जमनाका राजधाना इमा रण्डमें है।

कानूनकी दृष्टिमें बर्लिन मुला गहर माना जाता रहा अर्थात् उसके एक खण्डमें दूसर खण्डमें जानेपर कोई नियंत्रण या प्रतिरोध न था। बाच बीचमें कठिनाइया और सघर्षोंके बावजूद यह स्थिति बनी रही है। कानूनकी बर्लिन एक और अविभाजित है और आन-जानपर किसी तरहकी कोई रोक नहीं है। लेकिन वास्तवमें दोनोंके बीचमें किन्ती गहरी खाई है यह बड़ा पहुँचकर ही जाना जा सकता है। नासनिक स्तरपर जो भ्रम है वचारिक अथवा मनोवैज्ञानिक खाई उससे भी बड़ा गहरी है। बल्कि प्रशासन अथवा अर्थ-व्यवस्थाके जो भ्रम दीखन हैं उनके मूलमें यह मानसिक भ्रम ही है।

पश्चिमी बर्लिन सम्पन्नताकी और एक आन्वस्त यद्यपि सतक आगा वादकी प्रतिमूर्ति है। उसकी भरी पूरी दुकानामें नाना प्रकारका माल है बाजारामें चहल पहल है। पूर्वी बर्लिनकी दुकानामें सजाबट त्रिलकुट नहीं है क्योंकि माँग भी कम है व्यापार बचनवालीकी गरजसे नहीं खरादन वालेकी गरजसे चलता है। पसन्दकी गुजाइश नहीं है खान-पीनकी चीजें सरकारा दुकानासे मिलती है और उसके बाह्य बुनियादी आवश्यकताआकी पूर्ति सरकारा या यवभायी दुकानासे हाती है। पश्चिमी बर्लिनमें जैसे उत्साह और चहल-पहल दीखती है पूर्वी बर्लिनमें उसी तरह एक संकुचता मानो सारा नगर टोह टाहकर डरता डरता कदम रख रहा हो। बाहरी व्यक्तिका स्पष्ट दृश्य जाता है कि युद्ध और परानयके वादने अनिवाय अनिश्चयन पश्चिममें फिर एक धययुवन साहमका रूप ले लिया है किन्तु पूर्वमें वह एक कसमसात आतकमें बन्द गया है।

एक गहरका दोम वाटनबाओ इम मानसिक दोवारके स्थूल और वास्तविक घूम जगह जगह दीखन है। पश्चिममें उस गिरजाघर जैसे दो चार स्थानका छाँकर सब कुछ फिरसे त्रिमित हा गया है। इसके विपरीत पूर्वमें सरकारा हमारा और स्तालिन आगे जैसे दो एक राज मानोंको छाँकर नगरका अग्रिकाग बसा ही घ्वस्त और सञ्चित पग है। पूर्व और

पश्चिमका मीमा रयापर सनिक पक्तियाँ बटानकी कोई आवयवता नही ह क्याकि ध्वसावरोपाकी एक अट्ट रस्ता ही सामा बता देती ह । कहनको यानायातपर कोई रोक न हानपर भा, नगर रलवको छोड यानायातका कोई साधन एमा नहीं ह जिसका एक खण्डसे दूसर खण्डमें जानवे लिए उपायग किया जा सक । पश्चिम बलिनकी टक्सी सामास सी गज पहले रुककर सवारी उनार देती ह वहाँस पल्ल सीमास दूमरी थार सी गज जाकर दूमरी टक्सी ली जा सकती ह—अगर मिल जाय तो । मुझे अपन धाम-बच्चीस फेरोंमें बभी भा पूर्वी बलिनमें टक्सी न मिल सकी पल्ल प्रवण करनक बा मीला पल्ल ही घूमा थोर अन्तमें रलगाचीस धापिस लौट आया । नगरके दाना खण्डमें टलिफोन यवस्था ह रेडिन एक थोरस दूमरी थार टलिफोनका सम्बन्ध नहा ह । गहरक दाना भागसे अलग अलग नुनियाने अधिवनर दगा थोर नगरों तक टलिफोन किया जा सकना ह रेडिन पूर्वी बलिनस पश्चिम या पश्चिमी बलिनसे पूव टलिफोन नहा किया जा सकना । इतना ही नहीं बाहरी आत्मी पूर्वी बलिनमें भी किमी का टलिफोन नहा कर सकता क्याकि टलिफोनका कोई बाहरकरी वहाँ प्रकाशित नहीं का गानी । यदि आप पहण्डे कोई नम्बर जानत हा तो बात दूसरी ह नग तो एक मात्र उपाय यह ह कि आप डाकक पत्रस पत्र डाक दें थोर अपना पत्रा द दें । अपना टलिफोन नम्बर भी आप सकना नहीं द सकन क्याकि हाटल तकमें एमा हो सकता ह कि आपको नम्बर न बनाया जाय, पूछनपर यती उत्तर दिया जाय कि आप पत्रा दे दीजिए जिसमे आप सम्बन्ध करना चाहत हा वह स्वय टलिफोन कर लगा ।

पश्चिमी बलिनर चौथामें उद्यान हैं बच्च सन्त हैं अष्ट पागाका में स्त्रियाँ पुमनी ह हमी-भवाकक स्वर गुनाई पडत ह । पूर्वी बलिनर चौक अन्त थोर सपाट थोर मून हात ह थोर उनर घारा थार पहुरान हाट थोर बन्-बड अगारामें जिग हुए जयथार थोर नार उम गुनरनपर थोर अधिक् बन् दते जान पडत ह । बभी-बवाह जा सनिक या प्रग्गन

कारा चौकम भर जान ह जोर फिर विपर जान न उनम भा चौकाका स्वभाव नही बन्ना । पश्चिमक चौक सम्मन्तक गिण आमात्र प्रमात्र गिण ह पत्रक चौक प्रमाणक गिण आत्मानक गिण ।

पश्चिमम त्रय विक्रयपर कार् प्रविध न । ह विन्ना मुन्ना भा माया रण नियमानुमात्र वक्राम बन्ना जा सकना ह । पूर्वी और पश्चिमा जमन मन्ना भा विनिमय निबाध रूपम गना न करान जोर बव दानक लिए एक पश्चिमी माक (जा गगभग मवा स्वयक वरावर गना ह) मान्वार पूर्वी माकाक वरावर समता जाना ह । यन् विनिमयका सरकारा तर ह जोर यन् आनुवातिक यापारिक मलय । पूर्वी बर्तनमें विनिमयपर कन् प्रविध न । कोर् विन्नी मन् सरकारा बक्का छात्रक कन् भा परि वर्तन नही वा जा सकती और वह भी वर्गीकी सरकारा दरम जिमक अनसार एक पूर्वी माक एक पश्चिमा माकक वरावर गिना जाना ह—अथान बोइ भा विन्ना मिक्का या पश्चिमी माक भा पूर्वी बर्तनम बनान पर उसका एन चौथायम कम मिलना ह—रपयम सा-वारह आन ननार्ममें कट जान ह ।

नगरक दा भागाम मन्क सम्बन्धम न एना भिन यवस्थाआक कम विमगन परिणाम हान ह इसका योरा दना यन् जावयन नही ह । उसस अपना रणाक लिए पूर्वी बर्तन यन् यवस्था करता ह कि किसी विन्नाम अन्ना मन् भा नही नेता और पश्चिम जमनीकी मन् भा नहा बवल डात्र या स्टर्लिग मौगता ह । जमन मन्—पूर्वी या पश्चिमा—रवल उस दगाम स्वाकार का जाता ह जब वन् पूर्वी बर्तनक सरकारा बकम डात्र अथवा स्टर्लिग दकर प्राप्त का गया न और वन्से इसका प्रमाण पत्र भा गिया गया हा जा कि साथ गियाया जा सक अथान प्रकारातरस फिर बक्का डात्र या स्टर्लिग हा स्वीकार किया जाना ह ।

विन्नाको किमी भा तुमानम कुछ भा सरानक लिए पासपात्र गिणाना पन्ता ह । अथान समन् राजिए कि अपरिचित हर किसानका पासपात्र

मरे नकारात्मक उत्तर देनेपर फिर पूछा गया कि क्या मुझ नाइट क्लबमें जानपर गतराज है ? क्या मैं उन अनतिक्रममत्ता हूँ ?

मैं उत्तर दिया कि एमी कोई बात नहीं है मुझे नाइट क्लबका अनभव नहीं है न उधर बिनाप रुचि है। योग-सा कोठर है अवश्य पर ऐसा नहीं कि उसे गान्त किये बिना मैं अपनेको अत्र समय या मानूँ कि मुझमें बौद्धिक जिज्ञासा नहीं है।

मुझ कहा गया कि नतिक्रम आपत्ति नहीं होनेपर मुझ हाया मैं अवश्य जाना चाहिए। क्या ? इसलिए कि पूर्वी वर्ल्डमें और गायन समूह पूर्व जमनीमें वह एक मात्र जगह है जहाँ गायन और गायकके बारेमें मञ्चाक सुना जा सकता है। पश्चिममें लोग गायनके बारेमें हसी मञ्चाक करते हैं और प्रधान मन्त्रा या मन्त्रि मण्डलपर योग्य कर सकते हैं लेकिन यू काट मक जावम एवाउट उलरिंग और पिएक ।

कहना नहीं होगा कि हायो नाइट-क्लबकी इतनी सिफारिश काफी थी। मैं दो बार वहाँ गया भी। दीप्त अन्तरंग वातावरण गराबकी भाप और तम्बाकके धुएकी गन्धाती धुंध थोड़ी देरके लिए स्नायविक तनावका गिथिल करके मानवीय हो गया चहर हल्का पुष्का समीन बीच-बीचमें बसा ही हल्का नृत्य। ग्यारह और साठे ग्यारहके बीच दम पन्ध्र मिनटका हास्य व्यंग्यका वह कार्यक्रम जिसके लिए हाया की इतनी प्रसिद्धि थी और जिसके कारण सब लोग वहाँ एकत्र होत थे। दो या तीन व्यक्ति यह कार्यक्रम उपस्थित करत थे। समवायिन भारतमें ऐसे कोई कार्यक्रम नहीं हात जिनकी इससे तुलना की जा सके किन्तु गयी पानी तक उत्तर भारतमें जो स्वागत होत था या पूर्वी प्रदेशमें भाड लाग जैसे कार्यक्रम प्रस्तुत किया करत थे जिन्हें ध स्मरण है व जान सकेंगे कि किस चटोठे ढंगसे समवायिन गायक-वगैरे व्यंग्य किया जाता था। उससे अधिक गहरा कुछ हाया मैं नहीं था लेकिन जो था वह उससे कम मनोरंजक भी नहीं था और इसलिए और भी अधिक आवश्यक था कि परिष्कृत हान

वे साथ-साथ वह इतना दुःख था। निरानन्द जीवन-संघर्षमें बंध हुए देशमें वस इस एकमात्र स्थानमें राजनतिक व्यंग्योक्तिकी स्वाधीनता बची रह गयी है इसका पडताल करनेपर अनक प्रकारके उत्तर मिले। एक उत्तर यह था कि नाइट-क्वबका प्रवासी इटालियन मालिक स्थानाप पलिसको गिला गिलाकर अपना व्यवसाय करता है और धन कमाता है। दूसरा यह था कि सरकार भी यह समझती है कि देशके गलाघाट बाता करणमें कहा तो हमनका छूट होनी चाहिए और व्यंग्य प्रवृत्तिको एक जगह वेदित कर देनेसे अयथ उसके दबावसे बचाव हो जाता है। अर्थात् हापो एक प्रकारका 'सुपटी वाल्व' है जो बर्लिनका बायलर फ़ जानकी आगकाको दूर करता है। तीसरा उत्तर यह था कि ऐम एक स्थानके द्वारा सरकारके लिए जामूसीवा काम आसान हो जाता है—सभी असन्तुष्ट लोग वहाँ जुटते हैं और इस प्रकार अपन-आप उनको मूचा तयार हो जाती है। अर्थात् हापो वास्नवमें सुक्रिया-पुलिसके एजेंटका काम करता है।

चौथ-सा उत्तर यह था मैं नहीं जानता। सम्भव है कि तीना हो गलत है। केवल तीनामेंगे कोई भी सच हो सकता है। और यह भी सम्भव नहीं है कि तीना सच हो क्योंकि कोई धुनियाती विरोध उनमें नहीं है।

उत्तर जो भी हो उन्लेख्य वह वातावरण है जिसमें एगी सम्भावनाएँ हो सकती हैं और हापो जमी संस्थाको इतनी संपन्नता मिलनी है।*

×

×

×

हायरीसे कुछ उद्धरण

'हम लोग पूरा देशक बामी हैं। पुरानकी मानन बहुत है लेकिन आजपन हमारे लिए नयेका हो अधिक होता है। पुरानमें औमन व्यक्तिके

* यह नाइट-क्वब सन् १९५६ में बन्द कर दिया गया उमका मासिक पश्चिम जमनोंमें है।

जिसे भा परानका आचरण आचयजनक रूप में प्रदान होता है। और परानमे मन्त्र कर्म एतिहासिक-पौराणिक या धार्मिक महत्त्वकी चाञ्चलता नष्ट है—क्याकि उम तरह ता हम भी पाण्डवाक किन् और सानाकी नशाना और मित्ररा और तातमन्त्र की आर जाकृष्ट है। किन्तु यूराम परान व अन्तर पराना मारा जीवन भा जाता है। एक तरफ वहा जा सकता है कि परापीयकी गति गद्य सामाजिक साम्प्रतिक प्राचान की आर अत्रिक है अत्रिक मारा रचि पौराणिक एतिहासिककी आर है। परान गहन परान मन्त्र पराना गलियो परान गिरजाघराने चौक नडराम चले जान परान भटियारवान—एन मबन प्रति यूराम आचयजनक कीनूहता होता है। एमका कारण गाम यह है कि बहाका पराना मन्त्रिक यात्रिक अत्रिक दबावम तजास मित्ता जा रही है और लगामे उसका द बहृत है। रामा और नपागम केर स्तवहामनक गहरक परान भागाका गलियान प्रति एक-भी ममता और गगाव पाया जाता है और एमा गलियाम निरद्वय भटकनका अत्रसर मित्तर गेग उसका परा उपयोग करत है। मानो एक सोया हुई काल निरपेग नता ता मन्त्रानि मन्त्रिकिए मब तरस रह हा जीर हम ? मझ यात्र आता है दगनता एक फामीमी प्राफ्मर एक भारतीय दूतावाममे पूछन गया था कि क्या भागतम भारतीय दगनत सम्बन्धमे काई नयी पस्तके प्रथागिन है ह त्रिहे व अवन पस्तकालयन लिए मगा सक तो भारताय साम्प्रतिक अधिपारीन मगव उत्तर दिया था दगन ? आपनिक भारतमे हमारा पत्रति एमा त जाका आर न । है। हम वना तजास उत्पति कर र है।

—नि।

द्विज चिन्ध्याघरक एव स्तगाम रलम सजार हाकर पूर्वो बलिज

ए प्री-गिग्याम स्थापनपर उत्तरा जहाँ माग-गिवा उ० म भेंट २२ ।
 बर्लिनका मद्रहालय दया वहाँ मगल भारतीय चित्राता मूचीपत्र गिया,
 पश्चिम एगियावाग वग दया जा एक समय छार यूरोपम प्रसिद्ध था
 किन्तु जनी अय दयाका बहुत कम ह बताकि बर्लिन मद्रहालयका अधिभतर
 मत्यवान वस्तुर्गु मम ह मद्रहालयक तः घरमें भाजन विद्या । उगर
 माः हम गग गहरकी मर वरन निरः । काई वागन ता मिगता गग
 या तो दुवारा रलमें बठ कर गहरम बाहर निरः जात या पल्ल मका
 पर मग मरन । हम गगान दूमग माग घुना वगारि रगका मद्र
 रौत राउ अछा मग गगना एक बार रग नतरक रिया छारपर पः
 कर वहाँग भाग पः अवपग ही टीक ह ।

मद्रहालयक पुरानत्वका आवपग तो मर गि पनक गय ह
 पर मग मः पगलत्व नहा होत । मःपुद्ध ध्वमावगप परानक नही
 ह । और पःपर तो मद्रहाकि आम-गामत इट-मत्यराक रः हःय भा
 मग मय ह मका-गिपती सफा भी गी हा पाता ह जोर पराक
 पिछगामा तो कःता कः ? पगमें भातर या अयन अपन अगिनम व्यकि
 या परिवार जो कुछ कर सकत ह रःत ह । और गारा अग्व पन
 अयनगया और गःगाक बीन-बाउ आपागवक व्यरम्पिन और गुरात
 गीत्यक य छी-छाः गग किनः मुगः जान पःत ह । गिगयावा न गना
 महीं एक वरान बः जाना ह कःारि मग प्ररार पः गिग्याम मद्रवर
 हा ममात्रका और नगर जीगता मः पः मग दःनरा गिया ह । बकि
 गः-गिग्याव बागल और मा गःतु कुछ दम गःा ह । कःारि कः गिग्या
 म हा नग जला थकि मःगपत्रक पुरा । पगमें जीगनामें ना गग गता
 ए अरनगिग्याव पराकी गीग्या कःरः उपरक पुरान ए-अ-बीशः और
 उगी मःगः गिग्या ह और भागः प्रकाष्टन इःत ए मगग या
 दारगिग्याम गगम मय पूः माना अनाग नगर ए मानव गःनन रःकः
 मद्रहाकी मीकार कर गिया हा बकि गीवा अःत माः और मः

बना क्रिया हो और उसाके भानर स्पन्नि और विक्रमित हो रहा हा । पराने आतनाया राममें दमनक गिकार ईगार्द जम समाधिवाके तल घरामें रहत थे वसे ही आधुनिक निर्व्यक्तिव अत्याचारम ग्रमिन कितन लोग वस प्रकार अपन ही ध्वसावगपामें छिपकर जावन मिता श्त ह ।

यह बान पूर्वी बलिनमें ही हो एसा नहा ह । और भी गहरामें एमी स्थिति होती ह । बल्कि एमा भी नही ह कि व्यक्तिक उपर अयाचार केवत् उही सगठनामें हुए हा जिनम यक्तिको यक्ति नही माना जाता केवल सामाजिक सगठनको इकाई माना जाता ह । जिन समाजामें यक्ति को प्रवान माना जाता ह और समाजको उनके अयाय सम्बद्ध यापाराका पज वहाँ भी जनजान एसा अत्याचार हाना ह और एमी परिस्थिति आती ह कि यक्ति अपनी रणाकी व्यवस्था कर । रक्षा इस या उस कानून या प्रवृत्ति या अत्याचारमे नही केवल अपनी नगण्यतासे । कर्मोकी किक रता का यह खतरा आधुनिक मानवताका सबसे बडा सकट ह । समाज वाणी सगठनामें वह अधिक स्पष्ट ह उसकी आर प्रवृत्ति अधिक मुहुर और क्रियाशील । इस उसी तरह अन्धा मानना चाहिए जिन तरह ओ रोग अन जान भीतर ही भीतर खोखला कर सकता ह उसका प्रकट हो जाना अच्छा होता ह—वह निरान और चिकित्साको आसान बनाता ह ।

चिन्धिया घर और जल-जन्तु घर देख लिय । फिर रलमें बठकर पूरब का आर । येकिन आज पूर्वी जमनीका वषोःपव ह और बने सन्कापर उमकी तमारियाकी चहूठ-पहूठ ह । मावन एगल्स चौक जिधे सड परइ चौक बहन ह जण्णने सजाया गया ह । आन जानके रास्त बन् ह । इमा रनापर धानके धान कपपर चिन्ध गय नार टांग गय है । सत्र ओरस आत्म क अन्तर मानो मत्रात्में भी गला फाड फाट कर चिन्ध रह ह ।

सनिक प्रणान दतन या नार मुननके लिए तो म यहाँ नही आया ।

स्टेनमें ही एक सिनमा घर ह जिनमें निरंतर छोटी-छोटी रोलें दिखायी जाती रहती ह । आप पौन घण्ट उसमें बठकर डोना ड डक कुठ अल यारी फिम और डनी क द्वारा सयुक्त राष्ट्र गिगु रसा फड के लिए बनायी गयी रोचक फिम देखकर म फिर बुफुस्टेनडाम लौट आया । भोजन करके फिर रल पकडी । वस्त क्रोएस स्टेनपर उ०से भेंट हुई जिनसे साथ बलिन मोआबिटके सुनसान अन्तिक प्रदेशमें भटकना रहा और तरह-तरहके वस्तान्त सुनता रहा । रात एक बज उ०को गाडीमें सवार करा कर दूसरी गाडीसे होटल लौट आया ।

फिर रलसे फ्रीडरिगस्ट्राम जो नगर रलय और पूर्वी जमन रलयवा जकात ह । वहीसे उ०को साथ लेकर दूसरी गाडीमें सवार होकर पूवकी ओर फ्रीडरिगहागन लाल बल्गोभीना सट्टा छोड़ साकर और बाफी पीकर पदल मिगलमी झालने घाटपर पहुँच । सरका मौसम समाप्त हो चुका ह इसलिए घाटपर नाव नही मिलेगी । हम लोगान पत्र ही डीक का चक्कर लगानका निश्चय किया और चल पड । डीलने दो हिस्स ह बन्नि बह लीत्रिए दो शोलें ह—ग्रामे (बडी) और ब्लाइने (छोटी) । एक नहर इन दोनोंको मिलाती ह । इसी नहरके विनारे एक छाटा-सा पक्का घर है मौसममें शायद यह भरा-पूरा रहता हो लेकिन आज वहाँ सभ्राटा छाया ह । मुत्र वन प्रदेशका सभ्राटा कम-से कम मुक्त प्रीनियर लगता ह लेकिन वनके सभ्राटमें एक अजीब मनडूमियन ह । बटर जिग तरह हम लोगको आर देगता है, उसमे यह मनडूमियन और भी बाझीनी हा जानी ह । उगरी रुसा और उगमीन दृष्टि मानो बर रही है क्या जो आज बर ता सुनेका मौसम में ह फिर तुम लोगका गर करेका व्यवसाय कैत मिल् गया ? और आज तो रसाका तिन भी नही है फिर तुम लोग बग मरगणी करन निबन्ध करे ? क्या कामग भागकर आय हा ? या कि

नुम्हार पाग काई ठिया हुआ उन ह जिनका कारण तुम लाग एसा समाज
निग्य १ जावन बिना मरत हो ? मय दया म जाना २ कि आज जम
निन महा काई उनी जायगा फिर भा नम गरकारा कहवापरम मरकारा
नीकरा बगत हुए मरकारा नखिरा बजा नानका मजबूर हैं और तुम
जसाक लिए जा कि निम्ने जोर काम चार ता ३ । गायत नम जया
बनरनाक भा हा जोर क्या जा य लटका ता जमन मानम गना ह
और य आत्मा ता बिग्या ह—जमन नका कामन निन क्या और बन
बिग्यान साथ धम रहा ह ? क्या य जामूस ४ ? क्या नानाकी रिपा
करनी चाणिए या नानाका राखर गिरपना करवा दना चाणिए ।

सम्भव ह कि मरी मवन्ता अति क्रियाग ५ रहा ह। सम्भव ह कि
मरा कपनाका भा याग यम रहा ह। केकिन साधारणतया मय मवन्ता
६ स मामनेम मय धार्या नय देता कि किम यकिन्ता भात्र मर प्रति नमा
ह वह जसा ७ क्या क्या ८ इमरे कारणके जनमानम भ ९ मयम
गत्ता हा ।

जा हा नम गग ज १ हा कहवापरम बाहर निकल जाय जोर
नहरक दूमर छोरपर नौ बह छाटा बागम मिन्ती था पानाक किनार
अपरताक एक बुजम बठ गय । नहरक किनारपर ग्या हजा एर बेंत
व १ अपना लगे बकापर पानाका महला रहा था । पन्त पतवक रगमि
गान अत्रराटके मूय पत्त धार बार करकर नहरकी निच २ सहपर गिरत
थ जोर उनरे फलन हुए कम्पनक बत धर मर दूर जाकर बिगान ३
जान थ । पत रगान थ किन्तु आनाग उनाम नानके कारण ख ४ पाताता
ग भा दन उनाम था ।

जमन गानि गायत मरापता मरन करतानी ५ जानि ह । यना
कपना नका ननुपर मै उनक सग अत्रम कर रहा ६—याता एय
कना प्रतिमा (फना) क जयम । हमार देगम जमे यह कहना निनाकी
एय पराकाष्ठा ह कि अमकका तमोज नहा ह उमा तरह अग्रजे लिए

यं बड़ा गाला ह कि 'अमुकमें मॅस आफ ह्यूमर नही ह जमनरु लिए इगकी मम-पनीघ गालो ह कि अमकक कल्पना नहा ह ।

किन्तु मरी साधिनम जमन कल्पना यद्यष्ट मात्रामें था । हम लागा को चपचाप बर हुए अधिक समय नही हुआ था कि नहरपर तिरत पत्ते परियाका नौकाए हो गय । नहरक पार एक छाटा सा घर था जिसम गायन नहरका बीसाला रहता था हम लागाक बठ बठ झटपटा हो आया था और उस घरकी खिन्कीव भीतर बत्तीका प्रकाश हो गया था । परलाक बीचस और फिर बनकी चल्ती हुन डालाक बीचम किरणाका एक क्लम सा मानो पानापर कुछ लिखन लगा था । मरी साधिनकी जपलक आग माना उस क्लमकी नाकपर कद्रित था और पानापर उमका लिखत पत्र रही थी

परियारी नौकाए आज परियाका अतिम उत्सव लिखम ह क्याकि अगरे मन्ना व मय मर जावगो । उनकी नौकाए पानीमें डूब जावेंगा । फिर धार और पानीकी सगरे ठण्णी और बढोर हो जावगा हिम और तुपार धार धोर बनकी पानीको मय कुछका मार टाग्या । परिया टूवकर मर जावेंगा और उनकी आत्माए पाताल-लोकमें कही चली जावेंगी ।

बह चौक नगी एम घीम श्वरम मन कय फिर कमलम परियाका पुनर्जीवितोत्सव हागा और व कापलाम और नयी परगडियामें नृत्य करेगा और आर्केस्ट्रा बजावेंग—

न । परल परिया मरती नही था पाताल-लोकम जाकर अन्त्य आगारकी गुफाआमें उस जाना था और यम-तम फिर नया किरणकि सगर घाटर तिक आती थी । लेकिन अत्र वगा नगी ह । जब व मय मर जानी ५ । मैं जानती हूँ । मय कुछ मर जाना ह कुछ भी बना नया रहता ह न कुछ लोटकर आता ह । म जानता हूँ । आगार हर चाखना दाम खाना पचता है । परिया माल-सोल नही करती और दाम चुमानाया दुनियामें जा नया सक्ती दाम चुखाना पचता ह हमारा हर चाखना

दाम चुकाना पटना ह यही बन्डा ह कि स्वन्डासे ताम चुका न्यि जावें ।

नहरकी ओर अग्राटाके कुजकी उन्नीसे क्याग महरी उन्नीसे उसक मनका पीलपर छापी हुई ह । उम दाखन दनम उम मर सम्मुख सकोच नही हुआ ह यह उमका अनुग्रह ह । लकिन क्षीत्रकी शान्तिको भग नही करना चाहिए म कुठ बाग नही मघाच्छत्र आकाशमें जो दो-तीन तार निक्क आम थ उहींकी आर सकत बरक रह गया । उ चुप हो गयी । थोडी देर बाद दूर बहुत धीमा चग चग-चग-चगका स्वर सुनाई दन लगा । बनै पीत्रक आर-पार आन-जानवाला मोटर-बोट अपना अन्तिम फरा करन आ रहा था । हमलाग उठकर घाटक पास आ गय । मोटर-बोटमें-से एक अकेली सवारी उतरा । वह भी जमन था कल्पना गीत्र था अकेला कुछ जात्र बन रहा था । व्तरत उतरत वह कह रहा था प्रेत-नौका घाट आ लगी और उसम-से उतरा— कि सहसा किनारपर खड हम दोनाको देगकर सकपकाकर चप हो गया ।

प्रत-नौकापर हम दाना सवार हुए । दूसरी पार बस मित्र गयी— एक अप्रत्यागित सयोग । स्थानसे हम गोगान पश्चिम बलिनने चिडिया घरवाल स्टेगनका रत्र पक्की । स्थानपर ही हम गोगान काफी पी और उसक दात्र उ० के घर लौटनक लिए गाडी दपन चल तो नात हुआ कि पूरवका जानवाली अन्तिम गाडी जा चकी ह । पत्र वह मोठा चत्र सकती ह और चत्रती ह यह म जानना था त्रिन रातक डत्र बज उम पदल घर जानक लिए छोत्र देना अक्पनीय था । स्थानने बाहर मालूम हुआ कि कुठ टकिययी एसी ह जिहें पूर्वो बर्तनमें प्रवग करनका लायसोंस न्यिया गया ह । एमी एक टकमा डत्रकर उमपर सवार हाकर चत्रे । आघी रातको टकसा उकर पूर्वो बर्तनमें जाना मजाक नहा ह । त्रिन जिनना ही अधिक दर हा जात्र उतना ही धार चत्रना उचिन ह क्याकि तत्र चलनवाली बसा ता त्रिनमें भी सत्रेहकी दष्टिम देवा जाती ह और आघी रातम तो

सीमारे सन्तरी उसे टोकनमे पहले उमपर फायर कर देना ही बेहतर समय सबत ह । पढ़े ही तिन मुझे चनावनी दी गयी थी कि अगर कमी पूर्ण बलिनमें टक्सीमें जानका सयोग हा तो टक्सीनो दस मीलसे अधिक गनिस न चलने दू नहीं ता जानका सतरा ह ।

लौट आया हूँ । चार बजन वाले ह । यदली कुछ छा गमी ह और हरी-सी टण्ड ह ।

×

×

×

दामरीम ही—कुछ सुती हुई घटनाए क्या जान कमी लिखी जाने वाली कहानियाके प्राख्य ऐकिन भविष्यमें उपयोग हो न हा अभी भा ये मारगभ ह, याशोकप्रद ह

मालका गुम्सा प्रमिद्ध था । वह सबरे उठता ही तो चलाया होता, और तबसे रातनक उसके चहरका भाव ऐसा रहता कि पास-पडीमी सभी डरत थ । क्या और बने उसका स्वभाव एना हा गया यह बौद नही जानता था क्याकि जब वह वायु-सेनामें भरती हुआ था तब सभी उसक इसामुख घट्टे और मिलनसार स्वभावकी प्रशंसा किया करते थे ।

ऐकिन कुछ अद्भुत बात थी कि बच्च उसे नहा डरत थे । उसना शरणापा हुआ चेहरा न केवल उन्हें आतकिन नहीं डरता था बल्कि उसे दगने ही बच्चे घेर लेन थ और तरल-तरहकी करमाइनों किया डरने थे ।

गि० जिसने यह घटना मुझ सुनायी उस प्राय अपनी करमाइनाते सग किया डरती थी । का उसका पडोगा था । अधिकतर ता यह अपन कामपर गायब रहना था ऐकिन जब-जब घर आना था तब गि० समज मिलन अव्यव जानी था । यह भा गि० के घर अग्रश्य आता था । जमन बन्धुसंगीलता उगमें भी घट्टत थी और गि० की मानाकी यह घटा कहानियाँ गुनापा करता था । बल्कि गि० न बताया कि बचकम उगरी कहानियाँ सुनते-सुनते वह बुरीतर ही सी जाती थी और बीच-बाधमें जाग

कर लयता था कि वह अभा कानियाँ मुनाय हा जम्न जा रहा ह । फिर आया रात का वक्त सिमा समय वक्त चला जाता था और मरर हा अपना लयतापर खाना हा जाता था ।

एक बापपर गि०का और दूगरापर एक और वालिहाका बुगना आका मन्कपर चला जा रहा था कि उमन दया सामनम एक लम्बा राती हुई चला आ रहा ह । अपन लम्बाय हुए स्वरम न उमन पण क्या न राती क्या ह ? क्या का ल रहा ह तुय ?

उडीन रात रात उत्तर लिया मरा दूधका लण ल गण ह । म न नहा जाऊमा—मार पणगी ।

दूध तब बहुत महमा था । (एक स्टर अथवा मप्रह छटाकक लिए लभग चार लपय देन पडन थ ।)

कास्त जोर भी क्वार्स कहा ता राता क्या ह ? च मर साथ । वह उस चानीक बनाना दुमानपर उ गया ।

कमा था तरा जग ?

लकाक बनानपर ठीक बसा ही जग कालन उस खरा लिया जोर फिर दूमरा दुकानस दूध भी उ लिया । जा ल था ! जोर खबरार जो राया तो ! और यह न समझना कि फिर जग टट गया ता मै जोर ल दूगा—जग टटा ता लमा थण ल गालगा कि जीवन भर या ल रहा ! ममचा ? जा !

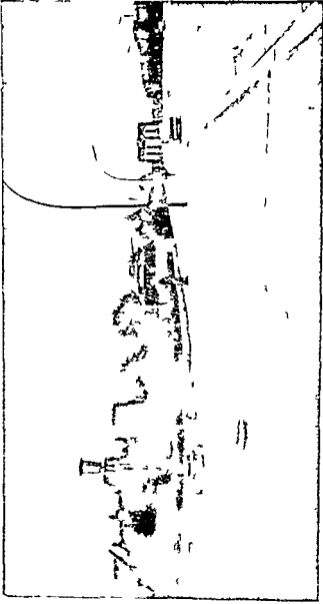
का ल वल हा कुरप था । पर अपन लपका उग ध्यान न था । गि० का थलम उमका माताका कानियाँ मुनात हए प्राय वक्त उम यवाका लप कपना भा किया करता था जिमक साथ भविष्यम कभा व लिला करगा—अभा तक उमम परिचय न था हुआ ह लकिन उमम क्या

एक लिन विमान उलान-उलात विमान चालक का ल सहसा मर गया । बताया गया कि ल्गति व ल हा जानम उसका मत्य हुई । किनु उमक



गौन देवहासकभवन





बलिन सीमा रेखा

[ब्राह्मनबाग द्वार और हमी गढ़-मालव यह द्वार पूव ओर पश्चिमकी सीमा रेखा ह]

परिचित फुमफुसात मरामें कहत ह कि उमने उमाने पहल विपक्षा लिया था—कि यह पूण रूपस हनाग हा गया था, जीवनके अन्तरंग निजी स्तरपर भा और वायु-मनावे विमान चालकक नाते भी । अपना और अपन साथ अपन जगो विमानका नाग ही वह चाहता था ।

क्या ? हम 'क्यों का उत्तर ही उमकी कहानी हागा, क्वाचित जमनी की और यूरोपकी भी कहानी होगा—क्याकि वह नकारस साधात्कार की कहानी होगा ।

×

×

×

यह कहाना महायुद्धस पहले शुरू हुई । ठीक किनासा समस पहल, यह कहना कठिन ह ।

मायर और उसकी पत्नीका उनय पडोमा तीम वपस दय रहे हैं । हम नि गन्तान दम्पनिमें आपसमें बच्चा जगा प्रेम ह जाकि उभा पडोसियों क लिए कौतुक भी और थडावी भा चीज ह । दानाके धान पक गय हैं एकिन अब तक य एक-दूगरम जिण दुलारात हुए स्वरमें बान करते ह वह पडोसियाकी बलान् अपन-अपन दाम्पत्य जावनका अन्तरवलोकन करनके लिए बाध्य कर दता ह ।

अधानक धानावरणमें खिचाय आता ह । कहीं कुछ दीगता नहीं ह लेविन सब जानते ह कि सतहक मोचे कोर्द भयानक दकिनयाँ काम कर रही ह । मायरकी नौकरी छूट जानी ह । पति-भली दोनारी कहीं किंगी प्रकारका काम नहीं मिग सका ह । सहायता भी नहा मिगषी ह और धमग भोजन मिगना भी अगम्भ्य होना जा रहा ह ।

मायर-गतिगी उदात्तर गिकायत नहीं ह । न उनो ये-रेका माय गिकायतका ह । य पुपचाप सहते हैं मगकराते हैं और एक-दूगरपर पूव वन् अपना दुलार उदत्त ह ।

पराशियामे उनको कोर्द यानकात अपने कए वे सम्बन्धमें नहीं हानी ।

पत्नी भी आपसमें उनकी बगल-बगल हुई परिस्थिति की चर्चा नहीं करते। मानो सब-सब परस्पर अभिगच्छ करके एक नाटकीय समयका निर्वाह कर रहे हों जिसमें कुछ भी बगल-बगल ही है और मायर तथा उमना पत्नी बस ही दोस्त-प्रायः हगते-खाते जीव हैं जिनमें पत्नी उन्हें बागल-बगल जानते आते हैं।

केवल इतना जानते हैं कि शोमना मायर बस सबर उठकर दरवाजा खोलती है तो पत्नी है कि कौन बहापर एक बगल-बगल दूर रह गया है या कभी रोटी और मकान या कभी कुछ और। एमा भी जान लेता है कि कभी कभी दोना बाहर आते हैं तो पाते हैं मजदूर एक टिफाफेमें कुछ खया रता है।

यह सब कम जानते हैं कौन करती है मायर दम्पति किमीन नहीं पूछते। न उन्हें कोई बगल-बगल है। न वे कभी कही इसकी चर्चा सुनते या करते हैं।

फिर एक दिन एमा जाना कि शोमना मायर सबर घरसे अकली बाहर निकलती—प्रायः तो दोना एक साथ निकलते थे और टहलते जानते थे। थोड़ी देर बाद वह अकली ही वापस लौटते। मायर नाम तक भी नहीं लौटते। रातको भी नहीं लौटते। दूसरे दिन सबर जब वह फिर अकली बाहर निकलती तो एमा भी जान लिया कि मायर घरमें नहीं है। यह भी जान लिया कि लौटकर नहीं आयेगी। यह भी जान गया कि पहली रात जो मोटर तन्ने तीन बजे मुसलम आकर रखा थी वह मायरको लेते ही आया हागी

शोमना मायर थोड़ा देर बाद लौटकर घरके भीतर चली गयी। फिर बाहर निकला तो अकली बगल-बगल सज-धजकर जमे-जमे विगत अवमराके लिए या पार्टीके लिए तयारा करते हैं। पडासने प्रथम घरमें जाकर बगल-बगल-बगल मायर उहान अपन पत्नीसियाका बगल-बगल लिया। आप नहीं जानते कि कोई जान कि आपन हमपर क्या-क्या कृपा का है। अकली

मे यं चान्ती हूँ कि आप लोग जान कि हम कितन वृत्तन रह और म
 बिननी वृत्तन हूँ। यह कृत्तनता प्रकृत करनका दूमरा मौका मुस शायद
 न मित्रे

वृत्तनता पापनका अपना दौरा करके श्रीमती मायर घर लौटी और
 थोड़ा दर बाट साधारण बपड पहनके फिर बाहर निकलीं।

फिर वह लौटी नती। बर्न गयी किमीका मालूम नहीं। इतना ही
 कि वह लौटी नती जमे कि मायर भी नहीं लौटे जैसे कि और भी हजारा
 ने लौटने थे यथाकि जिम समय वह घरम निकले थे उस समय व यहुनी
 थे अथान् उनको पिछनी आठ पात्रियोमें कोई एक पूवज यहुनी था।

मायरका तो यहुनी जानकर या मानकर गस दकर मार दिया गया
 हागा। विन्नु मिसेज मायरका क्या हुआ? अधिकतर पडागियाबा विन्वास
 था कि उन्में आराम-हत्या कर लो। लेकिन वृछना पवरा विन्वास है
 कि वह घरमे निकलकर सीधे घानम गया जहाँ उठान बयान दिया
 कि वह भी विवासे नही बगसे यहुनी हूँ और घानम मम दनकी जगह
 भेज दी गयीं।

उनका देहका क्या हुआ बोन जान। यहुनिकाकी दहम दनाय गये
 रगापन जमन-जीवनमें यहाँ तक रच गय ह इसका कोई हिसाब नही
 रगा गया है।

×

×

×

आर्जेन्टीनाकी उजधानी बुएनास एयरिसमें मराम अन्वारस गामका
 एर सम्पन महिला रहती है। लगाम उनका परिचय पूछनपर बताया
 जायगा कि वह पहले एक प्रसिद्ध रगापनविद् थीं और जमनापे किमी विन्व
 विद्यालयमें पढ़ाती थीं अब जयनाग ल चुकी हूँ। परिषय दनवाला इगब
 साय-नाय बड़ रहस्यपूण डगस मसबसा देगा। और पत्रात् करनेपर पात्र
 होगा कि मन्म अन्वारसको यह नाम उनका अट्टारहूवें विवाहक कारण

प्राप्त हुआ ह। सियार अत्वारमसे उनका विवाह एक वषमे अधिक नही टिका और महागद समाप्त हो जानक बाव वह यूराप भा नहा लौटी। वही अकेली रहन लगा ह। सियार अत्वारस किमी दूमरे नगरमें रहत ह।

तथ्य सब ठीक ह। लकिन कहानी यह नहा ह। कहानी त्रिकुल दूमरी ह।

श्रीमती अत्वारस मूल जमन ह। इतना ही नहा एक पुरान अभि जात परिवारकी ह। रसायनकी शिक्षा प्राप्त करके उन्होंने विवविद्यालय में रसायन पढाना आरम्भ किया और साथ-साथ एक प्रयोगशालामें अनुसंधान करन लगा। इसी प्रयोगशालामें अनुसंधानके सिलसिलमें न मालूम क्या हुआ कि उनके स्वभावमें एक अद्भुत परिवर्तन आ गया। एक एक डे महीन बाद ही उन्होंने रसायनशालाक एक-दूसर आचार्यस विवाह करके सबको अचरजमें डाल दिया क्याकि पतिस विज्ञान सम्बन्धी चर्चके अतिरिक्त किसी प्रकारका घनिष्ठताका कोई लक्षण किसीन नहीं देखा था। आग और भा चर्चित सब हुए जब विवाहक कुछ दिन बाद दोनों सरके लिए दक्षिण अमरिका चठ गय और वहाँस पत्नी अकेली लौटी। कुछ दिन बाद पत्नीकी दरखास्तपर उनका डाइवोस हो गया।

दो एक महीन बाद रसायनकी युवती अध्यापिकात फिर विवाह किया दम्पति फिर विवाह-यात्राके लिए चले और पत्नी फिर अकेली वापिस लौट आयीं।

तीन चार विवाहोंके बाद वातावरण ऐसा हो गया कि उन्हें नौकरी छान देना पही। किन्तु सम्पन्न अभिजात परिवारकी होनेके कारण उनकी कम-स्वच्छ देना बनी रही और विवाह भी होत रह।

अद्वारहा पति प्रतिभाशाग्य बनानिक रह हा। एसा तो नहीं लेकिन किमी-न किसी प्रकारकी प्रतिभा सभीमें थी और देगान्तर जाकर प्राय समान प्रतिष्ठा पायी। केवल दो एक अपवाद थे किन्तु ये प्राय

विवाहम पत्नी नी रागा जोर लगभग जमनाय थ, जोर एक ता पग हा था ।

उम समय यह बात भी नयी था—और बनाया भा लड़ा ना मकना था—अब बनाया जा सकता है कि अट्टारहा पति यदुता थे । तत्कालीन जमानाम उनके प्राणाका रक्षा अत्रिक जिन नयी मकनी ऐसिन एक अभि जान जमना थाय नारीक स्वच्छाचार क कारण मभा आज जीवन ह कमरत है और अत्रिकतर मानव कमाणक गिग मानगाल है ।

मभा बच गय है न । बचा ता एक उम नाराजा कान्ति जा आज मनाम अन्वारम कान्ति है । उमना नाम गकर अत्रिकतर लाग रन्म्य और व्ययम भगकर ममकरान है । इसम यह विचिन्त जाता है एमा नयी जात पता । उमन अपन हमम अपनी गक्ति भर जमन जानिक अहकारजय अवाचारना प्रतिवार किया है और उमके पापका शाघ किया है । शाघका यह तरीका मभीको असगन (और भारतवामियाका बतुवा भा) लगे पर एकक स्वच्छा शक वरण किय गय कष्ट (तपस्या) क द्वारा दूसरके पापके माजनका मिटान्न उमका ईजाद किया हुआ नहा है उमन गल ईमाना प्रमाण है और इसाइपतकी समची परम्पराका गक्ति ।

मनाम अन्वारम रगाग और पुचली माना जाती है । अकला ह । निगनान है । मुप फाई बनाय कि अपन अट्टारह विवाहके वावजू व अमी कुमारी भी हैं ता मुन अचम्भा नगी हागा

इम चरित्रका पश्चिम मुस उन्नाकी एक महलोस मिला है जा स्वय मट्टा है और जिंगका मारि मनाम अन्वारमक अन्ववालीन पतिपामेस एक रगा । नाम गभी कल्पित है स्थान और वाप-नाम्यपा विवरणमे भा धारा हर-पर है लकिन मू कानना सच है और चरित्र वास्तविक है ।

X

X

X

वर्तमानमें म अधिक समय नहा रहा। घाटिना आधारपर किसी नगर या दंग या जातिना प्रभावप्राप्त काम ह और उसम घोसा हो सजना ह। भागत हुए त्रि क बारमें जा कुछ खिलत हैं बह बसका उपाहरण ह ग्रहण करनी चाहिए कि हम भी वसा भूल न करें। लेकिन कि म जा कर रहा हूँ उसमें इसकी उप ना ह। जमन मय विनाप प्रयोजन नही ह। उसका वणन म नहा कर र इतिहास उसकी राजनानि या दंगन या विज्ञान उसकी वापारिक स्थितिके बारम मुझ न काई राय देनी ह न क मार करना ह। बकि जमन गग क्या सोचत ह क्या चचा भी म नही कर रहा हूँ—यद्यपि इसका अनुमान कु रना असम्भव नही ह।

मुन सयागवग यह अवसर मित्रा त्रि इन मधक पाठ तनाव जमन मानमके भातर ह उसकी कुछ चांक्रिया पा लू। तनाव देग-वाठकी परिस्थितियात उत्पन्न किया है और अथवा उसे दूर करनकी योजनाव लिए इन सबका कर्पोका नयक ह। लेकिन जिम प्रकार सूर्पोन्यवा प्रकाग देखनके लिए सक्रमणके मिद्धात जानना आवश्यक नही ह उसी प्रकार क का दखनके लिए जमनीका अध्ययन आवश्यक नही ह

यूरापक मधर्पोका कल जमनी रहा ह और ह। व जमनीका कल ह और वहाँ गति होनवाये (या अगति तनाव मार यूरापकी सचाति करत ह। म सयागवग (कौषमें यह दख आपा। जा कथा माल मझ मित्रा उसस करनमें मय कर्पो भा गग सकन ह गतिन यह तो मर यात्राकी बात ह।

यूरोपका स्नायु-केन्द्र बलिन

एक क्षण भर घौर रहने दो मुझे अभिभूत
 फिर जहाँ मैंने सजोर घौर भी सत्र रती हूँ ज्योति गिवाएँ
 वहीं तुम भी घली जाना
 गात, तेजोरूप ।

एक क्षण भर घौर
 लम्बे सजनारे क्षण कभी भी हो नहीं सकते ।
 यूँद स्वातीकी भजे हो
 बेधती है मम सीपीका उती निमम त्वरामे
 वय्र जिससे फोड़ता घट्टानको ।

भले ही फिर ध्ययारे तममे
 घरसपर बरस घौतें
 एक मुक्ता रूपको पकते ।

वर्लिनम म अधिक समय नहीं रहा। थाड जिनाहे निजी अनुभवक आधारपर किमी नगर या देश या जातिका प्रभावग्राही चित्रण जायमका काम है और उसमें धारणा हो सकना है। भागत हुए विदेशी टूरिस्ट भारत क वारम जो कुछ जिनत है वह इसका उदाहरण है और उसम गिना ग्रहण करना चाहिए कि हम भी वसी भूल न करें। लेकिन म नहा समझता कि म जो कर रहा है उसमें इसकी उपाय है। जमन जीवनके बहिरगस मय विनाय प्रयोजन नहीं है। उसका वणन म नहीं कर रहा है। जमनीके निहाय उसकी राजनीति या देश या विज्ञान उसकी अय-व्यवस्था या यापारिक स्थितिक वारम मुभ न कोई राय देना है न कोई रवया अस्ति पार करना है। बकि जमन लग क्या साक्षत है क्या चाहत है इसकी चर्चा भी म नहीं कर रहा है—यद्यपि इसका अनुमान कुछ जिनामें कर जना अमम्भव नहीं है।

मज्ञ सयागवग यह अवसर मिंगा कि इन सबक पीछ जा आम्प्यन्तर ताव जमन मानमके भीतर है उसकी कुछ साक्षिया पा नू। नि सदेह वह तनाव देश-वाङ्का परिस्थितियात उत्पन्न किया है और उसे समझन अथवा उसे दूर करनकी याजनाक लिए इन सबका वर्षोंका अध्ययन आवश्यक है। किन जिन प्रकार सूर्योत्थका प्रकाश देखनके लिए सौर मण्डलक सक्रमणके सिद्धात जानना आवश्यक नहीं है उसी प्रकार इस अनरालाक का देखनके लिए जमनीका अध्ययन आवश्यक नहीं है

यूरोपक सघर्षोंका कट्टर जमनी रहा है और है। वर्लिन अब भा जमनीका कट्टर है और वर्गों जिन हानवाले (या अल्पजिन भा) म्नायविक तनाव मार यूरोपको सबाक्षित करत है। म सयागवग विजलीश-मी कौनमें यह दग गया। जा कच्चा माग मय मिला उसमे कुछ निमाण करनमें मय वर्षों भी लग सकत है किन यह तो मरी आम्प्यतर यात्राका घात है।

एक क्षण भर और रहने दो मुझे अभिभूत
 फिर जहा मैंने सजोकर और भी सब रखी हूँ ज्योति शिखाएँ
 वहीं तुम भी चली जाना
 गान्त, तेजोरूप ।

एक क्षण भर और
 लम्बे सजनाके क्षण कभी भी हो नहीं सकते ।
 बूढ़ स्वातीकी भले हो
 बेधती है मम सीपीका उसी निमम त्वरासे
 वज्र जिससे फोड़ता चट्टानको ।

भले हो फिर व्ययाके तमम
 घरसपर घरस धोतें
 एक मुक्ता रूपको पकते ।

प्राची-प्रतीची

चहरें

कुठ घट्ट दखकर मत्मा विचार उठता ह—अर यह चट्टा मन पहल क । दया ह —और य धण कवठ पहल दखनक स्मरणका धण नही वल्कि पञ्चानका धण हाता ह । उस धणम वट चहरा मित्रका चट्टा लगन गगता ह ।

कुठ न्मर हात ह जिन् दखकर भा मनम सहमा यहा विचार उठिन गता ह कि अर यह चट्टा ता पहल कहा दखा ह पर यह धण कवट एक चित्रक स्मरणक धणका हाता ह, काई पहचान उसको आलाचिन नहा करना । और य दखा हुआ चहरा उस धणम और भी अपरिचित गगन लगता ह ।

और जान पत्ता ह कि पत्ते बगक चट्टर दिन-पर दिन कम हात जा रह ह और दूमर बगके बट जा रह ह ।

क्यानि माना अत्र मनप्यका उत्पादन एक वट पमानक दृष्टिक कारखानम हात गगा ह—यवितत्व सागर अत्र वट प्रतिमा नही रह गया ह वल्कि कवट एक टप्पा हो गया ह ।

कहा गय वाग्दत्तक व ऋषि मात्मा जिहान कग था कि ईश्वरन स्वय अपना प्रतिमास मानवका रचा

धरणाका स्वतन्त्रता

मनप्यका नतिङ्गताका क्या अर्थ ? मिवा इमर कि वट अपन कमक गिए उत्तरगया ह ? अकिन जिम कमका उमन स्वच्छाम वरण नही किया ह वट उसका कम कम ह ।

इसलिए अगर हम मनुष्यकी वरणकी स्वतन्त्रता नही मानत तो हम उसका नतिकताका सम्भावना भी नही मानत ।

यत्न और आत्म-दान

यात्रिक उन्नति इस क्रममें सुगमतर बनाती जाती है कि मानव अधिकाधिक काम बिना आत्म-दान कर सके ।

अतएव वह क्रममें अधिकाधिक मानवाका अज्ञान हाना अधिकाधिक सम्भव बनाती जा रही है यत्र यत्र यात्रिक उन्नतिपर ही निर्भर करत है ।

यात्रिक उन्नति

यात्रिक उन्नति अपन-आपमें दृष्टिमान है । वह मनुष्यका सुगमतर बनाता है इसका अर्थ यह नहीं है कि वह जावनका सम्भव बनाती है ।

किन्तु यात्रिक उन्नति आत्मिक प्रेरणा नही देती और वह प्रेरणा आवश्यक है । उक्त प्रेरणाके मानकी ग्राह्य आशय मानवकी ग्राह्य है ।

शिक्षा विचार और भावना

लक्ष-व्यापका अर्थ जत्र परिस्थितिका प्रतिमानाकरण समझ लिया जाता है तत्र शिक्षाका अर्थ भी मानसिक प्रतिक्रियाका प्रतिमानाकरण ही होता है । तत्र हम परिस्थितिका विनिश्चय करके ही समझन सके हैं और भाव प्रतिक्रियाका विनिश्चय ही होता है ।

शिक्षा विचरणाका परिणाम देता है । जो शिक्षा विचार शक्तिकी वर्याय भावनाका नियमन करना चाहता है वह स्वतन्त्रताका धरा है ।

प्रतिमान और प्रतिमानाकरण

हम जीवन प्रतिमानकी बात करत हैं और जानकर प्रतिमानाकरण करते हैं ।

हम सांस्कृतिक स्वान्तर्गतों राजनतिक मतवाट बनाना चाहत ह पर यह भगत जात ह कि स्वतंत्र रखनके लिए मसृति ता प्रतिनिधि कम होनी जाती ह । यकिन-मसृति भी यकिन-स्वान्तर्गतका भांति प्रतिनिधि आक्रांत होती जा रहा ह ।

देव प्रतिमा

ईश्वरन मानवके रूपम अपना प्रतिमाका निमाण किया । कुशल गिणी होनेके नाते उसन प्रत्येक प्रतिमा भिन्न और अन्तिम बनाया भिन्न होनेके कारण प्रतिमाए परस्पर प्रेम कर सकी ।

अब यत्र-यत्रमानव ईश्वरके रूपम अपनी प्रतिमाका निमाण करत ह । उत्पात्क होनेके नाते वह सभी प्रतिमाए एक रूप और एक प्रमाण बनाता ह समान हानके कारण प्रतिमाए एक दूसरमे बक्क घणा कर सकती ह ।

संस्कृति यक्तिता विस्तार

मसृति यक्तिताका विस्तार और प्रसार मागती ह सकोच या छटाव नही । मसृती यकिन धरावर नयी उपन्निषाको आत्ममान करता चरता ह । संस्कृत यक्तिताका आत्म साजा या जन्मृति किमी व्यक्ति या वस्तुन मुजाविमें उसके विरुद्ध उभर कर आनके लिए नहा हाता— जस घर या बठका राजावट या मित्र मण्ठी या प्रमी बकि वह उहे अवनम धर ऐनी ह ।

अलसगण और पगुगण

पश्चिमका आधुनिक जपन नातून रगता ह नागरी अब उमके गरार का अग न रक्कर एक अक्करण रह गय ह । वह अपना चहटा रगता और मजाता ह वह चरता भा उमका अपना रही रहा ह बल्कि एक

आभरण हा गया ह । अन्तिम व्यक्ति निजा चहरा किमीका नहा
होता सजाकी जो कुछ प्रसिद्ध गलियाँ ह उनमेंसे किसी एक शलीका
चहरा पहचान लिया जाता ह—अर्थात् चहरा नही चहराके मान्य रह
गये ह ।

इनके ममयके अनुसार पढ़न हुए अल्काराके अनुसार पोशाकक
रगने अनुमार मुख रजनी (लिपस्टिक) का रग भी बन्दता ह । सम
नया यह देया ह कि आधुनिकाए अपनी वग भूपाक अनुरूप अपन बालाकी
भी रगता ह । इस प्रकार मह भी और वग भी पकित्वके अविनाय
अग न होकर उमके अन्तरण मात्र हो गय ह ।

क्या यह मानवीय पकित्वका क्रमिक पगुकरण नया ह ? एक एक
अग गलकर गिर नही रहा ह बल्कि स्वयं काटकर फेंक दिया जा
रहा ह ।

और पूबकी आधनिका / यह नही कि उसका बल्पना अगमन ह—
आधुनिका पूबका भी हा सकती थी । गायन हा भी लकिन पूबका दष्टिम
विनाम यदि भीतरी हाता ह तो आधनिकता भा भातरी सत्कार ही हागा
और उगवा दय लग्न कोई न हागा । जिन्हें हम आधनिकाक नामस
पहचानत ह व वास्तवमें पूबका ह हा नहा । य टोक ह कि इमीग व
पनिमी नहा हा जातीं । पचिमने अनुकरणमें उटान भा अपनको अग
अग करके अपाहिज बनाया ह और उगव बा पगु दको फिर पाचाय
रग रग लिया ह—अर्थात् उनक चहरका रग पहचान हुए चहरका
स्वाभावा रग भी नया ह—वह रग हुए पहचान हुए चहरका रग ह ।
पयस्कताके रूप

पचिमनी जन जब तक युवा रह गयता ह रहता ह फिर पय मया हा
जाता ह ।

पूर्वो जन जबाब वय मवन रह सकता ह रहता ह फिर प्रद्व न जाना ह ।

नाति शास्य

यूरोपकी परम्परागत स्वतंत्रता व्यक्तिकी जाति निर्भरता रहा ह चानम परिवारकी आत्म तन्त्रता और भारतम ग्राम-समाजका स्वत सम्पन्नता ।

किंतु इसवे विपरीत परम्परास यूरोपकी नाति शास्य सम्पन्निका रण ह चानका सन्तुलनका और भारतका साम्य अथवा अनासन्निका ।

एकान्त मार्ग

मस्याका तक या बहुमतका मिद्वान्त एक सीमानक ठीक ह केकिन वह सीमा बन्ने स्पष्ट और अनन्वघनीय ह । जो अधिकक नियमक नाच न रह कर सम्पूर्णके नियमके अधान रणना चाना ह उसके लिए एक ही माग ह । वर माग अधिसम्बक शासनसे आग बरकर एकमवक शासनक जाना ह—वर माग सम्पूर्ण और अस्तण्ड एकान्तका माग ह ।

भयक रूप

आत्म न्त्याकी और कां प्ररणा नग हा सकती सिवा मत्यु भयक ।
 न्याका दूगरा पग यह ह कि जहाँ मत्युका भय ह वहा आत्म-हत्याकी प्रवृत्ति भी जाग उरता ह—यदि वर प्रवृत्ति पग न्याका प्रवृत्तिका रूप नग र रती ।

शाम और मृत्यु

आनन्दिर पन्चिमना ममस्याक दा पन्ड ह ।

पन्ड का म (मकग) का स्वाकार अथवा दमन ?

दूमरा मत्यका स्वीकार अथवा नमन ?

पन्ना समस्या चतनाका समस्या ह । पश्चिमन अत्र इमक काम चरान
उत्तर या अतक उत्तरोंकी पन्परा पा ला ह । दूमरा समस्या आत्माका
समस्या ह । अभीतक पश्चिम इमक चतना हा रहा ह ।

किमा भा प्रानम चतराना या उमका नमन करा अन्वय्य ह—राग
उत्पन्न करता ह ।

कामक नमनक दुष्परिणामि मत्यक दमनक दुष्परिणाम कही अधिक
भयानक हात ह ।

अद्वितीयता और प्रतियागिता

जा मानवाम यकितयाकी अन्तियाता की बात वस्तु ह वही फिर
पानियावा करावरा की यकित कम दे मकत ह ?

कया जरूरी न कि हर घरम रफाजगट्ट हा अथवा मानवका प्रतियाग
बना नगी रह मकती ?

संस्कृति और अवकाश

संस्कृति अवकाशका आनन्दमय उपभाग करनका क्षमता ह । अवकाश
का उपभाग तनावम मुक्त हात मन स्थिति माँगता ह । बिना गातिर
अवकाश नहीं ह । अवकाशका बोध या स्वीकार नही ह ।

अतएव जा अगात ई यत् शुभम्न नया भा बनता । यत् कया समूह
पश्चिमक गिग एक चतारना न । ह ?

बुद्धिजीवी

बुद्धिजीवी याम्बधम भौतिकता अस्वीकार न । करता करत उमपर
पन्परा ह । उमका अधिकतर समस्याए इमोत उत्पन्न हाता ह । जोर यनी
उमकी चिन्तना और अममपताकी जड ह ।

इष्ट और साधन

सुख क्या इष्ट है ? कहना कठिन है ।

समरसता क्या इष्ट है ? अवश्य । सुख तो उमर खाजका एक आनु-
गिक उपलब्धि है ।

समरसताकी पहली गत है आत्म चतनाम मक्ति । हम मक्तिके दो
साधन हो सकत हैं एक तो मत्स्य दूमरा गहरा राग ।

पश्चिमी दृष्टि सम्यक्ताक नामपर रागको नियन्त्रित करना चाहती है
और जावन प्रेमक नामपर मत्स्यका चानाका दवा दना चाहती है ।

भारतीय दृष्टि रागको पूजा आसनपर प्रतिष्ठित करती है और मत्स्य
का गन्ध सत्यक रूपमें स्वाकार करना है ।

चेतनाके दूसरे छोरपर

कुछ पश्चिमी चिंतकान जिनासावण मत्स्यका अवपण किया है । व
आत्म चतनव छोर तक गय है और उठान उठाकर अनस्तित्वक अन-
गनकी एक झाका देखा है । फिर व गैट आय है—कुछ डरम काँपकर और
कुछ बिना डर ।

पर्वी चिंतकन एमा अवपण नहीं किया । क्याकि वह जनस्तित्वका
मानरर नये चला । उन विश्वास रहा है कि चतनाके दूरतम छारक
वाटर ना विराट अवकार है उत्तम भी कहां-न कहा करणा अवश्य है ।
जनां कुछ न । ह वनां भी कृपा है हमर बारम उमन कभी गका
नही की ।

ट्रेनेडा

मात्रिक शत्रम पांचाय नाटकम जा टजरा रखा जाना है उमका
यथायता या उमका भूय क्या है

क्या बच हुए चरित्राकी नाटय परिस्थितिमें जो टूजडी हो सकती है वह क्या है या कि उाका बधा हाना अपन आपम जो टूजडी है वह ?

अगर नाटककार स्वतंत्र चरित्राका आविष्कार कर सकता और फिर उनकी टूजना प्रस्तुत करता ।

विशिष्ट ज्ञान

चिन्तार और तर्कका सम्बन्ध भावजनीन अथवा व्यापक है । विशिष्ट का ज्ञान हमें उगत नहीं मिलता । उमका साधन हमारा अनुभूति है ।

कलाके क्षेत्रम इसका अर्थ कला भी ज्ञानका साधन है—विशिष्ट के ज्ञानका ।

पेड़ और सीढ़ी

पश्चिमकी प्रतिभा कथनमें है । पूर्वकी सकेतम पश्चिमकी व्याख्याम पूर्वकी सूत्रमें । पश्चिमन लिए सत्यकी परिभाषा कर देना उमकी स्वायत्त कर जाता है । पूर्वक लिए सत्यकी परिभाषित कर देना उसको पगु कर देना है ।

पश्चिमन लिए अर्थ ज्ञानमें है और ज्ञान एक सीढ़ी है । पहल ज्ञान एक मीठीपर होते हैं और फिर दूसरीपर जब दूसरी मीठीपर पदच जान है तब पहलीपर नहीं रहत । पूर्वक लिए अर्थ ज्ञानमें है और ज्ञान एक पत्ता हुआ वक्ष है । आप जिन भा डालण है उमा वक्षपर रहत है ।

परिधि और व्यास

पश्चिमकी लीन वस्तकी परिधिका है वह एक है उसका ज्ञान हो सकती है । पूर्वकी लीने वस्तक व्यासका है । व अमर्य है और उनकी ज्ञान भी अमर्य

यात्रा छार

पश्चिमी जन अमर्षिताम आरम्भ करता ह जीर अनाम्या तक पहुचता ह । पूर्वी जन तन्म्यनाम आरम्भ करता ह जीर तान तक पहुचता = ।

पूर्व और पश्चिम सम्भताके आयाम

पाश्चात्य मस्कृतिका कद्र ह म । उमकी मूल स्थिति गप जगनम त्रिराजका सम्बन्ध ह ।

चीना मस्कृतिक मूलम हम का भाव ह । उमकी खाज गप जगनम मामञ्जम्यकी सम्बन्धकी खोज ह ।

भारतीय मस्कृतिका मरु मान म और हम की एकात्मताका बाध ह । इसक लिए किसी सम्बन्धकी खाजका प्रश्न नहा ह शोनकी स्वाकृति हा उमना इष्ट ह ।

पश्चिमी सम्भताका आयाम उरमा ी धमदूतम उ माही जनघानी तक

चना सम्भताका आयाम अनुष्णिन् दागनिकस अनुष्णिन् तामनक

भारतीय सम्भताका आयाम अनुष्णित सतग अनुष्णिन् पापणी तक ।

पश्चिमी सम्भता मधगका आरग बनानी ह । ईमान्यनक बावजूत क अरमो सम्भता = ।

पूर्वका सम्यता मधपका निराकरण करके समस्वरताका जाणव माननी
है । अनांतरवाक्य वाचक बह धार्मिक सम्यता है ।

पूर्व और पश्चिम दश और काल

पश्चिमका काल-बोध एकांगी है । अर्थात् उस तात्कालिकता और
तराका बोध ता है किन्तु कालका यापकता और घटिका नहीं । भारतका
काक विस्तारका बोध है किन्तु उसकी तीव्रताका नहीं ।

दूसरा ओर भारतका देश-बोध एकांगी है । अर्थात् उस निकट शक्ति
परिस्थितिका बोध तो है किन्तु देशक विशाल प्रसारका नहीं ।

यूरोपवामा देशक असीम विस्तारक कालक एक बिन्दुपर जाता है ।
भारतवामी कालक अनन्त विस्तारक देशक एक बिन्दुपर रहता है ।

पूर्व और पश्चिम काल-बोध

यूरोपाय यकित क्षणमें जाता है । अनन्तरालस उस प्रयत्नक न
है—इतना भा है कि भूत और भविष्यक उपयोग घतमान जाणक
सम्पन्नतर बनानक लिए कर ।

भारतीय व्यक्ति अनन्तकालक रहता है । उसक लिए बनमान का
एक अमुविधाजनक धारा है जा भूत और भविष्यक मिलावका उपयोग
बनाय हुए पुत्र नीचक बना है ।

पूर्व और पश्चिम सक्षिप्त इतिहास

पश्चिमका एक मतिज्ञ इतिहास

ईसाका किमन मारा ?

—ईसा जातिन ।

ईसायतका किमन मारा

—ईसा रागा ।

पूवका एक सति सप्त अनिहास

करणा आदग थी किन्तु दुय जत्र करण एक भ्रम ह ता करणा नना क्या भ्राति पणाना न होता ?

स्वाधान तो आत्मा ह और वह अनन्वर भा ह फिर दासताक विराधमें प्रवत्त हाना क्या गक्तिका अपन्यय न हाना ?

हमार भाई गिरत रह पर व पिठल जमक पापाका फल भाग रह थे ।

हम भी गिरत रह पर हम अगल जमाक त्रिण पुण्य-मचय कर रह थे ।

इश्वर-सुत, मानव-सुत

ईसा-तन अपन मभीहाको ईश्वर-सुतका गौरव-पद दवर उमका मलीव बहा करनका अधिकार छीन लिया ।

क्याकि सलावको बेवठ मानव सुत उठा सकता ह बहा उम उगान आया ह जोर वही आग भी उठायगा ।

विस्मय और जिज्ञासा

पश्चिम अपन सम्मुख पणन देवता ह और गित्तर तक रास्ता कानन उगना ह ताकि पवतपर जयी हा सके और जान ल कि उसका दूसरो पीठ पर क्या ह ।

नग विस्मय ह वहाँ जिज्ञासा ह तन्कार ह ।

पूवक सम्मुख सागर ह । वह रम्मा टाङ्कर गहराई नापना ह । गहराई जान ली जानी ह तेकिन सागर अज्ञान रह जाता ह ।

जहाँ विस्मय नष्ट हो जाना ह वहाँ कवल पराजय मिटना ह ।

प्राची प्रतीची

यात्रात यात्रारम्भ

पश्चिमका प्रतिभा कल्पनामें ह । उनकी प्रत्यय परिभाषा परिधिका
निर्धारण करता ह । अमुक क्याकि अमुक ह इसलिए उसम इतर नहा
ये सकना, यह उनका यात्राका अंत ह ।

पुर्वकी प्रतिभा विस्तारमें ह । अमुक क्याकि अमुक ह इसलिए अमकम
इतर और सब कुछ भी हा सकता ह यह उसकी यात्राका आरम्भ ह ।

पूवका एक सतिप्त इतिहास

कस्या आत्मा थी किंतु हुय जय बयल एव भ्रम ह ता कस्या तेना क्या भ्रानि फलाना न होता ?

स्वाधान तो आत्मा ह और वह अनवर भी ह फिर दासनाक विराघमें प्रवृत्त हाना क्या गकिनका अपाय न होता ?

हमार भाई गिरत रह पर व पिछठ जमक पापाका फल भाग रह थ ।
हम भी गिरत रह पर हम अगल जमाके लिए पुण्य-मत्तय कर रह थ ।

इश्वर-सुत, मानव सुत

ईसात्तन अपन ममीहाको श्वर-सुतका गौरव-पद दकर उसका मलीब वग्न करनका अधिकार छिन लिया ।

क्याकि सगेवको केवठ मानव सुत उठा सकता ह वही उम उठान आया ह और वही आग भी उठाया ।

विस्मय और जिज्ञासा

पश्चिम अपन सम्मुख पन्ना देखना ह और गिलर तक रास्ता काटन लगना ह ताकि पवतपर जयो हो सके और जान ले कि उसकी दूसरी पीठ पर क्या ह ।

१ । विस्मय ह वग्न जिज्ञासा ह लङ्कार ह ।

पूवके सम्मुख सागर ह । वह रस्मी डालकर गहराई नापता ह ।
गहराई जान ला जानी ह तेकिन सागर जनात रह जाग ह ।

जहाँ विस्मय नष्ट हो जाता ह वहाँ केवल पराजय मिश्री ह ।

प्राची प्रताची

यात्रात यात्रारम्भ

पश्चिमवा प्रतिभा कल्पनामें ह । उमकी प्रत्यक् परिभाषा परिविका
 नेधारण करता ह । अमुक क्याकि अमुक ह इसलिए उसम इतर ननों
 ज मक्ता ' यह उनना यात्राका अंत ह ।

पूर्वकी प्रतिभा विस्तारमें ह । अमुक क्याकि अमुक ह इसलिए अमुकम
 इतर और सब कुछ भी हा सकता ह यह उमकी यात्राका आरम्भ ह ।